JOHN MASTERS' writing before 1949 was strictly confined to dispatches and official reports produced during fourteen years of service with the Indian Army. Born in Calcutta in 1914, he represented the fifth generation of his family to serve in India. In 1948 he settled in America with his wife and two children. His first novel, *Nightrunners of Bengal*, appeared in this country and in America in 1951 and was an immediate success. It was followed a year later by *The Deceivers*.

John Masters' greatest outdoor pleasure is mountain walking. He prefers the Himalayas, but, on a recent trip abroad, he found the Pyrenees a reasonable substitute, as shown above.

कालापानी

लेखक

बॅ. वि. दा. सावरकर

अनुवादक

श्री. आनंदवर्धन विद्यालंकार, दिल्ली

१९४९] [मूल्य रु. ५

प्रकाशककी ओरसे

मराठी साहित्यके अुच्चकोटिके जो कलाकार-महोदय हैं, अुनमें वॅ. वि. दा. सावरकरजीको विशेष महत्त्वका स्थान दिया जाता है। आप निबंधकार हैं, कवि हैं, अुपन्यासकार भी हैं। इन सब विविध रूपोंमें आपकी लेखनी गतिशील, चमकीली और हृदयको आकृष्ट करनेवाली ठहरी है। यह सत्य है कि, आपने जो कुछ लिखा है, अुसमें आपने भारत-माताके संबंधमें जनताके कर्तव्यको जगानेकी भरसक चेष्टा की है। केवल मनरंजन का साहित्य आपने कभी-सी निर्मित नहीं किया है। प्रस्तुत "काला पानी" अुपन्यास भी अिस सिद्धान्तको अपवादरूप नहीं है।

जहाँ भारतके अनेक सुपुत्र जेलमें बंद कर दिये गये थे, जेलर और रखवालदारोंसे त्रस्त किये जाते थे, जहाँ निवास करने के बाद बचकर वापस आना असंभव माना जाता था, जहाँ स्वयं लेखक महोदय अँधेरी कोठरीमें जीवन बिताते थे, वहाँकी अर्थात् अन्दमान की कथा अिस अुपन्यासमें ग्रथित है। कअी कैदियोंको कुछ वर्षोंकी सज़ा भुगतनेके अनन्तर अन्दमानमेंही कारागृहके बाहर रहकर जीवन निर्वाह करनेकी सुविधा दी जाती थी। अैसे कैदियोंका जीवन, जंगल तोड़नेकेलिये जेलके बाहर जानेका मौका आतेही कैदियोंकी मनोवृत्तिमें होनेवाला आन्दोलन, जेलके अन्दर सरकारी कर्मचारियोंके द्वारा कानून के अनुसार या अुसके विरोधमें भी बंदियोंकी होनेवाली भयानक मारपीट—अिन सब घटनाओंका जो वर्णन अुपन्यासमें चित्रित किया है, अुसे पढ़कर पाठक मुग्ध हो जाता है।

कथानकका आरंभ भारतमें होता है, अुपन्यास के पात्रोंको अन्दमान जाना पडता है, वहाँसे भागकर ये पात्र—मालती, अुसका बंधु दोलकाष्ठ और मालतीका रक्षक और अन्तमें अुसका पति किशन—सब मिलकर अेक

छोटी-सी नावमें भारत लौटने लगते हैं। अपने देशके किनारेके नज़दीक हम आये हैं, अिस तरहका कुछ आभास उन्हें जब होने लगा था, तब अेकाअेक प्रचंड मत्स्यकी फटकारसे अुनकी नाव अुलट जाती है। यहाँ उपन्यासकी समाप्ति होती है।

वीर सावरकरजीने 'जन्मठेपमें' अपनी जेलकी और अन्दमानकी परिस्थिति सुंदर और ओजपूर्ण शब्दोंमें अंकित की है। जब वह अनुपम पुस्तक ज़ब्त हो गई थी तब अुस विषयकाही सौम्य आविष्कार कहानीद्वारा —अिस उपन्यासके द्वारा—जनताके सामने आया।

मूल मराठी अुपन्यासके दो संस्करण निकले चुके हैं। राष्ट्रभाषा हिंदीमें यह पहलाही संस्करण छप रहा है। अनुवादका कार्य नयी दिल्लीके श्री आनन्दवर्धनजी विद्यालंकारने सुचारु रूपसे किया है अिस लिये अुन्हें धन्य-वाद। विश्वास हैं कि पाठकगण अिस रचनाको अपनाअेंगे।

वीर सावरकरजीने यह अुपन्यास प्रकाशित करनेका कार्य हमारी संस्थाको सौंप दिया, अिस लिये अुन्हें हम धन्यवाद देते हैं।

गीता जयंति,
मार्गशीर्ष, शु, ११
शके १८७१, १-१२-४९

वि. गं. केतकर
कार्याध्यक्ष, पुणे अ. वि. गृह

अनुक्रमणिका

कालापानी

मथुरा क्षेत्र में ? : : : १

"अम्मा, अेक गाना तो सुनाओ ना, हम तुम्हें अितने मीठे मीठे और सुरीले गाने गा कर सुनाते हैं और तुम हमें अेक भी गाना गाकर न सुनाओ ? यह कहाँ की रीत है भला ! " मालती ने झूले पर अेक और अूँचा झोंका लेते हुअे लाडभरे कंठ से रमाबाअी से कहा।

"बेटा, तुम अेक की बात करती हो, मैं अेक लाख गाने सुनाने के लिये तय्यार हूँ तुम्हारे लिये। पर अब मेरा गला तुझ जैसा सुरीला नहीं रह गया है ! केले की छाल से डोरा निकाल कर अुसमें गेंदे के फूल पिरोये जा सकते हैं, पर बेटा, जूही के फूलों को पिरोने के लिये रेशम का मुलायम डोरा ही चाहिये, नहीं तो माला के फूल खराब हो जायँगे ! प्रेमभरे गीत तेरे मीठे कंठ में से होकर और भी अधिक मिठास घोलने लग जाते हैं। अिसी लिये, मैं कहती हूँ मीठे मीठे गाने तुझ जैसी लडकियों को ही गाकर सुनाने चाहियें। मुझ सरीखी माओं का तो सुनकर ही अंतःकरण तृप्त हो जाता है। मैं अगर गाने लगूं तो मेरे फटे बांस के से गले से निकलती हुअी चीखभरी आवाज सुनकर गाने की सारी मिठास किरकिरी होजायगी और तुझे हँसी आये बिना नहीं रहेगी।"

"हँसी आयेगी तो आने दे। वह अद्भुत प्रतीत होगी, अिसी बात पर न आयेगी हँसी ? पर्वाह नहीं । पर मेरे मनोरंजन के लिये ही क्यों न हो, तुझे दो चार पद सुनाने ही होंगे । देवता की पूजा में बैठते समय घंटों गीत, पद और स्तोत्र पाठ करती है, तब नहीं लगती आवाज चीखती हुअी ! पर मेरे अूपर से दो चार पद सुनाते हुअे आवाज फटती सी प्रतीत होने लगती है ? माताओं को सिर्फ लडकियों के गाने सुनने ही का था तो माताओं के गाने योग्य गाने लिखकर रखे ही काहे को हैं लोगों ने ? पर माताओं के गाने के लिये कितने वात्सल्यपूर्ण गीत लिखे हुअे हैं ? अुनमें से कुछ तो मैं भी जानती हूँ, समझीं ?"

"तो फिर, जब तू मा बन जायगी न, तब अपने बच्चे के लिये गाकर जरूर सुनाअियो ! " रमाबाअी निर्मल अंतःकरण से हँसी।

"तबकी तब देखी जायगी, पर तू तो नहीं न सुनायेगी मुझे अेकआध मीठा गाना ? "

और तत्काल मांके साथ लिपट कर और अुसकी ठोडी के पास अपने नन्हें नन्हें ओंठ ले जाकर वह किशोरी अुसे मनाने लगी,

"अैसी भी भला कौन बात है, तुम मेरी मां हो न, तब तुम नहीं सुनाओगी तो मुझे और कौन गाकर सुनायेगा मांके दुलार भरे गाने ? "

"तुम मेरी मां हो न !" ये अुस अिकलौती बिटिया के दुलार भरे शब्द कान में पडते ही रमाबाअी के हृदय में वात्सल्य का स्रोत अिस वेग से अुमड पडा कि–अेक दूध पीते बच्चे की तरह अुसके सुरेख मुख को अपनी छाती से लगाकर अुसका चुंबन लेने के लिये रमाबाअी के ओंठ फडक अुठे। पर माताका प्रेम जितना अुत्कट होता है, अुतना ही अुम्र में आअी हुअी लडकी के साथ व्यवहार करते समय संकोची भी होता है !

मालती के गालों के बिलकुल नजदीक आते हुअे अपने मुँहको पीछे ले जाकर अुसकी मां ने अुस वयःप्राप्त होती चली आनेवाली बेटी के मुँह को थोडी देर दोनों हाथों से दबाया और तत्काल हाथ पीछे लेती हुअी वो मालती को आश्वासन देने लगी,

"अच्छा, ले, सुनाती हूँ, पर बेटा, दो चार ही सुनाअूंगी अं !"

" हां, हां, अब आयेगी असली मजा !" यह कहकर मालती ने झूले को जोर जोर से झोंके देना शुरू किया। "यह क्या, सुनाती काहे को नहीं, कामचोर गवय्ये की तरह ताल-सुर वगैरे ठीक करने ही में आधी रात गुजार दोगी क्या ?" अिसतरह अेक बार फिर मालती के कोहनी के धक्के से सूचित किये जानेपर, रमाबाअी के मुँहमें अुस वक्त जो भी गाना आया वही वे सुनाने लगीं–

*** अेरी रत्नों की खान, अपनी–**
मत जलला ठसक, अैसी,
देख, गोदी में मेरी भी कैसी,--रत्न 'माला?'
आते जाते राजा के बेटे,
देखियो ना, चोरी-चोरी;
डीठ लग जायेगी मेरी --मालती को!
सौंपती हूँ अपनी सारी ,
संचित सुकृतों की ढेरी;
करें संरक्षण श्री हरी--लाडली का !
चंद्रकला सी बढती जावे
जन्मभर हे नारायण,
कन्या मेरी सुलक्षण--अिकलौती!

गाने की धुन में ज्योंही मुँह से अिकलौती शब्द निकला त्योंही अेकदम बिच्छू के दंश के सदृश किसी तीव्र मर्मव्यथा के स्मरण से रमाबाअीका चित्त व्याकुल हो अुठा। अपनी बेटी को अैसे आनंद के अवसर पर अपने अंत:करण का शल्य चुभोकर व्याकुल करना ठीक नहीं यह सोचकर भले ही रमाबाअी ने चेहरे पर खिन्नता की छाया न आने दी हो, पर वह गाना जो अुसके मुँह से बाहर निकल रहा था वहीं का वहीं अकस्मात् थम गया। मालती ने समझा, शायद गाते गाते मां की सांस फूल गअी है, अिसी लिये वह चुप होगअी है। मां को थोडा विश्राम देने के लिये तथा गाने की जो धुन सवार थी अुसमें भी किसी प्रकार का विघ्न अुपस्थित न हो अिसके

* पृष्ठ ३ और ४ के ये पद मराठी के 'ओवी' नामक छंद में लिखे गये हैं। भाषांतर भी अुसी छंद के समकक्ष करने का यत्न किया गया है।--अनु.

लिये, अपनी गाने की बारी समझ कर आगे की पंक्तियाँ वह स्वयं ही गाने लगी। अुसकी मां ने कोमल ममत्व से आकंठपूर्ण जो गाना गाकर सुनाया था अुसके प्रत्येक शब्द के साथ अुसके हृदय में आनंद की गुदगुदी हो अुठीथी। अपने प्रियतम के प्रेमपूर्ण अनुनय के श्रवण के औत्सुक्य के आरंभ से पूर्व लडकियों को माता की लाड भरी प्रशंसा के अतिरिक्त अन्य किसी भी बात में अुतने मिठास का अनुभव नहीं होता।

सांझ के समय, पछांह की ओर के खुले हुअे सामने के भाग वाले बरामदे में; झूलेपर बैठी हुअी वह सुरेख अिकहरे बदन की किशोरी अपने सुस्वर गीतमाधुर्य का स्वयमेव रसास्वादन करती हुअी अूँचे-अूँचे झौंके लेने लगी॥ अेक ओर से जब झूला नीचे की ओर आता तब अुसके पीठ पर का साडी का पल्ला हवा से फर फर कर अुठता—अैसा लगता, सांझ के समय अपने अपने घोंसलों की तरफ अुडते हुअे जानेवाले पक्षियों के झुंड में से पिछडा हुआ यह पंछी भी अिस तरह पंख फैला कर तरंगों पर तरंगें लेता हुआ अुल्लास के आकाश में अब अुडकर जानेवाला है, किसे मालूम ?

मां का स्नेहभाव
अवर्ण्य वाक्यों में,
विद्रुम-माणिक्यों में-रंग चढे॥
अलभ्य औरों में
स्नेह जनयित्री का
स्वर्ग यही धरित्री का—ज्योतिर्गर्भ॥
मां का स्नेह भाव
कन्या पुत्रों में विभक्त
भाग प्रत्येक को प्राप्त — पूर्ण—पूर्ण!
प्राणों को देती प्राण,
अर्पूं मैं भी सर्वस;
पुण्य किमर्थ नीरस-भाअी राजा ?
मेरा यह आयुष्य
लेकर मारुति-मूर्ति!
कर शतवर्ष पूर्ति-भाअी राजा की!

गाने के प्रवाह में मालती अब जो भी पद मुँहपर आता वही गाने लग गआी थी। पहले के पद अुसकी मानसिक भाषा में रचे हुअे थे। अुसकी अपनी माता के अूपर जो दुर्ललित ममत्व भावना थी-वह ही पद छाँट छाँट कर मालती के कण्ठरूपी शहनाआी में से गा रही थी। परंतु बाद के पद किसी विशेष अर्थ के लिये छाँट कर कहे नहीं गये थे। मराठी गवैया हिंदी भाषा के पदों को अर्थोपर विशेष ध्यान न देते हुअे केवल अुसके स्वर की लालसा से जिस तरह गाता चला जाता है तद्वत्ही वह भी गाती चली गआी। पर अुस की मां का ध्यान अुन पदों के अर्थों की ओर लगा भी हुआ था; अतः मालती जब गाने की लहर में आकर अपने भाआी-राजा पर से भी गीत गाने लगी तब मां का हृदय दुःख से भर आया और रोने की नौबत आने का भय लगने लगा। अुस के अुस दुःखकी छाया का प्रभाव मालती के हँसते खिलखिलाते चेहरे पर पड कर कहीं वह विषण्ण न हो जाय, अिस बुद्धि से रमाबाआी ने मालती के अुन असह्य प्रतीत होने वाले पदों को बंद करने के लिये अुसे बीचही में रोक दिया।

" मालती, बेटा, अब बस करो, देखो, अब सिर चक्कर खाने लग गया है— कितने अूँचे झोंके ले रही है तू ? "

अैसा बहाना बना कर, जमीन को पैर का टेका देकर मां ने झूला रुकवा दिया। अुसके साथ सिर्फ मालती ही झूलेपर से नीचे नहीं अुतरी प्रत्युत अूँची तरंगों के झोंकों में बेसुध हुआ अुसका मन भी अुस गाने के झूले पर से नीचे अुतरा और होश में आया।

देखा, मांकी आँखों में पानी भर आया है, आकृति दुःखों की तीव्र स्मृति से विषण्ण हो अुठी है। मालती के ध्यान में तत्काल यह आया कि हो न हो, मां को मेरे मृत बडे भाआी का स्मरण हो आया होगा। और मेरे मुँह से सहज ही निकले हुअे भाआी संबंधी पदों से ही अुसका मन भर आया होगा। अुसकी मां को अुसके बडे भाआी का स्मरण—अुस घटना को हुअे अितने बरस बीत जाने के बाद भी—अिस प्रकार के विशेष प्रसंगों पर अेकदम ताजे दुःख की तरह असह्य हो अुठता था और वह ममतामयी माता बुरी तरह रो पडती थी। मालती को अैसे प्रसंगों पर मां के दुःख को—दूर करनेवाला न भी हो तो—बधिर करनेवाला अेक प्रत्युपाय अवगत था।

अुसने झट अपना सिर अपनी मां की गोद में रख दिया–तत्क्षण अुसकी मुखाकृति विषादयुक्त हो गअी और तुरंत अुसकी आँखों में पानी अुतर आया। तत्पश्चात् अपने नित्य के स्वभाव के अनुसार अुसने अपना अश्रुपूर्ण मुख मां की ठोडी के समीप ले जाकर अत्यंत व्याकुल स्वर में बोलना शुरू किया,

"अैसा क्यों भला, मां, मैं तेरे विषाद को कम करने के लिये तथा तुझे आनंदित करने के लिये गाने लगी, भूल से तेरे दुख की खिपली ही अुखड गअी–जाने क्यों मेरे मुँह से अैसी गीतपंक्तियाँ निकल पडीं!"

मालती के मन को वह भूल अितनी चुभती हुअी दिखाअी दी कि, अुसकी मां को अपने पुराने दुःखकी अपेक्षा अिस समय का मालती का यह रोने का दुःख ही असह्य प्रतीत होने लगा और रमाबाअी ने तत्काल अपना रोना बंद कर के मालती का समाधान करना शुरू कर दिया,

"पगली कहीं की! अरी, तेरी गीत पंक्तियों से नहीं–वरंच मैं ही गीत सुनाते समय तुझे अपना अिकलौता बच्चा बोल गअी थी न, अुसी का मुझे अितना खेद हुआ है, समझी! परमेश्वर द्वारा दो बच्चे मिलने पर भी दैव ने मुझसे अेक छीन लिया और अब सिर्फ अेक ही अवशिष्ट रह गया हैं, यह बात मेरे हृदय को तीर की तरह भेद गअी! चुप हो बेटी, तूने मेरी दुःखकी खिपली को नहीं अुखाडा है! अिसके विपरीत, अुस दुःख को किंचित् न्यून करनेवाला यदि कोअी रसायन है तो वह तेरे मुखपर आविर्भूत होनेवाला आनंद का प्रकाश ही है! खैर, जो गुजर गया वह लौटकर थोडअी आने वाला है! तेरे भाअी की तुझपर अितनी अधिक ममता थी कि अुसके वियोग के दुःख से भी यदि मैंने तुझे रुलाया तो वह मुझपर बिगड खडा होगा। अुसका आत्मा जहाँ भी होगा वहीं वह तिलमिला अुठेगा! और तू मेरे लिये अुसी की स्थानापन्न है न? तब तुझी में मेरे दोनों बच्चे समाविष्ट हैं–है न? चुप! अरी, चुप हो! आज रातको अुस नये आये हुअे साधू के कीर्तन में जाना है न, चल, तो अुठ! अब मैं चूल्हा सुलगाती हूँ, तू झाडू-बुहारी कर! हमारा भोजन समाप्त होते न होते नायडू बाअी बुलाने के लिये आ ही पहुँचेगी!"

वे दोनों मां-बेटियाँ घर में गअीं! यह अेक छोटा सा सुहावना सा घर रमाबाअी ने गत मास ही मथुरा-क्षेत्र के निवास के लिये आने के बाद स्वतंत्र रूप से किराये पर लिया था।

रमाबाओी के पति दो बच्चे होने के पश्चात् अेकाअेक गुजर गये ! रमाबाओी का जीवननिर्वाह आसानी से हो सके अितना द्रव्य और कुछ गहने अुनके पति अपने पीछे छोड गये थे । अुसी के बलपर रमाबाओी ने अपने दोनों बच्चों का पालनपोषण कुछ बरस तक नागपुर की तरफ के अपने असली गांव में ही रहकर किया । आगे चलकर अुन के पुत्र को फौज में नौकरी लगी । वह अुधर चलागया और अब अुन के समीप मालती ही रह गओी । दोचार बरस ही में भारतवर्ष से बाहर ,आंग्रेजों के साथ चलने वाले किसी युद्ध में भारतीय फौज भेजी गओी--अुसी में रमाबाओी के पुत्र को भी जाना पडा । परंतु वहाँ जाने के पश्चात् वह लगभग लापता ही हो गया । अत्यंत परिश्रम के पश्चात् रमाबाओी को अेकबार अेक अफसर की ओर से यह वृत्तांत ज्ञात हुआ कि, वह सैनिक किन्हीं कारणों से अपने अफसरों से लड झगड कर फरार हो गया था और कदाचित् वह शत्रुपक्ष की तरफ से मार डाला गया हो !

अुस बात को बीते पांच-छै बरस का अर्सा हो चुका था । रमाबाओी का पुत्र फौज में भर्ती हुआ सो अुधर ही समाप्त हो गया । अिस बात पर गांववालों का अितना अधिक विश्वास बैठ गया था कि, सब अिस बात को भूल ही गये थे । पर रमाबाओी अिसे भला पूरी तरह से, कैसे बिसरा सकती थीं ? अुन्हें अपने पुत्र का विस्मरण नहीं हुआ था--अितना ही नहीं, अुनका पुत्र मर चुका है, और अब अिस लोक में अुसकी मुलाकात कभी नहीं होगी यह बात भी अुन्हें कभी-कभी सत्य नहीं प्रतीत होती थी । लडाओी में मरे हुअे सैनिकों के अत्यंत प्रेमी सम्बंधियों में भी अनेक बार अिस प्रकार की मनोवृत्ति दिखाओी देती है । अभी भी रमाबाओी को अपने पुत्र की मृत्यु का संवाद सत्य नहीं प्रतीत होता था । यद्यपि किसी प्रकार की कोओी आशा नहीं रह गओी थी, तथापि यह शंका दूर नहीं होती थी । अुन का पुत्र दूर देश में लडाओी पर जाकर मर गया, अिन शब्दों का अुच्चारण भी अुनके लिये अत्यंत कठिन हो अुठता था; अतः यदि कभी प्रसंग आही जाय तो वे अितना ही कहतीं कि, मेरा बडा बेटा अुधर लडाओी में लापता हो गयाहै ।

पुत्र की मृत्यु का समाचार मिलने के पश्चात् दुःख से भग्न हुओी अुस मां के प्राण अपनी बची हुओी अिकलौती लडकी के स्नेह के अूपर ही

टिके हुअे थे। मालती के लाड पूर्ण करने में अुन्होंने किसी किस्म की न्यूनता नहीं रहने दी थी। वह जो बढने लगी, चंद्रकला के सदृश अुत्तरोत्तर अधिकाधिक शोभापूर्ण दिखाअी देने लगी। अुसके अुस दुलार भरे चपल किंतु सुशील बोलने चालने में अैसी कुछ मोहकता रहती थी कि केवल अुसकी मां के ही नहीं, जो भी कोअी अुसे देखता अुसी के नयनों को वह चतुर्थी की चंद्रकला के सदृश आल्हाद प्रदान करती थी। सुंदर मोतियों को देखने पर स्वभावत: ही वह किसी शोभायमान अलंकरण की सामग्री होगी अैसा प्रतीत होता है, अुसी प्रकार अिस किशोरी को भी देखकर यह प्रतीत होता था कि, किसी मोहक, मंगल और सुखकारक जीवन के लिये ही अिसका निर्माण हुआ होगा। अुसके चौदह बरस अब पूरे हो चुके थे और अुसकी मां के मन में अुसके भविष्य के बारे में सुनहरी आशाओं और आकांक्षाओं का अेक अुद्यान का अुद्यान विकसित होने लग गया था।

रमाबाअी की बहुत पुरानी सखी अर्थात् सूतिका अन्नपूर्णाबाअी नायडू आजकल मथुरा में नौकरी पर थीं। अुन्हीं के आग्रह से तथा अुनके देवभक्त मनको तीर्थयात्रा की अभिरुचि होने के कारण से रमाबाई मालती को साथ ले १५ दिनों के लिये मथुरा चली आअी थीं। मथुरा की प्रख्यात जगहें, मंदिर और साधु संतों का दर्शन करने के लिये मार्गदर्शक का काम नायडू-बाअी ही करती थीं। अुन्हें भी साधु संतो की बडी अभिरुचि थी। कोअी भी साधु मथुरा में प्रख्यात हुआ कि अुसका अुपदेश सुनने के लिये तथा अुसकी यथाशक्ति प्रसंग पडने पर सेवा करने के लिये अन्नपूर्णाबाअी सहसा कभी कमी नहीं करती थीं।

अुनके घर के समीप के घाट पर गत मास जो योगानंद नाम का साधु अपनी शिष्यमंडली के साथ आकर अुतरा हुआ था, अुसके यहाँ आजकल अन्नपूर्णाबाअी नायडू भजन-पूजन-दर्शनार्थ जाने आने लग गअी थीं। अुस योगानंद के बारे में चारों ओर यह फैला हुआ था कि, अुसे भूत भविष्यत् तथा वर्तमान को जानने की दैविक शक्ति प्राप्त है। रात को अुस साधु के मठ में भजन कीर्तन का कोलाहल अपने पूर्ण यौवन पर आया कि सैंकडों लोग नामसंकीर्तन के रंग में रंगे जाकर भक्ति के आवेश में नाचने लग जाते थे। नायडबाअी के द्वारा

रमाबाअी की जानकारी अुस योगानंद साधू के कानों तक पहुँच गअी थी; अत: अुन्होंने देवता का प्रसाद अपने हाथों से–अपनी विशेष कृपा के निदर्शन के तौर पर–रमाबाअी के पास भिजवाया। रमाबाअी मालती के साथ अुस भजनोत्सव में भी गत दो-तीन दिन से जाने लगी थीं। स्वत: योगानंद ने भी अेक दो मर्तबा थोडी बहुत पूछताछ करने की कृपा रमाबाअी पर की थी।

योगानंद का गांव की बदचलन मंडली में भी अुपहास न होनेपावे अितना अधिक देवभक्त, निर्लोभ, सरल तथा सादा व्यवहार था। भजन के रंग में रंग जाने पर अुस सत्पुरुष की जग और देह की सुधबुध ही लुप्त होगअी हो, अैसा दीखता था। अुसकी मुख्य साधना भजनकीर्तन–यही थी। अिससे भिन्न अन्य कोअी भी ढोंग धतूरा अुसके मठ में दिखाअी नहीं देता था। शिष्यसंप्रदाय मात्र भरपूर था। अुस साधु के पीछे चलते समय तथा मठ में रहते समय सदा अनुशासित रूपमें नजर आता था। मथुरा से अुनका पडाव अब शीघ्र ही हिलनेवाला था। अिस लिये अिस आखीर के सप्ताह में भजन कीर्तन धूमधडाके के साथ चालू था। सैंकडों लोग रातको वहाँ भीड मचाये रखते थे।

रमाबाअी मालती को लेकर आज की रात भजनमहोत्सव के लिये वहीं जानेवाली थीं। अुन दोनों मां बेटियों का भोजन अभी समाप्त होने भी न पाया था कि, अितने में अुन के दरवाजे पर नायडूबाअी की थपथपाहट की आवाज सुनाअी दी। तत्काल वे तीनों घाट पर के स्वामीजी के मठ की ओर जाने के लिये जल्दबाजी में निकल पडे।

महंत योगानंद का भजन-रंग : : : २

उमाबाओी जिस समय मालती को साथ लेकर भजन की जगह पहुँचीं, अुस समय भजन अपने पूरे रंग में था। अुस घाट पर चारों तरफ लोगों की भीड ही भीड जमा थी। हिंदी भजनकीर्तन की विधि के अनुकूल पचास-साठ गोस्वामी साधुसंत हाथ में बडे बडे झांज लेकर योगानंद के अतराफ घेरा डाले जोर जोर से नामसंकीर्तन द्वारा वातावरण को गुंजा रहे थे। मुख्य दसबीस शिष्य पखवाज, मृदंग, वीणा, झांज प्रभृति वाद्य लिये ताल-स्वर-ठेका वगैरे ठीक ठाक किये योगानंद महंत के समीप तैयार खडे थे। और अुन सब के बीचोंबीच महंत स्वयं कभी बैठे हुअे, कभी भक्ति के आवेश में खडे होकर, अूंचे स्वर में तन्मय होकर भजन बोल रहे थे! अुस दूर की जगह से भीड को चीर कर अंदर जाने का रास्ता ही नही था। परंतु नायडूबाओी के परिचयानुग्रह से पहले से ही महंत के मंदिर में अुन्हें स्थिरीकृत जगहपर लेजाकर बिठाने के लिये अेक शिष्य को नियुक्त किया हुआ था। अुसनें अुन लोगों को राह पर खडा देखते ही योगानंदकी आज्ञा से अुन तीनों को ले जाकर बिठा दिया।

अिधर भजन का जोर अपनी पूर्णावस्था पर था। श्रीमान् साधु तुलसीदासजी के अेक पद का वह चरण अुन सौं, भजनीकों के सौ कंठों से एक साथ निकल कर सम्पूर्ण वातावरण में व्याप्त हो रहा था :—

तुलसी मगन भये। हरि गुण गानों में
मगन भये हरि गुण गानों में॥ ध्रु०॥
कोअी चढे हाथी घोडा पालकी सजा के।
साधु चले पैयां पैयां चींटि याँ बचाके।
मगन भये हरि गुण गानों में॥ तुलसी०॥

झांजों की झनूझनाहट रक्त के अेक अेक बिंदु के भीतर स्पंदन पैदा करने लगी। भक्तिरस के कुंड में मानों सारा समाज डूबा जा रहा था! हरिनाम के अतिरिक्त अन्य किसी भी मनोवृत्ति की ध्वनि सुनाअी नहीं

पडती थी। अेक की आवाज दूसरे को सुनाअी नहीं पडती थी। खुद की आवाज तक खुद को सुनाअी पडती थी या नहीं, किसे मालूम ?

अितने में अुस अूँचे चढे हुअे शतकंठ–निनादी स्वर को कम-कम करते हुअे पद्य के चरण योगानंदजी अकेले ही अितनी तल्लीन मुद्रा में बोलने लगे कि शिष्यादिक भजनीकों ने झांजों का कोलाहल बंद कर चिपलियाँ (करताल) बजाना शुरू किया, ''तुलसी मगन भये हरिगुण गानों में'' अिस चरण को लौटपौट कर सुकुमार स्वर में गाते हुअे योगानंद खडे हो गये !

योगानंद जी अुस पद का अर्थ नहीं बतलाते थे। पर जिनको वह समझमें आता था अुन्हें अुस भजन में अर्थों के पोथे के पोथे सुनाअी देते थे ! अिस जीवन की साधना हरकोअी अपनी अपनी रुचि के अनुसार करता है; हर कोअी आनंद प्राप्ति के पीछे पडा हुआ है; कोअी भोगद्वारा-कोअी योग द्वारा। जैसी जिसकी जितनी मनकी अुन्नति, वैसी अुसकी रुचि ! 'स्वभावो मूर्ध्नि निष्ठते ! ' तब बाह्य साधनों का वाद चाहिये ही काहे को ? तुम्हें जिस में आनंद की अनुभूति होती हो, तुम अुसमें रमो। औरों को जिसमें आनंद प्रतीत होता है वे अुसमें रमेंगे। हां मेरे बारे में पूछते हो, तो ''तुलसी मगन भये। हरिगुण गानों में। हरिगुण गानों में। हरि गुण गानों में।''

कोअी अूँचे-अूँचे चंदन के पलंगों पर गादियों और गदेलों पर लोट पोट होने के लिये खटपट करते हैं; अुन्हें अुस में आनंद प्रतीत होता है ! पर कोअी विद्यमान पलंग ही नहीं बल्कि कामुक पत्नियों को भी छोड कर बुद्ध भगवान् के समान बोधिवट के नीचे, खुले प्रदेश में जमीन पर ही पडकर सो रहते हैं, अुन्हें गाढी नींद वहाँ लगती है ! गाढ निद्रा का लगना ही यदि ध्येय हो तो वह जिसको जहाँ लगे अुसका वहीं सोना योग्य है ! मेरे अुपाय का अवलंबन तुझे करना ही चाहिये अैसी हठधर्मी क्यों ?

कोअी हाथीपर, कोअी घोडे पर, कोअी पालकी पर सवार हो बडी शान से अितराता हुआ चलता है; अुन्हें अुसमें ही आनंद मालूम पडता है ! अुनका वही स्वभाव है ! पर अिस साधु को देखो, अुसे हाथी पर चढना फाँसी पर चढने जितना ही दुःखद है ! हम पालकी में बैठें और दूसरे अुसे ढोयें अिस वृत्ति को अुसे शर्म अनुभव होती है ! अितनी अधिक कि, पालकी का स्पर्श होते ही अुसे अँगारे के स्पर्श की प्रतीति होती है !

अत: वह पैदल चलता है, और अुस वक्त भी रास्ते की चींटियों और कीडों से पैर को बचा कर नीचे की ओर आँखें गडाये ! अितनी अधिक भूतदया की भावना अुसमें रहती है ! अुसे अुसीमें सच्चा आनंद आता है।

कोअी चढे हाथी, घोडा पालकी सजाके।
साधु चले पैयाँ पैयाँ चींटियाँ बचाके।
पैयाँ पैयाँ। चींटियाँ बचाके॥
पैयाँ पैयाँ। चींटियाँ बचाके॥

यह चरण अत्यंत शांत, मंद स्वर में दुहराते दुहराते योगानंद साधु अपने पग भी अेक अेक करके गिनते हुअे शांति के साथ रखने लगा और वीणा के स्वर पर फिर फिर गाने लगा, "पैयाँ पैयाँ, चींटियाँ बचाके ।। साधु चले पैयाँ पैयाँ चींटियाँ बचा के ।।

अुस समय तुलसीदास के पद में निर्दिष्ट साधू यही है अैसा हर किसी को भास होने लगा। क्यों कि योगानंद की यह खास आदत थी कि रास्तेपर, घाटपर, हाटपर, जहाँ कहीं भी वह जाता, नीचे देखकर और अेक अेक कदम अुठा अुठाकर रखता।

अपने अिसी साधुत्व को अिस तुलसीदास के पद द्वारा जनता के हृदयों पर बिंबित करने ही के अुद्देश्य से भलेही वह भजनकीर्तन न करता हो; पर वस्तुगत्या अिसका परभाव जनता पर पडता अवश्य था। तुलसीदासजी की कसौटी पर भी यह साधु खरा अुतरता है, यह हर कोअी बगैर कहे समझने लगा।

अैसे भजनोत्सव में ही आधी रात बीत गअी। आरतीके वक्त साधुजीका चरणस्पर्श करनेके लिये लोगोंकी बडीभारी भीड जमा होगअी और अुसी गडबडी में जब वह समुदाय लौटने लगा तो धक्का-मुक्की बढ गअी। अिसीबीच, नायडू-बाअी रमाबाअी और मालती जिधरसे बाहर निकल रही थीं वहाँ अकस्मात् दसबारह आदमियों का लडाअी-झगडा शुरू होकर बडी भारी गडबड मचगअी। अुसे तितर बितर करनेके लिये साधुजीके पाच छै शिष्य हाथमें छडी लेकर अंदर घुसे। जो आदमी जिधर से भागा वह अुधर ही लोगों को धकेलता हुआ ले चला। बीचमें जबर्दस्त भीड घुमती चली आअी। अुस भीड भडक्के में रमाबाअी,

नायडूबाअी और मालती तीनों अेक दूसरे से बिछुड गये-कौन कहाँ चला गया अिसका किसी को पता न रहा। पर अिसी बीच, बुरी तरह दिङ्मूढ हुअी हुअी, लोगों के पैरोंतले कुचली जाते जाते बची हुअी रमाबाअी का हाथ साधु के अेक शिष्य ने पकड अुन्हें अुस भीड में से बाहर निकाला और कहा- "साधुजी की आज्ञा से स्त्रियों को विशेष तत्परतापूर्वक अपने अपने घरों को रवाना करने के लिये हमें भेजा गया है। अब आप अपने घर चलिये।"

"पर मेरी मालती कहाँ है? मालती?" गडबडा कर और घबरा-कर रमाबाअी पूछ ही रही थी कि अुसने झटपट अुन्हें आगे आगे ले जाते हुअे ही कहा---"सबको घर पहुँचवा आया हूँ--आप आगे चलिये--बस!"

आधी राह तक भीड में धक्का मुक्का खाते हुअे रमाबाअी बाहर हुअीं। शिष्य अुन्हें लगभग घसीटता हुआ ही खींच लाया "जाअिये, अब सीधा घर चले जाअिये! बाकी दो माताओं को पहले ही मैं वहाँ पहुँचा आया हूँ" अैसा आश्वासन देकर, अुत्तर सुनने के लिये, समय का अपव्यय न करते हुअे वह शिष्य अन्य किसी-भीड में पडी हुअी-स्त्री को बचा कर घर तक पहुँचवाने की बुद्धि से वहाँ से चला गया और भीड में अंतर्हित होगया।

रमाबाअी धडधड करती हुअी छाती से झपट कर पग बढाती हुअीं घर की ओर चलीं। साधुमहाराज के भीड भडक्के से बाहर निकाल कर सुरक्षित रूप से घर पर पहुँचाने की व्यवस्था के अुपकार का स्मरण करती हुअीं, तथा मालती दरवाजे पर अकेली बैठी राह देखती होगी और घबरा रही होगी-अैसा विचार करते करते अपने घर आपहुँचीं। अँधेरे में से ही अुन्होंने बरामदे की ओर देखा; पर मालती या अन्य किसी की कोअी आहट न सुनाअी दी। लालटैन लगा कर देखा तो क्या, दरवाजेपर ताला वैसा का वैसा लगा हुआ है! मालती आगे निकल आअी हो अिसका अेक भी चिन्ह नहीं। भजन की समाप्ति के बाद जब धक्का मुक्की शुरू हुअी, वहीं किसी के पैरों के नीचे पडकर कुचली गअी मालती जोर जोर से रो रही है, अैसा भास होने लगा!

"मालती! अे मालती!"

रमाबाअी ने न जाने किस अुद्देश्य से अुस जनशून्य अंधकार में ही जैसे तैसे दो बार हांक मारी; तीसरी हांक मारने जाते ही अुनका गला रुंध आया और रुलाअी आकर अेकदम वे नीचे बैठ गअीं! अुस जगह कोअी भी नहीं

है, यह जानते हुअे भी सिसकियाँ भरते हुअे वे पूछ बैठीं, "मेरी मालती कहां है? मेरी मालती आगअी क्या?"

वस्तुतः अुस समय अिस प्रकार घबराने का कोअी कारण नहीं था। साधूमहाराज के शिष्य ने जल्दबाजी में मगर स्पष्ट रूप से कह दिया था कि, "अुन सबको आगे पहुँचा आया हूँ?" यहाँ न पहुँचाया हो तो नायडू-बाअी के यहाँ ही पहुँचा दिया होगा मैं भीड में अकेली ही घिर गअी थी, पर वे दोनों साथ साथही रही होंगी। अुन्हें साथ साथ रहना ही चाहिये! तब मुझे खोजते हुअे अितनी दूर तक अिस गड़बड़ी में से आने के बजाय अुन दोनों ने वहाँ से समीप विद्यमान नायडू बाअी के घर में ही पहुँचाने के लिये अुस शिष्य से विनति की होगी।

अैसा विपरीत विचार रमाबाअी को जँचने लगा। स्वयं जाकर वहाँ मालती को देखा जाय अिस बुद्धि से वे दो बार सड़क तक आअीं; पर तब तक मालती ही यहाँ आ पहुचे और अुन्हें वहाँ न पाकर वह बेचारी फिर अकेली रह जायगी! और हो सकता है वह अुन्हें ढूँढने के लिये फिर लौट पडे! लंबा रास्ता, रातका तीसरा पहर, सघन अंधकार, जाना ठीक होगा या नहीं, अित्यादि विचारचक्रों के अुलट फेर में पड़ते हुअे ही न जाने कब अुनकी आँखों को झँपकी लग गअी!

चौंक कर जो अुठीं तो मालती का बिछौना पास ही में रिक्त दिखाअी दिया अिस से पूर्व वह बिछौना अिस प्रकार कभी न दीखा था! हर रोज सवेरे अुठने पर गाढ निद्रा में सोअी हुअी मालती के बिखरे हुअे सिर के बालों को हाथ से सँवारकर, अुसके मुँहपर हाथ फेर कर, ओढनी ठीक ढंग से अुढाकर, हँसते हुअे मुँह से वे झाडने-बुहारने तथा छिड़कने-लीपने के कामों में लग जातीं! यह अुनकी रोज की आदत थी! अुस बिछौने पर वह दुर्ललित मुख आज दृष्टिगत नहीं होता था! छाती में धड़की भर गअी। अनिष्ट-सूचक विचार ही बारबार मन में आने लगे। पर अुनका मनोमयी भाषामें भी अुच्चारण न करते हुअे रमाबाअी जो अुठीं सो सीधा नायडूबाअी के घरकी ओर मालती की खोज में निकल पडीं!

वे रास्ते पर चलते हुअे थोडी दूर ही गअी होंगी—नायडूबाअी स्वयं अुनकी ओर आती हुअी दिखाअी दीं! —पर अकेली!

घबराअी हुअी आवाज में रमाबाअी ने पूछा,—'अयँ—मालती कहाँ है ? "

आश्चर्यपूर्ण स्वर में नायडूबाअी ने जवाब दिया—"अयँ...मालती तुम्हारे साथ गअी है, अैसा मुझे साधुजी के अेक शिष्यने ही कहा था ! "

"हे भगवान्, मेरी मालती, कहाँ होगी वह ? "

गद्गद् युक्त रुंधे हुअे कंठ से अिन्हीं किन्हीं शब्दों में अुद्गार व्यक्त करती हुअी अेक छोटे बच्चे की तरह चिहुँक चिहुँक कर रमाबाअी रोने लगीं !

नायडूबाअी अुनकी अपेक्षा अधिक धैर्यशालिनी थीं-किंवा अुनकी अिकलौती अेक अुपवर कन्या तो अपहरण नहीं की गअी थी न, अिसलिये भी अुनका धीरज कायम रहा होगा। रमाबाअी को हाथका सहारा देते हुअे वे बोलीं, "अैसी क्या घबराती हो बिलकुल ! जैसे साधुजी महाराज ने तुम्हें हमें तथा अन्य सभी स्त्रियों को सुरक्षित रूप में अपने अपने घर पहुँचवा दिया था वैसे ही मालती को भी भीड में से बाहर निकाल कर अपने पासही कहीं सुरक्षित रूप में रख लिया होगा ! चलो, साधुजी की ओर चलें पहले, हो न हो मालती वहीं सुरक्षित है ! चलो ! "

रमाबाअी का धीरज अिस तरह बँधाते हुअे नायडूबाअी साधुजी के मंदिर की ओर चल तो पडीं; पर अुनके भी हृदय में—आगे क्या होगा, अिस आशंका से कुहराम मचे बिना न रहा।
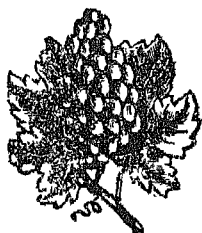
पर हमारी मालती कहाँ ? :

योगानंद जिस मंदिर में अुतरे हुअे थे अुसके प्रांगण में अुस दिन सु कुछ दर्शनार्थी अेवं प्रश्नार्थीगण साधुजी के बुलावे की प्रतीक्षा में अुधर घूम रहे थे। परिचित-परिचित अलग-अलग २-४ का झुंड बना योगानंद के भूतभविष्यद्वर्तमान के ज्ञान की प्रशंसा कर रहे थे। आशंका कर बैठता तो दूसरा भावुक अुसकी शंकानिवृत्ति के लिये योगा द्वारा बताअी गअी भूतभविष्य की बातों के अुदाहरणों का जरा नोंन-मसाला लगाकर वर्णन करता। स्वतः योगानंद कभी भी धार्मिक अुपदेश दिया करते थे—न कीर्तन में न व्यक्तिगत बातचीत में! सामान्यतः किसी से ज्यादह बोलते ही न थे। केवल अुन्हीं लोगों को अपनी अेकांत कोठ में बुलाते जिनके भूतभविष्यत् को देखने की अिच्छा अुनके मनमें आती थी वहाँ महंत गिने चुने प्रश्न पूछते तथा सुनते थे। तत्पश्चात् जलादर्श नामक अेक तांत्रिक यंत्र सामने लेते और प्रत्यक्ष रूप से अुस यंत्र में जो कुछ अुनकी दैविक दृष्टि को दीखता अुतना भर कह देते थे। किसीने यदि अुसके खरे खोटे के बारे में कुछ कहा, तो वे अुसके साथ अधिक वाद नहीं करते थे। 'प्रभुने बतलाया, मैंने कहा, सत्‌ झूठ प्रभुका अधिकार! मैं अेक अुसके शब्दों का ध्वनि हूँ!' यह निश्चित अुत्तर वे देते और प्रश्नार्थियों को शिष्यों के द्वारा बाहर भिजवा देते। अिस जलादर्श में से भूतभविष्यत् के कथन के बदले में किसी से भी वे अेक दमडी तक न लेते थे। अुस परिग्रह-शून्य लोभ-हीनता के कारण ही अुनके वचनों पर न सिर्फ विश्वासशील व्यक्तियों का ही बल्कि अर्धसंशयी व्यक्तियों का भी विश्वास बैठता था। महंत जी वाक्-संयम के नियम का पालन करते थे; अतः अुनके मुँह से जो कोअी गूढार्थ-गर्भ शब्द निकल आता अुसका अर्थ अपनी मर्जीके अनुसार लगाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र था। कीर्तन के समय सिर्फ भजन ही वे स्वतः तन्मय होकर सुरीले राग से क्रियासमभिहार पूर्वक बोलते थे। अुस समय के अुनके तल्लीन-ता के आविर्भाव से ही लोग यह समझते थे कि अवश्य ही यह कोअी बडा सिद्ध पुरुष होगा। पर अुस कीर्तन में भी भजन के अतिरिक्त वे अन्य कुछ भी नहीं

कहते थे—प्रवचन का तो लेश भी नहीं— । ' भजन संतों का ! संतों से ज्यादा मैं क्या कहूँ ! ' यह अेक वाक्य बस, अवसर पडने पर बोलकर वे चुप हो जाते थे ।

पर योगानंदजी की अिस मौनवृत्ति के कारण अुनके वेदांत की गूढता के संबंध में लोगों के हृदयों पर अितना अधिक प्रभाव पडता था कि अनेक वेदांत-प्रवचनकार भी अुनके सामने फीके पड जाते थे । लोग समझते, अुनका ज्ञान अितना गूढ है, अितना गहरा है, कि अुसके व्यक्तीकरण के लिये शब्द असमर्थ रहने ही चाहियें ! ' गुरोस्तु मौनं व्याख्यानम् ' यही परम सिद्धि की पहचान है, अैसा भावनाशील लोग आपस की बातचीत में कहते सुन पडते थे ! खुली हुअी बावडी की गहराअी के बारे में थोडा बहुत तर्क लडाया जा सकता है, पर जिस बावडी का मुँह ही बंद है, अुसकी गहराअी की अगाधता जितनी बढाते चलो अुतनी बढती चली जायगी । अैसा—किंवा, व्याख्यान देने की शक्ति जिसमें नहीं अुस गुरू के लिये भी ' गुरोस्तु मौनं व्याख्यानम् ' वाक्य का प्रयोग किया जा सकता है, अैसा यदि कोअी कह अुठता तो ' अरे जाने भी दो, अुस कुतर्की के मुंह क्या लगते हो ! ' कहकर चारों ओर के भावुक लोग शोर मचाने लग जाते ।

रमाबाअी की अुस साधु पर भक्ति थी । और अुसी कारण वे अुस रास्तेपर जाते हुअे थोडी शक्ति महसूस कर रही थीं । योगानंद के मठ में मालती न भी हो—कल के भीड भडक्के में वह कहीं खो भी गअी हो तो भी योगानंदस्वामी अपने जलादर्श यंत्र में देखकर यह बतला देंगे कि वह अिस समय निश्चित रूप से कहाँ है, तथा किस अवस्था में है यही अेक विचार था जो अिस भावना-प्रवण श्रद्धालु मां को आधार दे रहा था । वह साधु अपने को अिस विपत्ति में से अवश्य अुबार कर रहेगा—अिसी बात का अुन्हें संतोष प्रतीत हो रहा था । अुस निर्लोभी साधु पर विद्यमान श्रद्धा की लकडी पकडे हुअे लडखडाती अवस्था में भी वे मंदिर की ओर वेगसे चली जा रही थीं।

नायडूबाअी श्रद्धालु अवश्य थीं, किंतु विवेकशून्य नहीं थीं । लुच्चे साधु अुन्होंने देखे थे । पर अितने ही पर यदि कोअी कह बैठता कि सारे ही साधु लुच्चे होते हैं, तो वे अुसका बुरी तरह प्रतिवाद करतीं ! योगानंदजीके बारें में अुसका मत अनुकूल था । अिसके दो कारण थे—अेक तो वे किसी से दमडी

भी न मांगते हुअे–अुतना ही बताते थे जितना अुनकी समझमें आता था– दूसरे, अुन्हों नें भूतभविष्यत् की जो बातें लोगों को बताअी थीं, वे बिल्कुल झूठी हैं अैसा कहीं भी सुनने में नहीं आया था ! वह सच्छील, परोपकारी साधु पुरुष है, यह तो स्पष्ट ही था। पर अुसके समीप कोअी दैवी दृष्टि अेवं अंतर्ज्ञान विद्यमान है, अिस विषय में भी नायडूबाअी का विश्वास बढता जा रहा था। थोडी सी शंका मनमें पैदा होती थी अवश्य ! वह अुसकी अीमानदारी के बारे में नहीं बल्की भूत भविष्यत् का ज्ञान बतलाने की सिद्धि की अचूकता के बारे में ! अुसके सत्यासत्य की परीक्षा का मौका यह अच्छा हाथ आया, अैसा विचार नायडूबाअी के मनमें आया; साथही मालती पर टूटे हुअे विपत्ति के पर्वत की कल्पना करके अुनका कलेजा मुँह को आये बगैर भी न रहा।

मंदिर के प्रांगण में ज्योंही ये दोनों महिलाअें प्रविष्ट हुअीं, त्योंही महंत का अेक शिष्य अुनके सामने पहुँचा और निश्चित मार्ग से महंत के निवासस्थान की ओर ले गया। वहाँ पहुँचने पर थोडी ही देर में, अबतक जैसे तैसे दबाकर रखा हुआ अुच्छ्‌वास छोडते हुअे रमाबाअी ने शिष्य से पूछा,

"पर हमारी मालती कहाँ है ? मालती ? "

शिष्य अुसके अिस अुतावले प्रश्न की प्रतीक्षा में ही था। आश्वासनसूचक मुस्कराहट के साथ अपने दोनों हाथों के पंजों को वरदहस्त की अवस्था में हिलाते हुअे स्वीकृतिसूचक ग्रीवा को थोडा झुकाकर अुसने 'सब ठीक है' अैसा सूचित किया। अिस से रमाबाअी की जान में जान आअी ! चिंता जिस वेग से न्यून हुअी, अुत्सुकता अुसी वेग से द्विगुण हो गअी। "तो बुलवाअिये न अुसे, यहाँ कहीं भी वह नजर नहीं आ रही, क्या बात है ? जल्दी मेरे पास ले आअिये अुसे ! " अैसे विकल कंठ से वह प्रार्थना करने लगी। शिष्य नें आकृति पर अैसा आविर्भाव लाकर कि 'निरुपाय होकर कुछ न कुछ बोलना ही चाहिये–अतः बोल रहा हूँ–, अुत्तर दिया––

"माताजी, गुरुमहाराज अभी बुलाते ही हैं आपको ! घबराअिये मत ! गडबड भी मत मचाना ! "

जिस तरह योगानंदमहाराज कम बोलते थे, वैसाही अुनके शिष्यों को भी आचरण करना पडता था। अुनकी आज्ञाके अतिरिक्त वे न किसी से

कोअी प्रश्न पूछ सकते थे न अुसका वाचिक अुत्तर ही दे सकते थे। जो लोग मिलने आते थे अुन्हें भी संतमहाराज जितने प्रश्न पूछने दें अुतने ही पूछने का अधिकार था। वहाँ की यह प्रथा नायडूबाअी को मालूम थी। अुन्हों ने अिशारे से रमाबाअी को रोकते हुअे कहा ' " थोडी देर चुप रहिये ! "

अितने में महंत की कोठरी के दरवाजे खुले। दोचार प्रश्नार्थी गृहस्थ बाहर निकले। अुन दोनों को शिष्य अंदर लेगया। पर मालती वहाँ भी नहीं नजर आअी ! जब रमाबाअी को अिशारा किया गया–' कहिये ' तब अुन्होंने हाथ जोड कर पूछा,

" मेरी लडकी मालती को आपने कल की भीड में से बाहर निकाल अपने पास सुरक्षित रखकर मुझपर जो अुपकार किया है, अुसे मैं कभी भूलूंगी नहीं। मैं अुसे लेने आअी हूँ। कहाँ है मेरी मालती ? "

महंत के अिशारेपर शिष्य बोला,

" माताजी, आपकी लडकी को मैं भीड में से बाहर लाया और आपके घर की ओर पहुँचाने के लिये ला भी रहा था, पर वह अपने परिचय के अेक शख्स के साथ यह कह कर चली गअी कि, मैं अब अपने आप घर चली जाअूंगी। अुसने यह भी कहा कि, " वह मेरा निकट का संबंधी है। "

" मतलब ? वह कौन ? " बुझता हुआ घर फिर भडक जाय वैसे ही अुनकी बुझने को आअी हुअी चिंताओं की ज्वाला अुनके हृदय में अेकबार पुनः जटाल रूप में भभक अुठी और वे अत्यंत आर्तवाणी में पूछने लगीं, "महा-राज, यहाँ हमारा कोअी संबंधी नहीं है। महाराज, कुछ न कुछ घात होगया है ! महाराज—"

निश्चयी मुद्रा से अपने हाथ की तर्जनी अुठा कर महंत ने अुस स्त्री को "ठहरिये ' का अिशारा किया। रमाबाअी का वह असंवार्य भावावेग भी अुस तर्जनापूर्ण किंतु सहानुभूतियुक्त अिशारे से तत्काल संवृत होगया। अुनके वे वाक्य, जो अेक के बाद अेक आकर बाहर निकलने के लिये अुनके ओठों पर अेकत्र हो रहे थे, वहीं के वहीं ठहर गये !

महंत ने अपनी आँखों को अर्ध निमीलित करके ध्यानमुद्रा का थोडी देरतक अभिनय किया। तत्पश्चात् अत्यंत दयार्द्र स्वर में बोलना शुरू किया,

" मय्या, तेरी लडकी नहीं खोअी मेरी खोअी है! परमेश्वर की अिच्छा होगी तो देखो, अभी मैं अुसे खोज निकालता हूँ! पर अेक बात है, जितना पूछूं अुतना ही बोल, दीखे अुतनाही देख, बोलूं अुतना ही सुन, पहले अपनी सारी मनोवृत्ति मुझे सौंप दे! अेक भी तेरा अपना विचार मनमें न आने दे! दे दिया न, मुझे अपना सारा मन रिक्त करके?"

" दिया महाराज!" अैसा कहकर रमादेवी सचमुच शून्यमनस्क होगअीं और महंत की चेष्टाओं की ओर टक बांध कर देखती रहीं!

शिष्य ने गुरूजी के संकेतानुसार अेक साफ परात लाकर सामने रखदी। अुसमें लबालब पानी भर दिया अुस परात के कुछ अूपर अेक साफ आअीना दीवार पर टाँग दिया। अेक समअी (दियादानी) जला कर पास रखदी। महंत योगानंदजी ने मंत्रोच्चारण करके अेक चमसाभर पानी आँखों पर छिडका—चारों ओर छिडका और अेकाग्र चित्त हो मंत्र का जाप करते हुअे वे अुस परात में विद्यमान पानी की ओर टकटकी बाँधे देखते रहे। सारे लोग अपनी साँस तक साधकर निस्तब्ध होगये।

थोडी ही देर में महंत ने अपनी गरदन अूपर अुठाअी और नायडूबाअी से पूछा,

" अिनका अेक बडा लडका भी है न?"

रमाबाअी चमक गअीं! 'अिन्हें कैसे मालूम पडा? सचमुच अंतर्ज्ञानी है यह पुरुष!'

पर नायडूबाअी को विशेष अचरज नहीं हुआ. वे बोलीं.

" हां, मैंने वह पहले स्वयं ही आपको बतलाया था कि रमाबाअी का अेक बडा बेटा था, वह लडाअी पर गया था और वहीं वह मार डाला गया था—अुस बातको बीते अब ५–६ बरस का अरसा होगया!"

" पर वह मारा नहीं गया है। मैं यही कह रहा था कि, अिनका वह बडा बेटा जीवित है, और अच्छा हट्टा कट्टा है। यह देखो, मेरे सामने जैसे तुम लोग बैठे हो वैसे वह प्रत्यक्ष बैठा है—बोल रहा है!"

महंत के प्रत्येक वाक्य के साथ साथ रमाबाअी ही के नहीं वरंच, नायडूबाअी के शरीर में भी आश्चर्य की बिजली कौंधती चली गअी! रमाबाअी थरथराती हुअी आवाज में बोल गअीं.

" मेरा बेटा ! जीवित ! परमेश्वर, तेरे मुँह में मिश्री पडे ! "

नायडूबाओी आश्चर्य के पाश में से अपने को थोडासा छुडाती हुओी बोलीं, "पर वह अिन्हीं का पुत्र है यह किस आधारपर ? क्षमा हो, पर मिथ्याभास—"

" व्यर्थ का तर्क सार हीन है ! सुनो, बताता हूँ, वह अिन्हीं का पुत्र कैसे है ? अुसके माथे पर अेक घाव का गहरा चिन्ह है ! क्यों था न वैसा ?"

नायडूबाओी को अिस बारे मे कुछभी ज्ञान नहीं था। अतः अुन्होने रमाबाओी की ओर देखा। रमाबाओी हिचकिचाओीं; क्यों कि अुनके पुत्र के माथेपर किसी भी किस्म का घाव का चिन्ह नहीं था। यदि वह नहीं था अैसा कहें तो महंत खोटा ठहरेगा और महंत का अंतर्ज्ञान झूठा साबित होकर मृतपुत्र के पुनर्जीवित होने तथा हृत कन्या की प्राप्ति की अत्यधिक समीप आओी हुओी सुखद शक्यता भी पुनः संशय में पड जायगी !

" न हो तो साफ अिनकार कर दो, हिचकिचाओ नहीं। " महंत ने टोका!

" अुस किस्म का कोओी भी घाव का चिन्ह अुसके माथे पर नहीं था " रमाबाओी विमोहाविष्ट मनःस्थिति में अेकाअेक बोल गओीं।

" अच्छी तरह याद कर, सेना में भर्ती हो जाने के बाद तेरा बेटा, लडाओी पर गया था न, हां , ठीक है, यह घाव वहीं लगा है ! "

" ओहो, ठीक है, महाराज, याद आया, बिलकुल सही ! अपने आखीर के खत में अुसने लिखा था कि अुसके माथे पर चोट आगओी है, सच्च मुच ! आपका अंतर्ज्ञान त्रिकाल सत्य है ! "

खुद रमाबाओी को भी जिसकी याद नहीं थी तथा अुन सबमें से किसी को पता तक न था, वह वृत्तांत अिस महंत को मालूम हो—वहभी अितने अधिक तंतुबद्ध स्वरूप में ? और सत्य साबित हो ? अत्यंत सहजगत्या ? नायडूबाओी चकित हो गओीं। रमाबाओी के सदृश ही महंत पर अब नायडूबाओी का भी श्रद्धाभाव न बैठे—यह असंभव था। वे अेकदम परकीय अेवं अपरिचित थीं। महंत ने अितने वेगसे अुस पुत्र की अितनी निशानियाँ तथा घर की जानकारी बताओी कि, अवश्य ही अुसका पुत्र अुसकी आँखों के समक्ष अुसकी अंतर्दृष्टि

में दीख रहा होगा ।---पाखंड का पाखंड भी जिससे अिनकार नहीं कर सकता था !

रमाबाअी के अचरज का तो ठिकाना न रहा। अपने पुत्रके जीवित रहने के समाचार से आनंद की लहरों द्वारा अुनका हृदय अितनी हिलकोरियाँ खाने लगा कि थोडी देर के लिये मालती के खो जाने की याद भी बिला गअी। अपहृत कन्यका के अन्वेषण में लगी हुअी मां को अुसका चिर दिवंगत पुत्र जीवित मिल गया !

" पर कहने की बात तो अभी बाकी ही है।" महंत झटपट आगे कहने लगा, अुस तुम्हारे पुत्र का यह मित्र देखो, वह और, हां यह देखो, मालती आगअी ! ठीक ! नागपुर की ओर ही तुम्हारा घर है न ? हां, देखो, अुस जगह मालती अुसके साथ प्रेम का वार्तालाप कर रही है। यह ही है वह शख्स ! कल अुसी के साथ मालती गअी ! हां बिलकुल आनंद के साथ चली है देखो ! बिलकुल जैसे तुम लोग मुझे यहाँ दीखते हो, और यह जैसे सच है, वैसे ही वह भी मुझे दीख रही है और वह भी अुतना ही सच है ! निकले ! रेलगाडी छूटी ! क्या ? अवपर अस्पष्ट ! पर नागपुर की ओर ! मालती अपने प्रियकर के साथ नागपुर की ओर चली गअी है ! —ह्रोम् ह्रीम् ह्रूम् वषट् ! नेत्रत्रयाय फट् ! "

अेकाग्र चित्त के अवधान से परिश्रांत हुआ हुआ वह महंत मंत्रोच्चारण-समकालमेव शनकैः हरिणाजिनपर मुद्रित-नेत्र पड गया !

शिष्य ने अनेक प्रश्नों और जिज्ञासाओं से आक्रांत चित्त अुन दोनों स्त्रियों को अिशारे से चुप रहने के लिये कहकर वह यंत्र तोड डाला। अुसके साथही न जाने कहीं से अेक आवाज गूँजती गूँजती चली गअी और घंटों का अेक समूहित निनाद खनखनाने के पश्चात् क्रमेण मंद पड गया। परात, समअी (दियादानी), आअीना प्रभृति पदार्थ झटपट अपनी अपनी जगहों पर अुस शिष्य ने रख दिये ! हवा करते हुअे कुछ देर वह गुरुजी के पास बैठा और अुन स्त्रियों से कहना शुरू किया,

" अब अिससे अधिक कुछ कहना संभव नहीं है। स्फूर्ति अुतर चुकी है। केवल 'आगे क्या करना चाहिये–' यह सवाल पूछना हो तो पूछो। योगकी तंद्रा अुतरने से पहले पहले गुरुजी ने यदि कुछ कहा तो अुतना ही सुनना

चाहिये, और किसी प्रकार की चर्चा न करते हुअे लौट जाना चाहिये । कल की कल ! "

रमाबाअी को अेक ही साँस में अेकसौ सवाल पूछने के थे—महंत की बताअी हुअी बातों ने अुनके हृदय में अितना अधिक चितायुक्त विचारों का बवंडर खडा कर दिया था ! पर निरुपाय ! अेक अुत्तर ने अुन सभी प्रश्नों को वहीं का वहीं जमाकर बरफ बना डाला । वह अुत्तर था अुस अुग्र शिष्य का ' चुप ' रहने का अिशारा ! फलतः जिस अेक प्रश्न के पूछने की अनुज्ञा मिली थी वही प्रश्न रमाबाअीने आकुल होकर पूछा,

" अब हम आगे क्या करें जिस से यह संकट टल जाय ? महाराज, कृपा करके—"

शिष्य ने " हैं ! " कह कर फिर अुंगली का अिशारा किया । रमाबाअी के वाक्य की लंबाअी ठहराये हुअे नाप से आगे बढ रही थी ।

महंत ने नींद के नशे में ही शरीर को थोडा हिलाया डुलाया और त्रुटित अेवं विसंगत शब्दों में अस्पष्ट बोलने लगा,

" हां ?—आगे ! अच्छा ! किसको भी अिधर अुधर मत बोलो ! बोलोगे तो मालती बची खुची लाज बिसरा कर तुम्हारी दुश्मन बन जायगी—यहां मालती के खोने के बारे में किसीसे कुछ न कहना ! अबी के अबी थेट नागपुर को जाव ! लडकी मैदान में मिलेगी ! पर देर करोगी यहां—अेक रात बिताओगी—तो मिलने की नहीं ! नागपुर से—लडकी—बस, चलदेगी दूर दूर दूर ! जाव जल्दी—नागपुर—मैदान में ! देख देख, देख !! यह देखो, मालती ! आ आऽ आऽ बेटा,—आः ! मांके पास जा ! "

महंत निश्चेष्ट पड गये ! शिष्य बोला, " माताजी, टलगया तुम्हारा संकट ! सुनी न तुमने अभी गुरुजी की बात ! वे साक्षात्कार के शब्द ! अुन शब्दों के अनुसार काम करोगे तो लडकी वापस मिल जायगी—चलती हुअी आ जायगी । अिस प्रांत में, अिस जगह किसीसे कुछ न कहते हुअे—ढिंढोरा न पीटते हुअे आज के आज निकल कर नागपुर जा पहुँचो ! लोगों में बदनामी होगी । वह मालती और अधिक निर्लज्ज होकर दूर भाग न जायें अैसी अिच्छा हो तो अेक शब्द न निकालते हुअे जबतक वह नागपुर में है तबतक तीन चार दिनमें अुसे जा पकडो । बस्—अच्छा है आअिये ! हरे, हरे, हरे,

यह क्या, फल–दक्षिणा ? हरे, हरे, माता, फूल तक दूसरे का अिस देवता को चलता नहीं ! यह महंत अेक अलौकिक साधु है ! वैसे तो लाखों तुम देखते हैं ! परंतु माताजी, यह तो साक्षात्कारी पुरुष ! अच्छा चलिये !–– अं हं, अब अेक शब्द अधिक बोलना नहीं ! बाहर––!"

शिष्य के अुस आखिरी शब्दमें अितनी ठसक भरी हुअी थी कि अब अगर बाहर न निकलें तो धक्का ही मार बैठेगा ! वे दोनों नमस्कार करके फल और दक्षिणा वापस ले चुपचाप अुन्हीं कदमों से बाहर निकल आअीं, चुपचाप मंदिर से बाहर आअीं। रास्ते पर आतेही रमाबाअी कुछ बोलना चाहने लगीं अुतने ही में नायडूबाअीने सचेत किया––

"अं हं ! रास्तेपर नहीं। जो कुछ बोलना हो वह घर में !"

नायडूबाअी के ही घरमें पहले वे लोग गये ! जाते ही नायडूबाअी ने पूछा,

"है क्या वह शख्स तुम्हारी जान पहिचान का ? तुम्हारे लडके का कोअी मित्र तुम्हारी लडकी के साथ अैसा निर्लज्ज व्यवहार करेगा क्या ? मालती किसी के प्रणय पाशमें थोडी सी फँसी हुअी थी क्या ? और तुमने अुसे अिनकार किया था क्या ?"

सबेरे से लेकर अबतक रमाबाअी का मस्तिष्क अितने चमत्कारपूर्ण धक्कों से हिलता आया था कि अब अुनके मस्तिष्क की विचारशक्ति ही अेकदम बंद पड गअी थी। वे नायडूबाअी के आखिरी सवाल से तो चौंक ही गअीं और बोलीं––

"नहं तो, अपनी मालती को मैं ने कभी भी अिस तरह अुलटा सुलटा बोलते नहीं सुना। तब ना कैसी और हां कैसी ? अब, जब कभी अपनी सहेलियों के साथ घूमने फिरने बाहर जाती तो वह सामान्यत: मंदिरों में जाती, कभी नाटक देखने भी गअी होगी–पर अैसा कोअी पुरुष अुसके परिचय का नहीं था। अैसी हालत में वह मेरे लडके का मित्र कहां से ?–मैं तो क्या कह सकती हूँ ! जगभर घूमा हुआ मेरा लडका ! पर मालती अैसी निकली ! हायरे दैव !"

"अंहं, दैव के तो देव के समान अुपकार हुअे हैं तुम्हारे अूपर ! पुराणों की कहानियाँ अिस युगमें घटित हुअीं ! तुम्हारे मृत पुत्र का आज पुनर्जन्म हो गया नहीं ? तब खोअी हुअी लडकी के दोबारा मिलनेकी चिंता काहे को ?

में कहती हूँ, तुम अब सारे तर्क वितर्क छोड दो, अुस महंत के अेक अेक करके ठीक साबित हुअे हुअे अद्भुत अंतर्ज्ञान पर विश्वास कर के अुसके द्वारा बताये हुअे मार्ग पर ही जाओ ! ”

“ वैसा कुछ नहीं, तुम आओगी तभी मैं जाअूंगी नागपुर को ” रमाबाअी हठ ठान कर बैठ गअीं ! अपने पैरों पर वे अुठकर खडी ही नहीं हो सकती थीं !

मालती के अुस कीर्तन के भीड भडक्के में खोये जाने का समाचार अुस प्रांत में किसीके भी कान पर न डालते हुअे रमाबाअी और नायडू बाअी दोनों की दोनों आखीरकार, नागपुर की तरफ अुसी दिन निकल गअीं !

‘ बता दे सखी, कौन गली गये श्याम ? ’ : ४

रमाबाअी और नायडूबाअी के तत्काल नागपुरकी तरफ रवाना हो जाने की वजह से तथा मालती के अपहरण के संबंधमें किसी से कुछभी न कहनेकी वजह से, अुनके पडौसियों तक को अिसकी खबर नहीं थी तब अन्य लोगों को तथा पुलिसवालों को खबर कहाँ से रहेगी ?

अुसी दिन रातको योगानंदस्वामी का मथुरावासियों को अंतिम दर्शन होनेवाला था। आखिरी कीर्तन सुनने को मिलनेवाला था। क्योंकि स्वामी-जी का मोर्चा भजन समाप्त होते ही हिलनेवाला था। स्वभावतःही लोगोंकी भीड और दिनों की अपेक्षा ज्यादह थी। अपने चार शिष्योंकी चौकडी के ठीक मध्य में वीणाहस्त योगानंदजी खडे होकर भजन गाने लगे। रंग चढता गया। थोडी देर में स्वामीजी की आज्ञा से वे हजारों लोग खडे होकर नाम-घोष करने लगे, बडे बडे पत्रषवाद्य, मृदंग, झांज-सारंगियाँ और हजारों तालियाँ अेक साथ झांकार करती हुअीं अुस शतकंठ निनादी नामघोष का साथ देने लगीं—महंत भक्ति के आवेश में आकर हाथ अूँचा करके ताल की गति द्रुततर करने के लिये निरंतर अिशारा करने लगे और अुस द्रुततर ताल पर नामघोष का अेकमात्र रण-संभ्रम मचाने लग गये। अुस समय अुस ध्वनि-सिंधु की अुत्ताल अूर्मियों के साथ लोगों के हृदय कंपित हो अुठे और हरकिसी

को अैसा प्रतीत हुआ, मानों अुसका देहभान ही विलुप्त हो गया हो ! भक्ति के आनंद में तल्लीन होकर कितने तो नाचने लगे, कितनों की आँखों से प्रेमाश्रुओं की धारा प्रवाहित हो चली, नामघोष की गर्जना से सारा वातावरण ध्वनिकंपित हो अुठा !

पर अंत में, लय साधकर महंत ने दोनों हाथ अूपर अुठाये और "शांत हो जाअिये" का अिशारा किया। किसी बडे भारी हार्मोनियम का, अैन संगीत के बहार में, भाता ही फूट जाय तो जैसे वह मूक हो जाता है, वैसेही वह विशाल सभा अेकदम निःशब्द होगअी। अेक हल्की सी आवाज भी कहीं नहीं सुनाअी देती थी। प्रत्येक व्यक्ति अुस साधु के मुँह की ओर टक लगा कर देख रहा था तथा किसी नवीन भावरसार्द्र भजन-पद की अुत्कंठापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था।

गाढ निद्रामग्न पक्षियों के कुलाय में से प्राभातिक जागर्ति की प्रथम चिरमधुर गीतरेखा के सदृश अुस निःस्तब्ध सभाकी शांतता में से कुछ क्षण पश्चात् शनकैः अेक सारंगी का मंजुल स्वर पुनः अुद्गत होने लगा। स्वामीजी के भजन का साथ देने वाले शिष्यों ने अुनकी पसंद का मीराबाअी का निम्न पद सारंगी पर रक्खा——

बतादे सखी, कौन गली गये श्याम !
कौन गली गये श्याम ॥ धृ० ॥
गोकुल ढूंढी। वृंदावन ढूंढी।
ढूंढि आयो व्रज धाम ॥ बतादे सखी० ॥ १ ॥

"कौन गली गये श्याम !" यह रसार्द्र चरण अितने मुक्तार्त कंठ से वह भक्त गाने लगा—शब्द शब्दको पर्याय से अूँचे अुठाते हुअे और नीचे ले जाते हुअे अितने मधुर आलाप लेने लगा—कि प्रत्येक के हृदय में अपने अपने प्रियकर की मूर्ति दीखने लगी। वे ही स्वयं अपने प्रिय को खोज रहे हों अैसा भास होने लगा ! 'कौन गली गये श्याम ?' सखे, बताओ न किस गलीमें मेरा प्रियकर छिपा बैठा है ? मैं गोकुल ढूंढ आअी, वृंदावन ढूंढ आअी, व्रज में भी देख लिया पर मेरा प्रियकर दिखाअी नहीं देता ! बताओ ना, वह मनोमोहन कहाँ है ? कौन गली गये श्याम ?

संसारप्रवण तरुण तरुणियों के हृदय में अुनके अैहिक प्रियकरों की स्मृति जाग अुठी और प्रीति की मधुर व्याकुलता सकंप हो कर पूछने लगी "कौन गली गये श्याम ? "

अध्यात्मप्रवण साधु-संत भक्तों के हृदयों को अुनके प्रियकर का आकर्षण व्याकुल करने लगा। यह जीव जन्म जन्म के गोकुल-वृंदावनों में जिसकी खोज करता हुआ, जिसके आकर्षण से खिंचा हुआ, रस-रूप-रंग-स्पर्श के प्रसूनों वाले कुंजों-कुंजों में अुस आनंद-कंद देव की खोज के लिये अनवरत दौडता जा रहा है, अुसके दर्शनों की अुत्कंठा आर्तस्वर से पुकार अुठी 'कौन गली गये श्याम ?" बताओ ना सखे, वह देव कहां है, जिसके आकर्षण से यह जीव विव्हल होकर युग-युगांत से निरंतर दौड रहा है ? जिसकी मुरली के नाद से जीवित रहने की लालसा प्रबल हो अुठती है वही-हां वही-मुरलीधर कहाँ है ? कौन गली गये श्याम ? '

वह रसाल पद चल रहा था ; अितने में कर्णकर्कश दस बारह मोटरों के भोंपू की आवाज सुनाअी दी। अुस सात्त्विक मंजुलता में रसमग्न हुअी सभाको यह आवाज सुनकर अैसा लगा-पुष्पशय्या पर सोने के लिये जातेही अकस्मात् किसी ने कट्ट कर के डस लिया हो ! मंदिर के जिस प्रांगण में यह कीर्तन चलता था, अुसकी तीनों दिशाओं में विद्यमान तीनों दरवाजों पर अुन मोटरों में से दो-दो मोटरें भों भों करती हुअीं घूमकर आखडी हुअीं। योगानंद स्वामीकी कलकीर्ति बहुत दूरतक पहुँची हुअी थी; बडे बडे लोग अपनी अपनी मोटरें लेकर दूर दूर से अुनका कीर्तन श्रवण करने के लिये सदैव आया करते थे। अुन्हीं में से किन्हीं की ये मोटरें होंगीं। तथापि कीर्तन के अैन रंगीन समयमें अिस प्रकार का रसभंगकारी औद्धत्य करते हुअे अिन मोटरवालों को कुछ तो संकोच अनुभव होना ही चाहिये था ! लोगों ने थोडासा त्रस्त होकर आपसमें काना फूंसी की। पर महंत योगानंदजी पूर्ववत् तद्गतेन मनसा गाते रहे।

अितने में अेक तगडा, अुग्र और अूंचा पूरा गृहस्थ (शख्स) प्रांगण के सामने के दरवाजे में से अंदर घुसकर ढिठाअी के साथ रास्ता निकालता हुआ, वाक्पीठ (स्टेज) पर जहाँ महंतजी अपनी भजनी मंडलीके साथ बैठे हुअे थे सीधा अुधर ही को जाने लगा। आसपास के लोग चिल्लाकर अुससे कहने लगे, 'नीचे बैठो' 'ओ महापुरुष' 'अरे बिठाओ नीचे, हाथ पकड कर

बिठाओ अिसे ' पर चिल्लाने या खिल्ली अुडाने की तरफ किंचित् भी ध्यान न देता हुआ वह वाक्पीठ के पास पहुँचा और किसी को न पूछता हुआ ही अूपर चढ गया। भजन के रंगमें मनःपूर्वक रंगे हुअे अेकाध भक्त के शरीर में दैवी आवेश का संचार होता है अथवा किसी अर्ध-विक्षिप्त मनुष्य की प्रचंड जन-संमर्द के देखने से ही वात-भक्षित की सी स्थिति हो जाती है—वह बौराने लगता है ! पर यह गृहस्थ तो अर्धविक्षिप्त भी नहीं मालूम पडता था, बावला भी नहीं मालूम पडता था। स्वच्छ व्यवस्थित वेशविन्यास--तेजस्वी, तथा समंजस मुद्रा थी अुसकी ! अतः वाक्पीठ पर अधिष्ठित होते ही महंत की अुस चौकडी में से अेक शिष्य ने अत्यंत नम्रतापूर्वक प्रश्न किया,

"कहिये , आप क्या चाहते हैं ? अिस तरह अेकदम वाक्पीठ पर चढना सभाविनय के अनुकूल नहीं है ! "

पर अुस गृहस्थ ने अुसे सुना अनसुना करके सीधे महंत के पास पहुँच कर महंत से कहा--

" तुम्हें बाहर अेक बडे महानुभाव मिलने के लिये बुलाते हैं, चलो !"

महंत ने अुस गृहस्थ को स्वतः अुत्तर न देकर शिष्य को अिशारा किया। शिष्य बोला,

" अुन बडे महानुभाव को अंदर आने के लिय कहिये, महंत अेक देव को छोड कर अन्य किसी के भी अभ्युद्गमन के लिये नहीं जाते । "

अुस शिष्य की ओर दुर्लक्ष करके वह गृहस्थ योगानंदसे डपटकर बोला, " तुम्ही को चलना होगा बाहर ! "

अुस डपट को सुनकर महंत भी चमके बिना न रहे ! " भजन की समाप्ति तक हमारा आना न होगा ! " वे थोडे से शंकाग्रस्त हो लडखडाते हुअे बोले ।

" तुम खुद नहीं आते तो मैं तुम्हें लेने के लिये आया हूँ, बोलो चलते हो या नहीं ? "

" हां, यह अुद्धतपना यहाँ नहीं चलेगा ! " शिष्य ने गुस्से में आकर अुस गृहस्थ को फटकारा, " अैसे हैं तो कौन वे अितने बडे महानुभाव, नाम तो बताअिये ! "

" पोलिस सुपरिंटेंडेंट साहब ! "

यह सुनते ही योगानंद स्वामी की वह प्रशांत मुद्रा तथा वह भक्तिशील नख शिखांत आविर्भाव अेक पलक में बदल गया और वह दूसरा ही कोअी. तल्ख-तर्रार-गुस्सैल और झगडालू तबीयत का आदमी नजर आने लगा। बुलाने के लिये आये हुअे शख्स ने पुलिस सुपरिटेंडेंट का नाम भी अभी पूरीतरह नहीं लिया था अुतने ही में अेक वज्र वलोत्कट मुट्ठीका मुक्का अुसकी नाक पर जडकर नीचे जो छलांग मारी, वह अितनी दूर थी कि,–वह लंबा तगडा आदमी नाकपर मुक्के के प्रहार से चक्कर खाकर अपने को सँभालते हुअे अुसके पीछे कूदा तो वह कूद अुसकी आधी दूरी तक भी पहुँच न पाअी ! अुन चारों शिष्यों ने भी अपने धारदार चिमटे हाथ में लिये और योगानंद के पीछे ही वाक्पीठ से नीचे कूद पडे। ठसाठस बैठे हुअे लोगों में गोस्वामियों की अुन धडा धड मारी हुअी छलांगों से अेकदम बडा भारी हल्ला गुल्ला हुआ। चीखते-चिल्लाते अुधर के लोग अुठ खडे हुअे, और धक्का मुक्की शुरू होगअी !

पर यह सब अितने अप्रत्याशित रूपसे तथा शीघ्रता से हुआ कि लोगों की भीड के शोरो शराबा करते हुअे अुठने तक दूसरी तरफ के लोगों को घटना का ठीक ठीक ढंग से ज्ञान भी नहीं हुआ। और जिन लोगों को अितना दीखा कि, धक्का मुक्की शुरू होगअी है, महंत छलांग मारकर लौट रहे हैं, अुन लोगों को भी अिस बात की बिलकुल कल्पना नहीं थी कि अैसा हो क्यों रहा है ? "अरे, बात क्या हुअी ?" हर कोअी अेक दूसरे से जोर जोरसे यही पूछने लगा। यह क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, अिन प्रश्नों के मन में आने तक का भी टाअीम नहीं मिला। धडाधड छलांगें मार कर वह गोस्वामी मंडली भीड में जो घुसी अेकदम अदृश्य सी होगअी ! क्यों कि, सैंकडों लोगों ने आकस्मिक चीखो पुकार की वजह से, धक्का मुक्की करते हुअे, आगे घुसे आकर अुस प्रांगण में अेक अजीबो गरीब हंगामा मचा दिया था। वह अुन गोस्वामियों के लिये फायदे का ही रहा। कोअी बोला– "महंत के शरीर में 'महावीर जी का संचार हुआ ! '—हनुमानजी का संचार हुआ ! अत अेव वे अुडानें भरते हुअे रामचंद्र के देवालय की तरफ दौड रहे हैं ! " कोअी बोला—" किसी बेहूदे ने महंतजी को तकलीफ पहुँचाअी, अत: वे अूब गये ! " अुस प्रशांत भक्तिरस की शांतता में निमग्न होने के कारण कुछ लोग अिस सहसा अुत्पन्न हुअी हुअी चिल्लाहट और गडबडी से अेकदम

बेसुधसे हो गये ! अुस साधु के सुरीले भजन वाले प्रशांत प्रांगण में से अुठाकर किसीने अुन्हें पहलवानों के अखाड़े में लेजाकर पटक दिया हो, अैसा अुस दृश्य परिवर्तन (ट्रांसफर सीन) के होते ही अुन्हें भासने लगा।

अिधर, पुलिस सुपरिंटेंडेंट का संदेसा लानेवाला वह आदमी जिस सामने के दरवाजे से घुसा था अुस दरवाजे की तरफ छलांग न मारते हुअ दूसरे ही दरवाजे की ओर छलांगें मारकर भीड में गायब हो जाने का जो प्रयत्न अुन गोस्वामियों ने किया था वह जानबूझकर ही किया था। अुस दरवाजे की तरफ लगभग अैसे ही लोग बैठाये हुअे थे जो भजन के लिये नियमपूर्वक रोज आया करते थे, जो देखने पर बहुत ही श्रद्धालु दीखते थे और सबसे पहले आकर बडी आस्थाके साथ अपनी अपनी जगह पकड कर बैठा करते थे। अैसा आस्थाशील, कीर्तन-प्रिय समाज जिस दरवाजे पर था, अुसी दरवाजे से बाहर निकलना आसान होगा अैसा महंतने अंदाज लगाया। पुलिस सुपरिटेंडेंट का संदेसा जिस सामनेवाले दरवाजे से आया था अुसके आसपास पुलिस वाले खडे होंगे अैसा सोचकर अुस चतुर महंत ने तथा अुसके शिष्यों ने अुस दरवाजे को छोडकर श्रद्धालु लोगों से भरे हुअे दरवाजे की ओर बढना अुचित समझा। अुस संदेसा लानेवाले आदमी के हाथों से छूटकर वे लोग अुस दरवाजे पर आकर पहुँच भी गये ! अब क्या था ? अेक जोर की छलांग मारने भर की कसर थी कि दरवाजे से बाहर !

अिस निश्चय के साथ वे पांचों गोस्वामी अुस दरवाजेपर जा भिडे और वहाँ विद्यमान श्रद्धालु लोगों से जल्दी से कहा-" रास्ता छोडिये ! "

पर श्रद्धालु लोगों की वह भीड अेक अेक आदमी की कतार बना कर अेक दूसरे से कंधा भिडाये अुन पांचों के चारों ओर अेक वर्तुलाकार दायरे में घेरा डाल कर खडी होगअी। अुनमें से प्रत्येक ने देखते देखते अपनी अपनी पिस्तौलें निकालीं और वे अुस गोस्वामी की ओर तान कर खडे होगये। अुनके मुखिया ने योगानंद को हुक्म दिया,

" खडा रह यहीं, वरना अेक पैर आगे बढाया तो ढेर कर दिया जायगा ! "

वैष्णवी तिलक, वैष्णवी मुद्रा, माला, भगवे कपडे प्रभृति धारण किये हुअे, भजनमें तल्लीन नजर आने वाले, नित्य नियमपूर्वक प्रारंभ से लेकर अंततक भोंदुओं की सी शकल बनाकर बैठनेवाले और सीधे सादे नजर आने

वाले ये रोज के श्रोता लोग आज अेकाअेक पिस्तौलें तान कर अुस बेचारे साधुशील सत्पुरुष पर अुलट पडे ! देवावतारी भगवद्भक्त कहकर प्रत्यह जिस के पैरों पर माथा टेकते थे आज अुसी की जान लेने के लिये खडे होगये "आखिर यह मामला है क्या ? " दिङ्मूढ हुअे लोग आपस में कानाफूसी करने लगे ! सैंकडों भयभीत होकर प्रांगण में से बाहर निकल कर जाने लगे। कुछ लोगों के मन में सहानुभूति अुत्पन्न हुअी और अुन्होंने अुस धर्मपरायण भक्त को छुडाने के लिये दंगा करने की ठानी।

पर अुस महंत के ध्यान में पूरी तरह से आगया कि, ये नाना प्रकार के वेशविन्यास करके आनेवाले तीस चालीस सी. आअी. डी के लोगही अिन तीनों दरवाजों पर प्रत्यह आकर भजनमें बैठा करते होंगे ! अुनका कपट अपने पर प्रकट नहीं हो पाया यह ठीक है, अब हम पूरी तरह अुनके पंजे में आ पडे हैं यह ठीक है– तथापि अन्तिम अुपाय समझ कर अुसने अत्यंत कर्कश और अूँची आवाज में अुस भीड के लोगों को संबोधन करते हुअे कहा,

"यहां धर्म का सच्चा अभिमानी कोअी नहीं है ? भगवान्, अब तू ही अपने भक्त की रक्षा के लिये दौड ! "

यह सुनते ही कुछ भोले भाले गुस्से में आगये ! अुस महंत के बारे में अुन्हें जो कुछ जानकारी थी, वह अुसमें असीम श्रद्धा को अुत्पन्न करनेवाली थी! अुस अपरिग्रही निर्लोभी, स्वधर्म प्रचारक भक्त पर किसे मालूम अीसाअी मिशनरियों ने कोअी षड्यन्त्र रचा हो– अैसी भावना से कुछ साहसी स्वधर्माभिमानी लोगों का पारा चढ गया ! पुलिस वालों पर दो तीन पत्थर भी आकर गिरे–गालियों की बौछार का तो कहना ही क्या है?

अितने में मुख्यद्वार से लाठीबंद पोलीसों की टुकडी के साथ स्वतः पोलिस सुपरिटेंडेंट अंदर आये, वाक्पीठ पर चढे और रोबदार आवाज में सब लोगों को संबोधित करते हुअे हुक्म देने लगे––

"नगरवासियो, योगानंद नामधारी अिस शख्स ने यहाँ जो आजपर्यंत आडंबर रचा है, अुसपर से आप जैसे कायदा-पसंद नागरिकों को यह लगना स्वाभाविक है कि यह कोअी बडा भारी भगवद्भक्त होगा। पर हमें अिसके बारे में जो अित्तिला मिली है अुससे आप लोगों की समझ में आसानी से आजायगा कि अिस शख्स पर श्रद्धा रखना नहीं था अिस साधु का भेस बनाकर

विचरनेवाले शख्स का असली नाम सुनकर आपको तअज्जुब हुअे बगैर नहीं रहेगा। अिस योगानंद स्वामी का असली नाम रफिअुद्दिन अहमद है। यह पंजाबी मुसलमान है। अिसपर पहले अत्यंत क्रूरतापूर्वक दोबार डाके जनी करने का आरोप सिद्ध होकर अिसको पहले पंजाब में सात बरस की कालेपानी की सजा हुअी थी। अुसके मुताबिक अिसको कालेपानी भेज दिया गया। वहाँ से चार बरस बाद यह निकल भागा। गुजिश्ता दो बरसों में अिसने अिन चार चेलों की तरह अनेक दुष्ट लोगों को जमा करके फिर अनेक चोरियाँ डाकेजनी और अपहरण सदृश भयंकर अुपद्रव मचाने शुरू कर दिये हैं। गुजिश्ता साल अिसकी टोली को पुलिसवालों ने जंगल में घेर लिया था। अुस टोली ने पुलिसवालों पर गोलियाँ चलाअीं और अिसने पुलिस के अफसर को घायल कर दिया और अुसके घोडे पर सवार होकर यह दुष्ट साहसी भाग खडा हुआ! अुसके बाद वह लापता होगया। यह वही है, अैसा हमें जब संशय आया तब हमने, अिसके मथुरा आने के बाद अपने गुप्त पुलिसवालों को किस्म-किस्म के भेस पहनवाकर अिसपर पहरा बिठा दिया। ताकि अिसके बारे में पूरी तौर से जानकारी हासिल कर के वारंट निकलते ही अिसके समस्त साथियों के साथ अिसको पकडा जा सके। अिसके बारे में सब किस्म की जान कारी हमने हासिल की। अिसके साथियों से अिसकी जो निशानियाँ मालूम पडीं थीं अुस के आधारपर अिसे पूरी तरह पहचान लिया। अिलाहाबाद से अिसके नाम जो वारंट जारी हुआ है, वह यह है, यह आज ही सांझ को हमारे पास अिलाहाबाद से आया है। और यह टोली आज ही भजन के खत्म होने बाद गुप्त होकर निकलनेवाली है, यह सूचना हमें मिलते ही भजन के बीचमें ही अिसको गिरफ्तार करना निश्चित हुआ। ये जबरदस्त लोग अकेले दुकेले को कुछ नहीं गिनेंगे, यह हमें पहले ही मालूम था। अतः हमें अिन पर अिस तरह सशस्त्र छापा मारना पडा। आप लोग यह समझ बैठेंगे कि अेक साधु पर जुल्म हो रहा है, और अिस विपरीत समझ के कारण किसी किस्म का दंगा फसाद न होने पाये अिसी लिये हमें अिस बारे में अितना स्पष्टीकरण करना की आवश्यकता महसूस हुअी। अब आप लोग दस मिनिट के अंदर अिस मैदान को खाली करदें। अुसी तरह रास्ते पर भी कल सबेरे तक किसी किस्म का जमाव नहीं होना चाहिये। नहीं तो लाठी चलाकर पुलिसवालों को अुसे

तितर बितर करना पडेगा । वारंट के मुताबिक हमें अपना फर्ज पूरा करना ही चाहिये ! अुसका तथ्यातथ्य निर्णय करना न्यायालय का काम है ! पोलीस ! दस मिनिटों के अंदर अिन पांचों अपराधियों को बेडी पहना कर जेल की तरफ ले चलो, और यह मैदान साफ कर दो !! "

दस मिनिट के अंदर अंदर अुन पांचों को हथकडियाँ और बेडियाँ पहना कर जेल पहुँचा दिया गया । और वह सारा मजमा खुदबखुद तितर-बितर होगया—अुस मैदान में अब अेक भी आदमी नजर नहीं आता था ।

पर वह पकडा गया गोस्वामी वास्तवमें कौन था ? स्वामी योगानंद या रफिअुद्दीन अहमद ?

और मालती ? अुसका क्या हुआ ?

अलाहाबाद की जेल है यह ! : : : ५

अलाहाबाद के कैदखाने के कैदियों पर जिसे मुख्य जमादार नियुक्त किया हुआ था, अुसे अिस बातका सख्त हुक्म मिला था कि, आज कालेपानी से भागकर आया हुआ पक्का डाकू रफीअुद्दीन अपने साथियों के साथ कैदखाने में लाया जानेवाला है ; अुसके आने से पहले यहाँ के कैदियों को अेक शब्द भी मालूम नहीं होना चाहिये। और अुसके वास्ते पक्का अितजाम किया जाना चाहिये । " अगर अिस बारे में थोडी सी भी गफलत हुअी तो याद रखो, जमादार, तुम्हारे पैरों में बेडियाँ पड जावेंगी ! " अैसा कैदखाने के साहब नें जता दिया था ।

जेलर साहब के सामने तन कर खडा हुआ वह मुसलमान जमादार अंग्रेजी पद्धति का सैनिक सैल्यूट करके बोला,

" जी हुजूर, वह बडा डाकू होगा ! पर मैंनें अैसे छप्पन डाकुओं को अपने आगे पानी भरने लगाया है ! वह कालेपानी से भागकर आया होगा; पर अुससे कहियेगा कि यह लालपानी है ! अिस डंडे की अेक चोट

से खून की अुलटी कराने लगाअूंगा !–कमर तोड कर रख दूंगा–कमर ! ” जमादार ने कमर में लटके हुअे डंडे को हाथ में लेकर हवा में अेक तडाखा भी जमा दिया !

“ अंहूं ! मारना वारना करने की जरूरत नहीं, समझे ? वे लोग अपने प्राणों पर अुदार हुअे हुअे गुंडे हैं !––पुचकार कर काम निकालना होगा–तब है तुम्हारी करामात ! मारपीट करते हो तुम और भुगतना पडता है हमें ! ”

“ अच्छा हुजूर, ये लीजिये, लटकाये देता हूँ यह डंडा अपने कमर से–अब से अपनी लचकीली जीभ ही का अिस्तेमाल करूंगा ! हुजूर, मेरी जीभ अिस डंडे से ज्यादा करामाती है ! अिस डंडे से तो आदमी सिर्फ घायल होता है, यह जीभ तो अुसे जिंदा ही मार डालती है ! तलवार से गर्दन तोडकर जान ली जा सकती है, मगर खून बहता है ; जीभ से गर्दन को सही सलामत रखकर भी जान ली जा सकती है ! और प्रमाण के लिये खून का कतरा तक गिरा हुआ मिलेगा नहीं । तभी तलवार से की गअी हत्या पकड में आ जाती है ; पर जिसे जीभ द्वारा जान लेनी आती है, अुसे सौ हत्याओं की छूट है ! ”

“ चुप ! लगा बकने को !––जाव ! तेरे डंडे की तरह तेरी जीभ को भी सँभालते सँभालते नाक में दम आ जाता है मेरी ! ”

“ अच्छा साहब, जैसे डंडा कमरसे लटका लिया है वैसे ही यह लीजिये, जीभ भी लटका ली अपनी तालू से ! ” फिर अेकबार मुजरा ठोक कर जमादार बाहर लौटा !

“ अे ! जमादार !–अंदर आव, हमारा बूट किधर है आज ? Damn fool ! भूल गया तुम ? जाव लाव ! ”

बंदीपाल (जेलर) की वह गाली अपने विस्मरण स्वभाव की कीमत करनेवाला अेक अंगरेजी शब्द है, अिस संतोष से जमादार ने अुसे सुना ; लजाकर जीभ बाहर निकाली–दांतों से काटी, तत्काल अुस अभिनय से भी लज्जित हो मुँहपर हाथ रखकर वह हँसा और अुसके साथ ही साथ चोर की तरह बाहर जाकर बूट ले अंदर चला आया ! अपने मुँह पोंछने से लेकर नाक छिनकने तक के सभी कामों में अुपयोगी पडनेवाला रुमाल निकाल कर बूटों को झाड

पोंछकर अुस बंदिपाल के सामने धीरे से रक्खा और रुमाल साफ करनें के लिये थोडा झटकने लगा, त्योंही मुँह की सिगरेट निकालकर बंदिपाल बोला,

"अरे झटकता क्या है, रुमाल को ! मेरे बूटों से तेरा रुमाल मैला नहीं हुआ बल्कि तेरे गलीज रुमाल से ये मेरे बूट ही मैले होगये होंगे ! "

"सचबात है हुजूर ! आपका बूट ही मेरा अन्नदाता है साहब ! आप के पैतानों की सेवा बारह बरस से करता आया हूँ, तभी तो आज सिपाही का जमादार होगया है यह बंदा ! "

यह फिर बकते तो नहीं न बैठेगा, अिस भीति से अुसे कोअी भी नया विषय न मिल सके यह सोचकर, पास के टाअिप करते बैठे हुअे क्लार्क को सम्बोधित करके जेलर साहब बोले,

"अच्छा दादा, लाव तुम अपने कागज। दस्तखत वगैरे काहे पर करने हैं सो बताओ, देखें ! "

जमादार को चला गया देखते ही वह अधगोरा जेलर अुस क्लार्क की ओर देखते हुअे, पर मन ही मन बोला,

"*क्या मिठबोला है यह गर्दन मारनेवाला ! अभी वे कैदखाने के डाकू भले मगर अिन सिपाहियों की शक्लमें अिन डाकुओं से तो भगवान् ही बचाये !* "

क्लार्क को यह मालूम था ही कि, भले ही जेलर ने नाम न लिया हो; पर अुसकी भी गणना दूसरे ही वर्ग में है, अैसा जेलर साहब अुसी वाक्य में कह रहे हैं। जेलर क्लार्क के समीप अुन सिपाहियों के संबंध में जो मत व्यक्त कर रहा था वही मत वे क्लार्क दादा और सिपाही अेकांत में बैठने पर अुन जेलर साहब के बारे में भी व्यक्त किया करते थे। अत: सदा जैसे को तैसा व्यवहार होते रहने की वजह से पीठ पीछे कहे गये शब्दों से कोअी भी व्यथा अनुभव नहीं करना था। प्रत्येक व्यक्ति के आंतरिक छिद्र प्रत्येक को विदित होने के कारण और प्रत्येक की बंद मुट्ठीमें प्रत्येक का थोडा बहुत हिस्सा होने के कारण गत बारह बरसों से वह जमादार, जेलर और क्लार्क सभी अेक संयुक्त कुटुंब की तरह अुस जेल रूपी रियासत का कारोबार चलाते थे। नये नये पर्यवेक्षक (सुपरिटेंडेंट) आते और जाते; पर अुस बंदी गृह की तरह ही जमादार, दादा, और जेलर का वह संमिलित कुटुंब अटल का अटल ही रहता!

बंदिपाल की आज्ञा सुनकर जमादार कैदखाने के अंदर जाते जाते मन में विचार कर रहा था। अुसने दो लोहे के फाटक खुलवा कर अंतवर्ती अेक मध्यभागस्थित मैदान में पैर रखते ही हांक मारी,

" शिवराम ! शिवराम हवालदार किधर है ? बुलाव अुनको ! "

थोडी ही देरमें शिवराम हवालदार हाँफते हुअे, टाप पर टाप मारकर, तनकर खडे होकर, मुजरा ठोक कर, जमादार के सामने खडा हुआ। सब लोगों का 'चले जाव' हो चुकने के बाद जमादार अकेले शिवराम से बोला,

" शिवराम ! आज कालेपानी से भागकर आया हुआ कोअी डाकू अपने साथियों के साथ यहाँ लाया जानेवाला है। जेलर साहब ने सख्त हुक्म दिया है कि यह खबर किसी के कानों पर न पडने पाये ! "

" अच्छा, जमादार जी ! "

" अच्छी तरह सुन, अुस खतरनाक डाकू को अुधरके फाँसी के चौक में तनहाअी में बंद करना है, तेरे और मेरे सिवा और किसी को अंदर नहीं जाने देना है ! "

" जेलर साहब या सुपरिंटेंडेंट साहब को भी ? "

" गंवारपना मत कर ! ठट्ठे में, दाँत जिस तरह दिखाअी देते हैं, अुसी तरह झड भी जाते हैं अेकाध वक्त ! कोअी झाडूवाला, रसोअिया, कहार, अंदर ले जाना हो तो हम दोनों में से किसी अेक का अुस वक्त हाजिर रहना लाजमी है ! अगर किसी को अुसके साथ बातचीत करते हुअे देखा, तो याद रख, गला ही दबा डालूंगा तेरा ! " अिस तरह सख्ती से बोल बैठने के बाद अुस अभिनयपटु जमादार ने अपने अुस घनिष्टतायुक्त हवालदार के गले में हाथ डाला.

" किसी को भी बातचीत करने न दीजियो ! "

" जरूर, जरूर, मगर अभी काहे को गला दबाये डालते हैं मेरा— किसी को अुसके साथ बातचीत करने दूं तब न, दबाअियेगा ? देखें, कौन बदमाश अुस डाकू से बातचीत करने आता है—फिर चाहे वह अिस कैदखाने का बडा जमादार ही क्यों न हो ! —नहीं नहीं जमादार साहब, माफी चाहता हूँ ! आपका हुक्म मैं कैसे लफ्ज-ब-लफ्ज बजा लाअूंगा यह कहने की झोंक में वैसा बोल गया ! "

" अरे, पर मुझे जो चाहिये---अेक नुक्त-अे नजर से तू वही बोल गया है बाबा ! यह देख शिवराम, जो खुशकिस्मती के बारे में बोलना है, वह सब पहले पहल तू ही बोलियो ! जब तक तू पूरी तौर पर सब काम तय करके नहीं आयेगा, मैं अपनी जुबान से अेक लफ्ज भी नहीं निकालूंगा । अिस काम में तू ही है पक्का दांव पेंच जाननेवाला ! तभी तो मैं तुझे हमेशा अैसी विश्वास की जगहों पर तैनात करता हूँ ! यह देख जब कभी अैसा कोअी असली डाकू पहुँचता है यहाँ, तभी हमारी कुछ खीर पकती है ! अैसे आसामी सौ-सवासौ से नीचे तो क्या जायँगे ! अैसे ही लोगों के पास गिन्नियाँ देखने को मिलती हैं–यों रोजमर्रा के छोटे मोटे चोरों के पास क्या रहता है, जो हमारी जेब गरम कर सकें ! वह कैदखाने से भाग न जाय–अिसका पक्का बंदोबस्त रक्खा तो होगया खत्म हमारा सरकारी फर्ज ! यों अंदर ही अंदर, जो मौज अुसको अुडानी हो अुडाने दे---अगर हमारी खाली मुट्ठियों को भर कर वह वैसा करना चाहता हो तो ! मगर खबरदारी से हां !–पहले देख, आसामी कैसा है,---अच्छी तरह टटोल कर---नहीं तो फट् कहते ही ब्रह्महत्या ! आया दिमाग में ? अच्छी बात है, अब जा अंदर ! वह चौक, वह दालान, वह तनहाअी खाली करके, झाडकर, ताला लगा कर रखदे ! वह टोली आज शाम तक आ ही जायगी, पर किसी के सामने अुनके आने के बारे में अेक लफ्ज तक नहीं निकालना ! "

" अेह्, अुस बात की फिक्र ही न कर ! " अैसा आश्वासन देकर शिवराम हवालदार वह फांसीवाला चौक साफ सूफ करने के लिये चला गया। अुसने पहले ही धडक्के में अपने अेक विश्वस्त कैदी को बुलाया । अुस कैदी को आठ-दस बरस की सजा हुअी थी---काम की दिलचस्पी और लियाकत को देखकर अुसे हवालदार के हाथ के नीचे मुकद्दम बना दिया गया था । अुस कैदियों के मुकद्दम को शिवराम हवालदार ने फांसी की सजा मिले हुअे तथा अितर घातपात करनेवाले भयंकर कैदियों को अलग से बंद करने के लिये तय्यार की गअीं अेवं बीच बीच में अिस्तेमाल में लायी जानेवाली कोठरियों के चौक को, दालान को, तथा तनहाअियों को झाड बुहार कर साफ करने का जल्दबाजी का काम बताया और अत्यंत कडाअी के साथ जताया कि,

" आज यह चौक अिस तरह खोलकर रक्खा गया है, अिस बात की

खबर किसी को लगने न पाये! आजतक कभी नहीं रहा अैसा बन्दोबस्त रखना है, बड़े भयंकर डाकू हैं वे लोग!"

मुकद्दम की जिज्ञासा बढ़ चली। मगर अुसने यह सोचकर कि अुन डाकुओं के बारे में सीधे मुँह कुछ पूछने से बात को छिपाने की कोशिश वह और ज्यादा करने लग जायगा; अतः बातको घुमा फिरा कर वह बोला,

"आप भी क्या फरमाते हैं, हवालदारजी, गुजिश्ता साल कालेपानी की सजा पाये हुअे लोगों की टोली जब यहाँ आयी थी, तब काले पानी जाने तक, आपकी दुआ से मैंने ही तो अुन्हें संभाले रक्खा था न? आपने अुनकी चिट्ठियाँ दी थीं, अुन्हें जेल का सामान बेचने के वास्ते बाहर जाने पर अुनके घर किसन पहुँचाया था? 'हलदी' कौन लाया था मुठ्ठीमें भरकर? अिस पठ्ठेने जान पर बीतने वाली कसरत की थी वह हवालदार जी!"

"अरे काले पानी को जाने वाले डाकू की बनिस्बत कालेपानी से भागकर आया हुआ डाकू कितना खतरनाक होगा बाबा!"

"यह कालेपानी से भागकर आया हुआ कोअी डाकू है न, तब?"

"हां, चुप, वह मैं नहीं बताअूंगा—पर क्यों रे मुकद्दम, यह आसामी भी खासा गँठा हो तो अुसकी भी चिट्ठियाँ ले जायगा न, या कालेपानी से आया जान दुम दबा लेगा! जो 'हलदी' मिलेगी अुससे तुझे भी नये दूल्हे की तरह हलदी से भी ज्यादह पीला कर दूंगा!"

मुकद्दम को जो बात चाहिये थी सो सब मालूम पड गअी! "वैसा 'हलदी' का सारा काम मेरी तरफ रहा साहब! कालेपानी से कोअी भाग आया हो तो वह अिन्सान न रहकर भेडिया थोडअी हो जाता है?" (अुस जेलखाने की डिक्शनरी में 'हलदी' का अर्थ सोने की मुहर होता है, यह बताने की जरूरत नहीं!)

मुकद्दम को लेकर हवालदार जी फाँसीवाले दालान में गये। मुकद्दम ने अपने हाथ के नीचे के बडे-बडे कैदियों के जरिये चौक, कमरे वगैरे भराभर साफ करवा लिये और अुन्हें आवश्यक प्रोत्साहन देने के लिये चुनी हुअी गालियों तथा हमेशा की डंडे-मारी की यथायोग्य बौछार करनी शुरू की। यह देखकर, काम ठीक ढंग से चल रहा है, अिस अितमीनान से हवालदार अुन कोठरियों में से अेक में अपना पट्टाबट्टा खोल, पैर पसार कर, फेंटा निकाले आराम लेता

हुआ पड गया । मुकद्दमने अेक कैदी लडके को अुसके शरीर की मालिश करने के लिये नियुक्त कर दिया । अुस मजे की झोंक में दालान के बडे दरवाजे को अंदर से ताला लगाकर बंद करने की जरूरत भी हवालदार को अुतनी महसूस नहीं हुअी !

अितने में जैसे किसी पर भूत सवार होगया हो, वैसे ही आवेशमें दौडते-दौडते जेलर आगे और अुसके पीछे पूरी तरह दौड लगाते हुअे जमादार और दो तीन सिपाही अुस खुले हुअे दरवाजे से भीतर दालान में घुसे ।

" हवालदार, अे, किदर है हवालदार ? " जेलर गरजा ।

" अिदर-अुदर-वे वहाँ ! " गडबडा कर मुकद्दम हकलाया । और हवालदार को अुसके मुकद्दरपर छोडकर—अपने काममें हम लगेहुअे हैं, अैसा दिखाने के लिये कैदियों को ' यह कर ' 'वह कर' हुक्म देने लगा और जमादार से बोला—

' सब कुछ साफ-सूफ, ठीक-ठाक होगया है ! '

अितनेही में वह जेलर " किधर है वो साला! हवालदार! अे हवालदार! " अिस तरह बेलगाम गुरगुराता हुआ अुसी कोठरी के बरामदे पर बूटों की आवाज करता हुआ चढ गया ! अितने ही में वह हवालदार गडबडाकर अुठता हुआ अुस कोठडी के सामने ही दिखाअी दिया! जेलर की पहली गरज के अेकाअेक सुन पडते ही हवालदार के होश पहले ही फाख्ता होगये थे! सँभलकर अुठने की अुसने बहुत कोशिश की—पर अभी वह आधा भी न सँभल पाया था कि, अेकदम जेलर सामने आकर खडा हो गया ! लडका जिस पैर को रगड रहा था अुस पैर की यूनिफार्म की पट्टी खुली हुअी थी, बूट निकाला हुआ था, दूसरे पैर की पट्टी ठीक ढंगसे लपेटी हुअी थी और बूट पहना हुआ था; जल्दबाजी में टोप का सा वह फेंटा सिरपर रखने जाते समय तिरछाही झुका हुआ था, और अुसका सोगा छूटकर किसी पहलवान की तरह कंधेपर से छातीपर झूल रहा था, कमरका पट्टा दूर कोने में पडा हुआ था और फाटकों की तालियों का गुच्छा अुस कैदी लडके के हाथ ही में भूल से लटक रहा था—अैसा अुस हवालदार का अस्तव्यस्त ध्यान बूट पहने हुअे अेक पैरपर ही खडा हुआ देखकर अुस गुस्से में भी अपनी—असली विनोदी वृत्ति के कारण जेलर को हँसी आये बिना न रही !

"क्यों जमादार तुम जो, हमेशा कहा करते हो कि विकट परिस्थिति के कामों में शिवराम हवालदार अेक पैरपर तय्यार रहता है, वह बिलकुल सच है ! देखो, वह अेकही पैरमें पुलिसका पोशाक चढा कर सचमुच अेक ही पैरपर खडा हुआहै! दूसरे पैर में अुसने बूट तक नहीं पहना है! क्यों रे, वह अपना बूट रहित पैर अिस तरह केवल अलगसे अुठा कर पकडने के लिये रखता ही काहेके लिये है अर्थहीन वस्तु की तरह ? ठहर अुसे अभी तोडकर फेंक देता हूँ ! चोर ? " जेलरने गुस्से से लाल होकर हाथकी लकडी का अेक तडाका शिवराम के पैरपर कसकर जमाया !

"मैयारी ! जेलर साहब, पैर पडताहूँ, पर पहले मेरी बात तो सुन लीजिये, चलते चलते मेरे पैरकी पिंडली का गोला अेकदम अैसा चढ गया कि मैं बोंब मारते हुअे जमीनपर ही गिर पडा ! अिस लिये अिस कोठडी में, दबवाकर वह पैरका गोला अुतरवा रहा था। सरकार, कृपालु अिसमें अगर कोअी कसूर हो तो वह माफ कीजिये ! " हवालदारने अेकदम बहाना तो बनाया पर वह बहाना ही रहा !

"माफ ? कामपर रहते हुअे पट्टा फेंक कर फैलकर पड रहा तू यहाँ ! तुझे माफ कर दूं तो कल सारे सिपाहियों के पैरोंकी पिंडलियों के गोले जब मर्जी हुअी तब अिसी तरह अैंठकर चढने लग जायेंगे ! ला वह पट्टा अिधर ! जमादार, सिपाहियों के कमरका यह पट्टा अिसके गलेमें कुत्तेके पट्टेकी तरह अैसे लपेटो, अं-हं, अैसे ! हां ठीक ! और अिस को अिसी हालत में, सारे कैदियों की कतारों में से अुधर ऑफिस की तरफ बडे फाटक के पास ले आओ ! चलाव ! (चलो-आओ) । तेरे बापका—अुस सुपरिंटेंडेंट साहब का मुझे अभी फोन आया है कि, अेक डाकुओंकी पकडी हुअी टोली अभी आनेवाली है,—और तू यहाँ पैर रगडवाते पडा हुआ है क्यों ?—चलाव ! "

सबके सामने अुन हवालदारजीका वह विचित्र स्वांग, अुसके पीछे मुँह पर रुमाल रक्खे हँसनेवाला वह जमादार, अुसके पीछे वह मुकद्दम वे कैदी,—अिस प्रकारका वह जुलूस आगे आगे;—रास्ते में जहाँ जहाँ कैदियों की कतारों में से जाना पडा वहाँ वे कतारें दोनों ओर ठहाका मार कर हँसतीं—और वह तमाशा देखता हुआ मन मनमें हँसनेवाला पर अूपर से गुस्से मे तना हुआ वह अधगोरा जेलर सबसे पीछे;— अैसी वह सवारी कैदखाने के बडे फाटकमें विद्यमान दफ्तर के नजदीक आअी !

अुतनेमें अुस भयानक कैदखाने के अुस मुख्य लोहे के दरवाजे की बडी बडी सींखचों को पकडकर बाहरकी तरफ खडा हुआ अेक गोरा सार्जंट संगीनें और बंदूकें ताने हुअे दस-पांच सिपाहियों के साथ खडा हुआ जेलर को दिखाअी दिया। अुसके पीछेही सुनाअी पडनेवाली बेडियों की खन् खनाहट भी सुनाअी दी। जो डाकुओं की टोली आनेवाली थी सो आभी पहुँची यह बात जेलर के ध्यानमें आअी। सो अिस बाह्य संकटका मुकाबिला करने के लिये गृह-कलह को मिटाकर कार्यतत्पर और विश्वस्त जमादार-हवालदारोंकी अन्तर्गत अेकता करना प्रथम आवश्यक है, अैसा विचार करके अुस कैदखाने की बालिश्तभर राजनीति के बखेडे को दूर करने के अिरादेसे अेक झटके में जेलरने जमादार से कहा,

"शिवराम को छोड दो! बेचारे की भद्द काफी अुड चुकी! अुससे बोलो, आगे मे अैसा न करे!"

जमादार भी वही विनति करनेवाला था। शिवराम कामका आदमी था। अंदरकी मैशीनरी अुसीके हाथों चला करती थी। और अुसमें जेलर महाभाग का भी हिस्सा रहता था। जमादार और जेलर की आँखों-ही आँखों में यह भाषण—बगैर बोले हो चुकासा था ही, मतैक्य जमगयासा था ही। तत्काल शिवराम हवालदार के दोनों बूट, पगडी, पट्टा, चाबियों का गुच्छा—अित्यादि सब अुसके शरीर पर यथा स्थान शोभायमान होने लगे और वह "अे गद्धा, अिधर आव! अे चोर अुपर जाव!" अैसी अनुशासनानुकूल भाषामें आज्ञा देते हुअे अपने हाथ के नीचे काम करनेवाले मुकद्दम कैदियों के बीच, अिस तरह घूमने लगा—जैसे गलीमें जूझनेवाला मुर्ग पुकार मचाता हुआ फिरता है।

कैदखाने का वह विशाल दरवाजा कर्रर्र्, अिस आवाज के साथ खुल गया। सार्जंट अुस पैर में बेडियाँ खनखनानेवाली डाकुओं की टोली के साथ भीतर आया। जेलरने अुसके सामने का अंतवर्ती दूसरा लोहेका दरवाजा खुलवा कर मुख्य कैदखाने के भयानक परंतु भव्य मैदान में अुन दस बारह कैदियों को कतार बांधकर खडा करवाया! अुनपर शिवराम हवालदार को देखरेख करने के लिये कहा और खुद दफ्तर में जाकर सार्जंट की तरफ से सारे कागज समझवा लेने लगा।

अिधर अुस मुकद्दमने कैदखाने में जाकर अपने विश्वस्त कैदियों को कभी का यह बतादिया था कि, आज कालेपानी से भागकर आये हुअे कुछ पक्के गुनहगार आनेवाले हैं ! --पर यह बात किसी दूसरे को पता न चलने पायें ! "

अुन कैदियों ने दूसरे कैदियों को तथा अुन्होंने तीसरे कैदियों को किसीको न बताने की शर्तपर, कर्ण परंपरया वह समाचार बतला दिया । अिस तरह यह खबर हर अेक कैदी के कानमें पहुँच गअी थी कि, "आज कोअी कालेपानी से भागकर आया हुआ डाकू आनेवाला है; पर यह किसी को मालूम होने न पावे ।" अत: जिस जिसको कोअी बहाना मिलगया वह वह कैदी, वॉर्डर, मुकद्दम, सिपाही अुस टोली को देखने की गरज से अुस मैदान के नजदीक आकर रेंगने लग गया था । सिपाहियों का मजमा भी वहाँ खडा ही था ।

अितने लोगों के सामने अैसे पक्के डाकू पर मैं अधिकार चला रहा हूँ, अिसबात की गर्विष्ठ जानकारी शिवराम हवालदारकी फूली हुअी छाती में समाअी न जा रही थी । अपने कडे अनुशासन का प्रदर्शन करके अुन सब पर अपनी छाप बिठाने की जबर्दस्त अिच्छा अुसे हुअी और अुन डाकुओं में से जो थोडा सा डरा हुआ सा तथा सौम्यसा डाकू, नजर आया अुस अेकको हवालदारने बिलावजह ही डंडा चुभोते हुअे कहा--

'अे, सीधा खडा हो ! यह घर नहीं है तेरा, अिलाहाबाद का कैदखाना है यह । यहाँ हरेक को तमीज के साथ खडा रहना चाहिये ! "

शिवराम हवालदारकी वह अैंठभरी आज्ञा अुस सौम्य डाकूने सुनली । पर अुनमें से जो अेक अूँचा खुर्रांट प्रियदर्शन, दुष्ट, मुस्काते हुअे चेहरेवाला डाकू था, अुसको अुस हवालदारके रोबपर कुछ मौज मालूम हुअी हो अैसा नजर आया । हवालदारके पीठ फेरते ही वह हवालदार की अकड का स्वांग भर कर जोर से बोला,

"अे, सीधा चलो, यह घर नहीं है तेरा, अिलाहाबाद का कैदखाना है यह ! "

अपने को किसी ने पागल बनाया है, यह शिवराम के ध्यान में आया । आसपास के लोग हँसे । पर कालेपानी का वह पक्का डाकू यही होगा अैसी शंका मनमें आनेपर शिवराम हवालदारने अंदाज लगाया कि अुसके नामपर

जाकर अुसने गलती की और अुसका मुंह बनाना जैसे अपने ध्यान ही में नहीं आया अैसा दिखलाते हुअे वह दूसरी तरफ को घूमने लगा।

अितने में सार्जेंटका 'टॉम' कुत्ता अुस मैदानमें प्रविष्ट हुआ। अुसको अुस कठोर अनुशासनवाले कैदखानेमें भी किसीने नहीं रोका। मनुष्योंकी अपेक्षा किन्हीं देशोंमें कुत्ते को ज्यादा आजादी हासिल रहती है। अुनमें से भी वह सार्जेंटका कुत्ता था ! शिवराम हवालदार अुसे सहलाने लगा। अितनेमें अुस खुर्राट डाकूने बडी नम्रता के साथ हाँक मारी।

"थोडा अिधर आअियेगा जनाबेमन, अेक अर्ज है गुलाम की !"

"अच्छा तो अिस धूर्त और अुद्धत आदमी पर भी मेरा दबदबा बैठ गया।" अैसा हवालदारने अुसके 'जनाबेमन' अिस नम्र संबोधन को सुनकर ताड लिया और अुसकी ओर दयाभरे बडप्पन के साथ वह गया और बोला,

"क्या चाहिये ? बोल, डर मत !"

वह लुच्चा डाकू अंदरही अंदर हँसकर जोर से बोला,

"मैंने आपको कहाँ बुलाया है ? मैंने तो अुस टॉम कुत्ते को बुलाया था। अुससे कहना था कि, अिस तरह बदतमीजी से खडा मत रह ! यह अिलाहाबाद का कैदखाना है ! हरेकको यहाँ तमीज के साथ खडा रहना चाहिये !"

फिर सारे कैदी और सिपाही भी हँस पडे। हवालदार संतप्त हो अुठा,

"पूरे गदहे हो तुम लोग!"

नम्रतया हास्य करते हुअे डाकूने अुत्तर दिया,

"और आप हमारे सरदार! जो कहियेगा सो ही ठीक!"

अुतने ही में जेलर अुस मैदानमें, सार्जेंट के साथ, अुन कैदियों की पहचान सार्जेंटकी ओर से रीतिपूर्वक करवा लेनेके हेतु से दाखिल हुआ! पहले ही धडक्केमें सार्जेंटने जेलर को दिखाया वह खुर्राट, अूँचा, सदा ओठों पर शरारत भरी मुसकान बनाये रखनेवाला गुनहगार!

"यही है वह योगानंद रफ़िअुद्दीन कालेपानी पर से भागकर आया हुआ कैदी! अिन डाकुओं की टोलीमें पहले नंबरका आरोपी!"

किसी राजाकी प्रशस्ति भाटके द्वारा गाये जाने पर जैसे वह राजा और ज्यादह रोब के साथ फूलने लग जाता है, तद्वत् वह आरोपी योगानंद

अर्थात् रफिअुद्दीन भी अुस अपनी प्रशस्तिको सार्जेंटके मुँह से बहुत तनकर सुन रहा था। लज्जा और भयकी तो दूर, चिंता की भी छाया अुसकी आकृतिपर नहीं थी। अुसके गाल भरे हुअे थे। ओठों को बाअीं ओर मोडकर बाअीं भौंहको चढाकर, दहिनी आँख मिचकाकर अंदर ही अंदर छद्मपूर्ण हँसी हँसने की अुसकी जो अेक विशेष रीति थी–अुसके अनुसार हँसते हुअे वह बोलकर रुके हुअे सार्जेंट से कहने लगा,

"साब! अैसी बेअिन्साफी काहे को भला, करते हैं आप? मुझे चार मर्तबा कोडे लगाये गये हैं, और कम-अज-कम १४ कैदखाने तो मैंने देखे होंगे—अितनी तो मेरे बारे में अिन प्रिजनरसाहब से आपको ज्यादा कहना चाहिये! तभी मेरी असली लियाकत अुन्हें मालूम पडेगी और अुसके मुताबिक ही प्रिजनर साहब मेरी खातिरतवाजो और मेहमाननवाजी कर सकेंगे!"

सार्जेंट की और अुस डाकू की गत अेक महीने से–जितने दिनों वह अुसके हाथों में रहा, अुतने दिनों तक–खूब घुटती थी। और आरोपी के अुस निरुपद्रवी बकवास में जो अेक व्यंग्य रहता था वह सार्जेंटको भी पसंद आने लगा था। जेलरको जेलरसाब कहने के बजाय रफिअुद्दिन जब प्रिजनर साब! कह अुठा तब अुसके अंग्रेजी भाषा के अज्ञान की खिल्ली अुडाने के लिये सार्जेंट जोरसे हँस पडा!

"खूब, बहुत खूब, जेलका यह अफसर अगर 'प्रिजनर साब' होगया तो तुझ सरीखे जेलके डाकू कैदी को 'जेलर साब' कहने में कोअी हर्ज नहीं–नहीं क्या?"

"ऑफकोर्स मि. सार्जेंट साब! यम्! आपकी बबर्ची अिंग्लिशको वह ठीक नहीं मालूम पडता होगा, मगर करेक्ट ग्रैमेटिकल अिंग्लिश वही है जो मैं बोलता हूँ! प्रिजन के मानी भी कैदखाना और जेलके मानी भी कैदखाना तब प्रिजनर और जेलर अिन दोनों शब्दोंका कोअी सा अेक ही मायना होना चाहिये न? कायदे के मुताबिक तो जो जेलर वही प्रिजनर; प्रिजनर और जेलर दोनों अेकही थैले के चट्टे बट्टे! अिंग्लिश किसके साथ खानी चाहिये सो मुझे भी मालूम है समझे मि. सार्जेंट साब!"

"योगानंद ही है तू ! हैं ! अच्छा क्यों रे रफीअुद्दीन, यह नहीं बतलाया तूने कि तुझे चार मर्तबा कोडों की सजा काहे को हुअी ?–" सार्जेंटने जानना चाहा।

"अुसकी वजह बिलकुल सीधी सादी है अगर अिन जेलर साब को गुस्सा न आये तो बताअूंगा। दो जेलरों ने मुझे मेरे कहे के मुताबिक अफीम खाने नहीं दी-अिसपर गुस्से में आकर मैंने अुनके सिरपर तसला अुठाकर दे मारा अिस लिये मुझे दो दफा कोडे खाने पड गये ! और दो जेलरों को मैंने अुनकी मर्जी के मुआफिक पैसों की घूंस नहीं दी अिस वास्ते मुझे कोडे खाने पडे ! "

घूंस खाने की बात बातचीतके दौरान में निकलते ही सार्जेंट साहब के पेट में गोला अुठा ! किसे मालूम यह बाष्कल आरोपी अुसके अपने बारे में कुछ बोल बैठे तो ! क्योंकि गुजिश्ता दस-पंद्रह दिनों में सार्जेंटको भी चालीस पचास रुपये अुस आरोपीने खिलाये थे ! हाथघडी (रिस्टवाच) देखनेमें गढे हुअे की तरह दिखाकर सार्जेंटने रफिअुद्दीनके अुस वाक्य की ओर दुर्लक्ष किया। बेल होगअी अैसा जेलरको सुझाकर अुस सारी टोली को जेलर के हाथों यथा रीति सुपुर्द करके सार्जेंट कैदखाने के फाटक से बाहर निकल गया !

तत्काल अुन डाकुओं की टोली को फोडकर निराली निराली कोठ-डियों में अुन्हें बंदकर दिया गया। अुनमें से दो तीन के चेहरेपर चिंता की भयानक छाया पसरी हुअी थी। अेक शख्स–अुसका नाम किशन था—तो बुरी तरह पश्चात्तप्त दिखाअी देता था। बाकी के सारे कैदघर में भी नाच-घरकी तरह निश्चिंत, निडर और पकेहुअे खुर्राटों की तरह बरताव करते थे। सबमें ज्यादह निडर और खुर्राट था वह योगानंद-अर्थात् रफीअुद्दीन अहमद !

अुसे फाँसी की तनहाअी में खास बंदोबस्त के साथ रखा गया था। अर्थात् अुसके कमरे के पास जमादार और शिवराम हवालदार को छोडकर और कोअी भी नहीं जा सकता था। पर अुसी वजह से वह सबसे ज्यादह चैनमें था। जैसी कि अुम्मीद थी–शिवराम के हस्तकों द्वारा अुस डाकूके जो कुछ अैसे साथी अभी तक लुके छिपे अिलाहाबादमें रहते थे जिन्हें

पकडा नहीं गया था, अुनके पास अुस कैदघर के रफिअुद्दीन की छुपी छुपी चिट्ठियाँ जाने लगीं और खूब 'हलदी' अुस कैदखाने में जाने आने लगी। थोडी अफीम, खूब तमाखू और बीच बीचमें मिठाअी रफीअुद्दीनकी अुस अकेली कोठडी में गुप्त रूपसे पहुँचने लगी और अप्रत्यक्ष रूपसे अुसकी पीली धमक सोनेकी गिन्नियाँ जमादार, दादा और जेलर के खीसेमें पडने लगीं!

योगानंद के स्वरूपमें विद्यमान जटा, दाढी, मूंछें सब अुतर चुकी थीं और रफिअुद्दिन अब अेक छँटा हुआ बदमाश मुसलमान बना हुआ था। अुसे योगानंदके भेसमें और भजनमें तल्लीन जिन लोगों ने देखा था, अुन्हें वह अेक डाकू मुसलमान है, यह सपने में भी सत्य नहीं प्रतीत हो सकता था और अुसी तरह अुसको जिन्होंने फाँसी की अिस तनहाअी में पक्के मुसलमान डाकूकी शक्लमें देखा है, वे अिसबात पर यकीन किसी हालतमें भी नहीं कर सकेंगे कि अेक बार अुसने अेक साधुका भेस बनाकर हजारों लोगों को झुलाया और भूलाया है! तबभी अुसमें योगानंद का अेक लक्षण बाकी था—सुख-दुःखे समेकृत्वा तुल्यनिंदा स्तुतिस्वका—! जब कोअी अुससे पूछता कि, अब तुझे भयानक सजा होनेवाली है, अिसका भय या चिंता नहीं माल्रूम देती तुझे? तो वह हमेशा की तरह अपने ओठोंको मोडकर और भौंह चढाकर अंदर ही अंदर हँस देता।

"अुसमें फिक्र और परेशानी कैसी? फाँसी तो मुझे होती नहीं—कालेपानी की अुम्र कैद हुअे बिना रहेगी नहीं!—और हमको कालापानीमें तो जो पुण्य और मजा आती है वह तुम्हारे काशीजी में भी नहि मिल सकती! मक्काजी में भी नहि मिल सकती! हम लोगों की कालापानी हि काशी जी है!"

"पर तुझे फाँसी होगी ही नहीं यह किस बूतेपर? भयंकर क्रूरता से कितनों को तूने जानसे मारा है—लडकों लडकियों के गले काटे हैं—अैसे राक्षसी आरोप तेरे अूपर हैं। तुझे फाँसी होगी अैसा खुद जेलर साहब कहते हैं।" अैसा कभी शिवराम अुसे टोक बैठता तो वह हँसता।

"अरे, जेलर क्या जनता है! छप्पन भाषा, छप्पन भेस, छप्पन कैदखानों का पानी पिये हुअे मुझजैसे डाकू को—प्रमाणों का, सजाका, अपराधों का, कायदेकानूनका जितना अनुभव से प्राप्त ज्ञान रहता है, अुतना अैसे

जेलरोंको तो क्या, बडे बडे जजों तक को नहीं रहता ! अुस ज्ञान के जोरपर हम जो डाके डालते हैं–वे कायदे से डालते है । जिन्हें हम जान से मार डालते हैं, अुन्हें भी अिस ढंग से नहीं मारते जिससे हमें फाँसी की सजा होजाय । हम अितने गदहे नहीं हैं । बाबा, तुम हिंदू लोगों की गीता भी मैंने पढी है " हत्वाऽपि स अिमांल्लोकान् न हन्ति न निबध्यते ' अिसी को कहते हैं ' योग: कर्मसु कौशलम् ! '

हिंदू अफसरों के सामने वह अिस किस्मके संस्कृत के श्लोक बोलता और भजन गाता कि अुन बे दोंको यह लगता कि वह सचमुच कोअी अंतर्ज्ञानी अवधूत है और अिस तरह कैदखाने मे हिंदू सिपाही वगैरों की भी अुसको सहानुभूति मिलती ।

मुसलमान अफसरों के सामने अूटपटांग बातें करते समय कुरान की दसपाँच आयतें पढकर सुनाता और बची खुची दाढी पर दस मर्तबा हाथ फेर कर दिनभर निमाजही पढता रहता और कहता,

" देखो, मैंने जोभी डाके डाले, जो लडकियाँ भगाअीं, जिनके हाथपैर तोड डाले-और तुडा डाले, जानें लीं, लूटमार की, वे सब काफिर हिंदू थे ! अीमानदारों (मुसलमानों) के बाल को भी धक्का नहीं लगाया ! अल्ला रहीम है ! काफिरों को सजा देने की वजह से मेरे अूपर वह मेहरबानी ही करेगा ! "

" बिलकुल ! " वह मुसलमान जमादार कहता और तल का पता न लगनेवाली पुरानी अँधेरी बावडी में जैसे झाँकते हैं अुसी प्रकार वह भी अुसकी आँखों में आँखें डालकर अपने मनमें बोलता,

" यहाँ कोअी न कोअी औलिया, कोअी न कोअी खुदाअी खिदमतगार है, सचमुच ! "

जेलमें पक्के चोर-डाकुओं में जो जो मुसलमान रहते हैं अुनमें से सिंधी बलूची, पठान, पंजाबी अपराधी तो अपने खून, चोरियों और डाकों का समर्थन अिसी युक्ति परंपरा से करते हैं ।

" हमतो केवल काफिर हिंदू को हि मारते हैं ! लुटते है ! "

और अुनके वे पापकृत्य भी पुण्यकृत्यों के सदृश प्रतीत होते अेवं कितनेही धर्मांध मुसलमान सिपाहियों और जमादारों को अुनके विषय में सहानुभूति प्रतीत होने लगती । अैसे सैंकडों अुदाहरण देखने और सुनने का अवसर

स्वतः हमको भी प्राप्त हुआ है। अिस विषयमें अपवादस्वरूप बंगाली तथा मराठी मुसलमान अुतने धर्मांध नहीं होते, अितनी बात थोडी सी अच्छी है। डाकुओं में से अुत्तरदेशस्थ मुसलमानों का अिसीलिये दक्षिणदेश के मुसलमानों पर ज्यादा भरोसा नहीं रहता है!

अिस योगानंद अर्थात् रफिअुद्दीनकी टोली में भी अंतमें वही अनुभव आया। अुनमें से जो आरोपी कारागारमें पैर रखते ही घबरा गये और डर गये—अैसा हमने अूपर लिखा है—अुनमें से हसनभाअी नामका महाराष्ट्रीय मुसलमान और पश्चात्तापदग्ध किसन—अिन दोनों ने पुलिस वालों को अुस टोली के बारे में बहुत सी जानकारी दी और अपने अपराध स्वीकार किये। अुनकी अुस स्वीकारोक्ति से पुलिसद्वारा अेकत्र किये गये स्वतंत्र प्रमाणों में महत्त्वपूर्ण सहायता हुअी। सरकार ने अुनपर अभियोग चलाया तथा अुसकी निश्चित की गयी तारीख की रफिउद्दीन प्रभृति सब आरोपियों को अित्तिला दी गअी!

अभियोग के दिन, जिस तरह 'वर' सजधज कर तय्यार होता है, अुसी तरह रफिअुद्दीन ने भी अपनी सजावट की और पैरों की बेडियों को बडी अदा के साथ खनखनाते हुअे सिपाहियों के संगीनोंके पहरे में कारागृहके दरवाजे से बाहर हँसते और खिलखिलाते हुअे निकला। अुसको अैसा लग रहा था कि सारा त्रिभुवन अुसको अिस भावनाके साथ देख रहा है कि "यही ह वह पराक्रमी पुरुष जो कालेपानी पर से भाग कर आया है।" और अिस समय अुसके दिमाग में यही आरहा था कि, अैसी कौनसी चाल चली जाय जिससे जजको भी हँसा हँसा कर बिलकुल ठंडा करदिया जाय। अपने भयंकर क्रूर कृत्यों की कथा सुनकर किन्हीं लोगों के शरीरपर कांटे खडे हो जायँगे, अपने को कुछ लोग राक्षस कह कर मुँह पर थूकेंगे, अिस बात की धुकधुकी अुसके मन में भी नहीं पैदा हो रही थी स्मशानवर्ती धर्मशाला में पडे हुअे मुर्दों को देखकर, लोगों के रोनेधोने को सुनकर तथा चितापर जलते हुअे मुर्दों को निहारकर जिस तरह स्मशान के चौकीदार को स्मशान की भीति नहीं मालूम पडती अुसी तरह अुस खुर्राट डाकूको भी न्यायालय, प्रमाण, सजा, बेडियाँ, कैदखाना, अुम्रकैद, कालापानी अित्यादि सब बातों का अितना अधिक अभ्यास हो गया था कि, अुसको अुन चीजों से कुछ भी डर नहीं

मालूम होता था। शैतान की ही भांति अुसने भी अपने मन से यही स्वीकार किया हुआ था—"Oh Evil! Thou be my Good"

अुसका मन राक्षसी अेवं मानुषी वृत्तियों का अेक अविभक्त कुटुंब था। जैसे वह राजमहल में नीरो वैसा ही यह काले पानी में रफिअुद्दीन।

अुसे यदि किसी बातका डर था तो, जैसे नीरो को मौत का था वैसेही फाँसी का!—और यदि किसी से लगाव था, मायाममता थी तो अेक अफीम की और दूसरी स्त्री की!

न्यायालय में जाते जाते भी अुसके मनमें अेक दो मर्तबा घबराहट पैदा हुअी. कि—किसे मालूम फाँसी ही हो गअी तो! और अेक दो मर्तबा वह क्रूर भी व्याकुल होकर मन में भर आया—

"मालती! हाय हाय! अब फिर कैसे फँसेगी वह लडकी मेरी मजबूत मुट्ठियों में!!"

अरे राक्षस! क्या कर डाला यह? : : : ६

कोर्ट में अुस भयंकर डाकू का अभियोग पूरी बहार में आया हुआ था। वकील, अुनके मुहर्रिर, सिपाहियों का सशस्त्र जमघट, पंखेवाले, अैसे डाकुओं के अभियोग देखने की विशेष अभिरुचि रखनेवाले बहुत से सभ्य गृहस्थ, कुछ गुंडे, वगैरह वगैरह की खासी भीड जमा थी। अुस क्रूर नरपशु की नृशंस कथाओं को सुनकर न्यायासन पर बैठे हुअे परिपक्व जजके हृदय को भी चोट लगती थी। पक्षपातशून्यता को भी असंवार्य क्रोध आता था। गुंडों के शरीरपर भी कांटा खडा हो जाता था। नृशंस अेवं क्रूर श्वापदों को मनुष्य अपनी बस्तियों से निकालकर जंगलों में हँकाल देने में समर्थ हो सका; किंतु मनुष्य के मन के अंदर जो श्वापद आज भी घूम फिर रहे हैं अुनको मनुष्य निकाल कर बाहर नहीं कर सका। मनके अंतर्वर्ती भूमिगृहों के द्वार जब खुल-जाते हैं तब ये श्वापद बुरी तरह भगदड मचाने लग जाते हैं—अुस समय अुन्हें

काबू करना मुश्किल हो जाता है। जिसे हम मनुष्यता के नाम से पुकारते हैं वह अेक 'क्वेटा' नामक सुशोभित नगरी है अैसा समझिये। अुसी के नीचे सदा खौलते रहने वाले भूकंपीय राक्षसता के थर के थर जमे हुअे होते हैं! केवल दया-दाक्षिण्य, मायाममता, न्यायान्याय के ही आधारपर मनुष्यता खडी है और वह अविचल है, अिस भ्रम में पडा हुआ जो व्यक्ति असावधान हो सोता रहता है, वह अेकाअेक अप्रत्याशित रूप से विनष्ट हो जाता है! अिसी प्रकार राष्ट्र के राष्ट्र लौट पौट हो जाते हैं!

रफिअुद्दीन भी अेक मनुष्य ही था; क्यों कि वह हँसा करता था। कितनेही प्राणिशास्त्रज्ञोंका मत है कि अितर प्राणियों से मनुष्य भिन्न है, अिस बात को प्रदर्शित करनेवाला मुख्य वैशिष्टच अुसका हँसना है। मनुष्य ही सिर्फ हँसा करता है! यह अभियोग जिनके सामने चल रहा था, वे न्याय-मूर्ति ऑकलैंड साहब, अिस अघोरी आरोपी की तरफ सिर्फ अपराधी की निगाहों से ही नहीं देख रहे थे। जिस प्रकार वैद्य रोगियों की परीक्षा करता है, किंवा मांत्रिक सर्पो के विष की परीक्षा करता है, अुसी प्रकार से वे अेतादृश अघोरी पापियों के स्वभावविशेष की परीक्षा किया करते थे। अपराधविज्ञान भी मनोविज्ञानही का अंक भाग है, अैसी अुनकी धारणा थी। अिसी लिये वे प्रमाणों के साथ साथ अघोरी किंवा विक्षिप्त अपराधियों के मनोविकारों की, चेहरे की, भाषण की, हालचाल की, मन ही मन छानबीन करने में लगे रहते थे। और वह छानबीन हो सके, अिसी अुद्देश्य से अपराधियों को आरोपी के कठघरे में रहते समय भी योग्य परिमाण में स्वाभाविक रूपसे बोलने चालने और हँसने-रोनेकी छूट दिया करते थे। अुनसे अपने आप बातचीत शुरू करके अुन्हें बोलने लगाते थे। जिस संकट के यंत्रपाशमें आबद्ध होते ही बडे बडे दुर्जन भी थर थर काँपने लग जाते हैं, लजा-सकुचा जाते हैं, अुस संकट में भी रफिअुद्दीनको निश्चिन्त, निर्लज्ज, निःसंकोच अेवं हँसते हुअे देखकर न्या. मू. ऑकलैंड साहब को लगता था कि, अिसे अेकबार शेक्स-स्पियर ने देखा होता तो अच्छा होता। शेक्स्पियर ने अेक दुष्ट घातकी और गूढकृत्यकारी मनुष्य का, अेक पात्र के मुँहसे, यह लक्षण कहलवाया है कि, 'He seldom laughs' अर्थात् अुसे शायद ही कभी हँसी आती है! वह लक्षण कभी कभी कितना अप्रमाणित सिद्ध होता है, यह भी

अुसने किसी अन्य अवसर पर, किसी दूसरे पात्र के मुँहसे, कहलवाया होता ! रफिअुद्दीन जितना क्रूर था, अुतना ही वह विनोदी था, अेवं जितना वह दुर्वृत्त था अुतना ही वह प्रियदर्शन भी था। न्या. मू. ऑकलैंड मनही में कहते, अिसने अेक महाकवि के अुपरिनिर्दिष्ट सूक्त ही को नहीं प्रत्युत दूसरे महाकवि के 'नह्याकृतिः स्वसदृशं विजहाति वृत्तम्' अिस कालिदासीय सूक्तको भी वितथ कर डाला है ! सुंदर मनुष्य सद्‌वृत्त होता है-अैसा कोअी नियम नहीं है। अितना ही नहीं, अुसके दुर्वृत्त से भी अुसकी सुंदरता कभी कभी अधिक विषैली साबित होती है। गुलाबों के सघन पुष्पावृत क्षुपसमूहों के आवरण के पीछे कपट का परभाग भी वहीं विद्यमान है, यह वह अवगत तक होने नहीं देती।.

पुलिसवालोंने अुस डाकुओं की टोलीद्वारा किये गये नृशंस क्रौर्यपूर्ण अत्याचारों की कथा परिपूर्ण-प्रमाण-पुरस्सर अुनके समक्ष अुपस्थित की। अुन प्रमाणों में जो अेक महत्त्वपूर्ण किंतु अप्रत्यक्ष प्रमाण रफिअुद्दीन की टोली के, क्षमाका साक्षीदार बने हुअे हसनभाअी नाम के आरोपी ने अुपस्थित किया था-अुसकी अुस स्वीकारोक्ति में से यदि छाँटकर अेक संक्षिप्त सा आशय हम यहाँ लिखें, तो पाठकों को रफिअुद्दीन के क्रूर कार्यों की रूपरेखा का परिचय पर्याप्त रूपसें मिल जायगा, अैसा हमें विश्वास है। पुलिस के स्वतंत्र प्रमाणोंद्वारा समर्थित अुस स्वीकारोक्ति के अंदर आया हुआ वह आशय निम्न प्रकार है।--

"मेरा नाम हसनभाअी। मैं हाअीस्कूलपर्यंत पढा हूँ। क्लार्क भी था। आगे चलकर जुअे के व्यसन में फँसकर चोरी करने लगा। मेरा असली गांव खानदेशमें। रफिअुद्दीन के साथ अुसके काले पानी जाने से पहले ही से मेरी जानपहचान। पंजाब और लखनअूकी ओर लूटमार करके लाअी हुअी कुछ संपत्ति वह मेरे घर में लाकर रखा करता था। अिसी लिये वह मुझ प्रत्यक्ष डाका डालने के लिये अपने साथ कभी नहीं ले जाता था। और मेरी ओर पुलिस का ध्यान आकृष्ट न हो अिस विचार से वह मेरे पास खुले तौरपर कभी नहीं आता था। आगे चलकर अुसे सजा हुअी और वह काले-पानी भेज दिया गया। अिस तरह अुसका और मेरा संबंध बिलकुल टूट गया। कुछ बरसों के बाद जब वह अचानक मेरे दरवाजे पर आकर खडा हुआ--तो मुझे अैसा लगा जैसे किसी मरे हुअे आदमी को जिंदा हुआ देखकर लगा करता

है ! काले पानी में गया हुआ मनुष्य जिंदा लौट कर आसकता है, अिस बात की कल्पना तक नहीं थी मुझे । अुसने कहा कि वह मंत्र के बल से अदृश्य होकर, समुद्रपर से पैरों पैरों चलते हुअे आया है । अुसने मंत्रद्वारा अभिमंत्रित अेक ताअीत भी मुझे दिखलाया । मेरे पास अुसकी जो पीछे की ३-४ हजार की धरोहर थी वह मुझे बक्षीस के तौर पर दे दी है, अैसा आश्वासन भी अुसनें मुझे दिया । अुस अुसके शर्करासमुत्पादक वाक्यविन्यास का मुझपर अद्‌भुत परिणामहुआ । मुझे वह अेक अद्‌भुत मांत्रिक और अनिर्वचनीय साहसी पुरुष प्रतीत होने लगा । और वह जो कहता अुसे करने के लिय मैं फिर तय्यार होगया । सिंध और पंजाब की ओर मुसलमानी धर्मके प्रचार के हेतु से मैंने अेक बडी भारी संस्था स्थापित की है, वह अेक प्रकार का धर्मयुद्ध-जिहाद-है, अुसकी सहायता करना प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है, अैसा अुसका कथन भी मुझे अुस समय सत्य ही प्रतीत हुआ । मुसलमान बनाने के लिये खानदेश में जो भी हिंदू लडके-लडकियाँ मिलें, अुन्हें बहकाकर अुसके सुपुर्द करना-अुसकी जो चीजें और द्रव्य छिपाने के हों अुन्हें पूर्ववत छिपाना, वह जब बुलाये तब अुस के पास जाना-अिस सब के लिये जो खर्च पडेगा वह खर्च तथा अूपर से सौ रुपये मासिक वह मुझे देगा-अैसा अुसका और मेरा अिकरार हुआ ।

" अुसका यह अब का काम मैंने न सुना तो पिछली धरोहर के लिये यह क्रूरकर्मा मेरी जान लिये बिना न छोडेगा अिस बातकी भीति मुझे थी; पहले पहल मैं डरते डरते ही अिस टोली की सहायता करता था । पर अिसकी डाकेजनीकी बातें सुन कर आगे चल कर मैं भी आदमियों को अिकट्ठा करके छोटे मोटे डाके डालने लगा । कारखानों में से धर्मशालाओं में से और स्टेशन-पर अच्छी अच्छी हिंदू लडकियों के अुडाने में तो मेरी टोली अितनी अुस्ताद हो गअी थी- कि, जिनके पेट के बच्चों को हम अुडाते थे अुनका रोनाधोना सुनकर हमें अेक प्रकार का मनोविनोद ही प्रतीत होता था । अुस वजह से रफिअुद्दीन मुझपर सदा प्रसन्न रहा करता था । अुन लडकियों को दूर-सिंध बलूचिस्तान तक लेजाकर अुसकी टोली या तो मुसलमानों को बेच देती थी या फिर आपसही में बांट लेती थी। बडे बडे मौलवी भी हमारे अिन दुष्ट-कृत्यों को परदेके पीछे से ' धर्मकृत्य ' का नाम देकर बखाना करते थे । अुसकी

वजह से तो हमारी अुस नीच विषयवासना को और धनलोभ को अेक प्रकार का धर्मोन्मादका अुत्साह और शिष्टत्व प्राप्त होने लगा, जिसके कारण हमारे मन की लज्जा भी दूर हो गअी और जनकी लज्जा भी। डर यदि किसी बात का था तो सिर्फ सरकारी सजा का ! वह भी खास कर अंग्रेज या कठोर हिंदू पोलीस अफसरों का।

"हम दक्षिणी मुसलमानों को अुत्तर की तरफ के ये पठान, बलची डाकू अविश्वसनीय समझते थे। हमारा भेस, भाषा, चालढाल सब हिंदुओं जैसे; हमारे हाथ से क्रूर कृत्य अुतने झपाट्टे से घटित नहीं होते। अतःवे हमको डरपोक और 'आधे काफिर' समझते थे। अपनी डाकेजनी में हमें प्रत्यक्ष भाग नहीं लेने देते थे। पर बिहार में अेकदफा अिस टोली की अेक डाके के मामले में धरपकड होगयी, तब रफिअुद्दीन कुछ लोगों के साथ छूटकर खानदेश चला आया और मेरी टोली को अुसकी टोली में मिलना लाजमी होगया। वह तब से हिंदू गोस्वामियों के भेसमें फिरने लगा। वह पक्का बहुरूपिया है। अंग्रेजी, संस्कृत, बंगाली, मराठी, जिसकी जरूरत पड जाय, थोडा थोडा याद कर लेता है। गाता है नाचता है, लावनियाँ और भजन तो वह अैसा रंग कर बोलता है कि कहना क्या ! योगानंद के स्वांग में तो अुसने हजारों हिंदुओं को धोखेमें डाल दिया। अुसे सिर्फ दसपांच भजनही आते हैं, किसी किस्म का शास्त्र वगैरह कुछ नहीं आता। अिसी लिये वह मौन का ढोंग रचता था और केवल भजनही गाता था। पांच पचास संस्कृत के श्लोक अुसे पाठ थे पर वह अुन्हें अिस ढंग से थोडा बोल कर चुप हो जाता था ; ताकि लोगों को अैसा प्रतीत हो कि अखंड विद्वत्ता होने पर भी वह अत्यंत विनयशील है ! अुसके योगानंद वेष का हमें बहुत अधिक अुपयोग हुआ। हजारों रुपये न मांगते हुअे हिंदू लोग हमें दे जाते थे। यह खुद किसीको भी हाथ नहीं लगाता था। परंतु जो लोग कुछ भेंट जबदस्ती रख जाते थे, अुन्हें हम लोग अेकत्र करते और अुसे अिसके साथ साथ हम सब आपसमें बाँट लिया करते। भजन के समय होनेवाली भीड में हम ने कुछ नहीं तो कमसे कम सौ सवासौ हिंदू लडकियाँ, अिस बरस डेढ बरस के दरमियान भगा कर गुलाम हुसेन नामके बलूची के हाथों अुत्तर की ओर भिजवाअीं होंगीं ! अुस प्रत्येक शिकार के पीछे हमें स्वतंत्र 'बख्शीश' मिला करती थी। मुसलमानों को न लूटने

का यह जो बहाना बनाता था, वह कितना खोटा है, यह हमें तब मालूम पडा जब कि वह हमारी टोली में आकर मिला। किसी मुसलमान को लूटना हो तो वह अुसे 'काफिरों का दोस्त' कहकर गाली देता और अपनी सौगंध से मुक्त हो जाता। हमें भी अुसका यह सुगम शास्त्र दिलसे पसंद आता था। यह जितना ही क्रूर है, अुतना ही विनोदी भी है। परंतु बहुरूपियापनमें यह अितना अधिक निष्णात है कि अिसका मूल स्वभाव विनोदी है या क्रूर है, यह बताना मेरे लिये भी दुःशक है। पागलपन के स्वांग के लिये भी अिसका यह विनोदी प्रकार बहुत अुपकारक होता है। वह चाहे कुछ हो, अितना मात्र सत्य है कि जब वह अत्यंत क्रूर कृत्य करता है, तभी विनोद के अुच्चांक पर पहुँचता है।

"अिस की क्रूरता से मुझे नफरत होने की दो घटनाअें हैं, वे मैंने अपनी आँखों से देखी हैं; अतः अुन्हें यहाँ प्रमाण के रूप में अुपस्थित करता हूँ। खानदेशके जिस मुसलमान डाक्टर के घर डाले गये डाके का हमपर अिस अभियोग में आरोप है, अुसमें मैं भी था। हम ज्योंही दरवाजा तोडकर अंदर घुसे त्योंही वहाँ से भागकर अूपर की मंजिलपर जाने की कोशिश करते हुअे डॉक्टर रहमान के पैरपर अिसने कुल्हाडी का वार किया। पैर का टुकडा गिर पडा और, डॉक्टर वहीं मर गया पर तोभी कुल्हाडी चलाने के निर्भर आनंद में जोर जोरसे हँसते हुअे— मेरे मना करने पर भी—अुस डॉक्टर की बोटी बोटी अुडा डाली। अितने में पलंग के नीचे छिपे हुअे अुसके दो बच्चे दिखाअी दिये। वे चुप थे। मैं करुणा-भाव से बोला, " रहने दो अुन्हें, डरके मारे वे चुप, अर्धमृत तथा अचेत पडे हुअे हैं!'

"वह कहने लगा, 'बेसुध हालत में सभी आँखें मूँद कर चुप रहते हैं। सुध आजाने पर अेकदम वाणी वाचाल हो अुठती है और आँखें खुलजाती हैं। और तब कोर्ट में डाकू कौन है, यह येही खुली हुअी आंखें और वाचाल वाणी पहचान लेगी और तब हमारे गलों के चारों ओर रस्सी बाँधने में मदद करेगी। अैसा कह कर अिसने अुसी कुल्हाडी के अेक प्रहार ही में अुन बच्चों में से प्रत्येक को दो-दो टुकडों में विभक्त करदिया! अुस अघोरी कृत्य को देखतेही मुझे बेहोशी आने लगी। पर अुस डाके में हमारे हाथ पडी हुअी

दस हजार की लूट ने मेरी अुस बेहोशी को कुछ कम कर दिया और मेरा मन पूर्ववत् अुसी अुन्मार्गपर चलता रहा।

" दूसरी जो दुष्ट घटना मैंने अपनी आँखों से देखी, वहतो अिस घटना की क्रूरता को भी फीका कर देती है । रफिअुद्दीन हमसे हमेशा अपनी शान बघारते हुअे कहा करता था कि, अब वह अेक बरस के लिये अेक सुरेख स्त्री को अपने नजदीक रखता है । बरस खत्म हुआ कि अुसे जान से मार डालता है, और दूसरी औरत ले आता है । सारे लोग जिस तरह अपने सत्कृत्यों को बढा चढा कर कहते हैं, अुसी तरह यह विक्षिप्त अपने दुष्कृत्यों को बढा-चढाकर बडी शान बघारते हुअे कहा करता था। अतः अुसके अिस प्रतिज्ञा-वाक्य में कितना सार है, यह मैं ठीक ठीक कह नहीं सकता। पर जब यह खानदेशमें भागकर आया था, अुस समय मात्र अुसके साथ बिहार से भगाकर लाअी गअी अेक हिंदू कायस्थ की तरुण कन्यका थी जरूर ! वह अिसके कडे पहरे में रहा करती थी । अुसके अूपर अिसका अैसा कुछ विषयांध प्रेम था कि, अुसे देखकर अैसा लगता मानों, दुनियाँ में, अिस जैसा कोअी भी प्रणय-मुग्ध स्वभाव का आदमी नहीं होगा । यों देखने पर, यह हमारी टोली के सहचारियों के साथ भी जबतक रहती तबतक अच्छी मैत्री बनाये रहता था। यह अुस तरुण रमणीपर भले ही लुब्ध था; किंतु वह मात्र झुलसती चली जा रही थी । कभी कभी तो वह अपने प्राणोंका मोह भी छोड बैठती थी। अेक बार रफिअुद्दीनने देखा, वह देवताके समक्ष हिंदूधर्म की पद्धति से हाथ जोड कर प्रार्थना कर रही थी । रफिअुद्दीनने अत्यंत लाडसे अुसके सिरपर हाथ फेरते हुअे पूछा,

" ' क्या हो, अिस भावना से तू अुस पत्थर के देवता से प्रार्थना कर रही है ।

" वह अेकदम चिढकर बोली, ' तुझे फाँसी हो अिस भावना से !'

" फाँसी यह शब्द सुनते ही वह साँपकी तरह गुस्से में आ गया । जोश का झटका बैठते ही वह हँसा करता है, अुसी तरह वह हँसा और बोला,

" 'सचमुच अिसका बरस पूरा होने को आ रहा है, है न ?'

" अुस दिन अुसने मुझसे कहा, ' मैं आज शाम को तुझे अेक तमाशा दिखाअूंगा नदी के किनारे । जंगली टीले के अुस बुर्जपर जाकर बैठ !'

"सांझ के समय मैं अुस जंगल के अंदर टीले के सबसे अूँचे बुर्जपर जाकर बैठ गया। बरसात की बौछार पर बौछार आरही थी। नदी बाढ के कारण दोनों कछार भर के बह रही थी। अुस बीरान पडे हुअे टीले के बुर्ज तक नदी का पानी चढ आने का मतलब होता था नदी के अंदर बाढ का आजाना। अुस किस्मकी भयानक बाढ अुस नदी में आअी हुअी थी।

"थोडीही देरमें रफिअुद्दीन अपनी अुस सुस्वरूप तरुणी को लेकर वहाँ आया। असका बुरका निकालकर हिंदू तरुणी के सदृश कंधेपर पल्लव डाले, बाढ का मजा दिखलाने के लिये बिलकुल अुन्मुक्त स्वरूपमें आज वह अुसे वहाँ ले आया था। बहुत दिनों के पश्चात मुखपरका आच्छादन हटा था—श्वासोच्छ्वास के लिये शुद्ध मुक्त वायु अुसे प्राप्त हो रही थी अतः वह कुछ चित्तमें प्रसन्नसी दीखती थी। रफिअुद्दीन मीठी मीठी लाड चाव की बातों से ही अुसकी आराधना कर रहा था। मेरे सामने, अुसको बुरके से बाहर अिस तरह अेकांत में ले आना यह अेक कुतूहल ही की बात थी। तिसपर भी जब वह अत्यंत विषयोन्मत्त की तरह से अेकदम अुसको अपने से चिपटाने लगा तब मुझे यही नहीं सूझता था कि क्या कहूं और क्या करूं? सचमुच अुस सुंदर तरुणी से अुसी प्रकार आलिगन करनेकी अिच्छा मेरे भी मन में प्रबल हो अुठी।

"रफिअुद्दीन के फंदे से वह छूटने का प्रयत्न कर रही थी—तो भी जबरदस्ती अुसको भुजाओं में भर अुसने अूपर अुठा लिया—और छोटी बच्ची की तरह अुसको दोनों हाथों में तिरछा लेकर 'मेरी—मेरी यह लाडली' अैसा कह कर अुसे थोडासा झुलाया—झटसे खींचकर अुसकी साडी भी खोल डाली और वह कामोन्मत्त मुझसे अत्यंत निर्लज्जतापूर्वक कहने लगा,

"देख ले—देखले, अिस परी को पेटभर कर देख ले!!'

"यह विषयांध अिस विकृत मनोवस्थामें अुसके साथ क्या करनेवाला है, यह सोच कामावेश से थरथराता हुआ मैं भी आँख भरकर अुसकी ओर देख ही रहा था कि—

"अुतने ही में!

"किसी अेक पत्थर को अुठाकर जिस तरह हम भिरका (= फेंक) देते हैं, अुसी प्रकार के सावेश बलसे अुसने अुस सुंदर लडकी को अुस बुर्ज

पर से, अुस नदी की भीषण बाढ में दूर फेंक दिया !! 'बरस पूरा होगया अुसका ' अैसा कह कर वह जोर से ठहाका मार कर हँसा।

" राक्षसके बच्चे ! ' मैं अेकदम चिल्लाया !

"'पहले वह तमाशा तो देख ! यही तमाशा दिखाने के लिये तो तुझे यहाँ बुला कर लाया था ! '

" दो बार वह निरपराध सुंदरी लहरों के अूपर आअी । दो बार लहरों के साथ नीचे गअी । अुस बाढ के प्रवाह के मध्यमें अेक चट्टान अूपर सिर निकाले खडी थी । अेक प्रचंड लहर अुसी ओर को मुडी, अुसमें अुलझी हुअी वह तरुणी और अुसकी गुलाबी साडी स्पष्ट दिखाअी दी ।

" अूँचे टँगे गये कांचों के झूमर के अकस्मात् टूटकर नीचे गिर पडने से जिस प्रकार अुसके कांच के ठीकरे-ठीकरे अुड जाते हैं और तदन्तर्वर्ती ज्योति की चिनगारियाँ अुच्छिन्न होकर बुझ जाती हैं, तद्वत् वह प्रचंड लहर अुस चट्टान पर टकरा कर, जलौघ के ठीकरों के रूपमें परिणत होगअी और अुस अत्यंत अनागस कांचनगौर तरुणी के माथे के टुकडे-टुकडे खिल गये और अुस की पांचों प्राण-ज्योतियाँ अेकदम निर्वाण हो गअीं ! वह पुन: जलपृष्ठपर नहीं आअी !

"'राक्षस के पडपोते, क्या कर डाला यह तूने, मरण के आवर्त में क्यों ढकेल दिया अुसको ? ' मैं शोकत्वेष से चिहुँक अुठा !

"'मरण के नहीं, पगले, अुसके बारे में बोलना हो तो अुसी की जबान में बोल ! अुसकी संस्कृत भाषामें पानी को मरण नहीं कहते ! पानी को जीवन कहते हैं !! मैंने अुसे जीवन के महापूर में फेंक दिया है, वह हँसा !

"'वह आज मर न गअी होती तो कल अुसने जाकर सी. आअी. डियों को मेरा पता बतला दिया होता ! है किस ख्याल में तू ? '

" महाराज, मैं अिसके समान अुलटे कलेजेका नहीं था तो भी पाप कृत्यों की चाट मुझे लगी हुअी थी । अुसमें भी, अलौकिक सत्कृत्यों के सदृश अलौकिक दुष्कृत्यों में भी लोगों के मनों पर छाप डालनेकी अेक दु:शक्ति रहती ही है । अुस छापके कारण अिसके भयंकर दुष्कृत्यों का प्रभाव हमपरभी अुत्तरोत्तर बढता ही गया और अिसके योगानंद के ढोंग धतूरे की वजह से

हमारा बहुत कुछ स्वार्थ सिद्ध होता जाता था; अतः हम अिसका साथ देते ही रहे।

"तत्पश्चात् हम मथुरा आये। अिसने कर्ण पुत्तलिका के सदृश जलादर्श-नामक यंत्रका अेक नया ढोंग आरंभ किया था। अस यंत्रकी सहायता से यह भूतभविष्यद्वर्तमान की सारी बातें ठीक ठीक बतला देता है, अिस बारे में हमने लोगों में बहुत अधिक अिसकी ख्याति व्याप्त करदी थी। कहीं भी जाने पर, हम लोग परदेशी, व्यापारी, डॉक्टर आदि का स्वांग रचकर-अलग-अलग गांवों में घूमते और योगानंद ने अमुक चमत्कार हमारे सामने किया है, अिस बात का झूंठ मूठ का प्रचार करते। यह देखकर कि कोअी-गृहस्थ अिससे भूतभविष्यत् की बातें पूछने आ रहा है, झटपट हममें से अेक आदमी--परकीय गृहस्थ बनकर असके सामने पहुँच जाता और अिससे-कुछ पूछना. और जब यह अुसे कुछ जवाब देता तब,

"'ओह क्या अचरज है! कितनी अद्भुत दैवी दृष्टि है! आप कहते हैं, सो अक्षर-अक्षर सही निकला! बिलकुल-बिनचूक सही साबित हुआ!' अैसी अिसकी 'वाह-वाह' करके अेक बडी रकम जबर्दस्ती अिसके देवस्थानपर रख कर चला जाता! परिणामतः जिनके सामने हम यह सब करते वे लोग भावुकता अेवं अंधश्रद्धा के जनपदविध्वंसक रोग से अभिभूत होकर अिसको आदर की दृष्टि से देखने लग जाते! अुसकी झूंठ साबित हुअी बातों को वैसेही छोड जो कोअी बात गोल अर्थ से या दैवयोग से सच साबित होती, हम लोग अुसी को लेकर गाँव-गाँव में अिसके बारे में ढोल पीटते फिरते थे। मथुरा में भी हमारा यह पाखण्ड खूब फल लाया! वहाँ डॉ. नायडू नामकी औरत हमारी भक्त बन गअीं! बातचीत के दरमियान अुन्हों ने अपने परिचय की अेक नागपुर की तरफ की औरत तथा अुसकी अिक-लौती बेटी का जिक्र किया और अुन्हें वह मथुरा भी बुला लाअी है, यह बतलाया।

"यह वृत्तांत सुनकर अिस योगानंद डाकूने अेकांत में ले जाकर मुझसे कहा,

"'मैं जब काले पानी में था, तब मेरे साथ अेक सजायाफ्ता फौजी कैदी रहा करता था। अन्य किसीभी आदमी को मेरे साथ रहने नहीं दिया जाता था; अतः अुसके साथ मेरी घनिष्ठता बहुत बढगअी। अपने घरकी

सारी कहानी अुसने समय-समयपर मुझसे को सुनाअी। डॉ. नायडूबाअी जिसे लाने की बात कहकर गअी हैं, वह ही अुस कैदीकी मां और अुसकी नौजवान बहिन होनी चाहिये ! डॉ. नायडू ने जो नाम-ग्राम-वृत्त बतलाया है वह अक्षर-अक्षर ठीक बैठता है। वही है ! वही है यह लडकी ! आगअी, मेरे हाथ में आगअी ! लिपटा लिया देख, मैंने अुसको ! क्या बतलाया था अुसका नाम नायडूबाअीने ? माल-माल-मालती, हां रे हां, मालती ही ! ! हाय रे ! मालती ! अुसे मैंने दसबार अपनी सेजपर लिया है ! मालती ! मेरी मालती !

" 'अरे, कालेपानी में था न तू अुस वक्त ?—अुसे सेजपर लेने की बात कर रहा है, सो क्या ख्वाब में ? अुसके सिर्फ नामपर ही अितना लंपट ? में अुपहसने लगा। वह बोला।—

" हसन, किसी हिंस्र पशुको भूखा पिंजरे में बंद कर और मांस दे ही मत! और अेक रक्ताक्त अस्थिखंड ही अुसके सामने फेंक कर देख, वह हिंस्र पशु किस तरह मटक मटक कर अुसको चाटता है ! ठीक अुसी तरह मनके पिंजरे में जहाँ वर्षानुवर्ष कामविकार भूखा बंद करके रखाजाता है, अुस काले पानी में स्त्रीका जो नाम कानपर पडा, वह नाम अितना अधिक मनमें भर जाता है कि, अुस स्त्रीकी अेक मूर्ति बन जाती है, अुस काल्पनिक मूर्ति पर ही मन लंपट हो अुठता है, वास्तव में नहीं तो स्वप्न में ही अुसके साथ रममाण होता है ! हिंदू लोगों का अुषा का आख्यान तूने सुना है ? स्वप्न में का प्रिय पुरुष अुसे प्रत्यक्ष दिखाअी देनेवाले पुरुष की अपेक्षा भी अधिक विव्हल करनेवाला हुआ ! वैसा ही मेरा भी हुआ। बारबार अुस अकेले कैदखाने के साथी के साथ बातचीत का मौका पडने के कारण और अुस बातचीत में अिस अुपवर लडकी की ही बातचीत बारबार होने के कारण मेरी अुपोषित कामवासना पर अुस कल्पना की, अुस नामकी, जो अेक छाप बैठी वह अब दूसरी किसी भी प्रत्यक्ष स्त्रीकी बैठती नहीं ! और क्या तमाशा है देखो, अुस नामकी अुस स्त्री की वह कामातुर कल्पना ही अब प्रत्यक्षरूप से भोगने को मिलेगी ! बस, अुसे भगाना है ! '

" अुसको भगाने का निश्चय होते ही हमने हमेशा की युक्ति-योजना की। भजन समाप्त होकर जनसंमर्द लौटने लगा। भीड में जिस जगह

मालती अपनी माता के साथ चली जा रही थी, वहाँ हममें से दोचार आदमियों ने झूंठमूंठकी मारामारी शुरू की। अेकदम भीडमें हंगामा मचने लगा। अुसमें मालती को अपनी मां से अलग कर लिया। योगानंदजीके अेक शिष्यन अुसे घरतक पहुँचवाने के लिये अपने साथ ले लिया और सीधा गुलाम हुसेन के अड्डेपर लेजाकर छोड दिया। वह रात अिस दुष्टने मालती की ही बलात्कारित सेजपर व्यतीत की।

"दूसरे दिन अिस अपहरण की बात लोगों तक न फैलजावे अिस बुद्धि से हमने चाल चलकर मालती की मां को मीठी मीठी बातों में फुसलाकर दूर के अुलटेही रास्ते पर लगा दिया। अिस लुच्चे को मालती के भाअी का काले पानी में रहते समय से रंगरूप आदि सारा वृत्त मालूम था। अुसीको अंतर्दृष्टिका नाम दे कर अिसने अुसकी मां को कह सुनाया। जिस बातका ज्ञान अुसकी मांको भी नहीं था,—अुस माथेपर के घावके चिन्ह को जलादर्श यंत्र और अंतर्ज्ञान का पाखंड रचकर अिसने अुन्हें बतादिया। वे बिचारी अिसके अन्तर्ज्ञान के फंदेमें फँस गअीं। यह देखतेही अिसने मालतीकी मांसे कहा कि, मालती अपने अेक प्रियकर के साथ यहाँ से नागपुर की तरफ चली गअी है, अगर तुम बगैर हल्ला गुल्ला किये नागपुरकी तरफ चली जाओगी तो तुम्हें वहाँ मालती मिल सकेगी। अैसी भविष्यत् कथापर पूर्ण विश्वास करके वे बगैर पुलिस को अित्तिला दिये नागपुर की ओर रवाना हो गअीं। हम भी अब मथुरा से पौबारह करना ही चाहते थे कि अकस्मात् अन्य अस्मदीय प्राक्तनकृतकर्मणांविपरिपाकवशात् हम लोगों की यह अवस्था होगअी। यह अिलाहाबाद का वारंट छूटा और हम अुसके साथही पकड लिये गये। अुस गडबडी में वह राक्षस गुलाम हुसेन अुस अुपवर मालती को लेकर कहाँ चंपत होगया अिसका सुगावा (= पता) मात्र अभीतक किसी को भी नहीं लगा है! अुस अत्यंत निष्पाप, निरपराध, असहाय, कोमल कन्यका की क्या क्या विडंबना हुअी होगी—दुर्गति हुअी होगी यह देव जाने!"

न्याय-संयत होते हुअे भी अुस न्यायाधीश के ओंठ गुस्सेके मारे अेक ओर फडकने लगे तो दूसरी ओर आँखों से करुणा का अुत्स भी प्रस्नवित होने लगा। श्रोताओं में भी अनेकों के नेत्रयुग आर्द्र हो अुठे।

अेक और भी व्यक्ति थी जिसकी आँखें अश्रुओंसे आच्छन्न हो रही थीं। वह न्यायाधीश नहीं था; न्यायालय का श्रोता भी नहीं था, तब ?— वह था अुन आरोपी डाकुओं में से ही अेक आरोपी— पश्चात्तापनिर्दग्ध किशन ! !

वह दीखने में कुरूप, वाणी का संयत, वय से तरुण मन से कोमल, चाल-चलन से रोबदार मालूम पडता था। सारे अभियोग-प्रकरणमें वह गर्दन नीची किये बैठा रहता था। वह अब अपना वक्तव्य (Statement) देने के लिये जब अुठा तब गर्दन सीधी तानकर शांतता के साथ अेक अेक शब्द चुनचुनकर अुपयोग में लाता हुआ और मालती की अुपरिनिर्दिष्ट विडंबना के अुल्लेख के समकाल ही आँखों में आये हुअे अश्रुओं का परिमार्जन करते करते बोला——

"मैं काशी में (निवास करनेवाला) वेदांतविद्याका अेक अनाथ विद्यार्थी था। मेरे चित्तमें विरक्ति अुत्पन्न हुअी। मन में आया, किसी गुरुके सान्निध्यमें जाकर भक्ति और योग की साधना की जावे। मैं कुछ दिनों बाद जब मथुरा आया, अुन्हीं दिनों योगानंदस्वामी के भजनकीर्तन का तथा अन्तर्ज्ञान का बडा गाजाबाजा (प्रोपेगंडा) हुआ। विवेकहीनता के वशवर्ती हो मैं अिसका शिष्य बन गया। मुझे सारंगी अच्छी तरह आती है। भजन भी आता है। अिस लिये भजनमें मैं अिसका साथ देने लगा। अेक अठवाडा भी बीता न होगा कि 'यह हिंदू है, नया है, अतः अिसे दूर रखना चाहिये' अैसी अिस टोली के कुछ लोगों की खुसफुस मेरे कानों पर आअी ! अिन लोगों का कोअी कपटनाटचप्रयोग चल रहा है, अैसी शंका भी मेरे मनमें आअी ! पर अिस योगानंद नामधारी मनुष्य के प्रति मैं गुरुदेव की भावना से देखता था और अुस समय अिसका कोअी पग अुन्मार्ग पर पडता हुआ दृष्टिगत नहीं हुआ था; अतः अितर शिष्यों का दोष मैंने अिसके मत्थे नहीं मढा और नाहीं बुलाये बगैर कभी मैं अिनके मठ या बैठक में गया। अुसके दो तीन दिनके बादही रात को भजनके बाद लोगों के लौटते वक्त गडबड हुअी और हो हल्ला मचा। अुस रातको योगानंदने मुझे बुलाकर कहा,

"'मालती भीडकी गडबडी में अपनी मां से बिछुडगअी है, अुसे अुसके या नायडबाअी के घर सुरक्षित पहुँचवाना है। नायडूबाअी के साथ वह जब

भी कभी यहाँ आओी तब मैं तुझे ही अुनके साथ घरपर भेजा करता था; अतः वह तुझपर विश्वास करती है, और यदि तू साथ रहे तो वह आज रात को ही मेरे मोटर ड्राअिवर के साथ मोटर में बैठकर वापिस जाना चाहती है। अतः तू अुसे ले जा।'

"मैंने आनंद से यह स्वीकार कर लिया। मालती से कुछ सान्त्वना के शब्द मैं कहने में तल्लीन होगया। अुतनेही में मोटर मथुरा के किसी अपरिचित भाग में घुसकर किसी अपरिचित घरके सामने जाकर खडी होगअी। मेरे पूछनेपर मोटर ड्राअिवरने कहा,

'नायडूबाअीने यहाँ अुतरने के लिये कहा है। वे अंदरही हैं।'

"अैसा कहकर मालती को वह घरमें ले गया और तत्काल बाहर आकर मुझसे बोला—' चलो, लौट चलें!' किसीभी विश्वासघातका किंवा गूढकर्म का लवलेश भी परिचय अथवा शंका न रहने के कारण मोटरसे अुतरते समय मालती के अंदर आनेके लिये कहने पर भी मैं अुसके साथ भीतर नहीं गया और मोटरवालेकी बात सुन अुसी समय में लौट गया। पर मुझे अुस समय मठमें न बुलाकर अन्यत्र ही रक्खा गया। दूसरे दिन रात को सभा के समय ही संगीत में साथ देने के लिये लाया गया। अुस सभा के अंत में अिस टोली के अंदर मैं भी था; अतः मुझे भी पकड लिया गया। मैं मालती के विश्वास के लिये अपात्र तथा अुसकी सहायता के लिये अक्षम सिद्ध हुआ अिसका मुझे अत्यंत खेद है। यदि मेरा कोअी अपराध है तो मेरे मत में यही है!—न्यायाधीशके मनमें कौनसा अपराध सिद्ध होगा सो मैं नहीं कह सकता।"

आरोपियों में से सबके वक्तव्य, पुलिसवालों के सारे सबूत तथा अदालत का सारा काम लगभग समाप्त होने को आ रहाथा। पर रफीअुद्दीन अर्थात योगानंद अपने बचाव के बारे में कुछ भी नहीं बोला था। कभी मजाक अुडाता था—या हँसता था बस! अिन सब आरोपियोंकी ओर से वकालत के लिये सरकारने स्वयं अेक वकील दिया था। पर रफीअुद्दीन कभी कभी अुसकी-भी मखौल अुडाया करता—अिससे ज्यादा कोअी संबंध अुसने अुससे नहीं रक्खा था। अुसके विरुद्ध अुसकी टोलीमें से फूटे हुअे साक्षीदारों ने अुसके क्रूर कृत्यों के बारे में जो बयानात दिये थे, अुस वक्त वह अुनपर भी गुस्से

में आया हुआ सा नजर नहीं आया । न्यायाधीश के साथ मात्र अुसकी खूब घुट रही थी । अिस पैशाचिक मनुष्य के अघटित मनका शास्त्रीय विषय के समान गंभीर अध्ययन करने की बुद्धि से न्यायाधीश अुससे खोदखोद कर सवाल करते थे-अुसे हँसने देते थे, बोलने देते थे तथा बहुत बारीकी से अुसकी ओर देखा करते थे । अंतमें अभियोग का काम समाप्त करने से पूर्व अेक बार फिर वे रफिअुद्दीन से बोले,

"तुझे अपने अूपरके आरोपों के बारेमें या बचावों के बारे में अभी कुछ कहना है क्या ?"

"कहता हूँ थोडा सा ! " सभा के अत्यंत आग्रह के कारण जिस तरह कोअी दुड्ढाचार्य भाषण देन के लिये खडा होता है तद्वत् रफिअुद्दीन भी अदा के साथ हिंदी-अुर्दू में बोलने लगा,

"मेरे अूपर अिन चालीसपचास साक्षीदारों ने अितने असंख्य आरोप लगाये हैं कि, अलगसे मुझे आज अुनकी याद भी नहीं रह गअी है ! अतः अुन सब का अलहदा-अलहदा जवाब मैं क्या दूं ? अुन सबको मिला कर जो अेक बडा आरोप मुझपर लगाया जा सकता है, वह यह कि-मैं अेक खतरनाक गुनहगार हूँ ! और मुझे कडी से कडी सजा मिलना ही ठीक होगा !

"अिन पुलिसवालों ने तथा अिन आरोपियोंने मुझपर अितने आदमियों के मारने और अितनी लडकियों के बिगाडने का अिलजाम लगाया है, मानों मैं कोअी कहानी की किताब लिखनेवाला, नाटक करनेवाला या फैसला सुनानेवाला जज ही हूँ ! अपनी कहानी की किताब के पन्नेपर जितनी मर्जी अुतनी लडकियोंपर जिस से मर्जी अुससे नग्न बलात्कार करवा कर अपनी मानसिक कामचेतना की तटस्थ रूपसे सभ्यतया पूर्ति करते समय, या अपने नाटक के अेकही प्रवेश में रंगभूमि पर न समा सकनेवाले मुर्दे पटापट मारकर गिराते समय, या अपने निर्णयपत्रके अेक छेदक में "फांसी" अिन दो अक्षरों के गड्ढे में दो-दो सौ जीवों को गाडते समय, अगर कुछ टपकेगा तो स्याही की बूंदें ही कलम से टपकेंगी मगर आँखों से आंसुओं की अेक बूंद तक न टपकेगी ।-अैसे किसी सभ्य कहानीलेखक, नाटककार अेवं सदय न्यायाधीश के अतिरिक्त अन्य कोअी मनुष्य अितने भीषण कृत्य, अितनी

सफाअी से और अितनी जल्दबाजीमें कर ही कैसे सकता हैं, आप अिसपर भी तो खयाल कीजिये !

" तो क्या अिन सब पुलिसवालों ने, साक्षीदारों ने आरोपियों ने जान-- बूझ कर, कपटनाटचरचना करके ये सारे झूठे आरोप मुझपर लगाये हैं, अैसा मेरा कहना है ? नहीं महाराज ! मैं खुद को जितना गुनाहों से खौफ खाने वाला समझता हूँ, अुतना ही अिन पोलिसवालों को भी समझता हूँ । मैं भी निर्दोषी और ये सब भी निर्दोषी ! तब यह सारा विक्षिप्तविपरिपाक हुआ कैसे ? अिसका अुत्तर अेकही शब्द में कहा जा सकता है, और जिस अेक शब्द के अुच्चारतेही पुलिसवालों के पास मौजूद मेरे खिलाफ अिलजामोंका जबर्दस्त सबूत खोटा न ठहरते हुअे भी मुझे निर्दोष सिद्ध करने का जो गुरुमंत्र आपकी विवेकबुद्धि को हस्तगत हो जायगा, वह शब्द है गलतफहमी--समझका विप्रकार ! !

" और अुसका कारण मेरे अंदर--मेरी सर्वथैव निरुपाय स्थिति के कारण विद्यमान अेकमात्र दोष ! देवने मुझे किसी सभ्य, सदय, और साबुन से धुले हुअे न्यायाधीश सरीखा मुँह और शरीररचना न देकर अेक अत्यंत भयंकर डाकू सरीखी दी है । पर अिस दोषके लिय जो सजा मुझे देनी है वह मुझे न देकर देव को ही देनी चाहिये ।

" पंजाब में डाके डाल कर काले पानी में गये हुअे, काले पानी से भागकर आये हुअे विहार खानदेश प्रभृति प्रांतों में अक्षम्य अत्याचारों का भयंकर ताण्डव मचा देनेवाले किसी रफीअुद्दीन अहमद नामके अधमाधम, हत्यारे और नृशंस डाकू के मुँह जैसा मेरा मुँह और शरीररचना जैसी मेरी शरीर रचना दुर्दैवने हूबेहूब घड कर तय्यार की होगी और अुसी वजह से अिन सारे सज्जनों को मैंही वह पापी हूँ अैसा सात्त्विक क्रोध के आवेश में, अीमानदारीके साथ प्रतीत हुआ होगा ।

" महाराज ! अपने अिस कथन को भरपूर सबूतों के साथ मैं सिद्ध कर देना चाहता हूँ ! अतः जबतक असली खरा पापी डाकू रफीअुद्दीन अहमद मुझे न मिले तबतक मुझे निर्दोषी समझ कर छोड दिया जाय, अन्यथा पोलिस- वाले ही अुस को पकडकर ले आवें; अुसे देखतेही मेरा कहना कितना अक्षरशः सत्य है, यह आपके तत्काल ध्यान में आ जायगा । महाराज, आरोपी को

स्वसंरक्षणार्थ आवश्यक सबूत अुपस्थित करने के लिये यथाशक्ति सहायता देना न्यायाधीश का कर्तव्य है । और मुझे अपने बारे में जो सबूत पेश करने हैं अुसके लिये मैं आप से सहायता चाहता हूँ । वह देना आपके लिये दु:साध्य भी नहीं है । मुझे निर्दोषी समझकर छोड दीजिये मैं अुस असली रफीअुद्दीनको पकड कर लाता हूँ ! नहीं तो मैं अुसीकी साक्षी अुपस्थित करता हूँ ! आप कोर्टकी तरफ से——जबतक मैं अुसे पकड कर न ले आअूं तबतक के लिये जमानतपर छोड दीजिये ! बस, यही है मेरा बचाव–मेरा Defence ! (पुलिसवालों की तरफ देखकर) क्यों दस सोनारकी और अेक लोहारकी है कि नहीं ? "

अंदर ही अंदर हँसते हुअे रफिअुद्दीन अर्थात् योगानंद नीचे बैठ गया ।

" न्यायालयांतर्वर्ती मंडली की यथाशक्ति रोक रक्खी हुअी हँसी जबतक समाप्त नहीं हुअी तब तक न्यायाधीश भी ओठों से अखंड लेखनी की नोंक लगाये हुअे छतकी ओर विचारपूर्वक देखते रहे । फिर अुन्होंने पूछा——

" रफिअुद्दीन अर्थात् योगानंद, तुझसे सामान्य जानकारी के आखीर के कुछ सवालात मुझे अभी पूछने हैं । ठीक ठीक और सच्चे जवाब देगा तो अुसमें तेरा ही हित है । "

हाथ जोड वह आरोपी नम्रतया खडा होते हुअे बोला,

" पूछियेगा महाराज ! "

" तेरा सच्चा नाम क्या है ? "

" योगानंद गोस्वामी "

" तेरा धंधा क्या था ? तू क्या किया करता था ? "

" धंधा कहने के लिये, कुछ भी नहीं था । हां, देव का भजन किया करता था ! '

" अिन आरोपियों में से ये कुछ डाकू तेरे शिष्य बने थे यह सच है क्या ? "

" कुछ लोग मेरे शिष्य बने थे यह सच है, पर वे डाकू हैं या नहीं यह मुझे क्या मालूम ? "

" अच्छा, तेरे विरुद्ध साक्षी देनेवाला यह हसनभाअी तेरे परिचय का है क्या ? अिसकी कौन कौन सी जानकारी तुझे है ? "

"अिस मनुष्य को मैं पहचानता हूँ, पर अुसके अिस नामको मात्र मैं नहीं पहचानता। वह अिस जेलमें आने के बाद ही से सुनने में आ रहा है। अिसके बारे में मुझे जो जानकारी है, वह अितनी ही कि यह 'रामलाल' नाम अपना बताकर मेरा शिष्य बना था, यह अेक बात। दूसरी बात यह कि, अिसको भांग, गांजा और चरस का भयंकर व्यसन है। अुसके नशे में अिसको अूटपटाँग बातों का आभास हुआ करता है--अुस नशेमें सभी को वैसा होता है। पर अिसके बारेमें खास बात यह है कि, नशे में आभास हुअी हुअी घटनाओं की अिस के चित्तपर अैसी छाप बैठती है--जैसे डरे हुअे आदमी के दिलपर भूतों की बैठती है--कि, होशमें आने के बाद भी अिसे वह आभास न होकर घटनाअें ही थीं, Facts ही थीं, अैसा निश्चितरूपमें प्रतीत होता है! मेरे बारे में अुसने घटना का नाम देकर जो कुछ कहा है, वह अुसके गांजे के तथा भाँग के नशे में--हुअे हुअे अैसे ही कुछ आभास थे। जेलमें भी अिसे भांग, गांजा, चरस अित्यादि न मिलता तो अुसकी पीनक में पुलिसवालों ने अुससे जो कुछ झूंठमूंठ बातें कहीं अुन्हें सच मान कर अुसने यह गवाही में कहा हुआ गप्पोड पुराण कभी न कह सुनाया होता!"

"अच्छा तुझे मालती की जानकारी है?"

"है न? वाह महाराज! मालती की जानकारी के बारे में क्या पूछते हैं आप? वह मालूम है, अितना ही नहीं, मुझे वह बहुत पसद भी है!"

"मालती को पहले पहल तूने कहाँ देखा था?"

"रानी के बाग में!--मुंबअीमें! वहाँ पहली ही बार अपने छुटपन में मैंने जब मालती को देखा, तभी वह मेरे मनको अितनी सुहाअी कि मैंने अुसकी अेक कलम लाकर अपने बगीचे में लगाली। महाराज, मुझे जपा और यूथिका की अपेक्षा भी मालती बहुतही भाती है! भजन के समय में अिस मालती के फूलों का ही हार अपने गले में डाला करता था। बहुतही प्यारा झाड है यह, नहीं?"

अिच्छा न होते हुअे भी श्रोताओं ही के नहीं बल्कि न्यायाधीश के मुँहपर भी अिस ढीठ आरोपी के अिस अप्रत्याशित श्लेष के कारण अकस्मात् हँसी आये बगैर न रही। अुसे तत्क्षण दबाकर अुन्हों ने पूछना शुरू किया--

" तू भूत भविष्यत् वर्तमान की बातें बतलाने की अंतर्दृष्टि के नाम से लोगों को धोखा दिया करता था–यह सच है क्या ? "

" महाराज ! भजन में तल्लीन होते ही, मेरे अंतश्चक्षुओं के समक्ष अिच्छामात्र से भूत–भविष्य का चित्रपट खडा हो जाता है, यह सर्वथा सत्य है ! पर मैं अुसका ढिंढोरा पीटकर लोगों को धोखा देता था, यह बिलकुल झूंठ है । मेरा भविष्यत्कथन सत्य साबित होता है या असत्य यह तक मैं किसी से पूछता नहीं था । किसी से ज्यादा बोलता ही नहीं था । कपर्दिका तक किसी से लेता नहीं था । मैंने लोगों को ठगा नहीं ।–अुलटे, यदि किसीने ठगा है तो मुझ भोले भाले को अिन लुच्चोंनेही ठगा है, अैसा मुझे अब लगने लगा है । क्यों कि, साधुशील शिष्य के रूप में मेरे अतराफ जमा होकर अिन लोगों ने मेरे नामसे न जाने कितना गुरुडम फैलाया ! कितनों को लूटा, कितनों पर जुल्म किये, कितनों को ठगा वह अेकमात्र देव ही जानता है ! मेरा ध्यान ही अुधर नहीं था ! "

" वह तेरी अंतर्दृष्टि आज भी खुली है क्या ? हो तो अभी का अभी मेरे बारे में भी अेक दो भविष्यत्कथन बना कर दिखायगा क्या ? "

" हां सरकार ! यह खंबा जैसे मेरे बाह्य चक्षुओं को अिस समय स्पष्ट दीख रहा है, अुसी प्रकार आपके भविष्यकी भी दो बातें मेरे अंतश्चक्षुओं के सामने कल से बिलकुल स्पष्टरूप से प्रकट हुअी हैं । मैं कहने ही वाला था; पर––"

" यदि वे भविष्यत्कथन असत्य साबित हुअे तो ? "

" तो आप मुझसे तीसरा भविष्य न पूछें–होगया !! "

" अच्छी बात है, मेरे बारे का भविष्य कह कर तो बता पहले ! मगर गडबड गडबड और अगडम सगडम भाषा में नहीं–आँ, बिलकुल स्पष्टार्थ सूचक शब्दों में चाहिये । कह ! "

" अत्यंत स्पष्ट रूप से सरल अन्वययुक्त भाषामें, महाराज, मैं आपके लिये शुभ भविष्य यह कहता हूँ कि, अपनी मृत्यु अपनीही आँखों से देखने का दुःखद प्रसंग आप पर कभी नहीं आयगा ! दूसरा मेरे लिये अुतनाही अशुभ किंतु बिनचूक भविष्य यह है कि, अिस मुकद्दमे के निर्णयमें मुझे निर्दोषी

कह कर आप कभी नहीं छोडेंगे ! ! छाती हो तो मेरा यह भविष्यकथन आप झूठा साबित करके दिखायें ! "

अिस समयके अुस ढीठ आरोपीके झूठ-मूठके वीररस को और अुस छबी के अंदर ही अंदर हँसने को देखकर गांभीर्य को अेक ओर रख के खिलखिला कर हँसे बगैर न्यायालय के भीतर किसी से भी न रहा गया। चिंता और भय से थरथराने वाले आरोपी भी हँसे। हँसा नहीं तो अकेला वह किशन !

हँसने का अुस मुकद्दमे में अुन आरोपियों के लिये वह आखीर का ही प्रसंग था। अब, हँसते हँसते किये गये भयंकर पापों के भयंकर फल भोगने का समय समीप आया हुआ था !

न्यायाधीश न्यायनिर्णयका अुस दिन का काम समाप्त करके अुठे और मुकद्दमे (खटले) की बची खुची विधि को निपटाकर 'चौथे दिन निर्णय सुनाया जायगा' अैसा अुद्घोषा गया।

'रोशन !....बत्ती बाहेर लाव !' : : : ७

समस्त पृथ्वीतलपर जो खाल्डियन, ग्रीक, पारसी, यहुदी, क्रिश्चियन, मुसलमानी अित्यादि धर्मक्षेत्र हैं, अुनमें सब से ज्यादह प्राचीन होने पर भी अत्यंत आधुनिक कालतक अपने महत्त्व और आकर्षण को अबाधित रखनवाले और जैसे द्वापर में वैसेही आज भी कोटि कोटि हिंदुओं के ज्ञानतीर्थ बने हुअे श्री काशी क्षेत्रके समन्तवर्ती अेक अुपवन में से अेकांत रूपसे बहती जानेवाली गंगा के किनारे अेक पुराना घाट था। सन्निध लोगों की वस्ती नहीं थी। अेक छोटा सा महादेव का जनशून्य देवालय और अुससे लग कर खड हुअे- कुछ बिल के तथा सादे चम्पक के पुराने दरख्त बस, यही अुस स्थल का अलंकरण था।

जैसे कोअी महारानी राज-सभा के अंदर सामंत नृपतियों के, सेनापतियों के, प्रधान मंडल के मान-सन्मानों को राजकीय ठाठबाट से दिनभर स्वीकारते स्वीकारते थक जानेपर सांझको अपने अंत:पुरमें आती है, बाल खुले छोड देती है, अलंकार वेष वगैरा अुतार कर बिलकुल सादी घरेलू साडी चोली पहनकर अेकांत अुद्यान में अुन्मुक्त चित्त से पुष्पकुंजों में से होकर टहलने की अिच्छा हुअी तो टहलने लगती है, कोचपर थोडी देर पड रहने की अिच्छा हुअी तो पड रहती है, अुसी तरह भागीरथी काशी नगरी के सार्वजनिक घाटोंपर लाखों भक्तगणों के, राजा-महाराजाओं के, सैनिक, पुरोहित, पंडों के पूजा पुरस्कारों को बडी ही अदा के साथ स्वीकारती हुअी आने के बाद अब अिस सांझ के समय अुस अेकांत स्थल में अुन्मुक्त भाव से लहरें अुठाती हुअी बह रही थी। सामने आसमानमें संध्या कालके सूर्य ने लाल गुलाबी रंगों से लबालबभरे हुअे पश्चिम क्षितिज के हौज में से रंग छिडकते, पिचकारी मारते और खेलते हुअे पश्चिम दिशाकी बिलकुल रंगपंचमी ही कर डाली थी। अुस अेकांत स्थलमें, अुस पुराने घाटपर, अुस भागीरथी के सलिल-शांत पाट में, अेक ब्राह्मण तरुण स्नानविधि के मन्त्रों का अुच्चारण करता हुआ अुस संध्या समयमें अपना सायंस्नान कर रहाथा। स्नान के पूर्वही अपने वस्त्र धोकर अुसने अुस शिवालयके चतुर्दिक् विद्यमान चम्पक पुष्पके वृक्षपर सुखाने के लिय फैला दिये थे। स्नान समाप्त होते ही शरीरके भीगेवस्त्रों के समेतही अुसने सूर्यनारायण को अर्घ्य दिया। तत्पश्चात् अधूरे सूखे हुअे वे सुधौत वस्त्र धारण कर के अुसने थोडे से बिल्वदल और चंपक के चार फूल तोडे, महादेव के देवालयमें गया और शिवलिंग पर अुन्हें सद्भाव से चढाकर हाथ जोडकर मनही मन वह प्रार्थने लगा--

"देव, मेरी मूर्खता के कारण मेरे अूपर आया हुआ समस्त लांछन दूर करके अुस राक्षस योगानंद के पंजेसे मुझे छुडा दिया। अुन पापियों के संसर्ग दोष से मेरे अूपर डाकेजनी और मनुष्यवध के भयंकर आरोपों में से न्यायाधीशने सर्वथा निर्दोष समझकर मुझे जो छोड दिया, वह सब तेरी ही दया का फल है! अुन दुष्टों द्वारा आनीत गंडांतर में से मुझ निरपराध का यह पुनर्जन्म हुआ है! तेरी न्यायप्रियता की कीर्ति-रक्षा करनेवाली यह तेरी ही दया है!

"पर देव, न्याययुक्त दया पक्षपात विरहित ही होनी चाहिये, नहीं क्या ?" वह अंदरही अंदर घुटने लगा" तब–तब मुझसे भी अधिक निरपराध और अनागस अुस कुमारीपर दया आपको अभी कैसे आअी नहीं ? न्यायाधीशने मुझे अिस भयानक खटले में से निर्दोष समझ मुक्त कर दिया तथापि मेरा मन मुझे अेक दोषके विषयमें सर्वदा अशांत बनाये रखता है ! अपने हाथ से अनजाने क्यों न हो, पर मैंने मालती को अुसके अपने घर न पहुँचाकर किसी दूसरेही पते पर–वह पता अुसके घर का नहीं है यह जान कर भी–लेजा कर छोड दिया। वह 'अंदर मेरे साथ चल' अैसा कह भी रही थी तो भी भ्रांत धारणा के वशवर्ती हो अुसके साथ अुस दूसरे के घर में गया नहीं और किन्हीं अंशों में तो अुस नरपशु के–अुस गुलाम हुसेन के–हाथ में अुस असहाय कुमारी को सौंप देनेके दोष का मैं हिस्सेदार बना ! जान बूझकर नहीं हुआ, पर जो मुझे मालूम पडना चाहिये था, जिसका मालूम करना अुस समय मुझ द्वारा अंगीकृत कार्यभाग में मेरा कर्तव्य था, वह करने में मैं चूक गया, यह मेरी बेखबरदारी भी अेक दंडनीय अपराध है। नैर्बंधिक अपराध (कानूनन् गुनाह) न भी हो तो भी नैतिक अपराध तो हुअी है !

"मेरे अस्तित्व-हीन-अपराधों के आरोपों में से मेरी पहली मनौती को मान कर मेरा छुटकारा करनेवाले देव ! मुझे स्वयं जो घटित सा प्रतीत होता है अैसे अिस अपराध के दोष में से भी मेरा छुटकारा करोगे क्या ? अिस मेरी दूसरी भी मनौती को मानोगे क्या ? पहले तो अुस बेचारी मालती का अुस हिंस्र नरपशु के हाथ से छुटकारा कराने का अवसर तथा सामर्थ्य आप मुझे दें ! पर वह लगभग दुर्घट ही है ! मालती कहाँ है, यह भी किसी को मालूम नहीं ! तिसपर मैं कितना दुर्बल––कितना अपदार्थ ! अुन सधे हुअे पापियों के सशस्त्र कपटाचार से सर्वथैव अपरिचित ! तब वह अवसर और वह सामर्थ्य मिलना मेरे लिये दुर्घट ही हो तो कम-से-कम देव, तू अपनी न्यायप्रिय दया का सुदर्शन तो अुसके पीछे पीछे भेजकर अुन दुष्टों का संहार कर, मालती को तू ही छुडा !! देव, तू सर्व समर्थ है ! सज्जनों के संकटों को तू निवारता है अतअेव तुझे दयासागर भी कहते हैं !"

भक्ति गद्‌गद वाणी से वह तरुण देवकी अिस तरह प्रार्थना करही रहा था कि अुसका हृदय अिस अंतिम वाक्य से भर आया–"तू सर्व समर्थ

है ! तू सज्जन संरक्षक और परम दयालु भी है ! " तन्मय हो कर सर्वथा अेकअेक शब्द का अुच्चारण करता हुआ वह हाथ जोड कर ज्योंही खडा रहा त्योंही क्षणभर अुस का मन पूर्णतया निःस्तब्ध हो गया! पर अुसके बाह्य मन की अुस शून्यता में–अुसके आभ्यंतरिक मनके अंदर अुसके लिये भी अविज्ञात स्वरूप की-कैसी चर्चा हुअी कौन जाने–पर अुसकी वह तल्लीन शून्यता समाप्त हो जानेपर अेक स्पष्ट शंका अुसके चित्त में आअी और अुसे टोककर पूछने लगी––

" देव यदि सुजनों के संकटों को दूर कर सके अितना परम दयालु और सर्व समर्थ भी है, तो वह अुन निरपराध सुजनों को प्रथमतः संकटों के गर्त में धकेलता ही काहे को है ? दुर्जनो को प्रबल करता ही क्यों है अुन सुजनों पर अनन्वित अत्याचार कर सकें-अितना ? सुजनों की कसौटी देखने के लिये ? पर तब देव का सर्वज्ञत्व ही कहाँ बच रहा ? भक्त सच्चा है या झूठा, यह दुष्टों के हाथ से अुस भक्त की अत्यंत दुर्गति किये बिना देव को विदित नहीं होता अैसा कहना देवकी सर्वज्ञता के लिये ही नहीं अपितु अुसकी परम दयालुता के लिये भी परम लांछनास्पद नहीं क्या ? गांवकी डाकुओं के आक्रमण से सुरक्षा करने का सामर्थ्य रहते हुअे भी, गांवपर डाका पडनेवाला है, यह मालूम होते हुअे भी जो अधिकारी पहले डाकुओं को ग्रामवासी निरपराधी लोगों को यथेच्छ लूटने देता है, मारकाट, अग्निकांड मचाने देता है, और तब अुनकी दर्द भरी पुकारों पर, अुनकी मनौतियों पर प्रसन्न हो, अुनके रक्ताक्त घावों पर विनामूल्य औषध लगाने की व्यवस्था करवाता है, अुस अधिकारी की वह दयालुता क्या स्तुति-पात्र कहला सकती है ? क्यों. . ."

अेक के पश्चात् अेक अुफनाते हुअे आनेवाली अिन शंकाओं की अकस्मात् भीषण बाढ में अुस तरुण का दम घुटने सा लगा । और अुसने बडे प्रयत्न से अुस प्रवाह को बलपूर्वक वहीं का वहीं रोक कर अुस में डूबते हुअे अपने चित्त को बचालिया ।

" पाखंड ! पाखंड !! " अपने आप में ही जोर जोर से बोलते हुअे वह जल्दी जल्दी अिधर से अुधर और अुधर से अिधर चक्कर मारने लगा । चित्त थोडासा शांत हुआ तब अुसने मानों अुन शंकाओं और विचारों से मलिनीभूत चित्त का अक्षरशः प्रक्षालन करने के हेतु से ही गंगा के अुस पवित्र और

शीतल जल का आचमन किया : और विचारों के प्रवाह को दूसरी दिशा की ओर मोडने के लिये, पश्चिमदिग्वर्ती सूर्य के रंगपंचमी के खेल के धूल्युद्धूलन की शोभा देखता रहा।

अुस लाल गुलावी स्वर्णशलाकाभ किरणों का ज्योतिःपुंज भागीरथी के प्रवाह में नीचे गहराअी तक प्रतिफलित हो रहा था। लहर-लहर पर वे रंग नाच रहे थे। जब वे लहरें अूपरकी ओर अुठकर फूट जातीं तब अुनके सहस्रावधि तुषार अुडते—छोटे-छोटे अिंद्रधनुष्यों की बौछार की बौछार नदी-पारवर्ती पानी पर पडकर तरंगित होती।

शनैः शनैः पश्चिम के क्षितिज पर की वह लाल, गुलाबी, शातकुंभ किरणाभ छटा, धुंधली, हलकी, फीकी अेवं विरल होने लगी। तेजस्वी धुरंधर युगपुरुषके नष्टप्राय हो जाने पर राष्ट्र का जीवन जैसे म्लान हो जाता है, वैसे ही अुन स्वर्णिम रश्मियों के समूह को निःशेष रूपमें समेट कर अस्ताचलके पीछे सूर्य के विलुप्तप्राय होते ही गंगा का प्रवाह भी रंगहीन, निस्तेज और मलिन दीखने लगा। किसी सुंदरी के शरीरमें से चेतना निकल जाय तो जैसे अुसके अूपर तत्क्षण प्रेतकला आ जाती है अुसी प्रकार पश्चिम के मुख पर भी तत्क्षण काली छाया फैल गयी। जो प्रफुल्ल मेघ-खंड गुलाब की पंखडी की तरह सुहाते थे वे अब शीघ्रही सडे बुसे शुष्क पर्णों के आर्द्र ढेर की तरह दीखने लगे।

अंधकार की पकड में आकर पश्चिम दिशा के अिस तरह काले पडते ही अुसकी प्राग्वर्ती आभामय सुषमा से रंगमग्न हुअे हुअे अिस तरुणकी आनंदपूर्ण स्मृतियाँ भी अस्तंगत हो गअीं और अुसके चित्त में भी दुःखद स्मृतियों का अंधकार प्रसृत होने लगा। "अेक, दो, तीन, चार! हां; चार दिन पहले ही अिस समय मैं कारागृहांतर्गत भयानक तनहाअी के अंधकार में तथा आगे की दुश्चिता में पडा हुआ था। मेरे पैरों की वे बेडियाँ टूट गअीं—निर्दोष छूट आया—आज मैं यहाँ अुन्मुक्त वृत्ति से अिस ताजी और मुक्त वायु को श्वासोच्छ्वास रहा हूँ!—पर मालती? हाय! हाय! यह गुलाबी पश्चिम जिस तरह अुस अँधेरे की पकड में आते ही काली पड गअी, अुसी तरह वह सुंदर किशोरी अुस हिंस्र राक्षस के पंजे में फँसकर आज प्रभाहीन हो गअी होगी। अस्तव्यस्त बिखरे हुअे केश, भीतिके कारण मूर्तिगत हास्य, और मुँहपर फैली हुअी चिंता की प्रेतकला—अिस रूपमें वह कहीं पर पडी

होगी? तर्क भी करना कठिन है कि, अुसको कहाँ पर भगा कर लेगये होंगे ! ''

वह अुठकर घाटपर अिधर से अुधर चक्कर मारने लगा—अुसे पहले तो अनेक दिनों की आदत के कारण प्रतीत हुआ कि, पैरों में बेडियाँ हैं अभी—चलते समय अुनको सँवारने के अुद्देश्य से अुसका हाथ कमर के नीचे चंचल-सा हुआ ! तत्पश्चात् वह छूट गया है, बेडियाँ टूट गअीं हैं, कैद की कोठडी में अब वह नहीं—अिस बात की याद हो आते ही वह मन ही मन हँसा ! दूर पर कहीं देखते हुअे मालती कहाँ होगी अिस बारे में बेलगाम तर्क वितर्क करते हुअे, अुसके बारे में अनेक काल्पनिक प्रकरणों की योजना करते हुअे, कुछ घूमते हुअे—और कुछ ठहरते हुअे वह वहाँ रहा ।

वह किशन था ! योगानंद अर्थात् रफिअुद्दीन अहमद के डाकेजनी के खटले में पडने से पहले न्याय वेदांत शास्त्रोंका अध्ययन करने के लिये जब वह काशी ही में रहा करता था तब अिसी महादेव के देवालय में वह अेकांत स्थान की अिच्छा से आकर बैठा करता था । अुस देवता को ही वह आराध्य देवता मानता था । आगे चल कर अुस योगानंद के ढोंग धतूरे के फंदे में पड कर जब वह अुसके साथ पकडा गया, तब कैदखाने में अुसने अिसही देवताके नामपर निर्दोष छूटने के लिये मनौती न्यौती थी । अुस खटले का निकाल (निर्णय) अिलाहाबाद के न्यायालयमें चारपाँच दिन पहले ही लगा (प्रकट हुआ) था । रफिअुद्दीन अहमद को आजन्म काले पानी की सजा तथा अुसके साथियों में से बहुतसों को सात से दस बरस तक की कालेपानी की सख्त सजा सुनाअी गअी थी । दो को छोड दिया गया—अेक हसनभाअी को—वह क्षमा का सरकारी साक्षीदार हुआ अिसकारण से; और अिस किशन को, पूर्ण निर्दोष होने के कारण ।

वहाँ से छूटते ही वह सीधा काशी चला आया और अपने प्रिय अेकांत देवालय में अुतरा । अुसका घरबार तथा कुटुंब कुछ भी अवशिष्ट नहीं था । वह बिलकुल निर्धन था— अतः अुसे कोअी अधिक पूछता ताछता भी नहीं था वह कुछ कुरूप था; अतः अुस पर कोअी आसक्त भी नहीं हुआ था । मथुरा में रहते समय, मालती को लाने और भिजवाने के लिये, वह पक्का जेबकतरा रफिउद्दीन जब योगानंदके वेष में व्यवहार करता था, अुन दिनों अुसने अिस

किशन को ही मालती के साथ भेजने के लिये जो चार पाँच मर्तबा चुना था, वह किशन के किसी सद्‌गुण के कारण नहीं बल्कि अुसकी अिस थोडीसी कुरूपता के अवगुण के ही कारण! अुतने अर्थ में, अुसकी कुरूपता अुसके लिये अुपकारकारक ही साबित हुअी! क्यों कि अुस कुरूपता के कारण ही अुसका मालती के साथ परिचय हुआ और अुस परिचय के कारण अुसके साथ दया युक्त प्रेमकी भावना से बोलने वाली तथा अुसको अच्छा कहने वाली पहली व्यक्ति अुसको मिली! मालतीने तथा मालती की माँ ने किशन के सुशील स्वभाव की कितनी ही दफा प्रशंसा की थी। अुन दो तीन बार के सहवासों में किशन को लगता था कि, सचमुच अुन दोनों का अुस पर बहुत ही दयाभाव अेवं स्नेहभाव है! अुसके अुस समय तक के जीवन में किसी ने भी अुसके हाल-हवाल नहीं पूछे थे! अत अेव मालती और अुसकी मां के वे दो चार मीठे शब्द भी अुसको विशेष ममता-द्योतक प्रतीत हुअे होंगे! अुसके मन में अुन दोनों के प्रति सच्ची स्नेहभावना थी! और समस्त आयुष्यमें पहली बार के अुस स्नेह से अिस प्रकार जब अुसे दूर होना पडा और अुसी की गलती से अुसके अूपर दया-स्नेह प्रदर्शित करने वाली व्यक्ति पर अिस प्रकार का संकट अुपस्थित हुआ अेवं अुसका सत्यानाश हो गया, तब यह शल्य अुस के मन में निरंतर पीडा अुत्पन्न करने लगा। अत्यंत सहज भाव से मालती अुसको जितनी मीठी आवाज में पुकारती थी, अुतनी मीठी पुकार अुसको जन्मभर में सुनाअी नहीं दी थी।

"मालती! फिर अेक बार वैसी मीठी आवाज में पुकार ना मुझे!—किशऽऽन!" अुसने मालती जैसी पुकार अपने ही आप मार कर देखी! फिर थोडे से विसंगत विचारों के प्रवाह में देवालय में आया, वहाँ भी चक्कर मारने लगा और अंत में अपने ही आप से अूंची आवाज में बोला——

"हेहू! बडे बडे पुलिस वालोंको अुस नीच गुलाम हुसेन का पता नहीं चल पाया—मुझे भला कैसे चल जायगा? यदि चल भी जाय, तो मेरे जैसा असहाय पामर अुस चांडाल चौकडी में से अुसे छुडा कर कैसे ला सकता है? अशक्य अशक्य! वह यदि शक्य है, तो देव तुझ अकेलेही के लिये! छुडा न, मालती को मुलाकात करा न मुझसे! तेरी अिच्छा मुझ पामर को कैसे समझ में आयगी? मैं अुसे पूछता ही नहीं! पर अपनी अिच्छा मुझे

अच्छी तरह समझमें आती है। वह बताये बगैरे मुझ से रहा नहीं जाता ! मालती को मुझसे मुलाकात करा न ! !"

अुसने देवको साष्टांग नमस्कार किया। आँखों से विगलित अश्रु-बिंदुओं को अुसने पोंछा। निष्फल विचार करते करते अुसका मगज बिलकूल खाली–अेवं सुन्न सा होगया। अन्तर्वर्ती विचार ज्योंही कुछ कुँठसे गये–वह बिल्व वृक्ष के मूल का आधार लेकर, दूर आकाश में अुडते हुअे–अपने घोसलों को पहुँचने की जल्दी करनेवाले दो-चार पंछियों का तमाशा देखने लगा।

अितने में समीपस्थ अुस घाट की पौडियों की ओर किसी के मुँहसे सीटी की आवाज सी सुनाअी दी। घूम कर देखने पर कोअी पौडीपर से नीचे झुक कर पानी की ओर देखता हुआ सा दिखाअी दिया। और थोडी ही देरमें पानी में घडा डुबाने की आवाज भी आअी !

"कौन भला, घडा भरकर पानी ले जाने के लिये अितने विजन संध्या समय में, गंगा पर आया हुआ है ? अिस जगह लोगों का आना जाना बहुत कम रहता है, यह पानी ले जाने का घाट भी नहीं है। अैसे वक्त पानी का घडा भर कर ले जाने वाला मनुष्य अवश्यही यहीं कहीं अुतरा हुआ होगा ! होगा बेचारा पांथस्थ कोअी भी !"

अैसा मन में बोलता हुआ किशन अुस घडा भर कर अुठनेवाले मनुष्य की धुँधली सी मुखाकृति की ओर सहजभाव से ही देखता रहा; पर घडा कंधे पर रखकर मुँहसे सीटी मारता हुआ वह मनुष्य परली तरफ के आये हुअे रास्ते से न जाकर देवालय के साथ लगे हुअे रास्ते से, जैसे जैसे नजदीक नजदीक आने लगा, वैसे वैसे किशन भी मनही मन अधिकाधिक चौंकता चलागया ! अच्छी तरह देखने लगा, बिल्ववृक्ष की आडमें छिपता चला गया, और मनो-विनोदार्थ मुँह से सीटी मारता हुआ कंधेपर घडा रक्खे जानेवाला वह मनुप्य देवालय की समीपवर्ती पगडंडी से चलता हुआ अपनी मौज में जब थोडासा आगे गया त्योंही किशन संताप के, भय के और कुछ आनंद के आवेशमें ओंठ फडकाते हुअे मन ही मन बोलने लगा—

"यह ही ! बिलकुल निश्चित ! यही है वह गुलाम हुसेन ! खटले में हसनभाअी ने जो कहानी सुनाअी थी, वह यदि सच है तो मालती को भगाने का काम अिसी ने किया है। पर अिसने अुसे बलूचिस्तान सरीखे

दूर के प्रदेशमें भेज दिया या बेच दिया ? या अपने ही पास रख लिया ? यह यहाँ कहां ? चोरकी तरह छिप कर रहता है अिस वीरान अिलाके में बहुधा ? पर यदि वह अिसीके पास होती ? दीखेगी क्या मुझे ? अेकबार तो मालती दीखेगी क्या पुनः ?—अरे, पर यह चला अँधेरे में ! ठहरता हूँ क्या मैं मूर्खों की तरह यहाँ ? क्या डरपोक है यह मन ? कहता है, अपने हाथ में तो कुछ भी नहीं और यह तो पक्का नृशंस—सशस्त्र भी होगा ही ! अत्यंत विचारशीलता कभी कभी नामर्दपने का भी रूप धारण करती है अैसा ! जाना ही चाहिये अिसके पीछे ! किसे मालूम अिसने मालती को यहीं कहीं छिपा कर रक्खा हो ! क्या योग है ! जान लूंगा—अपनी दूंगा—पर अुसे छुडाअूंगा ! "

अिस आखिरी वाक्य से अुसमें हाथी का बल और बाघ का साहस आगया ! " किशन ! छुडा न मुझे ! " अैसी मालती की आर्त पुकार अुसे सुनाअी सी दी !

किशन पहले तो झप—झप चला । पर जब अुस आदमी के अितना समीप आया कि, अुसके पीठ पीछे से अुसका रास्ता नजर आ सके तब जरा दुबककर चलने लगा ! आगे चलने वाला यह मनुष्य गुलाम हुसेन ही है, अिसमें किशन को अब संदेह ही नहीं रह गया था । गुलाम हुसेन कुछ दूर जाने के पश्चात पगडंडी छोड कर अेक खंडहर की ओर चला ! आगे अेक बडे, पक्के, पत्थरों से बने चबूतरे की आड थी। वहाँ अेक घुमाव लेकर वह अेक पर अेक रक्खे हुअे पत्थरों के बांधके पास आया । बांधपर घडा रखकर, बांध के अूपर से अंदर की तरफ फाँद कर, घडा कंधेपर ले अेक बडे वटवृक्ष के मूलकी आडमें बने हुअे अेक खपरैल का छोटा सा घर था अुसके दरवाजे पर आया । अुसके पीछे पीछे सुरक्षित अंतरों परसे रास्ता निकालते हुअे [illegible] किशन अुस बांध के पास आया—अुस घर में से कोअी व्यक्ति [illegible] खोल कर गुलाम हुसेन के सामने आती है या नहीं यह आँखें फैला फैला कर देखने लगा । घर के अंदर का प्रकाश हिलता सा नजर आया, अुसे देखते ही अुसके दिमाग में आया कि अंदर कोअी आदमी है—वह मालती ही तो नहीं न है ? अुत्सुकता से अुसकी छाती धड धड करने लगी । पर गुलाम हुसेन घडा नीचे रख कर, कमर के नजदीक कुछ खोलकर अुस बंद दरवाजे के अूपर की चौखट के

समीप ज्योंही अपना हाथ लेगया त्योंही किशन के ध्यानमें आया कि, दरवाजे को तो बाहर से ताला लगा रक्खा है ! अुसपरसे अंदर कोअी भी नहीं है यह जान लेतेही अेकदम अुसका आशा-भंग होगया। जिस तरह मालती हाथ में आअी अुसी तरह वह विलुप्त भी होगअी ! अुसका जी तिलमिलाने लगा। अितने में ग़ुलाम हुसेन ने ताला खोलकर दरवाजा खोला और थोडा सा डॅाटते हुअे वह कहने लगा—

"रोशन ! रोऽऽशन ! बत्ती बाहर लाव ! क्या ? नहीं आती ? घसेटके ले आवूं ?"

वे शब्द सुनतेही किशन का शरीर कांप अुठा। अंदर कोअी औरत है ! अुसे कडी निगरानी में रक्खा गया होगा ! बाहर जाना हो तो यह राक्षस अुसको ताले में बंद कर के ही बाहर जाता है ! वह अिसका कहना मनसे नहीं मानती ! यह मौका पडने पर अुसे घसीटने से भी नहीं चूकता ! अितनी लंबी चौडी बातें अुसको अुस अेक चार शब्द वाले वाक्य में ही मालूम पड गअीं। अुसकी अुम्मीदके लिये वह अितनी अनुरूप साबित हुअी कि, वह ओंठों ही में बोलने लग गया—

"हो न हो मालती ही अंदर है ! रोशन—का मतलब ही मालती ! आयेगी क्या वह बत्ती लेकर बाहर ?—अुसे खींचकर ही लाता हूँ !..."

सचिन्त अुत्सुकता से अुसकी छाती धडकने लगी ! ग़ुस्से से अुसके ओंठ फडकने लगे ! बत्ती दरवाजे के पास आअी। वह पत्थर के बॅाधके पीछे छिपकर देखने लगा धुआँ अुगलने वाली आगको कुरेदने से जिस तरह वह थोडी सी जल अुठती है, और थोडीसी लपट अूपर को अुठने लगती है, तद्वत् ग़ुलाम हुसेनके 'आती कि नहीं ! अिधर ! और आगे !' अैसे धमकी भरे शब्दों के साथ साथ अपने हठीले पैर आगे रखती हुअी, फिर हठीले स्वभाव से ठहरती हुअी, बत्ती हाथमें लेकर मुसलमानी वेश में अेक तरुण स्त्री अंतमें बाहर आअी ! वह बत्ती ग़ुलाम हुसेन द्वारा निर्दिष्ट कांटेपर टांग दी। और पुनः वह घर में जाने लगी। त्योंही ग़ुलाम हुसेन ने अुसे पकड लिया ! पास ही अेक बडा वृक्ष का लट्ठा पडा हुआ था। अुस पर वह कुर्सी की तरह पैर लटका कर बैठ गया और अुसे अपनी जांघों पर बलपूर्वक घसीटते हुअे बोला,

"आब, तू हंस या रो पड पर मैं अभी तेरे साथ प्रेम की मजा लूटूंगा ही ! देखने दे तो तेरा वह सुंदर मूंह ! नहि अुठाती मूंह अूपर ? तो अैसा मैं जबरन अुसे अूपर अुठावूंगा और मेरे आंखें भर भर करके तेरी खुबसूरती की शराब पी लूंगा ! "

अिस प्रकार लाड में आकर बोलते हुअे अुसने अुस रमणी का वदन-मंडल बलपूर्वक अूपर अुठाकर दोनों हाथों से अुस दीप के प्रकाश में पकड लिया । आँखें भर भर कर अुसकी सुंदरता का मद्य वह पीने लगा । झूलने लगा और अुस मुँहके मटामट चुंबन लेने लगा । कहने लगा—

" वाह वाह ! अिस अंधेरे रात में नया चांद ! अै रोशन, क्या बोलती थी तुझे तेरी मा ?—मालती ? अै मालती ! मेरी जान ! "

अुस अंधेरी रात में कोअी नवीन चंद्रमा अुगे अुसी तरह वह मालती का मुखमंडल गुलाम हुसेनको सुंदर भासित हुआ । वह देखते ही वह अंधेरी रात किशन को और भी अधिक काली भासने लगी । अस दीये के प्रकाशमें अुठाकर पकडे हुअे अुसके मुखमंडल के स्पष्टरूपमें दीखते ही वह मालती ही है यह किशन को निःशंक रूपसे मालूम पड गया । और जिस मालती को अेक सोने की थाली में गूंथकर रक्खी हुअी पूजाकी शुभ्र और पवित्र पुष्प-माला की तरह अुसने मथुरामें देखा था, अुसी को अुस अमंगल, दुर्दण्ड नीच की जांघोंपर गँदले कीचडमें पडे हुअे निर्माल्य के सदृश तादृश जुगुप्सित दुर्दशा में देखते ही अुसकी आँखों के सामने अेकदम अँधेरा आ गया !

" मालती ! तुझे मेरी बोली समझती नहीं ? अच्छा ! मैं तेरे टूटे फूटे मराठी में बोलतों, सुन ! तू अैसी दुख में कां ? तुझी मा तुला आठवते ? अिस लिये तू अबतक दांडगाअी करते, अभी रडते, मला झिडकारते ? रोज तो मेरे बिछोनेमें तेरे को लेनाहि है ? फेर बळ सें हम तुझ्यापासून जें छिनावून घेतोंच है तें सुख तू हमनें हँसते हँसते क्यों देत नाहीं मुझे ? तुझी आअी भी तुझ्यापास आणून ठेवूं ? बोल ! तुझ्या आअीला भी पळवून आणतो देख, फेर तो सुखमें हँसत सोयेंगी क्या माझ्या बिछोन्यावर ? तुझ्या आअी—"

" मेरी मांका नाम तो फिर मत निकाल अिस अपने नीच मुख से ! आग लगे तेरे मुँहको ! " अुसके हाथों द्वारा अूपर अुठाये गये और अब गुस्सेकी वजह से रोदिष्यमाण अपने मुँहको अेक झटका मार कर हटाते

हुअे मालती जो अपना सिर फिराने गअी–अुसके सिरका अेक जोर का तडाखा गुलाम हुसेन की ठुड्डीपर बैठते ही अुसकी दांतों की पंक्तियाँ अेक दूसरे से अैसी कचका गअीं कि, अुसके माथे में झनझना कर दर्दही पैदा हो गअी! अुसने गुस्सेमें आकर मालती के गाल पर ताड् करके अेक चपत जमा दी और जो ढकेल दिया, वह धडाम से जमीन पर जा पडी।

"राक्षस ! अभी तेरे नरडे की घूंट लेता हूँ ! " अैसा फुसफुसाते हुअे दया की और त्वेषकी लहर में किशन अेकदम बाँधपर चढने लगा।

"तेरी जान लूंगा या अपनी दूंगा " अिस खुमारीके साथ अुसने ज्यों ही बांधके अूपर अपना पैर रक्खा त्योंही नीचे का पत्थर खिसककर अुसका पैर अेक गहरे छेदमें जाकर अटक गया। अुसके साथही अुसके जोश की खुमारी अुतर गअी ! वह पैर छुडाने लगा–तबतक अेक दूसरा ही विचार अुसके दिमाग में आया–अुसका मन अुससे कहने लगा––" तेरी प्रतिज्ञामें से 'यातो गुलाम हुसेन की जान ले लूँगा' अिस विकल्पकी अपेक्षा 'या फिर अपनी जानही दे दूंगा' यह विकल्प ही अिस मुकाबिले में फलीभूत होगा अैसी संभावना अधिक है ! यह अधम हुसेन सशस्त्र तो होगा ही ! मैं निःशस्त्र ! अिस गुत्थमगुत्थे में मेरे अूपर का गुस्सा मालती पर निकाल कर यह मालती को जान से मार नहीं डालेगा, अिसका क्या सबूत ? फिर अिस घरमें अिसका अेक और भी साथी होगा ही। अैसे निर्लज्ज आदमियों का शृंगार अनेक बार संयुक्त रूपमें भी होता है, यह अिन्हीं के साथी हसनभाअीने मुकद्दमे (खटले) के समय शपथपूर्वक कहा था–! हेंहू ! अभी अिस प्रकार का साहस करना मालती को संकट में से निकालने के लिये प्राप्त सुवर्ण संधिको गँवा बैठने जैसा होगा !" अूपरके पैरको पत्थरों की पकड में से छुडाते समय किशन को अंधेरे में छिप जाने की गडबडी लगी हुअी थी। वह बांध की आड में छिपकर अेक ओर आगे क्या होता है यह देख रहा था दूसरी ओर अब आगे मुझे क्या करना चाहिये अिस विषय पर विचारों पर विचार आते जा रहे थे !

मालती धडाम से जो जमीन पर गिरी, वह वैसेही वहाँ पर सिरहाने अपना हाथ रख के सिसकियाँ भरती हुअी पडी रही ! गुलाम हुसेन तनकर खडा हुआ, कुछ क्षणोंतक वह अुसको अुसी अवस्थामें पडी हुअी देखता रहा। आँखें भर कर देखने के बाद और भी अधिक आतुर होकर हँस पडा !

"आह रे खुबसूरती ! छोकरी, यह चित्रके सदृश ठीक ठीक रेखांकित तेरी शरीर यष्टि कैसी प्यारी लगती है ! खडी होने के भी अपेक्षा यह हरिणी जैसे तेरे गौर सुंदर पैर करवटपर जोडकर सीधा लंबे तान कर जब तू पडी रहती है न, तब तेरी तनुलता अेक नवीन ही शोभासे मनको मोह लेती है ! और शंभर(= सौ) औरता खिलखिलाकर हँसने से जितना आनंद नहीं आता अुतना तुझे अिसतरह सिसकियाँ भरते और रोते हुअे करवट ले शरीर पूरी तरह फैलाकर सोती हुअी को देखकर मुझे होता है। तेरी छाती स्फुंदन में कैसी अुंचावते, बिखरे कुरल कैसे पंछियों के समूहकी तरह तेरे भालके मंडप पर खिळत अुडते है ! अब समझती है ना माझी मरेठी बोली तुला ? अुठ छोड दे नखरा. तू झिडकारतेस मला असलिये क्या मी छोड देंगा तुला ? प्यारी ! अैक (सुन)। गाय रहती है ना खूप दूधवाली ? वह जब हट से बेठजाती बिघडून लाथा मारूं लागती, तब बहाला घालून (डालकर) अुसकी तंगडचा बांधून अुसे बलपूर्वक अुठवाकर गवळी दूध काढतोच काढतो। गाय लाथाडते अिसलिये जो गवळी अुसकी हंडी के सदृश भरी हुअी कास (अूधस्) को दोहने का सोडतो, अुस मुर्दाडाने गाय बाळगावी कशाला (क्यों)? अूठ, प्यारी अूठ, तेरे जवानी की खुबसूरत गाय मै दोहूंगाहि दोहूंगा ! "

गुलाम हुसेन ने स्वतः नीचे बैठकर फिर जबरदस्ती से अुसे अुठाया अुसे पास लिया तथा अुसपर अपने हाथ फेरने लगा।

"प्यारे मालती ! ताले में दिनभर बंद करके रखता हूं अिसलिये तू घुस्सा करती पर पुलिसवालों को तेरा पत्ता न लगे, तुझे पकडकर ले गये तो तुमकोहि वे पोलिस हाण मार करेंगे ! दूसरे किसी दुष्ट के पींजरे में यह पांखरू (पंछी) जा पडेगा ! तेरे ये नखरे के पंख अुखाड कर फेंक देंगे मोहक मैंने ! वे चांडाल ! ये लाड, नखरे मैं हूं अिसलिये चलने देता हूं तेरी कोअी लांडगा (भेडिया) दुर्दशा न करे अिसलिये तुझे अिस मेंढवाडे में अिस तरह ताले में बंद करना पडता है माझ्या लाडक्या कोंकरा ! (-मेमने !) पर अब दो चार दिनों हीमें मैं तुझे अेकदम अितनी दूर और अैसे अेक रम्यवन में लेजाअूंगा कि वहाँ अिधर के पुलिस वालों के बापको भी अपना पता नहीं लग सकेगा ! वह हरामी रफिअुद्दीन तो पड ही गया अुस काले पानी के नरकमें जनमभरके लिये ! अुम्र कैद ! अुस सारे मुकद्दमे का

फैसला सुना दिया गया ! अब पुलिसवाले हम को योंभी भूल जायँगे। और अब मुझे अिस वन में अैसी जगह हाथ लगी है कि जहाँ तू भी अिच्छानुरूप आनंद से अपनी जिंदगी बसर कर सकेगी ! ये डाके में कमाये गये रत्नों के दो हार यह सोना और यह तू मेरी सोनी ! बस्स् भोगच भोग ! विलासच विलास ! जन्म भर भी मैं तुम सबको भोगता जाअूं तो भी तुम सब बाकी बच जाओगे ! आजतक कमाअी और अब रमाअी ! प्राप्ति का भोग ! प्यारी हंस ना, हंस, हंस, !" वह अुसे गुदगुदा करने लगा।

वह गुदगुदी मालती को रीछ की प्राणहारक गुदगुदी की तरह लगी। मन मसोस कर वह हँसी !—पर अुस गुदगुदी से किशनको सच्ची गुदगुदी हुअी और वह हँसा अत्यंत संतोष से ! गुलाम हुसेन के मुँह से पुलिस का नाम निकलते ही अुसे अेकदम मानों गुरुमंत्र ही मिलगया ! अँधेरे में किसीको अचानक हाथचमक (हैंड-बैटरी) मिल जाय वैसी अुसकी दशा हुअी और अुसके चित्त का बटन दबते ही अुसे आगे के अुपाय का रास्ता अेकदम दिखाअी दिया !

बस अलग से और पौने बारह ! अभी का अभी यह समाचार पुलिस की चौकी पर जाकर गुप्त रूपसे कह देना चाहिये। अठारह बरस से कम अुम्र की लडकियों को अुडाना यह गुलाम हुसेन का अेक नैर्बंधिक (कानूनी) घोर अपराध है ! मालती का नहीं ! तिसपर गुलाम हुसेन के अूपर डाकेजनी के वारंट भी होंगे ही ! खटले का वह अेक फरारी है ! अब वह फाँसी के रस्सेपर झूले लेगा—और मालती पुनः अुस मथुरा के आनंद के पालने पर ! असी प्रकार अुन मधुर मधुर पदों की लहरें लेती हुअी अुल्लास के आकाशमें किसी सुंदर पत्रपी की तरह अुडनेकी अिच्छा से पुनः झूले लेगी ! अहो आनंद ! अुसकी वह प्यारी "किशऽऽन !" अैसी लाड भरी पुकार अुसे पुनः सुनाअी दी !

आनंद के आवेशमें यह समाचार पुलिसवालों को देने के लिये किशन लुकते छिपते अपनी आहट न लगने देते हुअे बांध की आड आड में चलते हुअे रास्तेकी तरफ जाने के लिये मुडा। अुसी बीच किशन ने अकस्मात् अेक भयंकर चीख मारी ! "अय्यायाया !" कहकर बिलख अुठा !

'भों ! भों ! गुर्र गुर्र्र ! ' करते हुअे किशन की पिंडली का मांस-गोल दाँतों से पकडकर अेक विकराल कुत्ता पिंडली को बुरी तरह खींच खींच कर तोडने लगा।

वह अुस घर के समीप पाला हुआ गुलाम हुसेन का कुत्ता था !

बांध के पास अंदरकी ओर कहीं वह फिर रहा था। आहट सुन पडते ही वह बांध पर अंधेरे में चढा। किशन के हिलते ही अुसकी दृष्टि अुसपर पडी और चोरकी तरह दुबकी चाल से जानेवाले किशन पर वह विकराल कुत्ता टूट पडा अेवं पहली ही झपट में अुसने किशन की पिंडली को बुरी तरह चबा लिया। अंधेरे में अप्रत्याशित रूपसे ली गअी अुस असह्य चबाअी के साथ ही कारण न होते हुअे भी किशन अितनी अूंची आवाज में चिल्लाया पर कुत्ता अुसकी पिंडली छोडता ही नहीं था। अुलटे और भी अधिक त्वेषसे अुस को वह कचाकच तोडता चला जा रहा था—गुरगुराता तथा जूझता चला जा रहा था।

बांध के नजदीक किसीकी अितनी जोर की चिल्लाहट सुनकर वह कामातुर गुलाम हुसेन भी चौंका। हो न हो अिस अपने कटखने कुत्ते ने ही किसी राहगीर को अंधेरे में दाँतों से लिटा दिया है। यह ध्यान में आते ही अुसे भय लगा कि अुसकी अिस चोरबस्ती के पास लोगों का शोर शरावा होकर अुनका ध्यान कहीं अुस ओर आकर्षित न हो ! अुसे यह संकट अनभीष्ट था; अत: सामोपचार से अुस प्रकरण को वहीं मिटा देने के विचार से हाथ में लालटैन लेकर और मालती से "घर के अंदर जा" कहकर गुलाम हुसेन दौडते दौडते बांध के पास आया तबतक किशन ने बांध में से अेक पत्थर निकाल कर अुस विकराल कुत्ते के सिरपर दे मारा था; अत: वह पिंडली छोड कर दूर हट तो गया था पर फिर थोडा झपट्टा मारकर भौंकते हुअे तथा गुर्राते हुअे किशनकी दूसरी चबाअी लेने के लिये जूझ रहा था।

किशन की फाडी हुअी पिंडली में से लोहूकी धार बह रही थी और—असह्य वेदना हो रही थी। हिलने की सुविधा ही नहीं थी। गुलाम हुसेन के नजदीक आते ही किशन ने बहाना किया—

"मैं अंधेरे में वह दीया देख अेक रात भरको आसरा मांगने के लिये आया था सो तुम्हारे अिस कटखने ने मेरी जान ले ली ! अम्मारी ! हाय अम्मा !"

"विव्हल न हो, चिल्लाता काहे को है असतरह !" गुलाम हुसेन प्रकरण को समाप्त करने की बुद्धि से अुसे समझाते हुअे बोला, "वह कटखना मेरा पालतू कुत्ता न भी हो तो भी मैं तेरी पट्टी बाँधे देता हूँ। यहीं सो रह अिस घर के पास रातभर और तडके ही अपनी राह पर लग–या हस्पताल में जा।" गुलामहुसेन को यह प्रकरण विशेष हल्ला गुल्ला न करते हुअे मिटाना था अतः अुसे यही अक युक्ति सूझी–सो अच्छी लगी।

बडे प्रयास से गुलाम हुसेन ने किशन को अुठा कर अुस बाँध को लांघा और अुस लालटैन के हल्के से प्रकाश से युक्त आंगन में लाकर रख दिया। पानी से अुसका घाव धो-पोंछकर अपनी हमेशाकी रामबाण दवा किशन के घावमें भरकर रक्तस्राव को थाम दिया। पट्टी बाँधी। किशनको अुस लक्कड पर पीठ टिकवा कर लिटा दिया और लालटैन अूपर काँटेपर टाँग दी। जबतक लालटैन नीचे थी तबतक दवादारू की गडबडीमें गुलाम हुसेन को किसी भी कपट की शंका न आअी। अुसका लक्ष अुस पांथस्थ के पैरपर ही लगा रहा था। पुनः, पीछे अेकदफा अुसने मथुरामें किशन को जो देखा था सो योगानंदी संप्रदाय के गोस्वामियों के भेसमें–आज किशन का वेश अेक दरिद्र भटकने वाले का सा था। अतः गुलाम हुसेन के लिये किशन को पहचान लेना कठिन हो गया था !

लालटैन अूपर टांगने के बाद, लक्कड पर टेका दिये हुअे, थककर चुप बैठे हुअे किशन के मुँह पर स्वच्छ प्रकाश पडा।

अितनी देर तक घर में रहने पर भी खिडकी में से अुस पांथस्थ की सारी हरकतों को देखने में लगी हुअी मालती के मन में वह पांथस्थ कौन है अिस बारेमें दस दफा अेक शंका आकर गअी ही थी। अुस लालटेन के प्रकाशमें किशन के मुखको ठीक ढंग से देखने के बाद मालती की अुस शंका ने पक्के निश्चय का रूप धारण किया –"किशन" ! मालती के ओंठोंही ओठों में अेक पुकार भी थरथराकर चली गअी ! अुसे मथुरा में देखने के बाद से अुसका क्या हुआ होगा अिसबारे में मालती को कुछ भी मालूम नहीं था। अपनी मां की अगली जानकारी अिसे मालूम ही होगी–अैसा अुसके मन में अुसे पहचान लेने के अेक क्षण बाद ही आया। किंतु पर–पुरुष के साथ अुसमें भी योगानंद, गुलाम हुसैन प्रभृति जिस चांडाल चौकडीने अुसे भगाया था अुनके

अुस अधम अपराध की जानकारी जिन लोगों को होने की संभावना है अैसे अुम मालती के घनिष्ठ परिचय के पुरुष से खुले रूपमें वातचीत करते ही–अुसकी वजह से केवल मालती का ही नहीं वल्कि अुस किशन का भी घातपात करने से यह हिंस्र गुलाम हुसेन हिचकेगा नहीं अैसी भीति भी मालती को तत्काल लगी ! वह घवरा गअी–बवरा गअी ! पर तत्काल अुत्सुकता के कारण खुल्लमखुल्ला न भी हो तो भी अेकांत में अिस राक्षस गुलाम हुसेन के सो जाने पर अुसकी भेंट लेकर ही रहूंगी चाहे कुछ भी क्यों न हो–यह दृढ निश्चय मालतीने मन ही मन किया। वह आँखों से बूंदें गिराती हुअी किशन की ओर टकमक देखती रही। अुतने ही में गुस्से से अकडे हुअे गुलाम हुसेन की आँख अुस खिडकी की तरफ पडते ही मालती झट से पीछे की ओर सरकी और अपने ही में पूछने लगी—

"अरी-मैया ! यह राक्षस अैसा गुस्से में क्यों आगया अकस्मात् ? कुछ शंका आगअी क्या मुझे को ?"

घर के भीतर खिडकी के पास से पीछे हटकर वह दरवाजे की दरार में से वाहर नजर डालने के लिये ज्यों ही दरवाजे के समीप गअी त्यों ही गुलाम हुसेनकी किसी पर गुस्सा करने और अुस कटखने कुत्ते से भी अधिक भीषणता के साथ गुर्राने की आवाज अुसे सुनाअी दी !

क्यों कि अुस लालटैन का प्रकाश थकावट से आँखें मूंदकर लकडे पर टेका लिये हुअे अुस किशन के निश्चल मुखपर पडते ही मालती को जो शंका आअी थी वही गुलाम हुसेन को भी आअी ! तिसपर खिडकी में से अत्यंत लोभपूर्ण दृष्टि से किशन की ओर टकमक देखने वाली मालती को अुसने ज्यों ही देखा. त्यों ही अुसकी शंका सौगुनी बढ गअी ! पक्का निश्चय करने की युक्ति भी अुसे साथ ही साथ सूझ पडी। असावधान, नींदमें पडे हुअे अुस घायल को गुलाम हुसेन ने हेतुतः अुस संशयित नाम से पुकारा—

"किशन ! किशन !!"

किशन दचक कर (घवराकर) जाग गया और अपने नाम का परिचय देना ठीक नहीं यह बात ध्यानमें आने से पहले ही अुत्तर दे बैठा–

"ओ ! ओ !"

"अरे हरामखोर, पकडा कि नहीं तुझे ? छद्मी वेष से नाम छिपाकर यहाँ पता चलाने के लिये आया था क्या ? किशन ! बोल !" मुट्ठी तान कर क्रोधसे कंपित घर्घराती हुअी आवाज में गुलाम हुसेन फनफनाया, "बोल, तू मालती का पीछा करते हुअे यहाँ आया है या नहीं ? तू और पाजी हसनभाअी तुम्हीं विश्वासघातकी सरकारी साक्षीदार हो न कोर्ट में के ? मेरे गले में तांत देना चाहते हो क्या ? काफर ! बेअीमान ? "

" तेरा बाप बेअीमान ! तुझसे अीमान ? " किशन त्वेष में आ तत्काल अुठकर खडा होगया !

" छुरा भोंककर तेरा पेट फाड ही दिया मैंने समझ ! मेरा छुरा !—छुरा ! " लकडे पर गुलाम हुसेन ने देखा ! छुरा नहीं था वहाँ । वह घर के अंदर सिरहाने है अैसा अुसे याद आया ।

अंदर दरवाजेपर खडी हुअी मालती को भी वही तत्काल याद आया । अुसने झटपट खाटपर का छुरा निकाल कर अपने कपडों के अंदर कमर में छिपा लिया और वह अेक कोने में जाकर खडी हो गअी ! अिसी छुरे में मालती के समक्ष गुलाम हुसेन ने अपने अेक बिगडे हुअे साक्षीदार को मथुरा से भागकर आते समय अेक जंगल में आँख झँपकते न झँपकते भोंक कर ठंडा कर डाला था, ठीक अुसी तरह अब किशन भी ठंडा हो जायगा–अत: वह भय से थरथर कांप रही थी गुस्से के मारे बेसुध हुअी जा रही थी ।

अुतने ही में छुरा लेने के लिये गुलाम हुसेन दरवाजे को तड से खोलकर अंदर घुसा । अुसी के पीछे-पीछे किशन भी त्वेषके साथ अंदर प्रविष्ट हो गुलाम हुसेन को कमर से पकड अुलझता सुलझता अुसके साथ ही खटिया पर जा पडा । सिरकटा कबंध भी रण-त्वेष के कारण कुछ देर तक तो रणमें जूझता ही चला जाता है; किशन को अपने घायल पैर का भान तक नहीं रह गया था ।

मालती को भी अुस प्राणसंकट के कालमें विचार किंवा सुधबुध रह ही नहीं गअी थी ! जो लहर आये वही ! किशन के नरडे (गले) को गुलाम और गुलाम के नरडे को किशन पकडते और छुडवाते–दोनों के दोनों खाट पर जा पडे और पडते ही—

"ला ला ! !" गुलाम हुसेन चिल्लाया ! "मालती, वह छुरा ला !" अुसी के साथ मालती छुरा लेकर दौडी भी ! पर अितने से छुरे से वह विशाल-काय मनुष्य मरेगा तो कैसे, अिस प्रकार की अेक बलवती शंका अुस बेभान अवस्था में भी अुसके मन में आअी और वह ठिठक गअी !

"कैसे का क्या मतलब ? डरपोक लडकी ! तेरे ही सामने अुस साथीदार के पेटकी पोटली अिसी छुरे से गुलाम हुसेन ने अेकही प्रहार में बाहर नहीं निकाल डाली थी क्या ?" अुस के मनने अुसे फटकारा !

"ला ! छुरा ला !" गुलाम हुसेन अेक हाथ को अुस हाथापाअीमें से छुडाते हुअे और अूँचा अुठाते हुअे मालती पर फिर से चिल्लाया।

"ले यह ले छुरा !" अिस तरह दाँत पीसती और ओंठ चबाकर चीखती हुअी वह बवराअी हुअी मालती छुरा खींचकर दौडी और अुसने, किशन को दबाकर पकडे हुअे, पर किशन की पकड में खटिया के अेक कोने पर अुत्तान होकर पडे हुअे गुलाम हुसेन के ढीले ढाले पेटमें वह लंबा तेज छुरा पूरी ताकत के साथ घुसेड दिया !

कितनी आसानी से वह अंदर घुस गया ! अुस बेभान त्वेष में भी मालती को हँसी आगअी !

"व्यर्थ ही मैंने अितना जोर लगा कर घुसेडा वह छुरा बावले की तरह ! वह तो आधी ताकत से भी आरपार चला जाता !"

"आँ !—आँ !" अैसी दो तीन भयंकर भयंकर डुरकियाँ (सूअर की तरह) फोडते हुअे गुलाम हुसेन का धिप्पाड (विशाल) शरीर धप्प से नीचे गिर पडा !—वह फिर कुछ अुठा नहीं ! अपने ही अूर्ध्वपाती अुत्स्फूर्त रक्त के निपान में अुसका प्राण डूब गया !

"मर गया ! निर्जीव मरगया !" किशनने ताली बजाअी !

"किशन ! !—पर अब आगे क्या होगा ?" किशनकी आँखों की ओर टक बाँधती हुअी मालती थर थर काँपते स्वर में बोली !

"आगे ? मालती, आगे—"

बेभान, रक्तपात जन्य नशेमें चूर, कुंठित विचारोंवाले, वे दोनों क्षणभर अेक दूसरे की तरफ आँखों से आँखें भिडाये देखते खडे रह गये! चारों ओर रात्रि की कारिख ही कारिख घनीभूत थी !

फूल नहीं—कांटा ! : ८

"आगे क्या होगा ? " मालती के अिस प्रश्न का कुछ भी अुत्तर क्षण-भर न सूझने के कारण किंवा वैसे देखनेपर पाँच-पचास अुत्तर अेकदम सूझ कर अुनके अुलटे सुलटे और अेक दूसरे को विहस्त करनेवाले झमेले में अन्तिम अेवं निश्चित मत अेक भी चित्तमें आकर टिक नहीं रहा था; अतः किशन भी सिर्फ " आगे ऽऽ—आगे ऽऽ" अैसा ओठों ही ओठों में पुडपुडाता हुआ-मालतीकी मुद्राकी ओर शून्य दृष्टि से देखता हुआ खडा था। वह विकराल प्रेत अुनके पैरों में पडा हुआ था ! अुसके घावों में से रक्त का अुत्स्राव ठहर ठहर कर अेक दम फूट पडता था। अैसे दसपांच क्षण बीते भी न पाये थे कि वह कुत्ता जोर से पुकार मचाते हुअे रो रहा है, तथा पीछे जोर जोर से भोंक-भोंक कर विप्लव मचा रहा है, अैसा किशन को सुनाअी पडा।

वास्तव में अुनकी वह प्राण लेने-देने की जूझ जब चल रही थी तभी से वह कुत्ता पास जाने से डरता हुआ भी भाग खडा नहीं हुआ और वहीं बांध पर अिधर से अुधर दौडते ठहरते हुअे निरंतर चीत्कार करता रहा ! और बीच ही में बलपूर्वक भौंक अुठता था ! किसी की भी सहायता आसपास से प्राप्त करने तथा लोगों को जमा करने के लिये ' दौडो रे दौडो ' कह कर मानों वह आर्त पुकार मचा रहा था । पर अितनी देर तक अिस प्राणों पर बीतनेवाले प्रसंग में अुसका वह शोर किशन-मालती को सुनाअी नहीं दिया । अुन्हें अुस समय तक अपनेसिवाय बाहर की दुनियाँ का स्मरण तक नहीं हुआ था । पर अब ज्यों ही कुत्ते के शोरकी तरफ किशन का ध्यान गया, त्योंही अुसने दचक कर अुस तरफ मुडकर देखा और अुसे लगने लगा बाहरकी सारी दुनियाँ अुन दोनों की ओर—अुन दोनों के रक्त से भीगे हुअे हाथों पैरों और कपडों की ओर, अुन दोनों के मध्य में निर्जीव मर कर पडे हुअे गुलाम हुसेन के विकराल शव में से बीचबीचमें अुडनेवाली खूनकी पिचकारियों की ओर गौर से देख रही है ' येही हैं वे हत्यारे, धरो ! पकडो ! ! ' अिस तरह अुँगलियाँ दिखा दिखा कर शोर मचा रही है !—अैसा अचानक भास हुआ—अुसके मनकी बधिरता अेकदम दूर हो गअी ! अब यहाँ वे अेक क्षण भी

बने रहे तो अुस दुष्ट की छुरी से बचे हुअे प्राण फाँसी के फंदे में जा अटकेंगे। और यह मालती भी! फाँसीपर!! कल्पना भी भयंकर!!

अुस धक्के के साथ ही अुसने अेक भारी पत्थर अुठा कर प्रथम अुस कुत्तेपर दे मारा। अुतने ही में अुसको अुस तरफ के अेक टीले पर से पड़ौस के खेतों में दोतीन लोग लालटैन लेकर अपनी ही तरफ देखते हुअे, बातचीत करते दिखाअी दिये।

अुस कुत्ते के कौंचने और निरंतर भौंकने से वे अपने खेतों की मेंडों पर कभी के घबराये हुअे से खड़े थे। तत्पश्चात् अुस झोंपड़ी के पास गुलाम हुसेनकी और किशन की हुअी हुअी गुत्थमगुत्थी, गालीगल्लौज, चीखोपुकार और आखीर में गुलाम हुसेन पेटमें छुरा खाकर जब नीचे गिर पडा अुस वक्त अुसकेद्वारा फोडी गअी डुरकी, अिन सबके अस्पष्ट दृश्यों अेवं शोरगुल के अूपर से वहाँ कोअी न कोअी भयंकर प्रकार हो रहा है, यह अुन खेतिहरोंने पहले ही ताड लिया था। पर भय के कारण अुनकी जिज्ञासा दब गअी थी। वे लोग वहाँ गये तो वे स्वयम् किसी व्यर्थ की परेशानी में फँस जायेंगे अैसा पक्का विचार अुन्होंने किया था तथा वहीं से जो कुछ सुनाअी दे या दीखे अुसीकी चर्चा करते हुअे और बीचबीच में दिखाअी देनेवाली अुस औरत के बारेमें ही कुछ सुंदोपसुंदी चल रही होगी अैसा तर्क बांधते हुअे वे लोग वहीं अिसी तरह न जाने कब से खड़े थे।

अुनको देखतेही 'हमारी हत्यारेपनकी बात षट्कर्णपतित हो गअी' अैसी घबराहट किशन की छातीमें बैठ गअी! अुसके कहने से पूर्व ही, अुससे बगैर पूछेताछे अुसके हाथ ने लालटैन को अेकदम बुझा दिया! अँधेरे में मालती का हाथ पकड लिया, और बोला,

"पहले हम यहाँ से निकल भागें चल! हमें पकडने के लिये लोग जमा हो रहे हैं! वे देख! चारों ओर से घेरा डाला जा रहा है! चल!"

"अरे, पर कहाँ?"

"रास्ता मिलेगा-अुधर! जहाँ मर्जी वहाँ—पर अिस स्थल से दूर दूर दूर—यथा शक्ति दूर! चल जल्दी!"

"पर तुझसे कैसे चलते बनेगा? तेरा पैर तो लँगडाता है!"

"अेक पैर होगा लंगडाता–पर दूसरा तो ठीक है न ? अुसीके आधार से जैसे चलते बनेगा वैसे चलूंगा चल पहले।"

"और यह प्रेत ?—"

"मरने दे, पडने दे, सडने दे अुस दुष्टको ! नहीं तो अुसके कुत्ते को ही फाडकर खाने दे ! निकल, चल पहले यहाँ से ! पर ठहर, छुरा दे अिधर ! अुसकी पहचान तक किसी को न हो अैसा करना चाहिये !"

अैसा कह कर अुस प्रेत के मुँह पर अंधेरेमें ही कचाकच वार कर के किशनने अुसे विद्रूप बना डाला ! "हं, अब ला, ताला कहाँ है ?"

मालतीने अँधेरे में ही ताला टटोल कर खोज निकाला; बाहर निकलते हुअे अुसका पैर डब् से अुस खूनके डबके (= चहबच्चे) में जा पडा ! अुसकी छाती में भी धबराहट भर गअी ! अुसने वह छुरा अपने पेटके नीचे छिपाकर रख लिया। अुसी हालत में वह आगे जाकर अुस टूटे फूटे दरवाजे को ताला लगाने लगी हाथ कांपने लगा। पर अेकबारगी ताला लग गया। और मनुष्यकी जैसी स्वाभाविक आदत होती है–अुसके अनुसार ताला लगाने के बाद अुसने ताले की चाबी अपनी कमर में खोंसली। अुसने रक्तस्नात वह छुरा अपनी कमर में छिपा रखा था–वह ठीक से है या नहीं यह अेकबार पुनः हाथ लगा कर देखा– यह जान कर कि. अपने पास छुरा है, अुस में पुनः साहस और शक्ति का पूर्ण रूप से संचार हो गया।—"हं, चल कांप मत किशन ! अिस मेरे हाथपर अपना भार डाल, हां, अिस तरह; और चल अुसके आधार पर तुझसे जितना चलना हो सके अुतना ! यह रास्ता मेरे पैरों के लिये पूर्णतः परिचित हो चुका है ! ठहर दो चार पत्थर लेने दे हाथ में अुस कुत्ते को देखना रह, चबा (काट) लेगा वह मुआ छिपा-छिपा पीछे से आकर !"

अँधेरे में अुस पत्थरों के बांध को नांघकर अुस चबूतरे का फेरा मार वे दोनों जैसे तैसे अुस राहपर आ लगे।

"अब किधर मुडनेवाली है ? शहर की तरफ ?"

"हेह्, पगले, अिस वक्त हम सब रक्ताक्त हैं; पहले गंगापर जाकर धो नहा कर स्वच्छ और सभ्य बनें; चल पहले !"

"सच ? वहाँ के देवालय में पहले चल, रात आज वहीं बिताअें, मेरा सामान वगैरे सब वहीं है। वहीं से तो मैं यहाँ आया हूँ ! पहले वहाँ थोडा

सोजायँ अिस रात । सबेरे होगा सब नहाना धोना और जो कुछ अपने दैवमें होगा वह !' मैयारी, पैर की दर्द अब बरदाश्त नहीं होती ! पहले देवालयमें ही चलें, चल ! "

देवालयमें आतेही अकेले किशन ने ही नहीं बल्कि अितनी देर की अुत्तेजना से मन और तन दोनों की दृष्टि से अत्यंत दुर्बलाअी हुअी मालती ने भी जमीनही पर पूरी तरह से अपना शरीर डाल दिया । अुसे दूर से ही किशनने पडे पडे आश्वासन दिया—" तू आराम से सो, वह छुरा अिधर दे, मैं पहरा देता हूँ । अब दुःख सारा भुला दे हं, कुछ देर ! "

" दुःख ? अेह् मुझे, बताअूँ क्या, अिस वक्त क्या प्रतीत हो रहा है ? आनंद ! अुत्साह ! कैसे कहूँ ? मेरे घरमें अेकबार अेक नाग निकला । दरवाजे के बड के पास वह कहीं रहा करता था। हमारी मां देवभक्त—अुसके लिये कटोरी में दूध रक्खा करती थी । अुसे पीते हुअे हम अनेकबार अुसको दूर से देखा करते थे । मां कहती थी —सांप होने पर भी वह जीव ही है न ?— वह क्रिया जानता है ! वह दूध देनेवाले को कभी डसता नहीं है ! पर अुसका क्या बिगडा किसे मालूम ? वह अुस दिन अेकाअेक हमारे घर में निकल आया और मेरे साथ खेलनेवाली मेरी अेक मौसेरी छोटी बहन को डस कर मुझे डसने के लिये दौडा । हम सब लडके लडकियाँ जान लेकर भाग खडी हुअीं " सांप सांप " अैसी अेक ही पुकार की। अुसे सुनकर हमारे घर के नौकरने आकर अेक ही मार में असकी तालू सेंक दी ! वह अभी हिलडुल ही रहा था; पर मुँह खोलकर पडा हुआ है, अैसा देखकर अेक बडी काठी मैंने दूर पर ही से अुसके अूपर अैसे जोर से मारी कि अुसका बीच का हिस्साही चिथ कर निकल आया और मेरा गुस्सा अुस रूप में अुतर जाने पर मुझे बदले का जो आनंद होता है, वह पहली मर्तबा, कितना मीठा होता है, यह समझ में आया । वैसा अुन्मत्त आनंद मुझे अिस वक्त चढा हुआ है ! मेरा यह सारा साहस है अुसी बदले के आनंद का ! —अिस बदले के छुरे का ! वह जबतक मेरे पास है तबतक मेरी जान में जान है ! अिस वक्त तो सिरहाने ही रहने दे अुसे मेरे ! मुझे नींद—किशन ! अरे, पर मेरी मां ! —मुझे पहले यह बता मेरी मां किधर है ! कुछ मालूम है क्या तुझे ? मैं अुठकर बैठती हूँ अं, बता ! " वह जैसे तैसे ग्लानि प्राप्त होते हुअे शरीर को सँभाल कर

अुठ बैठी, पर अुसका वह बोलना, आँखों में अूंघ भरे हुअे मनुष्य की तरह टूटा फूटा था ।

किशनने मालती को गुलाम हुसेन के यहाँ कैद हो जाने के बाद नायडू बाअी को और अुसकी मां को अुस छद्मी योगानंदने किस तरह अुल्लू बनाया और अुसपर विश्वास कर के वे दोनों किस तरह मालती को खोजने के लिये नागपुर की ओर चली गअीं और अुसके बाद किस तरह अुनका पता अुसे भी नहीं था यह सब संक्षेपमें कह सुनाया ! पर अुसके समाप्त होते न होते मालती के संज्ञायुक्त मनके सारे व्यापार बंद पडनेके करीब आये ! वह सुनते न सुनते कब नीचे लुढक गअी और सो गअी अिसका मालतीको भी पता नहीं था । किशन भी जमीन पर ही पड गया । अुसके मनमें अुन कृत्यों के भयंकर परिणामों के विचार कोलाहल मचा रहे थे । बीचमें अूंघ, बीचमें वह कोलाहल बीचमें वह पैर की दर्द—वह अुसी तरह तडफडाता पडा रहा । दोबार अुसे बूटों की टापें सुनाअी दीं और वह डरके मारे अुठ बैठा । बाहर जाने पर जब अुसे मालूम पडा कि कोअी भी नहीं है तब वह फिर अंदर आकर पडा रहा । पुलिसवालों के चेहरे अुसकी आँख बंद होते ही अुसके सामने आकर खडे हो जाते—अुसे वे पकड रहे हैं, अैसा प्रतीत होता था ! तब वह फिर आँखें खोलता, धीरज धारण करता, और सबेरे निकल भागने के लिये क्या किया जाय, अिस संबंध में निश्चय अूँघही अूँघमें करने लग जाता ।

मालती का संज्ञायुक्त मन यद्यपि चाबी बंद पडी हुअी घडी की तरह साफ बंद पडा हुआ था, तथापि अुस ग्लानिजन्य गाढ निद्रा में भी अुसके असंज्ञ मन के स्तरोंमें किशन के चित्त के अंतर्वर्ती कोलाहल के सदृशही धृतिभीति-माया-ममता-त्वेष-द्वेष अित्यादि की नाना स्मृतियों और नाना क्लृप्तियों का अेकमेव कोलाहल मचा हुआ होना चाहिये । वह बीच ही में दचकती हुअी, हँसती हुअी-खुर्राटे भर रही थी । स्वप्न पडते पडते अुसे नींदमें अैसा भासित हुआ कि, वह मां के साथ अुस मथुराके झूलने पर प्रेमभरी पद्यपंक्तियाँ गाते हुअे रस्सीसे अूँचे अूँचे झोंटे ले रही है । अुतने ही में अुसके नीचे से झूलना अूपर होकर अेकदम निकल गया और अुस रस्सीकी लपेट में अुसकी गरदन बुरी तरह लिपट कर लटक गअी ! दम घुट गया—गले में फंदा पड गया और अुसकी जीभ बाहर निकल आअी !—और अैसी भीषण स्थिति में अपने

आपको वह ही देख रही है ! ! अुस धक्के के साथही 'मर गअी ! मर गअी ! दौड ! मां, गले में फंदा पड गया मेरे ! ' अैसा स्पष्ट रूपसे चीख मारकर मालती अेकदम अुठ खडी हुअी ! थर् थर थर कांपने लगी! जोर जोर से हाँफती हुअी नींद में बदला हुआ श्वास जोर जोर से लेने और छोडने लगी— ।

किशन भी तत्काल अुठा । अँधेरेमें जहाँ मालती घबरा कर खडी हुअी थी वहाँ हाथ टटोलते हुअे अुसके कंधेपर अेक हाथ रखकर दूसरे हाथ से अुसकी पीठ थपथपाता हुआ मालती को धीरज देने लगा । अुतने ही में मालती ने थरथराते हुअे हाथों से अुसके गले में गलबाँह डाल दी । "किशन, मुझसे खडा नहीं रहा जाता, मेरी छाती में न जाने कैसी धडकी घुसगअी है—मुझे अपने पेटके साथ मजबूती से चिपटाकर मेरे साथ ही सो । लजा मत । मैं अपनी अिच्छा से जिसे अपने साथ सोने के लिये ले रही हूँ, अैसा पहला पुरुष तूही है ! "

बिलकुल नजदीक लेकर किशन के सोतेही अुसे अेकदम अैसी गाढी नींद लग गअी मानों वह बीच में अुठी ही न हो ! नींदमें चलने बोलने का जो अेक रोग होता है, अुसका मानों अेक झटका ही आया था अुसे !

बिल्ववृक्षस्थ कोकिल की पहली कूक जब प्रभात वेला में सुनाअी पडी तब बडे कष्ट से किशनने मालती को हिला कर पूरी तरह जगा दिया ।

" मालती, मैंने आगे के निश्चय की सारी योजना पक्की कर ली है ! धीरज मात्र धारण करना होगा । धीरज नहीं न खो बैठगी तू ? "

" पगले, मैं अब सपने में थोडअी हूं ? स्वप्न के फाँसीके रस्से से जो लोग डरते हैं, अुनमें से कितने ही, वास्तविक फाँसी के रस्सेसे बिलकुल भी खौफ नहीं खाते ! "

" पर फाँसी का नाम मुँह से निकालती ही काहे को है ? संक्षेपमें सुन ! तू अब गंगा में जाकर अपना यह मुस्लिम वेष और खून के दागोंवाले कपडे गंगामें डुबा दे, नहा और मेरी अिस गठडी में से यह धोती लेकर अेक भिकारिणी की तरह पहन कर यह कटोरा हाथ में ले अिस टेढे रास्ते से निकल जा और गांवों में से होती हुअी घर पर मां से जाकर मिल ! और—"

" छट् ! ठहर। मेरी मां का नाम अब पूरी तरह भुला दे ! अरे, वह मुझे देखतेही मेरे मुँहपर हाथ फेरने के लिये यदि फिर दौडेगी तो अुसके भी हाथ मेरे मुँह परके खूनी दागों से खून भरे होजायेंगे ! अुसके शरीर पर मेरे हाथ के कर्मों के छीटे अुडकर अुस साध्वी की निर्मलता भी कलंकित हो जायगी ! मैं अपनी माता के आंगन का अेक निर्मल फूल थी—तब मुझे मालती कहा करते थे ! पर अब मैं वह फूल नहीं रह गअी हूँ—अब मैं हो गअी हूँ समाज के मार्ग में अेक कांटा ! कहीं भी धूलमें मैं पडी रहूंगी, पर फिर मांके आंगन में पडकर अुसके पैर में गडूंगी नही ! अब अपना नाम भी मैं बदल डालूंगी ! फूल—नहीं कांटा ! मालती नहीं—कंटकी ! ! अब फिर, स्मरण रख अं, मालती नहीं कहना—कंटकी कहना मुझे ! "

"ठीक है ! पर अब तू मुझे अकेला छोड जा ! मुझसे चलना नहीं बनेगा ! मैं भी पीछेसे जैसे-तैसे निकलूंगा ही यदि पकडा ही गया तो अकेलाही अिस हत्याका सारा मामला अपने अूपर ले लूंगा। बच निकला तो तुझ से मिलूंगा ! मुझे भी अपना नाम बदलना लाजमी है। ध्यानमें रख मेरा नाम कंटक ! अैसा करने से पिछले खटलों के तागे-डोरे मेरे तेरे, तेरी माता के चारों ओर फिर सहसा अुलझेंगे नहीं। जिस अधम का सिर कुचल कर सजा दी है अुसका नाम भी नहीं कहना 'मालूम नहीं' कह देना ! अब अेकत्र फिरने से दोनों के दोनों फँस जायेंगे अतः तू तो अब चली जा ! मालती ! तेरे पास से दूर होते समय पानी से बाहर फेंकी हुअी मछलीके समान मेरे प्राण छटपटाते है—पर तेरे केशाग्र को भी धक्का नहीं लगा तो फिर से तालाबमें पडी हुअी मछली की तरह वे संतुष्ट होंगे ! अं—हूं—सारी चर्चा बंद ! देख पौ फटने लगी ! "

वे अितना बोलते ही थे कि अुतने ही में दूरसे शोरगुल सुनाअी दिया ! अुसे रातको बूटों की टापों का भास हुआ था—वह जैसे खोटा साबित हुआ था, वैसेही यह भी भास ही साबित होगा, अिस आशा से किशनने बाहर सिर निकाला ! पर क्या गजब ! सचमुचही कुछ लोग शोर शराबा करते हुअे देवालयकी दिशामें आते आते रास्ते में ही ठिठके हुअे से अस्पष्ट अस्पष्ट दिखाअी दिये !

गौर से निहारने पर अेक नजदीक के चबूतरेपर दो लोग खडे दिखाअी दीये–और वे शंकाही नहीं–सवेष पोलीस ! !

प्रत्याशित हो, तो भी भयंकर संकट निश्चित रूप से टूट पडते ही मनको चैंउनेवाला बलोत्कट धक्का बैठे बगैर रहता नहीं। किशन को तो संकट टल भी जायगा अैसी थोडी बहुत आशा थी। तब, वह भयंकर संकट पूरी तरह टलने की देहरीपर आया ही था कि फिर पक्की तरह गले से आकर भिडा हुआ नजर आतेही अुसकी छाती में अेकदम धडकी का घुस जाना स्वाभाविक ही था। पर अुसने शीघ्रही अपना समस्त धैर्य अेकत्र किया–सट् से अंदर की ओर मुडा और मालती से दबी आवाज में बोला–" वे आ पहुँचे ! सुन ! अब मैं जो अुन्हें आगे होकर कहूँ–वही और बिलकुल वही तू भी कहियो ! अेक शब्द भी कम और अधिक किसी भी अवस्था में मत बोलियो ! सैंकडों पक्के डाकुओं चोरों और हत्यारों की टोलियों में कारागृहके अंदर रहकर मैं अब अिस किस्मके कानूनों के छक्के पंजे पूरी तरह सीख चुका हूँ ! अैसे अवसर पर सब कुछ नकारना सर्व प्रकार से अशक्य होता है ! अुन खेतिहरोंनेही रातोंरात यह खबर पुलिसवालों को दी होगी, खून के पैरों के चिन्ह; कपडे और हाथ खून से लथपथ ! "

अुतने में ही—

" कौन है अंदर ? चलो बाहेर आव ! ! " कुछ अंतर ही से पुलिस-वालों की डाँट भरी आज्ञा छूटी !

किशन खट् से बाहर आया, आगे हो गया। अुसके साथही " पकडो पकडो ! " अैसा पुकारते हुअे दो तीन सिपाही दौड कर आये और अुन्होंने वहीं किशन के हाथ में कडियाँ ठोक दीं !

" हथकडी काहे को ? अितनी मजबूतीसे कसकर काहेको पकडते हो मुझे ? तुम लोग न भी आते तो भी मैं स्वयं पुलिसवालों को खबर करने के लिये अुधर आनेवाला ही था ! "

" अिस तरह सरल व्यवहार रक्खोगे तो अुसमें तुम्हारी ही व्यर्थ की तकलीफ बचेगी " पुलिस का अधिकारी समझौवलकी बात कहने की शांत भाषा में बोला। " " बताओ अुस परली ओरकी झोंपडी में रहनेवाले मनुष्यकी

तादृश भयंकर हत्या तुमने क्यों की ? तुम्हारा नाम ? हां यही वह औरत ! पकडो अुस औरत को भी ! "

" ठहरो, अुस आदमी की हत्या मैंने की है–अुस स्त्रीने नहीं ! और वह अिस लिये कि, वह आदमी ही नहीं था, वह था अेक नृशंस राक्षस ! मेरा नाम कंटक, यह मेरी बहिन कंटकी ! हम जब छोटे थे तब अुज्जयिनी की ओर अेक मेले में भीख मांगते फिरनेवाली हमारी मां भीड भडक्के की चपेट में आकर मर गअी। अुस से पहले की अपनी राम कहानी हमें बिलकुल मालूम नहीं । आगे की हमारी कहानी यों है–हम दोनों भीख मांगते हुअे और अेक मेले से दूसरे मेले में जाते हुअे आज तक अुसी तरह भटकते चले आ रहे हैं ! कुछ दिन पहले मेरी यह बहिन भीख मांगती फिर रही थी–अुसे अकेले में पाकर अुस मुसलमान गुंडेने जबर्दस्ती खींचकर अपने घर में डाल लिया–बंद करके रखा। पता चलाते चलाते अुसके घरके आगे जाकर पहुँचते ही और अुसे 'मेरी बहिन को छोड दे' अैसी डाँट बताते ही वह छुरा लेकर मुझपर टूट पडा । हाथापाअी में वही छुरा छीन कर मैंनें अुसका मुरदा गिरा दिया–और अपनी बहिन को छुडा लिया ! अत्यंत थकावट के कारण यहीं रात बिताकर अभी अुठे हैं और पुलिस को हम स्वयं यह सारा समाचार देनवाले थे कि अुतनेमें तुम्हीं चले आये ! "

मालती से पूछने पर अुसने भी वही बयान दिया जो किशन के बयानके साथ पूरी तरह जुडता था। अुस मुसलमान गुंडे का नाम-ग्राम, पूर्ववृत्त अित्यादि मुझे कुछभी नहीं मालूम अैसा, पुलिसवालों के खोदखोदकर किये गये सवालों का अुसने निश्चल अेवं निर्भीक वृत्ति से जवाब दिया ।

छान बीन करने पर मालती के रक्ताक्त कपडे हाथ, मुँह, कमरमें खोंसी हुअी अुस टूटे घर की चाबी और वह रक्त-स्नात छुरा मालती के शरीर पर मिला । अुसे नोट करके अुन दोनों को पकड कर ले चले ! साथ ही वे खेतिहर भी लौटे ! अपने पर कोअी जुर्म न आ पडे अैसा सोच कर अुस टूटे फूटे घर के अंदर चलनेवाले किसी भयंकर प्रकार की सूचना अुन्होंनेही रातों-रात पुलिसतक पहुँचादी थी। अुसके सारे सबूत और पहचानतें वगैरे पुलिसवालों के लिख चुकने के बाद अुन्हें अपने अपने घर भेज दिया गया ! "अपराध मेरा ! मेरी बहिन को भी छोड दो और लौटा दो" अैसी विनति

किशनने की। अुसे फटकारा गया--" दर्शनी सबूत तुम दोनों के विरुद्ध हैं! अतः तुम दोनों को गिरफ्तार करना हमारेवास्ते लाजमी है! अपराध किसका है, यह आखीर में न्यायाधीश ठहराते हैं, न हम, न तू!"

किशन और मालती--दोनों ही पर खटला भरा गया। अपराधी भी अेकदम हाथ लग गये। अुस हत्याके लिये सबूत पूरे थे। अपराध के तागे डोरे कहीं अुलझे हुअे नहीं थे! अुस निर्जीव मारित व्यक्ति का पूर्ववृत्त सर्वथा अविज्ञात! छुरे के घावों से छिन्नविच्छिन्न हुअी अुसकी मुद्रा के कारण अुसकी पहचानत भी मुश्किल थी। और अुस धंधे में पडने का अुस मुकद्दमे भरके लिये कोअी भी प्रकार बाधक नहीं बना! अिस सारी परिस्थिति के कारण किसी भी गहराअी में न जाते हुअे अुस हत्या भर के लिये आरोप लगा कर खटला चला कर पुलिसवाले मुक्त होगये। अुनके बयानों के बाद आरोपियों की ओर से बचाव भी नहीं था।

आखिरी दिन न्यायाधीशने फैसला सुना दिया--

" किस आरोपीने प्राणघातक हमला किया है, यह अच्छी तरह सिद्ध न हो सका; किंतु अितना अवश्य सिद्ध हो गया है कि अिन दोनों ने जान-बूझकर अिस हत्यामें भाग लिया है। अतः हम कंटक और कंटकी दोनों भाअी बहनों को सजा देते है--आजन्म कैद काला पानी!"

ये शब्द सुनतेही किशन की आँखों से टप् टप् बूंदें टपकीं तथापि फांसी की सजा टलगअी अतः अुसे थोडा सा हलका पन भी मालूम पडा। पर अुस शब्दमें कुछ न कुछ भयंकर अर्थ भरा हुआ हैं अैसा धुँधले तौर से प्रतीत होनेपर भी, अुसकी भीषणता का बिलकुल स्पष्ट चित्र मनमें अवतीर्ण न होने के कारण ही मालती 'आजन्म कैद काला पानी' ये भयंकर शब्द सुनते समय भी सुन्न होकर अुमी तरह देखती रही! पर न्यायाधीश के अुठने लगते वक्त मात्र वह अेकदम भावावेशमें आकर बिनति करने लगी--"

" अेक क्षणभर! थमिये न! कृपालु महाराज, मुझे अितना बताअिये कि, काले पानी पर जाने पर मेरा यह भाअी--अंहं--कंटक मेरे साथ ही रहेगा न? अपने जेल को अितनी आज्ञा दे कर रक्खेंगे क्या, कि काले पानी में भी हम दोनों को अेकत्र ही रक्खा जावे? दया हो!"

"अनजान लडकी ! यह क्या न्यायाधीश के हाथ में रहता है ? काले पानी में पुरुषों के और स्त्रियों के बंदीखाने बिलकुल निराले-निराले रहते हैं ! अस में भी अेक ही खटले के सारे अपराधियों को तो पुरुषों पुरुषों और स्त्रियों स्त्रियों को भी सहसा अेकत्र नहीं रहने देते ! "

न्यायाधीशने ये शब्द सहानुभूति के स्वरमें भले ही अुच्चारे हों फिर भी पहले के सजा सुनाते वक्त के भावनाशून्य शब्दों की अपेक्षा भी मालती को वे अधिक दारुण लगे । " आजन्म कैद काला पानी " अिन शब्दों की भीषणता की अपेक्षा भी किशन के नित्य के लिये दूर चले जाने की कल्पना में रहने-वाली भीषणता अुस के मन को अत्यंत (असह्य) स्पष्ट रूपसे अेकाअेक समझमें आने के कारण अुसके अुच्चारण के साथ ही वह अकस्मात् बिलख अुठी; सिसक सिसक कर "अैसा मत कीजिये—मत कीजिये ! " अिस प्रकार का अधूरा वाक्य ही बार-बार दुहराती हुअी वह प्रार्थने लगी !

न्यायाधीश के मनको पहले ही से अुसके अपराध की निरपराध बाजू रिझा रही थी, पर कानून कानून ही है! वह अनुल्लंघ्य ! अत अेव वह खटला जब तक चलता रहा वे ममता के वाक्य कुछ भी नहीं बोल पाये थे। पर समस्त खटले में धैर्यपूर्वक निश्चल रही हुअी तथा आजन्म काले पानी की कैद की भयंकर सजा सुनते वक्त भी जो भावावेगमें आअी नहीं वह लडकी अपने भाअी से बिछुडने की बात सुन कर चिहुँक चिहुँक कर रो रही है यह देखकर न्यायाधीश का अंतःकरण द्रवित हो अुठा और थोडाबहुत आश्वासन दे कर वे अुसे समाधानने के लिये बोल गये—

"रोओ मत बच्ची, काले पानी में यदि तुम्हारी चालचलन ठीक रही तो दस पाँच बरस बाद तुम्हें शादी की अनुज्ञा मिलने की सुविधा है ! तब अुस टापू ही में क्यों न हो तुम सुख से अेकत्र रह सकोगी ! "

वे शब्द सुनतेही जैसे काले पानी की सजा रद्द होकर वह छूट ही गअी हो, अैसा अुस संकट के तूफान में दिङ्मूढ हुअी हुअी मालती को मनही मन आनंद हुआ । "महाराज, आपके मुँह में मिश्री, जिससे मर्जी अुसके साथ शादी मैं कर सकूंगी न ? बंदी खाने का नियंत्रण मैं पूर्ण रूपेण पालन करूंगी ! "

अुसके स्त्रीय निसर्गातिर्वतिनी सारी यौवनसुलभ भावनाअें अुस कल्पना के साथ ही तृप्त-प्राय हो गअीं ! किशन के साथ अुसकी शादी हो गअी अैसा अुसे लगा। पर पगली मालती ! कल्पना का अर्थ वस्तुस्थिति नहीं है ! अितने कठोर, निर्दय, निर्घृण अनुभव के अनंतर भी यह तुझे अभी तक समझमें नहीं आया न, कि मनुष्य अपने ही नियंत्रण के, पाप पुण्यके, कर्माकर्म के फल ही सिर्फ नहीं भोगता बल्कि, अिस प्रत्यक्ष जगत्में तो समाज के पाप पुण्य के और कर्माकर्म के भी फल अिच्छा न रहते हुअे भी भोगता रहता है; अुसे दूसरों के दुष्कृत्यों के भी फल—प्लेग की जनपद विध्वंसकारी अवस्था में केवल वातावरणीय संसर्ग से निरोगी व्यक्तिको भी प्लेग हो जाता है तद्वत्—भोगने पडते हैं !

तेरे दैव में तो वही लिखा हुआ है, अैसा अबतक तुझे विदित नहीं हो पाया क्या ? अन्यथा, यह तेरे देह की, मन की, भावनाओंकी असह्य अेवं भयप्रद विडंबना आजतक अिस कोमल वयस्में अिस तरह निरंतर होती चली जाय—अैसा तूने स्वतः कौन सा पाप किया था, कौनसा अपराध किया था ? किसका क्या बुरा किया था ? अपनी माता की ममता के आंगन में विकसित हुअी-हुअी मालती, तू अेक मालती के कोमल निर्मल पुष्पकी अर्धोन्मीलित कलिका !—जैसे शरत्कालिक चंद्ररेखा !—अिस अवस्था में हमने प्रथम जब तुझे देखा था तब कम्बख्त नसीबके जन्म भरके मारे को भी तेरी—तेरे अपराधोंके विना यह दुर्दशा होगी-अैसी कल्पना नहीं हो सकती थी—दुष्ट से दुष्ट पिशाच के द्वारा भी तुझे अेतादृश शाप निष्कारण न दिया गया होता !

और वह असह्य दुर्दशा अितनी लज्जाकर कि सहानुभूति के समक्ष भी अुसे खोल कर न कहा जा सके ! अुस दुराधर्ष, अमंगल और अभद्र नर पशु की अघोरी वासना जबजब तेरी लज्जा की बलि लेती थी तब अुस कोमल अंग की आग और तेरी कोमल भावनाओं की राख जो हुअी, वह, हे अनागस कुमारिके, तूने स्वतः किसी नीतिनियम, विनय या अनुशासन का भंग किया था अिस लिये हुअी थी ? तेरी अुस अघोरी दुर्दशा में से तुझे तथा तादृश अन्य अनेकों को छुडाने के लिये यह किशन सामने आया था, अिसने नीति नियमों की, परोपकारकी अेवं विनय की पर्वा की और तुम लोगों ने अुस राक्षस

के खून की नहर बहाकर अुसके अत्याचारकी वह आग बुझा दी, अिसीलिये अत्याचारी साबित हुअे तुम लोग? समाज में लांछित होगये तुम? काले पानी भेजना होगा अब तुमको? समाजपीडक अत्याचार को अुच्छिन्न करने वाला ही कभी कभी समाजपीडक अत्याचारी समझा जाकर दंडित होता है! नीति-नियमों के असली अनुशासन का पालन करना यही अपराध साबित होकर अुमीके लिये अनुशासनभंग का फल भोगना पडता है!

यह दोष किसका? अैसा होता क्यों है? अथवा अैसा न होने के लिये किन अुपायोंकी योजना की जाय? यह प्रश्न यहाँ अस्थानप्रयुक्त अेवं सर्वथा अप्रासंगिक है! हां, अैसा होता अवश्य है, और अिसी लिये मालती, तूने अनुशासन का पालन किया है, अुसका पारितोषिक तुझे मिलना ही चाहिये, स्वप्न सत्य होना ही चाहिये, अैसा निश्चित मत समझ!

परंतु सुख-स्वप्न सत्यसिद्ध ही नहीं होते सो भी बात नहीं है! अत: सुखस्वप्नों को देखकर हंसती है, तल्लीन होती है, तो क्षणभर मजे से हँस, तल्लीन हो! पर अुसे अेक स्वप्न समझकर ही अुसमें रत हो! जाग जानेपर वह स्वप्न सत्य ही सिद्ध होगा अैसा आग्रह मात्र मत रख—बस!

समुंदर में डुबायेंगे क्या हमें? : : : ९

कलकत्ते के बंदरगाह पर स्थित प्लेटफार्म का अेक पटांगण पूर्णतया खाली करने के लिये पुलिसवालों की दौड धूप शुरू हुअी। सब मनुष्य निकालकर बाहर कर दिये गये! वे हटाये गये लोग दूरपर जाकर जहाँ जगह मिली वहीं भीडके रूपमें जमा होकर, आगे क्या होनवाला है, अिस अुत्सुकता के वशीभूत होकर अेक दूसरे के कंधोंपर टेका ले कर पंजों के बल पर खडे होने लगे।

अितने में जिधर-तिधर लोगों में शोर होने लगा "आया! चलान आया! चलान आया!"

'चलान' का अर्थ अुस झुंड से है, जिसे अंदमान भेजे जानेका दंड दिया गया है, और जो भिन्न भिन्न जेलों से लाया जाकर अेकत्र करके बंदरगाहके प्लेटफार्म पर अेक ही झुंडके रूपमें अवस्थित हुआ हुआ है।

सब अपराधों में जो अत्यंत घातक और नृशंस अपराध है, वह जिनके हाथ की मैल बना हुआ है, अैसे हत्यारे, आग लगानेवाले, जहर देनेवाले, डाकेजनी करनेवाले पक्के पापियों को बहुधा काले पानी की सजा देने में आती है। अुसमें भी जो लोग अतिवृद्ध, अल्पवयस्क, अन्यत्र बंदीशालाओं में सद्वर्तन-द्वारा सुधारणीय कल्पित हुअे-हुअे हैं, अुन्हें छोड कर बाकी बचे हुअे जो आत्यंतिक घोर अपराधी होते हैं प्रायशः अुन्हीं को काले पानी भेजने में आता है। राजकीय प्रकरण को अेक ओर रखें तो किसी भी सुव्यवस्थित समाज के लिये जिनका अस्तित्व महामारी सदृश जनपदविध्वंसी बीमारियों की भांति भयप्रद प्रतीत हुअे बिना नहीं रहता, अैसे अुग्र, हिंसक, अुच्छृंखल, खल लोग ही अिस कालेपानी की तरफ भेजे जाने वाले 'चलान' में भरती किये जाते हैं। अपवादों को छोड दिया जाय तो सामान्य नियम अिस प्रकार का है।

परंतु अुस पटांगण (खुली मैदान सरीखी जगह) में वह 'चलान' आते वक्त जिसको अुसकी बिलकुल भी माहियत नहीं है अैसे किसी नये आदमी को किंवा भोले भाले संतको अुसे देखकर क्या अनुभव होगा? निश्चय ही अुसको अुस 'चलान' के विषय में क्रोध न आकर अुलटे दया ही आयगी! क्यों कि वे बिचारे कितने अनुशासन में, बहुतसों की गर्दनें झुकी हुअीं, बहुतेरों की आँखों में बूंदें—कम से कम मन में धडकी, चेहरे अुतरे हुअे, पास के आदमी से अेक अक्षर भी न बोलते हुअे या अगर कोअी बोला भी तो किसी लडकी की तरह लजाते हुअे, केवल ओंठ फरकाते हुअे, चार चार की कतार में, बिलकुल सादा भिक्षुकों सरीखा बाना पहने हुअे, नाप नाप कर कदम रखते हुअे, सिपाही ने 'ठहरो' कहा तो ठहर गये, "बैठ" कहा तो बैठ गये, 'अुठो' कहा तो अुठ गये अैसे सौ—सवा सौ लोग होने पर भी बिलकुल गडबड न करते हुअे अुस पटांगण में चल रहे थे! अितने शांत दांत, संयत जीवियों का वह झुंड! सौ सवा सौ बकरियों-भेडों का झुंड कसाअीखाने की तरफ ले जाया जाता हुआ भी अिन लोगों की अपेक्षा अधिक गडबड करता हुआ जाना, कम दयनीय

दिखाओी देता ! अैसे अुन बेचारे दीनदुर्बलों को अुनके मातापिताओं से, बालबच्चों से, औरतों से जन्म भर के लिय विछुडा कर कालेपानी की ओर तत्रत्य अनन्वित जुल्म अेवं कष्ट की बलिवेदी का बकरा बनाने के लिये ले जाया जा रहा है न ? राजकीय कानून की कैसी यह निष्ठुरता? सजा की क्रूरता !

अुन लोगों को सिर्फ अुस दुर्दशामें ही देखनेवालों को किंवा, पीडा दृष्टिगोचर होते ही वह रोगापहारक शल्यक्रिया की है या मारक शस्त्राघात की है, अिसका विवेक न करते हुअे केवल रोते बैठनेवाली मिचलाती दया को अुन अुस वक्त गोगल गाय की तरह दयनीय प्रतीत होनेवाले चलान के अंदर के सजायाफ्ता लोगों को देख कर अंतःकरणपूर्वक करुणा ही आअी होती, अुनके विषय में हार्दिक सहानुभूति ही प्रतीत हुअी होती; और गुस्सा अगर किसी बात का आया होता तो अुन पुलिसवालों की निर्दय डंडेबाजी का ! बंदुकों में संगीनें चढाये हुअे पुलिस की टुकड़ियाँ कुछ आगे पीछे, कुछ डंडे सँभाले हुअे आजूबाजू को—बीचबीचमें कभी कुपित मुखमुद्रा से अेवं कठोर स्वर से चिल्लाते हुअे अुन बेचारे बंदियों के झुंडको—कसाओी पशुओं के झुंड को ले जाते हैं तद्वत् ठोकते पीटते आगे की ओर हकाले लिये जा रही थी ! कोओी थोडा जोर से बोला या रेंगा कि, दिया अेक डंडे का ठोंचा अुसे ! जरा किसी ने 'अरे तुरे' किया कि पोलिस के तीनचार डंडे बैठेही समझो अुसके खोपडे पर ! वहाँ न छान बीन, न साक्षी न सबूत—अेकदम डंडा ! सारे न्याय-कानून अुसमें समाये हुअे ! अूपर की निगाह से देखनेवालों को असली निर्दय और जालिम प्रतीत हुअे होते वे पोलिसवाले और असली दीनदुर्बल जँचा होता वह 'चलान'!

पर यदि अुन धार बंद संगीनोंवाली बंदूकों और डंडों का गराडा (घेरा) अेक घडी भर के लिये हटाकर अुस चलान के अंदरके अुन नीची गर्दनोंवाले और बूंदें बहानवाले 'बेचारों' को खुला छोड दिया गया होता तो ? आँखों से करुणा की अेक कणिका भी न प्रवाहित करते हुअे अुस चलान में के अुन बहुतेरे बेचारों ने आधा कलकत्ता जलाकर खाक कर डाला होता, और बचे हुअे आधे कलकत्ते की गर्दनें मरोडकर हाहाकार मचवा दिया होता ! सरकस के रींगन में भाले और कँटीले चाबुक फटकारते रहनेवाले नियामक लोग

जबतक सामने और आजूबाजू में बने रहते हैं, तबतक सिंहव्याघ्रभी जैसे सुसभ्य नागरिकों की भांति रिंगन में अनुशासन के साथ चलते हैं वैसे वह 'चलान' अनुशासन में चल रहा था; वे संगीनें और वे डंडे अुसे घेर कर खड़े थे अिसलिये ! अपवाद को अेक ओर रख छोड़ें तो, अुस चलान में के बहुतेरों की वह सभ्यता, वह विनय, वह दीनता, वे बूंदें, नीति की नहीं थीं; थीं तो केवल निरुपाय भीति की !! अैसे अुच्छृंखल खलों को भी समाजस्वास्थ्य-पोषक अनुशासन में लाया जा सकता है; पर गीता के पारायण से नहीं; संगीनों की फौलादी नोकों से !!

बिलकुल गोगलगाय की तरह बेचारे दिखाअी देनेवाले अिस चलान के दसपांच व्यक्तियों का थोडासा परिचय यदि आप लोगों को करादें तो मिचलाती दयाभावना को सिर्फ अुनकी अिस दुर्दशा की ओर देख कर जो करुणा फूट अुठती है वही नफरत के रूपमें बदल जायगी ! और अैसे हिंस्र मानवी श्वापदों में भी मनुष्यता जो थोड़ीसी रहती है, अुसी को जीवित रखकर अुस हिंस्रता के रोगाणुओं का प्रतिरोध करने के लिये अूपर से अत्याचारी प्रतीत होनेवाली अिन धारबंद संगीनों की चुभनें (अिंजेक्शन) क्यों जरूरी हैं, यह ध्यान में आजायगा । यह आ ही गया देखिये, वह 'चलान' !

पुलिस की संगीनों और डंडों के चौफेर पींजरे में बंद वे सौ-सवा सौ श्वापद चार चार की कतारों में अुस पटांगण में अेक झुंडमें आये वह अजस्र समस्त पींजरे का पींजरा ही मानों आगे ढकेलते हुअे पटांगण में लाकर खड़ा कर दिया । अुनमें से प्रत्येक काले पानी की सजा पाये हुअे शख्स के पैरों में पड़ी हुअीं और कमर में चमड़े की गांठों से बँधीहुअीं दो-दो लोहे की बेड़ियाँ खनखना रही थीं। प्रत्येक की छातीपर अेक जस्ती बिल्ला; अुसपर सजा के बरस और नाम खुदा हुआ; प्रत्येककी कांखमें अुसके बिस्तरे की गठड़ी,—अेक हाथमें अपना अपना जस्तका बना तसला; अुस बोझ के नीचे, जो अुन लोगों में कच्चा ढीलाढाला, वह-वह कैदी झुकता—कन्हाता, जो अभ्यस्त और हट्टाकट्टा वह-वह अकड़के साथ; किंतु तो भी डंडे से दुबकता और दाँत पीसता हुआ अपनी कतार में खड़ा था ! अुनमें से अिस पहली कतार में विद्यमान काले पानी के अुद्भूयमान नागरिकों का ही, सिर्फ बानगीके लिये, परिचय आअिये, प्राप्त करें !

यह पहला बेचारा ! रामदयाल नाम अुसकी छाती परके बिल्ले में खुदा हुआ है और सजा १४ बरस काला पानी । अिसने अपने सगेभाअी की मौत के बाद अुसके अिकलौते छोटे बच्चे को विष देकर मार डालने का खडयंत्र किया था । और अुस वजह से लड़का मर गया । वजह ? अुस सगे भतीजे का कांटा राह में से निकल गया तो अुसका वंश नष्ट हो जायगा और सम्मिलित कुटुंब की सारी मालमत्ता अिसे हड़पने को मिल जायगी !

यह जो दूसरा दंडित, वह अेक अर्थ में सुधारणीय अपराधी कहा जा सकता है ! अुम्र सतरह-अठारह बरस की–नाम गोपाल, मुद्रा गंवारू । अुसके घर के पिता, चाचा वगैरे बड़े आदमियों ने अपने खेतों को नीलाम पर चढा देने के गुस्से की वजह से, अुस गांव के साहूकार से बदला लेने के लिये अुसके घर डाका डाला। बड़े आदमियों के साथ यह लड़का भी गया । साहूकार को नीचे गेरकर वे लोग अुसकी मरम्मत करही रहे थे कि अिसने चक्की का अेक पाट अुठाकर अुस बेचारे साहूकार के सिरपर दे मारा–अुस का मगज ही बाहर आ गिरा ! साहूकार का अपराध यह कि, अिस परिवार ने अुसका कर्जा चुकाना तो दूर रहा, अुलटे अुसकी अनाजकी ढेरी, खलिहान और जानवरों तक को जला डाला था–मारडाला था; अतः अुसने अिनपर खटला किया और यथा रीति नीलाम करके अिन लोगों के खेत बेच डाले अिसके पिता को फाँसी की सजा हुअी–यह लड़का दूसरे नंबर का, अतः अिसे आजन्म काले पानी की सजा सुनाअी गअी !

पर अिस तीसरे बेचारे को देखा आपने ? कितने नियंत्रण में खडा है, कितना व्यवस्थित, निर्बंधशील (Law-abiding) दिखाअी देता है वह अिस धारबंद संगीन की चमक-दमक में ! पर जबतक वह चमक अुसकी राह पर पड़ी नहीं थी और अुस राह पर वह अपने स्वभाव के अंध-प्रकाश में ही निहारता-निहारता स्वतंत्र रीति से चला जा रहा था, तब यह नागरिक किस तरह चल रहा था मालूम है ? यह बात आप अुसकी सजा के अिन नोटों में पढिये ! यह बलूची ! तत्रस्थ अुद्दंड टोलियों में का अेक मनुष्य ! नाम अल्लाबख्श ! सिंध प्रांतवासी अिन गिने हिंदुओंकी बस्तियों पर अिस टोली के जो बार बार डाके पड़ते थे अुनमें भाग लेता लेता यह अितना क्रूर बन गया कि अिसको हिंदू लडकों लड़कियोंके मांस के लचके तोड़ तोड़

कर खाने की राक्षसी आदत पड़ गओी ! आखीरकार, अेकदफा पेशावर की तरफ जानेवाली अेक रेलगाड़ी के स्त्रियों के डिब्बे में अेक हिंदू स्त्री अपने नन्हें दुधमुँहे को लेकर अकेली बैठी है, यह पता चला कर वह अुस डिब्बे में घुस गया, छुरी तान कर अुस स्त्रीकी लज्जा की बलि ली और अुस आसुरी आवेश में अिसने अुनके दोनों गालों के मांस के लचकों को दांतों से तोड़कर अुन्हें चबाचबा खा डाला ! वह और अुसका बच्चा जोर जोर से बिलखने लगे; अतः वह गुस्से में और भी अधिक बवरा गया ! और अुसने छुरे से अुस निरागस, असहाय स्त्रीके बच्चे के पेट की पोटली फाड़ डाली अेवं अुस स्त्री के मुँहपर छुरे के घाव डालने लगा--अितने अचेतन क्रोध से कि रेल गाड़ी थम गओी है, अिसबात का भी खयाल अुसे नहीं रहगया ! गाड़ी रुकते ही वह नीचे कूद पड़ा--मार धाड़ करता हुआ भागा--पकड़ा गया तो पकड़नेवाले पुलिस की अुंगलियों को कचू से तोड़ डाला और अुन्हें कचाकच चबाने लगा ! कोर्ट में अुसने पागल का स्वांग बनाया ! पर नरमांसभक्षण की अघोरी अिच्छा के अतिरिक्त अुसमें पागलपन का कोओी चिन्ह नजर नहीं आया ! अुलटे, वह हिंदुओं के ही कोमल लड़के-लड़कियों के मांस के लचके तोड़ कर खाया करता हैं और खून गटक गटक कर पीता है, अुसके अुस राक्षसीपने को भी अेक शैतानी धर्मबंधन है, अुसके पैशाचिकपने में भी अेक व्यवस्थित पद्धति है, अैसा सिद्ध हुआ ! ! अुसे आजन्म कालेपानी की सजा देकर पागलों के रुग्णालय में कुछ दिन बंद किया। वहाँ भी नाहियातपना करने के कारण जब दो दफा पचास-साठ कोड़े खाने को मिले तब से अुसने अपने पागलपन का स्वांग भरना छोड़ दिया, अनुशासन के साथ रहने लगा, और अब अुसे कालेपानी भेजा जा रहा है ! कोड़ की अेक फटकार ने ही अुसके पागलपन को झाड़कर रखदिया ! संगीनों की धार पर राक्षसवृत्ति को तराशते ही राक्षसों को भी कभी कभी मनुष्यका आकार प्राप्त होता है सो अिस तरह ! ! अेक मात्र अनुमान पर आधारित मंत्रों के पानी से जो पालतू नहीं बनते अैसे हिंस्र श्वापद भी तनी हुओी संगीनों के पानी से पालतू बनाये जा सकते हैं--कम अज कम निरुपद्रव तो बनाया जा सकता है सो अिस तरह !

मिचलाती हुओी दया भावना को जो व्यक्ति 'बेचारे' नजर आये वे अिस चलान के आदमी अुस समय अुस प्रकार 'बेचारे' क्यों नजर आये अुसे समझाने

के लिये, अुनमें से तीनका परिचय बानगी के तौरपर अूपर हमने दिया है। अुनकी जो विशेष बातें हमने अूपर दी है, वे सब बातें अुपन्यास की रोमहर्षक अद्‌भुतता को बढाने की बुद्धि से कल्पित की हुअी नहीं हैं। केवल रोमांच की थरथराहट का अनुभव करने के लिये मनुष्य जाति की मनुष्यताकी विडंबना करना, अुपन्यास लेखक की मनुष्यता के लिये अयोग्य अेवं सर्वथा लांछनास्पद है!

परंतु यहाँ हमने जो बातें अुल्लिखित की हैं—वे औपन्यासिक कल्पना प्रसूत नहीं हैं; प्रत्युत वे सृष्टि का ठोस सत्य हैं। काले पानी के सजायाफ्ता लोगों का अितिवृत्त अुनकी History sheets यदि आप पढें तो आपको अुस अघोरी नगरी के पच्चहत्तर प्रतिशत नागरिकों के संबंध की टिप्पणियाँ अूपर बतलाये हुअे दो-तीन आदमियों के बारे की टिप्पणियों के समान ही पाअी जायेंगी। अपवाद पच्चीस प्रतिशत! और यह सब होते हुअे भी हमारे धार्मिक मेलों में जितनी हुल्लड़ मचती है, अुतनी भी अुस राक्षस राष्ट्रमें सहसा नहीं मच पाती। वहाँ के हत्त्या और डाकेजनी के आंकडे अमेरिकाके आंकडों से भी कम बैठते हैं। कारण? पसीजनेवाली, सहिष्णु दया भावना नहीं! संगीनदंड! वह दुर्धर्ष दंडही राक्षसों को मनुष्य बनाता है।

शरीर में व्याधियों की भांति मनुष्यता में राक्षसवृत्ति भी निसर्गनिर्मित होती है! राक्षसवत्ति के सुधार का अुपाय दंड! तो मनुष्यता को सुधारने का अुपाय—दया!

अिस प्रकार वह 'चलान' खुले मैदान में अपने पैरों की बेड़ियाँ खनखनखनाते हुअे, सैनिक दल की भांति अनुशासन के साथ चार चारकी कतार में ज्योंही आया त्योंही 'ठैरो' अैसी आज्ञा हुअी। तत्काल वे सारे दंडित अेक साथ खड़े होगये। 'बैटो' कहतेही बेड़ियों की अेकदम खनखनाहट के साथ वे तत्काल अुकडूं बैठ गये। सामने जिस समुद्रपर अुन्हें अब चढना था, वह समुद्र बड़ी बड़ी लहरों को अूँचे फेंकता हुआ, तत्पश्चात् अुस प्लेटफार्म पर अुन लहरों को धड़धड़ाहट के साथ पटकता हुआ, झाग देता हुआ अत्यंत गुस्से से दाँत चबाताहुआ सा खल् खल् कर रहा था। अन दंडितों में से बहुतों का समुद्रदर्शन का वही पहला अवसर था। अुस अगाध जलराशिको अुस तरह गुस्से से अुबलते हुअे देखकर, केवल अुस भीषणदृश्य की धसक से ही अुनकी

छातियाँ धडकने लग गअीं ! दंडितों को आपसमें बातचीत करनेकी सख्त मनाही होती है । तो भी अस धसक की वजह से किसी न किसी के साथ कुछ न कुछ बोले बिना अुनसे रहा नहीं गया । अतः हरकोअी अपने अपने पास वाले दंडित के साथ काना फूसी करने लगा, " यही है वह काले पानी का समुद्र! " " बापरे, अितने अूँची लहरों को अुछलते देख कर ही मेरी तो आधी जान निकली जा रही है ! " " अरे, जिन्हें काले पानी भेजा जाता है, अुन्हें अिस अथाह समुद्र के परे किसी टापू में भेजा जाता है, यह सच है क्या ? ! " " मैंने तो सुना है यह बिलकुल गप्प है, अैसी गप्प हांक क[illegible] [illegible] लोगों को जहाज पर चढा कर मध्य समुद्रमें लेजायेंगे और माफ अुसमें डुबा [illegible] ! " नये दंडितों को थरथर कँपाने वाली शंकाओं के पके हुअे खुर्राट दंडितोंद्वारा दिये गये प्रत्यु त्तरों की कानाफूंसी बढते बढते दबेहुअे कोलाहल का स्वरूप धारण करने लगी । तब पुलिसवालों की सहनशीलता समाप्त हुअी और अुन्होंने डाँटा—" चूप ! नहीं तो दंडुके से पीटे जावोगे ! "

अेकदम सब के सब चुप होगये । पुराने घुटे हुअे अेवं कारागार में बार-बार शरम किये हुअे बंदी लोग रखवालदारों की नजर चुकाकर नियंत्रणभंग करने की विद्या में पूर्ण प्रवीण होते हैं । पर नये बंदी अुनका अनुसरण करके अनुशासन भंग करने जाते हैं, तो पट् से पकड़े जाते हैं । दूसरी बात यह है कि अनुशासनभंग करनेवाले परिपक्व दंडम कैदियों के रास्ते पर न जाते हुअे रखवालदार भी नये और नरम मिजाज के कैदियों पर ही अनुशासन भंग-जन्य गुस्सा निकाला करते हैं; क्यों कि वह आसान होता है । अतः फिर कोअी हल्लागुल्ला करता है क्या यह देखनेवाले अेक गुस्सेबाज रखवालदार ने अपने परली ओर बैठे हुअे दो तीन पहले ही से कानाफूंसी करनेवाले किंतु परिपक्व अेवं दंडम न दिखाअी देनेवाले दंडितोंपर खुल्लमखुल्ला अुसकी नजर अुधर नहीं है, अैसा दिखाते हुअेभी चुराकर अपनी नजर रक्खी ! थोड़ी ही देर में फिर जिधर-तिधर धीमेधीमे कानाफूंसी बढती जारही है और पचती भी जारही है, यह देखकर अुन-दोनों में से जो कमअुम्र, नया कैदी—समुद्रमें लेजाकर कैदियों को डुबा दिया जाता है, अिस कल्पना से पहले ही से घबराया हुआ सा हो गया था, वह अपने पासवाले अेक शिक्षितवत् दृष्टिगोचर होनेवाले दंडित से अत्यंत गिड़गिड़ाता हुआ पुनः पुनः पूछने लगा,

" बाबूजी, कहो ना ! अिसी समुद्र में डुबायेंगे क्या हम सबको ?"

" बच्चा, नहीं नहीं " अेक परिपक्व दंडित बीचही में, पुलिस अुसकी ओर पीठ किये खड़ा है, यह देखकर झटसे बोला, " अे बात झूट है ! काले पानी से भागकर आये हुअे अेक अुस्ताद पट्ठे को मैंने खुद कैदखाने में देखा है--अंदमान कहते हैं अुस टापूको। अुसपर लेजाकर छोड़नेवाले हैं, हम सबको !"

" आँ ? क्या बोले ? " वह लड़का जानमें जान आये हुअे की तरह बोला, " काले पानी पर से कोअी भाग कर वापिस भी आ सकता है ? बाबूजी, तुम कहो तो हम सच मानेंगे अिस बात को !"

" दस हजार में से अेक आध ही कोअी ! अैसा अेक नराधम अपराधी काले पानीपर से भागकर आया हुआ, मैंने भी देखा है ! "

यह वाक्य वह बाबूजी (साक्षर कैदी को किंवा क्लार्क को या बड़ी भारी योग्यताके दंडित को बंदिवानों में 'बाबूजी' कह कर संबोधित किया जाता है !) यथाशक्ति सावधानीके साथ अंत में बोलही रहा था कि, अुसी क्षण पीठ फेरकर अुनपर नजर रखनेवाले अुस पोलिस रखवालदारने झट से भागकर दौड़कर बाबूजी को पकड लिया! क्योंकि पकड में न आते हुअे अनु-शासन भंग करने की विद्या में, संपूर्ण जन्ममें पहलीही बार कैद की सजा प्राप्त होने के कारण, अेवं सरल, सत्य वस्तुको जोरसे कहने की सभ्यजगत् की आदत जा कर कैदखाने के लिये आवश्यक लुच्चेपने की आदत न पडने के कारण बाबूजी के वे शब्द अिच्छा न होते हुअे भी मुँह से जरा जोर से ही निकल गये थे !

रखवालदारने बाबूजीपर टूटकर अुनके कुडते की गर्दन पकड़ कर अुन्हें खड़ा कर दिया और अपने जमादार की तरफ खींचते हुअे लेजाकर कहने लगा, " बार बार चुप बैठने के लिये कहने पर भी यह कैदी लगातार शोरगुल मचा रहा है, यही नहीं, अन्य कैदियों को अुकसा रहा है कि, हम लोग काले पानी का जेलखाना तोड़ कर भाग निकलें ! "

" क्या ? " गुस्से से लाल हो कर जमादार चिल्लाया, " काले पानी से भाग आने का खडयंत्र ! नाम क्या है अिस पाजी का ? "

रखवालदारने अुन बाबूजी की छाती पर का बिल्ला देखकर जमादार को नाम बताया "कंटक ! "

जमादारने वह नाम और अुसके बिल्ले पर से बंदी-क्रमांक अपने जेबकी नोटबुक में नोट कर लिया और डपटकर बोला—

"कंटक! तेरा यह अपराध यदि मैं अूपर कह दूं तो तेरे गले में फंदा पड़ जायगा! काले पानी से भागनेवाले को भागते हुअे गोली से अुड़ा देते हैं, पकड़ में आया तो फाँसीपर लटका देते हैं, मालूम है? काले पानी में यह अपराध सब से बड़ा माना जाता है!"

"पर जमादारजी, मैंने तो कालेपानी से भाग आने के खडयंत्रके बारे में अेक अक्षर भी कह कर किसी को अुकसाया नहीं है। मुझे—"

"चुप! बदमाश, तूने अुसी तरह अुकसाया है" रखवालदार झल्लाया!

"मेरे पासवाले कैदियों से पूछ लीजिये, मैं कहता हूं सो सच है कि झूठ है!"

जमादारने अुस लड़के को और अुस पक्के खुर्राट कैदी को अुठाकर पूछा, "क्या रे, यह कंटक तुम्हें क्या सिखा रहा था?"

लड़का सिर्फ थरथर काँपता खड़ा रहा। पर कंटक के अूपर के अिस आरोप के विषय में पुलिसवालों के साथ चलनेवाली अुस सारी बातचीत को शुरूसे सुनते हुअे बैठनेवाले अुस सधे हुअे कैदी ने पट् से जवाब दिया—

"जमादारजी, यह बाबू हमसे कह रहा था कि, काले पानी से भाग खड़े होने की तरकीब अुसे मालूम है, अुसतरह भागकर आयाहुआ अेक शख्स अुनका मुखिया है और हम सब यदि अुसके खडयंत्रमें शामिल हो जायँ और गुप्त निश्चय किसी पर भी प्रकट न होने देने की शपथ लें तो अेक बरस के अंदर सब लोग जेल को तोड़कर कालेपानी से निकल कर घर वापिस आ सकते हैं! मैंने अिससे कहा, 'हम नहीं आने बाबा, अैसे भयंकर खडयंत्रमें और नाही लेते शपथ-विपथ!"

अुस पक्के बदमाश कैदी की यह साक्षी सुनते समय वह कंटक केवल दिङ्मूढ होकर मुँह बाये खड़ा रहा और पीछे से अेकदम बोल अुठा, "अरे, कैसा यह मिथ्याभाषी! अितने अुलटे कलेजे का मनुष्य भी हो सकता है अं! अेक अक्षर भी अिसके वक्तव्य का सच्चा नहीं है! जमादारजी, सौगंध है देवकी! मैं—"

दनदनाता अेक डंडा कंटक की जांघ पर बिठा कर जमादार ने गर्जना की, " चूप ! " बस, अुस सारे साक्षी, सबूत, आरोप, बचाव का न्यायनिर्णय अुस अेक डंडेके भीतर ही समारोपित हो गया !

अितने ही में घनघनघन करके अेक घंटा घनघनाने लगी। अुन तीनों को फोड़ कर निराली निराली कतारों में बिठाने की आज्ञा पोलिस रखवालदार को देकर जमादार दौड़ते हुअे ही जिधर घंटा बजी थी अुधर निकल गया । अुस चलान को अंदमान की तरफ जानेवाली अग्निनौका पर चढाने तक ही सारी जवाबदारी जमादार पर रहती है, वह घंटा अग्निनौका आने की ही थी अतः कंटक के अुस प्रकरण का जमादार को वहीं विस्मरण होगया । अेक दफा अपने हाथ से अुस चलान की विपत्ति अग्निनौका पर पहुँचा दी गअी कि हो गअी मुक्तता अपनी ! फिर चाहे वे वहाँ से भाग जायँ या जल मरें ! अुसकी झंझट वह जमादार अूपर के अधिकारियों को अुस घटना की खबर देकर काहे को मोल ले ?

जमादार निकल गया ! वह प्रकरण वहीं विस्मृत होगया ! पर जमादारने डंडे की जो मार अुस की जांघ पर बिठाअी थी अुसे भला, कंटक कैसे भूलता ! जांघ में दर्द पैदा हुअी और वह बिलबिलाता हुआ बैठाली गयी कतार में जाकर बैठ गया ! अुस अन्याय, अपमान और विशेषतः अुसका प्रतिकार करने की पूर्ण अक्षमता के कारण कंटक को जीवित रहने की भी शरम महसूस होने लगी । काले पानी में जीवित रहने के लिये जितनी तितिक्षा आवश्यक है, अुतना अुस सद्गुण में वह अभीतक प्रवीण नहीं हो पाया था ।

पर कारागृह और कालेपानी का जीवन जिन लोगों के अस्तित्व पर आश्रित अेवं समर्थित हो सकता है, अैसे सधे हुअे निर्लज्जों में से वह साक्षी देनेवाला दंडित बैठेबैठे अुस कंटक की ओर देख कर दाँत निपोर कर हँस रहा था अुलटे ! पास के दंडितों को अपनी अेक बड़ाअी समझकर कंटक के बारे में कही गअी अपनी झूठी साक्षी की बात कहने लगा, " भय्या, आअी थी मेरी ही जान पर बारी; पर मैंने अुस भोले बाबू के ही मत्थे मढवा दी! कंटकको टांग पर अैसा अेक डंडा बिठवाया कि बस ! —"

कंटक की जांघमें दर्द अुठ रही थी; अतः अुस से अुकडूं नहीं बैठा जा रहा था। सिपाही तो चिल्लाता ही रहा, "हां, अुकडूं बैठ, सीधा बैठ!" कंटक-पर अनुशासनभंग की दूसरी अन्याय्य विपत्ति टूटने ही वाली थी—

पर अितने ही में जहाँ तहाँ अुन संगीनवाले रखवालदारों का शोर मचा-"अुठो! महाराज आया!"

कंटक चमक कर अुठा और जिज्ञासा से देखने लगा, अैसे कौन से महाराज अिधर आ रहे हैं?

सधे हुअे अनुभवी कैदी समुद्र की तरफ अुंगली दिखा कर कानाफूंसी करने लगे, "महाराजा आये देखो, वे!"

कंटकने देखा, अेक बड़ी भारी आगबोट भों ऽ ऽ अैसा बंब भौंकती हुअी अुन खलबली मचानेवाली लहरों के जंगल में से राह निकालती हुअी प्लेटफार्म की ओर धीरे धीरे आरही है; अुस पर 'महाराजा' अैसा मोटे मोटे अक्षरों में नाम लटक रहा है!

"महाराज आया" का मतलब अिस जलयान, अिस जहाजके आने से है! यही क्या अब मुझे अुस काले पानी पर ले जायगा? अुस जलयान को देखते ही कंटक के पेट में धडकी घुसे बगैर न रही!

आजतक सहस्त्रावधि भलेबरे स्त्री-पुरुष अपराधियों को अिस 'महाराज' जलयान ने अिस प्लेटफार्म से अुठाकर काले पानी पर ले जाकर छोड़ा होगा-पर अुन में से हजारमें अेक को भी फिर से अिस प्लेटफार्म पर वापस लाकर छोड़ा नहीं! जो कोअी काले पानी के दंडित के रूप में अिस जहाज पर चढगया-काले पानी में चला गया—वह चलाही गया! अिस दुनिया की खातिर वह मर गया और अुसकी खातिर यह दुनियाँ मर गअी! मरघटकी ओर लेजाये जानेवाले प्रेत को यदि कुछ अनुभव होना संभव हो तो, अुसे जो महसूस होता होगा, वही कालेपानी की तरफ ले जाये जानेवाले अिन दंडितों को 'महाराज' पर चढाते समय महसूस हुआ करता है! कम अज कम अुसके न 'महसूस होने' की मनुष्यता जिनमें अवशिष्ट होगी, अुन लोगों को तो यही प्रतीत होगा कि यह 'महाराजा' जहाज नहीं है, वल्कि अेक कब्र है! अिसमें जो गाड़दिया गया, वह फिर यदि अुससे बाहर पड़ेगा ही तो अुस काले समुद्रके परली ओर की यमपुरीमें! यमलोक में! अिस लोकमें नहीं!! कंटक की

समझमें आरहाथा; और अिसी लिये अिस ' महाराजा ' को देखते ही अुसकी छाती में धड़की बैठ गअी। तबतक वह अपने मनसे पूछ रहा था–अिस समद्रको ' कालापानी ' क्यों कहते हैं? यों देखा जाय तो समुद्रका लांघना ही जाति पाँति और धर्म का नष्ट होना है, हिंदू समाज की दृष्टि से अेक प्रकार की सामाजिक मृत्युही है, अैसी जब सिंधु-प्रतिबंध की प्रथा हिंदुओं में प्रबल हुअी तब से सारा समुद्र ही हिंदू समाज के लिये कालापानी प्रतीत होने लगा। काल का मृत्युका समुद्र भासने लगा। पर अुसमें भी अिस अंदमान टापूकी ओर जन्मभर की सजा के रूपमें जानेवाले लोगों को ही कालेपानी की ओर जाने वाले अैसा भीषण नाम क्यों दिया गया ? अुस समुद्र के पानी की ओर कंटक बहुत देरसे विशेष ध्यानपूर्वक देख रहा था, परंतु वह काला क्यों, अिसकी कोअी वजह अुसे नजर नहीं आती थी। पर अुस महाराजा जलयान को देखतेही और 'अब वह मुझे अिस सगे संबंधियों के जातिगोत्र के जग से ही नहीं प्रत्युत जीवन ही से छिनाकर अत्यंत दुर्दशावाले किसी मृत खंड में लेजाकर अवश्य अवश्य गाड़ डालेगा। अिस बातके प्रत्यक्ष होजाने पर, अुस के हृदयमें जो धड़की घुसकर बैठ गअी अुसकी वजह से वह सारा समुद्र सचमुचही काला-काला भैंसे का सा दिखाअी देने लगा ! अुसे काला पानी नाम क्यों दिया गया सो समझमें आया, अितना ही नहीं, कालेपानी नाम से भिन्न कोअी अन्य यथार्थ नाम अुसे दिया जाता तो वह किस प्रकार वदतोव्याघात सिद्ध हुआ होता, यह भी पूरी तरह अुसके ध्यान में आ गया।

यह कंटक ही वाचकवृंद ! आपके परिचय का वह किशन ! अुसको और मालती को जब से काले पानी की सजा हुअी और वे अेक दोनों से जो बिछुडगये सो बिछुड ही गये ! मालती को किस कैदखाने में भेज दिया गया, यह अुसे अनेक प्रयत्नों के पश्चात् भी मालूम न पड़ा। अिसको भिन्न भिन्न कैदखानों में भींचते भींचते प्रत्येक चार-पाँच महीने के पश्चात् काले पानी के दंडितों को अेकत्र करके काले पानी भेजने के कायदे के मुताबिक, जब अिस टोली को काले पानी भेजने के लिये कलकत्ता लाया गया, तब अुस प्राणसंकट में भी अेक स्निग्ध भीषण जिज्ञासा अुसको बेचैन किये रखती थी। किसे मालूम, मालती को भी अिसी ' चलान ' में आजन्म काले पानी की सजा के लिये न ले आवें ? अुसको तादृश दुर्दशा में देखना–धकेलना–कितना असह्य

कितना कटु! पर अुस निमित्त से भी क्यों न हो, कम-अज-कम मालती को देखना—संकट ही भोगने हों तो अेकत्र भोगते हुअे अेक दूसरे को बाँटकर भोगना यह कल्पना कितनी मधुर! चुपचाप अुसने खोजने की बहुत कोशिश की पर दंडित स्त्रियाँ अुस चलान में भेजी जानेवाली नहीं थी और होतीं भी तो अुन को यथाशक्ति पुरुषचलान की नजर तक से दूर रख कर भेजने की स्वतं व्यवस्था रहती है—वही योग्य है। अेतादृश अुच्छृंखल कलि पुरुषों के अेवं क्रूर पशुओं के झुंड में अुन क्रूर तथा दंडित स्त्रियों की भी देखते ही देखते मट्टी पलीद हुअे बिना थोड़े ही रह सकती है!

मालती अुस चलान में नहीं है, यह मालूम पड़ने की वजह से किशन को अेक दृष्टि से अच्छा महसूस होने पर भी जैसे बुरा महसूस हुआ, मालती को सिर्फ देखने का भी अवसर प्राप्त नही होता, अतः जैसे अुसके प्राणों को तिलमिलाहट होने लगी थी; ठीक अुससे अुलटा और अेक व्यक्ति अुस चलान में दृष्टिगत न होने के कारण अुसके सिरपर से अेक बला टलने जैसा संतोष हुआ। वह व्यक्ति था रफिअुद्दीन! अुसे भी आजन्म काले पानी की सजा हुअी थी—किशन को सजा होने से कुछ ही दिनों पूर्व! वह भी अिसी चलान में अुसके साथ तो नहीं आता! अुसका नाम अब बदल गया है, किशन की जगह कंटक रखा हुआ है। पर शकल तो वही है! रफिअुद्दीनने कहीं अुसको पहचान लिया तो! वह क्रूर नराधम अपना बदला लेने के लिये पुनः अत्याचार का मार्ग पकड़े बिना नहीं रहेगा। अुसके अूपर भी प्रत्याघात किये बिना नहीं रहेगा। पहले ही से अुपस्थित विकट प्रसंग में अेक और भीषण यातनाओं का पत्थर गलेमें बँध जायगा। जो होना हो, होने दो! जो अनभीष्ट वस्तु होनी थी, सो तो हो ही गअी है—काले पानी की सजा, यह सजा क्या और मौत क्या—अुड़द में काले गोरे की परख काहे को? अिस प्रकार से विचार करते हुअे किशन मन ही मन अुस विपत्ति का मुकाबिला करने की तय्यारी कर रहा था, तथापि वह विपत्ति टल जाय तो अच्छा, अैसा ही अुसे लगता था! अतः अेव अुस चलान में वह रफिअुद्दीन तथा अुसके साथियों में कोअी भी नजर नहीं आरहा है, यह देख, 'अेक नअी बला तो टली, अिस बात का अुसको संतोष था। फांसी पर चढ़ाते समय भी यदि आँखों पर पट्टी बाँधकर चढ़ाया जाय तो वह भी भला ही महसूस होता है—थोड़ी देर के लिये!!

वह सारा का सारा चलान, बेड़ियाँ खनखनाता हुआ, काँख में बिस्तर, हाथमें तसला लिये, चार की जगह अेक अेक की कतार बनाकर, सॅकरी सी सीढीपर से, समुद्र की तरंगों की वजह से हिलने डुलनेवाले अुस ' महाराजा ' जलयान पर जैसे तैसे अनिच्छा के कारण सकुचाते हिचकिचाते अेक बारगी चढ ही गया। वह ' महाराजा ' जलयान केवल काले पानी ही की ओर आने जाने के लिये रखा गया था ! गत तीसचालीस बरसों से अिस प्रकार के सैंकडों चलानों को वह काले पानी पहुँचा आया होगा ! अुस पर पैर रखतेही लहरों की आदत से शून्य, हृदयमें अुदास, निराशाजन्य धुकधुकी की हिलकोरियों से पहले ही चकराये हुअे किशन को अेकदम मूर्च्छा सी आगअी ! यह अग्निनौका आजन्म काले पानी ही क्यों साक्षात् मृत्यु की ही ओर लेकर जा रही है, अैसा अुसे भासित हुआ। अेक खंभेका सहारा लेकर अपनी मर्च्छा को वह सभाल ही रहा था कि, सिपाही ने 'आग बढो' कहकर डंड से अुसे ठोंचा ! अुस के साथ ही फिर पंक्ति म ठीक ढगसे खडा होकर सब कदियों के साथ वह अग्निनौका के बिलकुल नीचे के, पानी के अंदर डूबे हुअे कठिन तले पर अुतर आया। देखता है तो क्या, सींखचोंका पिंजरा का पिंजरा ही सामने खड़ा है! अुस जलयान में काले पानी के कैदियों ही के वास्ते की हुअी यह सहूलियत थी ! वह पिंजरा ही अुन सम्माननीय अंदमानी दरवासियों का सुरक्षित कक्ष—Reserved Cabin ! !

पचास अेक आदमियों के सो सकने लायक अुस पींजरे में सौ सवासौ दंडितों को झटपट ठूंसकर भर दिया गया ! जिसको जहाँ जगह मिली अुसने वहीं अपना बिछौना डाल दिया। कोअी पंजाबी ब्राह्मण, कोअी बंगाली चमार, कोअी बलूची मुसलमान, कोअी मद्रासी अय्या, कोअी भील, कोअी मच्छीमार, कोअी वराडी, कोअी कारकून, कोअी भिखारी, कोअी सेठ, कोअी भूमिदार, कोअी बहेलिया, कोअी छोटा, कोअी वडा, कोअी निरोगी, कोअी क्षयी, कोअी ज्वरी, कोअी अतिसारी, कोअी आमांशी—सब को अेक जगह धकेल धकेल कर समता से अेकत्र ठूंस दिया था। आपत्ति में क्यों न हो, पर समानता अैसी अच्छी, कि अुसकी अपेक्षा वर्गभेद, जातिभेद, धर्मभेद, स्थितिभेद,

अधिक दृढ़ता के साथ अिनकार करने के लिये रशिया के बोल्शेविकों की भी छाती न हो सके !

किशन भी अुस भीड़ में जैसे तैसे अपना बिछौना डाल अेकदम नीचे बैठ गया। अुसका जी पहले ही से मिचला रहा था। डोंगियों में से बोटपर आते समय जैसे अनेक कैदियों को भड़ाभड़ अुलटियाँ हो रही थीं वैसेही अुसे भी होने लगीं ! अुलटी करने के लिये अलग-से जगह कहाँ वहाँ ? जो जहाँ बैठा, वहीं ओकने (अुलटी करने) लगा। अुनमें भी निर्लज्ज डराअूपने में जो जितना अधिक आततायी, अुसकी अुतनी ही अधिक सुविधा ! जबर्दस्ती धक्के मार कर जितने पैर वे पसार सकें अुतने वे पसारते थे। सिपाहियों ने गालियाँ दीं या अेक दो डंडे कसे, तो अुसकी अुन्हें शरम ही नहीं ! आदत पड़ जाने के कारण अुन्हें अुतना डर भी नहीं था ! किंतु जिन लोगों को वह डर था, और दूसरों की गर्दन मरोड़ने में थोड़ी ही क्यों न हो शरम महसूस होती थी, अैसे डरपोक किंवा मनुष्यता को जो घोल कर नहीं पी गये हैं, अैसों को ही वह दुर्दशा, वे पुलिसवालों और नीच दंडितों की गालियाँ और अमंगल गिलाजत अधिक तकलीफ पहुँचाती थी—अधिक खटकती थी ! किशन को भी अुसकी अेक बाजू में विद्यमान अेक अुग्राकृति दंडित अेकसरीखा ढकेलता और खिसकाता जा रहा था। किशन को वहीं अुलटी होगअी-अुसके छींटे अपने बिछौनेपर अुड़े देख कर वह किशन को अभद्र-अभद्र गालियाँ दे रहा था। और दूसरी ओर अेक दमा पीड़ित निरंतर खांसता जा रहा था—खखार थूक रहा था; परवशता के कारण और भीड़में अुपायांतर न होने के कारण अुसकी थूक किशन के बिछौने पर तथा पैरे परै भी पड़ती थी। यथाशक्ति अपने अवयवों को सिकोड़ कर, घुटनों को पेटसे चिपटाकर, अपने बिछौने के हाथभर भाग को ही फैला कर और जगहकी तंगी के कारण बाकी को अुसी तरह लिपटा हुआ छोड़ कर, अुसीपर टेका लेकर पड़गया। अुस बड़े जलयान की—छूटने से पूर्व की कर्कश घर्‌घर् बीच बीचमें होने लगी। बंबा बीच बीच में बवराये हुअे रावषमी कुत्तों की टोली की तरह भों ऽऽ करते हुअे चिंघाड़ने लगा !

अुस किमाकार अग्निनौका की वह घर्घर् प्रत्यक्ष मृत्यु की घर्घराहट के सदृश किशन को त्रासदायक प्रतीत होने लगी। बंबे की वह भों ऽऽ, यमके

किसी काले-कलूटे और रक्तपिपासु प्रचंड कुत्ते की भौंक के सदृश भीषण भासनें लगी । पेट में अेक सरीखी मिचली, हृदय में निरंतर भावनाओं का अुतार चढाव, सिरमें चक्कर, ' मैं कालेपानी में आजन्म निवास के लिय चलाहूँ, जीवित भी रहा तो अिस गिलाजत की, गाली गलौज की, लातों और मुक्कों की असह्य दुर्दशामें मृतवत् जीवन व्यतीत करना होगा; और यह दुर्दशा कभी समाप्त होगी अिसकी लेशभर भी आशा नहीं '—यह जानकारी मनमें ! ! किशन मदग्रस्त सा बिछौने के तकिये पर अुसी तरह पड़ा रहा–अितने ही में अुसके अुन अस्तव्यस्त विचारों में अेक विचार–जैसे कोअी जोर से पुकारते हुअे अुठता है, अुसी तरह पुकार मचाता हुआ ही अुठा—

" क्यों ? अिस दुर्दशा का अंत क्यों न होगा ? काला पानी–आजन्म कैद ! पर छुटकारा करनेवाले न रहें तो भी अपने आप छुटकारा पा लेना संभवही नहीं–यह किस आधार पर ? वह रफीअुद्दीन नहीं क्या कालेपानी पर से ही भागकर आया था ? मेरे लिये वैसा करना संभव नहीं, यह किस बिना पर ? "

अिस विचारतंद्रा के अस्तव्यस्त किंतु बलोत्कट विचारों के साथही अुस की घुटकर मरजाने वाली आशा अेकदम अेक अुछाल मारती सी चमककर अुठ खडी हुअी ! मरणासन्न मनुष्य अकस्मात् प्रबलतया हाथ पैर झाडता है, तद्वत् अुसकी आशा भी सहसा ही झड़झड़ा कर प्रबल हो अुठी ! अुसने तर्कशास्त्र का अभ्यास किया था। और कुतर्क, यह भी अेक तर्क ही है ! शक्याशक्यता, साध्यसाधन अित्यादि की कोअी रुकावट आशा के और वात के झटके को रोक नहीं सकती। डूबता जो तिनके का आधार लेता है, वह जिस प्रकार लिये बगैर अुससे रहा नहीं जाता, अिस लिये लेता है, अुसी तरह अुसके अुस काले पानी के अथाह समुद्र में डूबनेवाली आशाने अुन विचारों को पट् से छाती से लगा लिया और अुसकी अुस अचेतन तंद्रा की सारी चेतना वही अेक वाक्य अिकट्ठा करके अुद्घोषने लगी "काले पानी परसे भाग निकलना है ! बस्, भागना ही है ! "

" खल् खल् सल् सल् करते हुअे अग्निनौका के चक्र, पक्षयंत्र, समुद्रके अुदर में गतिमान् होने लगे । " निकलेगी ! छूटेगी ! लौट काले पानी की

और छूटेगी ! " पोलिस, कैदी, मल्लाह, अधिकारी नौकर, सभी के मुंहसे यह आवाज अुठने लगी !

अुतने ही में खड़् खड़् बूट अुड़ाते हुअे दो गोरे सार्जेंट बेड़ी-हथकड़ी ठोंके हुअे अेक कैदी को सख्त पहरे में नीचे अुतरवाते हुअे अुस पिंजरे के दरवाजे के पास आकर पहुँच गये, धड् से वह दरवाजा खुला, और अुस पींजरे में, अुस विशेष बंदोबस्त के साथ लाये हुअे दुर्दंड दंडित के साथ वे सार्जेंट अंदर प्रविष्ट हुअे।

अुस खडखडाहट के होते ही चमक कर अितने सार्जेंट किस को लेकर आ रहे हैं, यह देखने के लिये किशन पड़े पड़ेही आँखें खोलते हुअे अुस तरफ देखने लगा। त्योंही ! —कौन ? यह तो —?

अरे ! यह तो रफीअुद्दीन अहमद है ! सिर्फ चार हाथ की दूरी पर अकड़ के साथ खड़ा हुआ !

मुट्ठी तानते हुअे, आधे से ज्यादा खड् से अुठते हुअे, गुस्से से, धसक से, अचरज से कांपते हुअे ओठों में ही किशनने गुनगुनाया—

" रफिअुद्दीन ! वही है यह रफिअुद्दीन अहमद !!"

पुराना बैर किशन के हृदय में अेकदम अुबल कर आगया। स्थल काल परिस्थिति का विस्मरण होगया। मानों रफिअुद्दीन अपने को देखते ही बाघ की मानिंद अपने अूपर टूट ही पडेगा, अैसी लहर किशन के खून में अुछल आओ-और अुसके टूट पड़ते ही प्रतिकारार्थ स्वयमपि टूट पड़ने की पक्की तय्यारी के साथ वह दुबक कर अपने बिछौने की आड़ में बैठा रहा !

त्यों ही रफिअुद्दीनकी दृष्टि भी अुसकी दृष्टि से भिड़ गअी !!

रफिअुद्दीन की दृष्टि के किशन की दृष्टि से भिड़ते ही यह अभी मेरे अूपर टूट पड़ेगा अिस कल्पना से किशन की मुट्ठी मारामारी के आवेश से अपने आपही तन गअी; पर अेक क्षण में रफिअुद्दीन ने जिस तरह अुसकी तरफ देखा था, अुसी तरह अन्य कैदियों की तरफ भी वह देखने लग गया है, वह किसी भी प्रकार से विचलित नहीं हुआ है, अुसका सारा ध्यान, बिस्तरा कहाँ डालना ठीक होगा अिसी अेक विचार में अुलझा हुआ है, अैसा किशन को दिखाअी दिया! अुस अवकाश में, अुसे थोड़ी देर तक सोचने विचारने के लिये समय मिल गया। अिसने यदि मुझे पूरी तौर से पहचाना न हो तो? तो मुझे भी अपनी पहिचानत नहीं होने देनी चाहिये। मैं कंटक नामका कोअी दूसरा ही कैदी हूं, जहाँ तक हो सके अुसकी समझ अैसी ही कर देनी चाहिये। जहाँ तक हो सके अिस से परिचय ही न हो अैसा प्रयत्न किया जाय! अैसा अुस अवकाश में किशनने निश्चय किया और वह फिर अपने बिछौनेपर सिर टेककर, मुद्रितवत् भासमान किंतु वास्तव में अर्धोन्मुद्र नेत्रों से, रफिअुद्दीनकी गति विधि को देखने लगा!

रफिअुद्दीनने अपना बिस्तर पींजरे के अेक अैसे कोने में डाला, जहाँसे, लोहे की छड़ों के पास पहरा देनेवाले सिपाहियों के साथ आसानी के साथ बातचीत की जा सके! गोरे सार्जेंट अुसे अितने विशेष बंदोबस्त के साथ पींजरे में छोड़ कर, पींजरा बंद करके चले गये हैं, यह देखते ही, अुन सारे कैदियों पर अुसका आतंक पहले ही बैठ गया था। दंडितों में, जिसको अेतादृश भयंकर दंडित समझ कर भारी से भारी हथकड़ी-बेड़ियाँ पहनाते हैं, अुस को दंडित लोग अत्यंत तिरस्कारास्पद पापिष्ठ मनुष्य न समझ कर, यह कोअी अेक अत्यंत कर्तृत्ववान् मनुष्य है, अैसा समझने लग जाते हैं! अुसका वजन अुन अपराधियों में बढ जाता है और भयान्वित आदरबुद्धि के कारण वे स्वयमेव अुसके अधीन होकर व्यवहरने लगते हैं। दंडितों की अिस प्रवृत्ति के कारण ही तादृश जनसम्मर्द में भी रफिअुद्दीन को, कोने के दंडितों ने बगैर किसी

ननुनच के, स्वत: अेक दूसरे से सटकर भी, खुली जगह करके दे दी । हर कोअी अुसके बारे में जिज्ञासा व्यक्त कर रहा था। कुछको मालूम था कि वह काले पानी से भागा हुआ अेक प्रसिद्ध कैदी है। थोड़ी ही देर में यह बात सबको मालूम पड़ गअी ! रफिअुद्दीन यह समझता था कि सारे कैदी अुसे आतंक युक्त आदरभाव से देख रहे हैं। वह मानों अेक सम्राट् ही हो अैसी अदा से, खांसता था खखारता था , तथा पुलिसवालों की आंख बचाकर, जितना बोलना संभव था अुतना बोलता था। अुसके सम्राट्पद के जो विशिष्ट राजचिन्ह– पैरों में पड़ी सब से भारी बेड़ियाँ, अुन्हें वह पुन: पुन: खनखनाता हुआ, अपना श्रेष्ठत्व प्रकट करता था।

अब सूचीभेद्य अंधकार फैल चुका था । वह जलयान कलकत्ते का बंदर छोड़कर कालेपानी के रास्ते पर, समुद्रमे पूर्ण वेग से चल रहा था । कलकत्ते से अंदमान जाने के लिये ४-५ दिन लगते हैं । अुस बीच कैदियों को सिर्फ परमल और भुने चने ही खाने के लिये दिये जाते हैं। क्योंकि अुन दंडितों में से बहुत से घबराये हुअे–पली दफा समुद्रप्रवास के कारण अुलटियाँ करते हुअे–भोजनकी अिच्छा से शून्य होते है। दूसरी बात यह कि, अितने सैंकडों कैदियों के रसोअी–परोसे की सुविधा और व्यय करनेकी गर्मी अधिकारियों में बहुत कुछ नहीं रहती । अत: शामको पींजरा बंद करते समय कैदियों को जो चने परमल वगैरे बाँटे गये थे वे–अुलटियाँ करनेवाले कैदियों में बहुतोंने अुसी तरह रख छोड़े थे । पर रफिअुद्दीन के लिये तो काले पानी का समुद्र पुराना दोस्त था । न तो वह घबराया हुआ था और नाहीं अुसका जी मिचलाता था । अुसे खासी भूख लगी हुअी थी । अुसकी छाप तो सारे दंडितों पर पहले ही पड चुकी थी । सम्राट् ही था वह अुनका ! अत: जिस तरह राजा अपनी प्रजा से कर वसूल करता है, अुसी तरह अुसने भी आसपास के दंडितों से बचा हुआ चना-चुरमुरा साफ साफ मांग लिया; दो अेक ने आना कानी की तो अुन्हें किसी दूसरे निमित्त से झगड़ा खड़ा कर गालियाँ दीं तथा डाँट बता कर अुनका खाद्य ले लिया । चने-चुरमुरे का वह सारा ढेर अुदरस्थ करके रफिअुद्दीन अब पींजरे की सलाखों के नजदीक किसी के आने की राह देखते हुअे थोड़ी देर खड़ा रहता तथा थोडी देर बैठ जाता । अुस से कोअी बंदीपाल कुछ पूछता तो कहता—

" थोड़ा ठहरिये, पीछे बोलेंगे ! " ·

त्यों ही अुसका प्रतीक्षित अवसर अुसे प्राप्त होगया। रात के नौ बजते ही पींजरे पर का पहरा बदला । अुस 'चलान' को काले पानी तक ले जाने के लिये काले पानी के भी कुछ सिपाही कलकत्ते तक भेजे जाते हैं । अुनमें से दो का यह दूसरा पहरा था। वे काले पानी के पोलिस रफिअुद्दीनके अच्छे परिचय के निकले। वह अुन्हीं के पहरे की बाट जोह रहा था । अुनके आते ही सलाखों से हाथ थोड़ा बाहर निकाल कर अुसने अुन पहरेवालों के साथ परिचय का हस्तांदोलन किया । पर पहरेवालों के हाथों में कुछ न कुछ हलदी कहिये या मिश्री कहिये–अर्थात् सोने की मुद्रा किंवा चांदी की मुद्रा पड़ी अवश्य ! पहरेवाला तत्काल दूसरी छोर तक फेरी मारता हुआ गया । फिर थोड़ा सा निःशब्द वातावरण होते ही रफिअुद्दीन के कोने की सलाखों में से बीड़ियों का पुड़ा और दिया सलाअी टप् से गिरी । अुस पींजरे की रियासत में अुसका प्रभाव अेक सर्वाधिकारी की तरह अुस समय से अच्छा पड़ गया । अुस सर्वाधिकार का अुपयोग भी किन्हीं प्रकरणों में वह अच्छी तरह करने लगा ।

जैसे पेंढारी लोगों के कुछ नेताओं की आगे चल कर रियासतें कायम हो गअीं; अुसी तरह कुछ साहसी डाकू जब कभी राज्यों की स्थापना करके राजा बन जाते हैं, तब राजा बनते ही राजाओं की भाँति आचरण भी करने लगे जाते हैं ! अपने आप अन्याय कितना भी क्यों न किया हो, पर अितरों के न्यायान्याय का निर्णय बहुत ही अच्छी तरह करते हैं । अपने आप कितना भी क्यों न लूटा हो पर दूसरों को आपस में लूटने नहीं देते हैं । स्वयं कितने भी अुपद्रव क्यों न मचाये हों,पर वे अन्य प्रसंगों में दूसरों के आपस के अुपद्रवों को कम करने के लिये दयालु वृत्तिकी अुदारता भी दिखाते हैं ।

रफिअुद्दीन अेक क्रूर मनुष्य था । अुसकी क्रूरता को जागरित करने के लिये अुसके मनोयंत्र के बटन को जबतक कोअी दबाता नहीं था, तबतक वह भी पूर्ण मनुष्यता के साथ ही व्यवहार करता था । वह काले पानी के नामसे घबराये हुओं में से कितनों ही को ढाढस बँधाता था–" घबराव मत् ! दस हजार लोग वहाँ अच्छी तरह पच्चीस-तीस-चालीस बरस तक जीवित रहते हैं; कितने ही बीबी-बच्चोंवाले होकर अपना प्रपंच निर्माण करते हैं । खेती है, गायबैल हैं, घरदार है सबकुछ है वहाँ ! अरे ! मैं तेरी ही तरह पहले

घबराया था—पर वहाँ जाने पर खासे हजार रुपये गांठमें बाँधकर बैठा था ! घबराव् मत्, पट्ठे घबराव मत ! " कितनेही लोग दस्तों और अुलटियों से पीड़ित हो रहे थे। तब अुसने सिपाहियों से और समय पर डॉक्टर के साथ भी झगड़ कर, अुन्हीं को कैदियों के साथ व्यवहार करने के नियमों का अुल्लंघन करने के अपराध में बुरी तरह फटकार सुनाकर, कप्तान साहब को अित्तिला करने की धमकी देकर, अुन बीमारों को दवाअी देने लगाता था। अुसके लिये अभिलषित चने-चुरमुरों की मुट्ठी जो लोग अपने हिस्से में से दिया करते थे, अुन्हें वह अपने लिये अनावश्यक बीडियों के टुकड़े चुराचुराकर पीने के लिये भी दिया करता था। अपनेही चरित्र की कुछ खरी खोटी घटनाअें वह अुन्हें अिस अवाच्य पद्धति से कह कर सुनाता था, अैसे पद, भजन, गायन करता था कि, अुन कैदियों को अपनी बीमारी और दुर्गतियों का भी कुछ क्षणों के लिये विस्मरण हो जाता था—मन रमता था। अुनमें से प्रत्येक कैदी के सामने पीछे—अूपर नीचे पिशाच की तरह अेक ही प्रश्न अुस दुर्धर प्रसंग में खड़ा रहता था, " काला पानी कैसा होगा ? कैसी कैसी भयंकर यातनाअें वहाँ भोगनी पड़ेंगी, वहाँ से संभव हो तो छुटकारा पाने का क्या अुपाय किया जा सकता है ? " प्रत्येक मनुष्य को येसपुरी कैसी होगी, अिस बातकी जैसी असह्य जिज्ञासा रहती है, अुसी तरह 'महाराजा' के अूपर के आजन्म कैदी के सिर पर भी ' काला पानी कैसा होगा ? अिसी अेक प्रश्न का पागलपना सवार रहता है। जिससे जो मिले असले वही पूछने की अिच्छा प्रतीत होती है ! अैसी मनःस्थिति में प्रत्यक्ष काले पानी की सजा भोग कर आया हुआ वह रफिअुद्दीन अुन लोगों के लिये यमपुरी का भूगोल रेखांकित करनेवाला मूर्तिमान् गरुडपुराण ही प्रतीत हुआ ! किशन के मनमें भी अुससे वह जानकारी पता चलाने की और विशेषतः वह काले पानी पर से कैसे भागा यह रोमहर्षक कथा सुनने की तीव्र अुत्कंठा पैदा होती थी। पर भेद खुलजाने के डर से 'भीख न सही पर कुत्ते को रोक' की नीति का अवलंबन कर के किशन ने पहले अेक दो दिन तक तो रफिअुद्दीन की तरफ खुल्लमखुल्ला देखने के मौकों तक को टालने की कोशिश की।

पर रफिअुद्दिन थोड़अी चुप बैठनेवाला था ? अुसका पहला कार्यक्रम दृष्टिगत प्रत्येक विशेष कैदी के खटले की और चरित्र की मालूमात हासिल

करने का था। आजन्म काले पानी की सजा भुगतने के लिये जानेवाले प्रत्येक कैदी की कथा का अभिप्राय अेक अद्भुत अुपन्यास का कथानक ! असाधारण दुष्टता, सुष्ठुता, विक्षिप्तता, संकट, मुक्ति, रक्तपात, हत्या, अुपद्रव, बदला, सुखदुःख, दुर्दशा–अिन सब का अेक कोलाहल ! वह पींजरा क्या है–दुनिया के किसी भी ग्रंथालय में न मिलनेवाले, भावनाओं को अुभाड़ और अुखाड़ डालनेवाले अुपन्यासों की अेक अलमारी ! नहीं, खलनायकों का सजीव प्राणिसंग्रहालय ! पहले दर्जेका मुसाफिर किसी आगबोट पर जैसे रोमहर्षक अुपन्यासों की किताबें पढता हुआ कैबिन में तल्लीन होकर पड़ा रहता है, अुसी तरह रफिअुद्दीन अुस पींजरे में अुन दंडितों में से प्रत्येक का रोमहर्षक चरित्र बाँचने में रंग गया था। किशन चुपचाप था। समुद्र लगने की वजह से बिछौने पर चुपचाप सुस्तसा ढीला ढाला सा पड़ा हुआ था। तथापि रफि-अुद्दीन का दो तीन मर्तबा ध्यान अुसकी ओर गये बगैर न रहा। अपने खटले के अुस अल्लू 'किशन' से अिसका चेहरा बहुत अधिक मिलता है–अिस बातका अचंभा भी रफिअुद्दीन को अेक दो दफा हुआ। पर किशन सरीखा अेक 'मुर्दार अुल्लू' अेकदफा अुस जैसे भयंकर खटले में से निर्दोष छूटजाने के अनंतर पुनः अैसी झंझट में पड़ेगा अिसकी कल्पना तक असंभव प्रतीत होने के कारण, वह विचार मन में स्पर्श करजाने पर भी वहीं चिपक कर नहीं रह सका। तो भी, अुन सजीव रहस्यकथाओं को पढते-पढते अिस पुस्तक के बारे में भी अुत्सुकता पैदा होने के कारण रफिअुद्दीन ने दोतीन आदमियों से आखिरकार पूछ ही लिया––"यह प्राणी कौन है बाबा, न हिलता है, न हँसता है, न बोलता है न चालता है। बिलकुल सुस्त ! भुट्टा चोर दीखता है कोअी ! "

अुसपर अुससे अेक दो ने कहा–"अंहं, हमारे चलान में वह आज दस बारह रोज से है। 'बाबू' है वह ! अंग्रेजी, संसकीरत––न जाने क्या क्या सीखा है, सुनते हैं ! सजा मिलने पर जेल में लिखा पढी का ही काम दिया गया था अुसे ! अिन्सान भी क्या अिन्सान है जी, वह बाबू ! "

रफिअुद्दीन की अुत्सुकता बढी, "नाम क्या है अुसका ? "

"कंटकबाबू अुन्हें कहा करते थे साहब लोग भी ! "

"अुसका अपराध क्या था ? "

" हत्या ! खून ! "

यह मालूमात दोतीन मर्तबा सुनते ही रफिअुद्दीन को मानों वही मिल गया जिसकी अुसे मुराद थी। अुसे बड़ा आनंद हुआ। कंटकबाबू को साहब लोग भी मर्यादा की दृष्टि से देखते थे, जेल में अुसे कैदीक्लार्क का काम पहलेही से मिला हुआ था और अुसे सिर्फ हत्त्या के ही जुर्म में काले पानी की सजा हुअी है, यह सुनतेही कालेपानी के नियमों के पहले ही से जानकार रफिअुद्दीन के तत्काल ध्यान में आया कि, अिस कैदी को काले पानी पहुँचते ही आज नहीं तो कल अवश्य ही ' बाबू ' का महत्त्वपूर्ण काम मिलनेवाला है। मनुष्य हत्त्या का अपराध तात्कालिक आवेशमें घटित होना यह सब अपराधों में अेक सौम्य अपराध समझा जावे यह, रफिअुद्दीन सरीखे अुलटे कलेजे के सधे हुअे नृशंस पापी ही जिस काले पानी पर यत्र तत्र फैले हुअ हैं, अुस यमपुरी में सर्वथा न्यायानुकूल ही था। अतः वहाँ पहुचे हुअे दंडितों में से जो अैसे तात्कालिक आवेश में घटित हुअी हुअी हत्त्याके समान अपराध का कैदी होता है, अुसे सुधारणीय कैदियों के वर्ग में लिख लिया जाता है, और अुस के साथ बहुत ही सौम्य रीति से—काले पानी की क्रूरता की तुलना में जो सौम्य रीति संभव है, अुससे—व्यवहार किया जाता है। अुस पर भी अुस 'सुधारणीय' वर्गांतर्वर्ती कैदियों में से अगर किसी को लिखना पढना आता हो तो अुसे काले पानी में कैदी क्लार्क की जगह दी जाती है। अुसके हाथ में साहबके सान्निध्य की चाबी पड़ने के कारण अितर सधे हुअे डाकू वगैरे कैदियों के भवितव्य का बहुत कुछ दारोमदार अुस क्लार्क-कैदी के प्रतिवृत्तांत पर रहता है। किसी को वॉर्डर बनाना, वॉर्डरों को लाभ और सुविधा के काम बाँट देना—कारा-द्वार पर आगत निर्गत को नोट करना सिपाहियों की अुपस्थिति लेना, बड़े बड़े कारखानों के आय-व्यय का गणन रखना—अित्यादि काम अिस क्लार्क कैदी के हाथों में धीरे धीरे सुपुर्द किये जाते हैं, तस्मात् सधे हुअे कैदी-वार्डर प्रभृति दंडितों ही पर नहीं प्रत्युत, स्वतंत्र सिपाही और श्रमजीवियों पर भी अिस क्लार्क वर्ग की बड़ी भारी छाप पड़ी रहती है। अुन लोगों की सारी घूसखोरी के अंडों पिल्लों को बाहर ले आना किंवा गरमी देना अधिकांश अिन्हीं लोगों के हाथमें रहता है। अिन्ही कैदी क्लार्कों को ' बाबू ' कहते हैं, आजन्म दंडितों की परिभाषामें !

रफीअुद्दीन काले पानी पर से भाग कर जाने के घोर अपराध के लिये पुनः काले पानी की सजा होने के कारण वहाँ, अुसे पहले पहल तो कठोर स्थिति में मसक्कत करनी पड़ेगी यह भली प्रकार जानता था। अैसी स्थिति में अुसी चलान में अेक शख्स यदि अिस तरह बाबू होनेवाला हो तो अुससे घनिष्ठ परिचय अपने लिये बहुत ही अुपयोगी साबित होगा यह अुसके तभी लक्ष में आया और अत अेव अुस 'कंटकबाबू' को प्रसादित करने की अुसे अितनी अधिक लालसा अनुभूत हुअी। अुसने तत्काल कंटकबाबू के पास जाकर परिचिति प्राप्त कर ली। अुसका नाम कंटक, अपराध सादी हत्या का; तस्मात् अुसकी मुद्रा किशन से मिलती जुलती प्रतीत होने पर भी अितर बातों में किसी से भी मेल न होने के कारण रफिअुद्दीन बहुत कुछ संदेहशून्य वृत्तिसे कंटकबाबू के साथ घनिष्ठता स्थापित करने लगा। कंटकबाबू की भरसक मदद करके पुचकारने लगा। अुसकी परिचिति अेवं ऋणानुबंध के सिपाहियों का पहरा आया कि कंटकके ही पास आकर अुसने आखीर की दो रातों में अपनी गप्प-बाजीका अड्डा जमाया। कंटक को भी अुसकेपास से बहुतसी जानकारी प्राप्तव्य थी, अितना ही क्यों, अुसके साथ यदि जम सके तो काले पानी से भाग कर जाने का अेक आध रास्ता अुसे भी मिल नहीं जायगा किस पर से ? अैसी आखीर की साहसी आशा भी कंटक को मोहने लगी ! सँपेरा जैसे साँपसे तथैव कंटक भी रफिअुद्दीन से–अुसके विषैले दंश की परिसीमा से यथाशक्ति बाहर रहकर, जैसा खेल खेला जा सकता था, वैसा खेलने लगा। अुसकी अपने को कुछ भी जानकारी नहीं है, यह रफिअुद्दीन के मन पर पूर्ण रूप में बिंबित करने के अुद्देश्य से रात को गपशप लड़ाने के वक्त किशन बोला,

"पर मियांजी, आप के सदृश साहसी और चतुर आदमी काले पानी से भाग जाने सरीखे दुष्कर अेवं लुकाछिपीके साहस में अुधर सफलता प्राप्त करता है, और अिधर देश में सुरक्षित पहुँचने के अनंतर भारतीय पुलिसवालों के जाल में पुनः न फँसने की जो बिलकुल सादी चतुराअी अुसमें गलती खाकर अुनके फंदे में अितनी पक्की तरह से फिर फँस जाता है–यह हुआ तो कैसे ? चोरियाँ, डाकेजनी अित्यादि दुष्कृत्यों के पैरों पड़ कर अेकदफा भयंकर ठोकर खाने के बावजूद भी आप हिंदुस्तान में भाग कर आने के अनंतर पुनः अुस संकटमय अुपद्व्याप (झमेले) में न पड़ते तो अच्छा नहीं था क्या ? आपको

काले पानी से भाग आनेपर जिन प्राणांतिक संकटों को भोगना पड़ा होगा वह सब अिस गलती के कारण निष्फल होगया और पुनः दुर्दशा के चक्कर में पड़ने की नौबत आगअी अिस बात का मुझे अत्यंत खेद होता है, अतः पूछे बगैर रहा जाता नहीं ! "

" कंटकबाबू, क्या कहूं ! मैंने सचमुच बड़े प्रामाणिकपने से अपना जीवन चलाने का निश्चय किया था ! काले पानी पर से भागकर हिंदुस्तान पहुँचते ही मैंने फकीरी ले ली ! हिंदू साधूपर भी मेरी भक्ति बैठ गअी अतः मैं योग का अभ्यास करने लगा। कंटकबाबू, तुम सब लोग सच मानों या न मानों पर देवकी सौगंध लेकर कहता हूँ कि, पहले डाकेजनी, चोरियाँ, अुपद्रव आदि जो पाप मैंने किये-वे किये, पर काले पानी से आने के बाद मैंने यदि किसी बात का लोभ रक्खा तो वह भक्ति का, योग का। भोग के बारे में अब आस्था ही नहीं रह गअी। और सचमुच मुझपर अिसबार जो यह संकट आपड़ा है, वह मेरे किसी नवीन दुष्कृत्य के कारण नहीं; बल्कि धर्मन्याय से आचरण करने का निश्चय करने के पश्चात् जो अेक सत्कृत्य मेरे हाथ से करालेने की अिच्छा देव के मन में आअी अुस सत्कृत्य ही के कारण ! " वह गंभीर विचारों में गड़ा हुआसा चुप होगया।

वह सुनने वाले अनेक कैदियों के मुँह से अेक ही साथ प्रश्न बाहर निकला, " अैसा ? बोलो ना मियाजी, कहां क्या बात हुअी ? वह कौनसा सत्कृत्य ? "

अपना पूर्ववृत्तांत जाननेवाला यहाँ अेक भी कैदी नहीं है, अैसी अच्छी तरह निश्चिति हो जाने के बाद रफिअुद्दिन किसी धर्मवीर के आविर्भाव में कहने लगा, " क्या कहूं बाबूजी ? अच्छा, आपने ग्वालियार का नगर देखा है ? "

कंटकबाबू बोले—" नहीं ! "

तस्मात्, अब ग्वालियर के बारे में जो मुँह में आये सो हांक देने में कोअी आपत्ति नहीं है, यह जानकर रफिअुद्दीन आगे हिंदी में कहने लगा, " ग्वालियर के अेक बड़े सरदार की अेक अत्यंत सुस्वरूप लड़की थी। अुसका नाम था, मालती। वह जितनी गोरी-सौंदर्य से निर्मल, अुतनी ही श्रद्धालू देवभक्त थी। मैं योग का अभ्यास करने के लिये हिंदू साधू के पास भगवा पहन कर देवालय

में बैठा रहा करता था । वहीं वह पूजा के लिये आया करती थी । मुझे देखते देखते अुसकी मेरे साधुत्व पर कहिये या रूपपर कहिये, बहुत अधिक भक्ति जड़ गअी । वह फूल भी मुझपर चढाती थी, नैवेद्य भी मुझे दिखाती थी । भजन के लिये रात होने तक बैठी रहती थी। अेकबार अुसे अिसी तरह रात होगअी । तब 'अकेली घर जाने में डर लगता है, आप घर तक मुझे पहुँचा आअिये । ' अेसा अुसने आग्रह किया । अपने गुरुजी की आज्ञा ले, निःसंकोच होकर मैं भी अुसे पहुँचाने के लिये चला। देवालय गांव के पास से दूर था, बीचमें अेक आमराअी थी, जनशून्य! वहां आतेही अेकदम घबराये की तरह करके मालती मेरे शरीर से लिपट गअी ! स्त्री स्पर्श मेरे लिये तो वर्ज्य ! पर क्या करता ? वह गले से लिपट ही गअी ! कांपती हुअी वह बोली, 'मेरे अूपर अेक मनुष्य पापी दृष्टि रखकर आज कितने ही दिनों से मुझे सता रहा है । मैं आप को देव के सदृश समझकर भजती हूं, तुम्हारे पास आती जाती हूं, यह सहन न होने के कारण कल अुसने मुझे यहीं पर रोका था, और जान से मार डालने की धमकी दी थी, अिसी लिये मैंने आज तुम्हें अपने साथ ले लिया है ! मुझे अभी अभी अुसकी आहट सी लगी हुअी मालूम देती है ! ' मैंने पूछा, 'वह कोन है ? अुसका नाम क्या है ? ' वह बोली, 'किशन ! अुस नीच का नाम है किशन ! '

"वह नाम सुनते ही मेरे शरीरपर कांटा खड़ा होगया ! क्यों कि अुस शख्स को मैं अच्छी तरह पहचानता था । पहली बार काले पानी जाने से पूर्व हम लोग जो डाके डाला करते थे, अुस समय की हमारी टोली में ही यह अुलटे कलेजे का डाकू, किशन भी शामिल था । भाग कर आने के पश्चात् वह मुझे ग्वालियर ही में गुप्त रूप से आकर मिला था, और फिरसे अुस के अुस पापी दुष्कृत्य में हिस्सा रखने के लिये अुसने मुझसे कहा था । पर मैंने अुससे कहा, 'मेरे हाथ ही नहीं बल्कि मेरा मन भी सब प्रकार के पापों से शून्य हो गया है, अुसे मैंने देवता के चरणों में अर्पित कर दिया है। तू भी अब वैसा ही कर ! मेरा यह अुपदेश सुनकर वह शांत होने के बजाय और भी अधिक खौल अुठा' मेरी तीव्र निर्भर्त्सना करके मुझसे बदला लेने की धमकी देने लगा । अिन सब बातों से मैं किशन को अच्छी तरह पहचानता था । किशन अेक अधम था, किशन अेक निर्दय गुंडा था । किशन भयंकर दुराचारी था, कृतिसे दुष्ट

होते हुअे भी बुद्धि से वह बिलकुल गद्धा था। कंटक बाबूजी ! आप जो क्षमा करेंगे तो केवल हंसी की अेक बात बतलावूंगा, बताअूं ? हँसी आती है। मुझे अुस बात की ! पर मैं अिस पींजरे में बंद किये जाने के बाद पहले पहल जब आप को देखता भया, तब अुस किशन की मुखाकृति जैसी ही मुझे आपकी मुखाकृति भी नजर आती थी ! "

रफिअुद्दीन हंसने लगा, कैदी भी हंसे, तत्काल किशन की छाती में धस्स् सा हुआ ! यह बदमाश अिस तरह ताने कसकर निर्भर्त्सना कर रहा है, मैं ही किशन हूं यह पता चलाने का अिसका हेतु तो नहीं न है ? अैसी शंका भी 'कंटक' को आअी और वही यदि अुसका हेतु हो तो अुसे निष्फल करने के लिये रफिअुद्दीनद्वारा किशन को दी गअी गालियों की गुप्त चिढ, मालती के नाम का अुसके मुँहसे होनेवाला अुद्धार सुन कर प्रतीत होनेवाला सोपहास तिरस्कार और वह शंका अिन सब विचारों की खलबली अंदर ही अंदर दबाकर कंटक रफिअुद्दीन की और कैदियों की हँसीमें अपनी भी हँसी मिलाता हुआ बोला, "ठीक, मिय्याजी, ठीक ! वह किशन अेक पक्का गदहा था अैसा कहते हो और मेरा चेहरा अुस जैसा ही नजर आया, अैसा कहते हो, तो मेरा चेहरा गदहे जैसा है, अैसा है क्या तुम्हारा कहना ? "

हंसते-हंसते पर हाथ जोड कर रफिअुद्दीन क्षमा मांगने लगा, " यह क्या बाबूजी, किशन की अक्ल गदहे जैसी थी; पर चेहरा अच्छा ही था, यह मैं आपके चेहरे से तुलना करके सूचित करनेवाला था ! कहां सदाचारी कंटक बाबू और कहाँ वह गुंडा दुराचारी किशन ! ! "

" अच्छा ! आगे क्या हुवा ? " कहानी में मग्न हुआ हुआ अेक कैदी जल्दबाजी करने लगा !

" आगे क्या कहूं भाअी, मैं मालती को धीरज दे ही रहा था कि अेक झाड़ी में से पत्थर पर पत्थर आने लगे। अुस अबला का रक्षण ही अपना धर्म समझ कर मैं अेक हाथसे अुसे अपने साथ लिपटा कर दूसरे हाथ से अुलटे पत्थर फेंकने लगा -और यथाशीघ्र गांव में जा पहुँचा। अुसका मकान आतेही वह भावाविष्ट होकर बोलने लगी, मेरे कमरे की तालियों का गुच्छा मेरपास है, और मेरा कमरा स्वतंत्र रूप से मेरेही अधिकार में है, आप जरा अूपर चलें और जबतक मेरे हृदयकी भीति युक्त धडधड दूर न हो तब तक

मेरे ही साथ रहें ! और पीछे से जाअियेगा ! मेरे लिये अुसके कथन का अिनकार करना अेक अबला के साथ कठोर व्यवहार करने का पाप ही था ! मैं अुसके साथ अूपर अुसके कमरे में गया । अंदर पैर रखा ही था कि अुसने दरवाजे को अंदर से बंद करके ताला लगा दिया ! देखता हूं तो जिधर-तिधर साजसजावट, सरदारी सौंदर्य, सुगंध ही सुगंध, आअीने, चित्र, पलंग, पुष्पपात्र केवल अिंद्रभुवन ! और मध्य में वह गोरीपान मालती—रूपकी केवल अप्सरा ! मेरे गले में अुसने पुन: मजबूत गलबही डाल दी ! कामोन्मत्त पुरुषोंने स्त्रियों पर बलात्कार किया है, यह तुमने बहुतबार सुना होगा; पर अुस काम-लंपट स्त्रीने, मालतीने, मेरे जैसे अेक साधु पुरुष पर बलात्कार किया। अैसी कहानी कभी सुनी है क्या ? "

"वो सब् जाना देव परंतु—" अेक लुच्चा कैदी छद्मीपने से हंसा "सच बोलो मिय्याजी, वह बलात्कार क्यों न हो, पर तुम्हें वह चाहिये-चाहियेसा प्रतीत हुआ कि नहीं ? अुसके अुस गोरेपान मृदु-मृदु देहकी मजबूत पकड बैठतेही तुम्हें क्या मालती पर गुस्सा आया ? शपथ देवकी ! सच बोलो !"

जोर से हँसते हुअे मानों जो चाहता था वही प्रश्न हुआ, अैसा प्रतीत होकर रफिअुद्दीन मटक मटक कर कहने लगा—'मित्र, शपथ देवकी ! मालती पर गुस्सा अुस स्थितिमें, वहाँ यदि शुकदेव रहता तो भी न आता। मालती ! हाय ! मेरी गोरीपान मअूमअू (मृदुमृदु) मालती ! अुसपर गुस्सा ? अरे मित्र, वह मेरी जान है जान ! —"

सारे कैदी कहकहा मार कर हँस पड़े ।

भरी सभा में, अभिनयमंचपर किसी काले कलूटे नटके मुँहपर मली गअी रंग की पुड़िया बीच में ही कहीं पुँछजाय तो काला रंग अुतनेही स्थानपर तारकोल के चट्टे की तरह जैसे दीखने लग जाता है, अुसी तरह अुस ढोंगी मनुष्य के मन का असली कालापन अुस साधुत्वकी पुड़िया के अुस तरह पट्से पुँछ जातेही बाहर आगया । पर नट जैसे लोगों के हँसते ही सावधान होकर अुस काले चट्टे को रुमाल से ढाँपकर पहले का अभिनय आगे जैसे तैसे पूरा कर डालता है, अुसी प्रकार के गड़बड़झाले में रफिअुद्दीन ने अपने को सँभाल लिया ।

"पर मुझे हां या ना कहने का अुसने समय ही दिया नहीं। कहीं का जाने कैसा अेक मोहन विद्या का रुमाल अुसने मेरी नाक के नजदीक मजबूती से पकड़ के रखा। अुस श्वास से मैं अूंघ सा गया। और निश्चेष्ट हो कर पलंग पर पड़ रहा। आधा बेहोश, प्रतिकार के लिये पूरी तरहसे अक्षम! फेर क्या, पूछते हो यार। बस्स्! मोहनास्त्रसे हिलना डुलना बंद कर दिये गये संज्ञाशून्य हुअे मेरे साथ वह प्यारी मालती मनसोक्त आनंद लूटती रही! अगले दिन सबेरे सूँघने के लिये दिये हुअे अुसके मूर्च्छा चूर्ण की बहोशी दूर होकर मैं पूर्ण चेतन अवस्था मे आगया और कहने लगा–"अै जादुगरनी, अब तो मुझे छोड़दे! सबेरे तेरे लोग मुझे पकड लेंगे! वह बोली, 'हेऽऽ, प्रियकर! यह क्या बोलता है! कामरूप देश के अेक मांत्रिकने मुझे अेक विद्या सिखाअी है। मैं तुझे तोता बना कर अिस सोने के पींजरे में दिनभर रखती जाअूंगी; रातको पुनः तुझे तेरा रूप देकर तेरे साथ अिसी तरह रममाण होती रहूंगी।' यह अुसका कथन सुनकर मैं भीति से थरथर काँपने लगा! पुराने कथानकों में अीदृश कामरूपवासी मांत्रिकों की विद्या सीखकर मनुष्यों को पंछी बनाकर रखनेवाली जादूगर राजकुमारियों की मैंने जो अजब कहानियाँ पढी थीं, वे मुझे स्मरण हो आअी!"

बीचमेंही अेक छद्मी कैदी हँसा, "अुन अजब कहानियों में से ही यह भी अेक कहानी नाम बदल कर तो कह नहीं रहे न मियाँजी आप?"

"देव की शपथ! मेरे रूपपर मुग्ध होकर मालती सचमुच अैसा ही बोली थी भाअी! और क्या कहूँ! तुझे तोता बनाती हूँ अैसा कहने भरकी देर थी कि, तत्काल मेरे वदन की चोंच हाथों के पंख और देह का आकुंचन होकर मै तोता हो रहा हूँ अैसा मुझे स्पष्ट दिखाअी देने लगा! 'नहीं नहीं, तेरे पैर पड़ता हूँ। प्यारे मालती, छोड़ दे छोड़ दे मुझे!' अैसा मैं गिड़गिड़ाने के लिये जा ही रहा था कि मेरी मनुष्य की वाचा अुस मेरे नये मुँहमें से–अुस तोते की चोंच में से बहिर्गत न हो सकी और मैं सिर्फ तोते की तरह चक् चक् चक् करता रहा!" रफिअुद्दीन अपने शरीरपर अुस बातकी स्मृतिसे काँटा आया हो अैसा दिखाकर रुक गया!

अलौकिक किंवा अजब कहानियाँ सुनानेवाला भी भोलेपन से सुननेवालों को अुतने भरके लिये ही क्यों न हो, अेक अजब आदमी मालूम पड़ने लगता है ! अुन कैदियों में बहुतसे लोग अज्ञ-अनक्षर, आश्चर्यप्रिय और अपक्व प्रज्ञ भोंदू होने के कारण वे भी अुस कहानी में पूरी तरह बेसुध होकर रफिअुद्दीन के मुँह की ओर टक लगाकर देखते रहे। अुस राजकुमारी जादुगरनी ने अुसे तोता बना डाला, अिस कल्पना से ही अुन के भी शरीरपर, रफिअुद्दीन के शरीर के थरथर करते ही, कांटा खड़ा होगया। दूसरे के जमुहाअी लेने पर कभी अपने को भी अिसी तरह जमुहाअी आने लगती है ! अुस कहानी में तन्मय हुअे वे कैदी आग्रह करने लगे, " अच्छा, आगे क्या हुवा ? बोलो ना फेर क्या हुवा ! "

" फेर हुवा जन्मभरका काला पानी ! और क्या ! " कंटकबाबू थोड़ासा चिढकर बोले। तबसे लेकर अबतक मालती की विडंबना से अुत्पन्न हुआ हुआ अुसका दबा हुआ क्रोध थोड़ा अुबल ही आया ! पर अुतने अवकाश में जिस अेक पुस्तक की लंबी चौड़ी कथा को अपने अूपर लादकर रफिअुद्दीन वह कहानी सुना रहाथा, अुसका अुसे स्मरण न होनेवाला आखीर का कथा-भाग भी थोड़ासा स्मरण हो आया और वह आगे कहने लगा,

" फेर क्या पूछते हो भाअी ! मुझे वह तोता बनाकर पींजरे में बंद करने लग गअी ! परंतु मेरे सुदैवसे मुझे अपने अेक अैंद्रजालिक गुरूकी अचानक याद हो आअी ! अिसी गुरुने मझे समुद्रपर चलते जाने की वह विद्या सिखाअी थी जिसके बलपर मैं काले पानी परसे अदृश्य होकर देश की ओर वापिस लौटा था। अुस गुरुने मुझे कह रक्खा था कि किसीने अगर तुझपर अुलटा जादू का प्रयोग कर दिया तो मेरा तीन बार नाम ले ! बस ! मैंने गुरु का नाम तीन बार लिया। लेते ही मैं फट् से तोते का आदमी बन गया ! वह मायाविनी सुंदरी चौंककर देख ही रही थी कि, अुतने में मैं दरवाजे तक दौड़कर जा चुका था ! पर क्या ! दरवाजे पर ताला लगा हुआ है ! झटपट मैं खिड़की के निकट आया और अपनी जान लेकर खिड़की में से नीचे जो कूद मारी सो सीधे नीचे के राजमार्ग के फर्श पर ही।

९

" परंतु हाय हाय ! जोहड़ से निकला सो कूओं में जा गिरा ! क्यों कि राजमार्ग पर गिर कर अुठा और ज्यों ही अपनेको सँभाल कर दौड़ने की सोच ही रहा था कि अुतने में मुझे कमर से मजबूती के साथ पकड़ कर कोअी जोर जोर से चिल्लाकर शोर मचाने लगा ! वह किशन था ! वह नीच किशन ! वह गुंडा किशन ! मेरे अूपर आँख रखकर, गुप्त रूपसे पीछा करते हुअे अुस आमराअी से आकर यहाँ छिपा हुआ था । मैंने गुस्से के मारे बेहोश सा होकर हाथ में का धारबंद चिमटा अुसके पेटमें घुसेड़ दिया । वह पापी वहीं का वहीं ढेर होगया ! पर अितने में आदमियों के झुंडके झुंड अुस चीखने चिल्लाने के कारण आन की आनमें वहाँ जमा होगये और मुझे पुलिसके हाथ में देदिया ! और अंतमें मालती का नाम लांछित करने की अपेक्षा मैंने स्वयमेव हत्याका दायित्व अपने अूपर ले लिया; तत्फलरूप. पुनः मुझे अिस काले पानी की सजा होगअी ! अेक अबला के रक्षण के लिये मैं अिस जंजालमें आफँसा ! धरम के लिये मैंने यह बलिदान किया ! ! "

" और वह राजकुमारी ? अुस मालती का आगे क्या हुआ ? " अेक कैदी दुःखोच्छ्वास निकाल कर पूछने लगा ।

" क्या—पुछते हो, भाअी ! वह प्यारी मालती ! मेरे विछोह से पगली—होगअी ! हाथ में अेक माला, अुसके साथ ' हाय रफिअुद्दीन, हाय रफिअुद्दीन ! ' अैसा जप करते हुअे मथुरा के रास्तों पर जो मिले अुसी के सामने यह सुरीला पद गाती हुअी पूछती भटक रही है—' बतादे सखी कौन गली गये—श्याम ! "

रफिअुद्दीन वह पद गाकर दिखाने की तय्यारी ही में था ! पर अपने अुपमर्द की अुस कथा का पल्लव-प्रसव (शुष्क-विस्तार) कंटक को सर्वथा असह्य होगया था; अतः अुस विषय को पूर्णतया बदल डालने का अुचित अवसर पाकर कंटकने कहा—

" पर मिय्याजी, मंत्रविद्या से समुद्रपर पैरां-पैरों चलने की अलौकिक शक्ति यदि आप में है तो आप अभी छलांग मार कर वापस देश को क्यों नहीं चले जाते ? "

" कितने भोले हो कंटकबाबूजी आप ! पुलिसवालों के समक्ष छलांग मारने से भूमिपर पैर रखने पर वे फिर पकड़ लेंगे ! और दूसरा

बात अैसी हैकि वह विद्या स्त्री–स्पर्श होतेही अनुपयोगी हो जाती है ! मालती के स्पर्श से पूर्व स्त्री–स्पर्श मैंने कभी नहीं किया था! अब कम–अज–कम तीन बरसतक अखंड ब्रह्मचर्य पालन किये बगैर देह अुतना हलका नहीं हो सकता कि वह पानी पर असंस्पृष्ट रूप में पैर सके ! वीर्य संचय हो जानेसे अुसका तेजोमय ओज मस्तक में से होकर अूपर जाने का प्रयत्न करता है । तन्मूलतः देह आप ही आप अूपर अुठने लगे जाता है । अिसी को योग विद्या में लघिमासिद्धि कहते हैं । अुसे साधते ही जलस्तंभन मंत्र फलीभूत होता है । तब काले पानी का समुद्र बंगले में बिछाअी गअी सतरंजी (दरी) के समान हो जाता है ! अुसपर सिर्फ मन में आते ही चलने लगें ! ! ”

“ पर मिय्याजी, अिस आजन्म कैद की जगह को भी काला पानी क्यों कहते हैं ? ” अेक कैदी ने प्रश्न किया ।

“ गंवार लोग कहते हैं वैसा ! अुसका असली नाम काला पानी न होकर अंडेमान है अंडेमान ! ”

“ पर अुसका अंडेमान नाम भी काहे को पड़ा ? वहाँ मुर्गी के अंडों की पैदावार कसरत से होती है या कुछ और बात है ? ” कैदियों ने जिज्ञासा की !

अुन के अज्ञान पर दया आये जैसा हँसता हुआ किसी अैतिहासिक तत्त्वान्वेषक की अदा के साथ रफिअुद्दीन कहने लगा—“ अंडेमान नाम कैसे पड़ गया वह बड़े बड़े अंग्रेजों तक को मालूम नहीं पड़ता ! हिंदू लोगों में से कुछ गंवार लोग कहते हैं कि, हनुमानजीने अपने नाम की यादगार के तौर पर अुस टापू को ‘ हनुमान ’ कहा जाय अैसा लंका से वापिस रवाना होते समय सीताजी से विनति की थी ! पर वह झूंठ है । सच बात तो मेरे गुरुने कही वो ही है ! सुनो ! सृष्टि से पहले जब जिधर-तिधर पानी ही पानी था, तब मक्का शरीफ में अेक अीश्वर का प्यारा अवलिया रहता था ! अीश्वरने अुससे कहा, ‘ अेक नौका ले और पूरब की तरफ रवाना हो ! सर्वथा, सूर्य अुगता है वहाँ तक ! जहाँ तुझे चाहिये वहाँ, तेरे अभीष्ट आकार की भूमि अुसी आकार का पदार्थ तेरे समुद्र में डालते ही निर्माण हो जायगी ! मनुष्यों के वास्ते अब समुद्र में से अधिक स्थल मैं निर्माण करना चाहता हूँ ! ’ अीश्वर की आज्ञा होते ही अवलिया अुसी हालत में नौका में बैठ समुद्रमें रवाना हुआ ।

मक्का छोड़कर कितनेही महीने गुजर गये तोभी मनपसंद जगह का निर्माण कहाँ किया जाय, यह अुसके ध्यान में नहीं आ रहा था! अितने में आकाशवाणी हुअी, 'तू जहाँ नांव खे रहा है, वहीं स्थल निर्माण कर!' तत्क्षण अवलियाने अपनी बेलबूटों से सजी हुअी दरी समुद्रपर बिछा दी!—और कौन अचरज! अुस सतरंजी (दरी) के साथ ही साथ नानाविध लता-पुष्प-पर्णों से मंडित अेक विस्तीर्ण, अूर्वर, समतल भूमि होगअी! वही यह हिंद!—यह हिंदुस्तान!! अुस पर अेक मेमने की अीश्वर के नाम से बलि चढा कर अवलिया वहाँ से नाव खेता हुआ लंका का फेरा मार कर आगे चला! अितने में अेक जोर का तूफान बरपा हुआ। अुसकी नाव अुलट गअी। सारी चीजें डूबने-डाबने लगीं! अवलिया भी पानी में नीचे अूपर डूबने अुतराने लगा! वह डूब ही गया होता! पर कुरान शरीफ अुसके हाथ में था, अुसको बादल (तूफान) का बाप भी न डुबा सकेगा! अुस कुरान शरीफ को अूँचा करतेही वह तर गया, अुसने नाव को फिर सुलटी कर दी—त्यों ही आकाशवाणी हुअी, 'अिस समुद्र में अैसे तूफान हमेशा बरपा होते रहते हैं। तब, अत्रत्य समुद्र के जलप्रवास को सुरक्षितता प्राप्त हो, अिसके लिये तू यहाँ अेक स्थल का निर्माण कर!' यह आकाशवाणी सुनते ही वहाँ कोअी वस्तु फेंकी जाय यह अवलिया देखने लगा तो क्या, अुसके पास कोअी भी वस्तु नहीं! अेक हाथ में कुरान शरीफ और दूसरे हाथ में खाने के लिय अत्यंत यत्नपूर्वक पकड़ा हुआ मुर्गी का अंडा बस यही था! तब अवलिया ने समुद्रपर वह अंडा फेंक दिया और कहा, 'हो जाव भूमि!' बस्स्, तुरत ही अंडे से बेट (टापू) बना! अिस लिये अुसका नाम पड़ा 'अंडेमान! अंडे का बेट!'"

"या खुदा! क्या तेरी करामत!" अेक मुसलमान फकीर दंडितों में था वह धर्माभिमान से परिस्फुरित हो अपने सव्यापसव्यवर्ती सब हिंदू बंदियों को हीन ठहराते हुअे बोला—"देखो, हमारे अिस्लाम धर्मकी बड़जावी! कैसे कैसे अवलिया! कुराण शरीफमें अिमान रखने से आदमी कैसे करामती बनते हैं! क्यों कंटकबाबू, अिस किस्से को सच मानते हैं या नहीं?"

सारे हिंदू कैदी कंटक बाबूके मुँह की तरफ, 'अिस फकीरने अपने हिंदू धर्म के अंदर जो न्यूनता प्रदर्शित की है, अुसका व्याज सहित मूलधन चुकाकर

रहिये ' अिस लालसा से भरी निगाहों से देखा--कंटक बाबू हँसा। "यदि मिय्याजी द्वारा कथित यह अवलिया की अजब कथा सही है तो हमारे पुराणों में की अगस्ति ऋषि की कथा भी सही होनी ही चाहिये ! और अिस अवलिया भर के लिये देखना हो तो हिंदू अवलिया अगस्ति ही अिस मुस्लिम अवलिया से अधिक करामाती था यह स्पष्ट है या नहीं यह तुम्हीं बताओ–क्योंकि जिस समुद्रका पानी नाक मुंहमें भरकर यह मुस्लिम अवलिया डुबकियाँ खा रहा था, वह समुद्रही मूलत: अुस अगस्ति ऋषिकी थी--केवल लघुशंका ! ! "

सारे हिंदू कैदी विजयानंद में कहकहे मारकर हँसे ! हर कोअी कहने लगा–" अच्छी पिघलादी।"

पर अिस आकस्मिक गुलगपाडे से क्रुद्ध हो पींजरे का पहरेदार चिल्लाया, "अे बदमाश लोग! तुम्हें चुपचाप बोलने की सहूलियत दी,अुसका यह परिणाम करते हो क्या ? काले पानी के पींजरे में हो, या अपने बाप के बंगले में ? अुठो, जाओ, अपने अपने बिछौने पर जाकर सो जाओ ! जाव जाव ! "

सारे लोग अुस सख्त हुक्म के छूटते ही पटापट अपने अपने बिछौने पर जा कर पड गये ! तो भी पहरेदारने रफिअुद्दीन की आधी हलदी से पीला हुआ हुआ होने की वजह से रफिअुद्दीनकी तरफ हुक्मका रुख प्रत्यक्षतया नहीं दिखलाया था । तस्मात्, रफिअुद्दीन अुसी हालत में अकेला कंटकबाबूके बिछौने के पास धरना दिये बैठा रहा। थोडी देर वह चुप रहा। वातावरण शांत हुआ देखकर, अेकांत साधकर, कंटकबाबू के बिलकुल कानों में बोलने लगा–

" कंटकबाबू, आज की यह अिस पींजरे में अितने अधिक मुक्त रूप से बोलने की आखीर की रात है ! कल यह आगबोट काले पानी पर लग जायगी। हम सब लोग अुस भयंकर जेल की कोठरियों में से तनहाअियों के भीतर बंद कर दिये जायेंगे ! मुझे पहले पहल अत्यंत सख्त पहरे में रखा जायगा; अत्यंत कठिन दु:साध्य मसक्कत करने को दी जायगी ! जुल्म किया जायगा। पर तुम शीघ्र ही 'बाबू' हो जाओगे। तुम्हारे संबंध ऑफिस के क्लार्क वगैरह से आयेंगे तब हम जैसे सख्त पहरे के कैदियोंपर अुपकार करने के हजारों मौके आयेंगे। यदि तुम मुझे अिस पहले बरस में, जब भी तुम्हें मौका हाथ आयगा तब, जरा सहूलियतें दिला सको तो बाबूजी, मैं भी तुम्हारी कल्पना से बाहर

तुम्हारे लिये अुपयोगी सिद्ध होअूंगा ! यह देखिये, पहला अेक बरस ही मेरे वास्ते मुश्किलात से भरा है। वह गुजर गया कि मुझे वहाँ रीति के अनुसार और मेरे परिचय पैसा-वसीले की वजह से जेलसे बाहर छोड देंगे। शीघ्र ही मैं कैदियों का जमादार बनाया जाअूंगा यह आप लिख लीजिये ! और तब पहले अुपकारों का बदला मैं सौगुना अधिक अुपयोगी साबित होकर चुकाअूंगा। और--और कहूं क्या ? यदि तुम्हे मेरे शब्दों पर यकीन होता हो और मुझसे भाअीचारे का नाता मनःपूर्वक कायम करना चाहो तो-तो जब फिर अेक दफा काले पानी के अधिकारियों की आँखों में धूल झोंककर अुस पींजरे में से अेक पक्षी बाहर निकलेगा तब बाबूजी, तुम्हें भी तुम्हारी यह आजन्म कैदकी असह्य बेडी तुम्हारे पैरों में से अचानक टूटकर गिर गअी है, अैसा दिखाअी देगा-अर्थात् वह टूट जाय अैसी तुम्हारी मनीषा हो तो ! "

" मनीषा ? मिय्याजी, मेरा तो संकल्प है-केवल अिच्छा ही नहीं ! पर मार्ग क्या है ? साधन क्या है ? तुम्हारा यह कहना अितमीनान-बख्श है, यह मैं कैसे समझूं ? तुम काले पानी से पहले कैसे भाग कर आये थे अिस की सही सही माहियत यदि तुम तसल्ली-बख्श स्वरूपमें मुझे कह सुनाओ तो मैं तुम-पर विश्वास कर सकता हूं ! "

" अच्छा कंटकबाबू, तुमको वह सब बात मैं संधि मिलते ही सच सच कहूंगा। देखो, भाअी भाअी का नाता जितना आपने घरमें प्यारा लगता है अुतना ही जो नाता तो काले पानी में प्यारा समजा जाता है, वह 'चलानी' यह है ! अेकही चलान में जो आते हैं वे सारे दंडित अेक दूसरे के 'चलानी' अिस नाते से बंधु-बंधु हो जाते हैं। यह अेक नवीन गोत्र ही बन जाता है वहाँ ! अपना भी वही नाता जुड़गया है। तुम मेरे चलानी हो,-मेरे भाअी हो ! कंटकबाबू, तुम मुझपर यकीन करो या न करो, पर मैंने तुम्हें अपना वचन दे दिया। तुम मेरे भाअी हो-चलानी हो ! मैं तुम्हारे प्राणों के लिये प्राण दे दूंगा ! करूंगा तो तुम्हारा भला करूंगा। विश्वासघात तो कभी भी नहीं करूंगा !

डाकू तो हम हैं यह सही है पर हमारे में अेक खासियत है, वह यह कि, हम जितने दुष्ट हो सकते हैं, मन में आया तो अुतने ही सुष्ठ भी हो सकते हैं। तुम मेरे साथ निष्कपट बंधुत्व का नाता जोड़ कर तो देखो !

अुपकार किया तो, अस्मादृश हिंस्र पशु भी कभी कभी अुपकारकर्ता को बिसारते नहीं, अुपद्रवते नहीं, प्रत्युपकारे बिना नहीं रहते ! –जैसे अुस अँड्रोक्लीज को वह सिंह ! "

" रफिअुद्दीन " पहरेदार जल्दी जल्दी में चिल्लाया, ' अूठ जावो ! पहरा बदलने के लिये जमादार आता है ! जा अपनी जगह ! हमारे पहरे की बारी समाप्त हुअी ! "

रफिअुद्दीन तत्काल अुठा । " कैदियों को आपस में बातचीत की सख्त मुमानियत है ! अपने परिचय का पहरेदार होने के कारण यह जम सका ! अब कल सवेरे काले पानी को यह अगिननाव लगेगी ! अब यही सलाम ! –भुलना नहीं जो कुछ बात अभी हुअी अुस को ! आज से कंटक, तुम मेरे भाअी हो ! आप चाहे मुझे कुछ भी समजो ! "

अितना कंटक से गड़बड़ी में बोल कर रफिअुद्दीन अपनी जगह वापिस लौट गया ।

सबेरे ही जिधर तिधर गड़बड़ अुडी " आया ! कालापानी आया ! "

अुसके साथ ही कठोर, क्रूर, अुलटे कलेजे के आजन्म दंडितों के हृदय में भी धस्स होगया ! धडकी घुस गअी ! " आया ! काला पानी आया ! ! "

अुन दंडितों के हृदयों की भांति ही, मानों अुसके भी हृदय को धक्के बैठ रहे हों, अुस प्रकार की वह किमाकार अगिनबोट भी धक्केपर धक्के खाती हुअी धड़धड़, धड़पड़ करती बंदर गाहमें प्रविष्ट हुअी और अुसका बंबा भोंकार फैला कर भोंऽ ऽ भों ऽऽ भूंकने लगा !

––आया ! काला पानी आया ! !

जग में आज भी कुछ भूभाग अैसे है कि, जिन का भूगोल तो अुपलब्ध है, पर अितिहास नहीं। काला पानी जिसे आज कहते हैं, अुस अंदमान के द्वीपपुंज का भी अुन्हीं भूभागों में अंतर्भाव करना चाहिये।

जिस काल में हिंदूराष्ट्रने अपने स्वतःके पैरों में सिंधु-बंध की बेड़ी स्वयमेव नहीं ठोक ली थी, विधर्मियों के साथ ही नहीं, स्वधर्मीय हिंदुओं के अंदर भी विजातीय के साथ खाने या पीने से जात ही जाती है, धर्म ही डूबता है, अैसे बाष्कल धर्म-भोलेपन की वजह से हिंदुस्तान के बाहर जाने से विधर्मी, विदेशी, विजातीयों के साथ अन्नोदक व्यवहार होकर अपनी जात नष्ट होगी ही, यह भ्रामक भीति हिंदूराष्ट्र के पेट में अुत्पन्न हुअी नहीं थी, और अुसके योग से तीनों बाजुओं के समुद्रपर ही नहीं बल्कि चौथी बाजू की भौमिक सीमा पर भी 'अटक' की धार्मिक चौकियाँ बैठ गअीं और कोअी भी हिंदू देश से बाहर जिस काल से जानेही न लगा, अुस साधारणतः ओसवी सन की नौवीं-दसवीं सदी के काल से पूर्व हिंदूराष्ट्र के त्रिविक्रमशील चरण, अिस सिंधु-बंध की बेड़ी से जकड़े हुअे न होने के कारण पूर्व पश्चिम दक्षिण समुद्रों और महा-सागरों को लांघकर, राजकीय, धार्मिक, सामाजिक, दिग्विजय करते हुअे अुस काल के ज्ञात जग में अपने हिंदुओं के महासाम्राज्य निनादित करते चल रहे थे। परदेशगमन अुस काल में बिलकुल भी निषिद्ध नहीं होने की वजहसे, परदेश-गमन-निषेध की अवदशा अुस कालमें किसी को भी स्मृत न हो आने की वजह से, हिंदू रणतरियों (War ships) के प्रचंड नौ-साधन दिग्दिगंत में अप्रतिहतरूप से संचार किया करते थे। जिस को परकीयोंद्वारा लिखे और पढाये गये आज के हमारे भारत के भ्रष्ट भूगोल में 'अरब सागर' अैसे मानहानिकारक नामसे पुकारा जाता है, अुस हमारे पुरातन 'पश्चिम समुद्र' में से होकर अेक बाजू को और जिसे हमारे आज के कूप मंडूकों ने 'काला पानी' अैसा समुद्रगमनभीरुता द्योतक नाम दिया है, अुस, अिन अंदमान द्वीपोंवाले पूर्वसमुद्र में से हो कर कनिष्ठ पक्ष में, चंद्रगुप्त मौर्य के

अर्थात् अीसवी सन से तीनचार सौ बरस पहले के बिलकुल अैतिहासिक काल में लेकर हिंदू राष्ट्र की शतावधि वणिग्नौका और रणनौका दूर दूरके विदेशों को अव्याहत रूपसे जाया आया करती थी ! हिंदू राष्ट्र के लिये यह सागर अेक सड़क बनी हुअी थी !

अिस पूर्व समुद्र में से मगध, आंध्र, पांड्य, चेर, चौल प्रभृति हिंदू राज्यों ने बड़ेबड़े दिग्जयिष्णु नौ साधन (बेड़े) भेजकर सयाम, जावा, बोर्नियो से फिलिपाअिन्सपर्यंत हिंदू अुपनिवेश, राज्य, धर्म और संस्कृति स्थापी। हिंदचीन (अिंडोचायना) और फिलिपाअिन्स में हिंदुराज्य स्थापित थे, अेतद्विषयक निर्विवाद ताम्रपट शिलालेखादि प्रमाण परकीय अनुसन्धाताओं ने आज प्रकाश में लाये हैं। बौद्ध हिंदुओं के ही नहीं बल्कि वैदिक हिंदुओं के ये क्षत्रियवंशीय राज्य, भारतीय प्रांत नगरों के वहाँ स्थापे हुअे अुपनिवेशों अेवं नगरों को दिये हुअे नाम, शिव, विष्णु, बुद्ध प्रभृति देवताओं के देवालय वेद, मनुस्मृति प्रभृति शतावधि संस्कृत ग्रंथों के ग्रंथालय, हिंदु वाणिज्य, कला, संस्कृति अित्यादिक, सयाम, जावा, ब्रह्मदेश, हिंदुचीन, बाली में फिलिपाअिन्स तक तो सदियों तक पूर्ण विकसित अवस्था में थे—यह निर्मल अितिहास है !

पर, अुस अितिहास में अंदमान द्वीपपुंज सदृश छोटे मोटे द्वीपों के नामनिर्देश भी आजतक हाथ न लगे, अिसबात पर अुस कालके प्राचीनत्व के कारण अेवं अितिहास विरलता के कारण बहुत ज्यादह अचरज करने की जरूरत नहीं है।

तोभी, अंडमान से अपने भारतीयों के विद्यमान संबंध का निर्देश करनेवाला प्रथम चिन्ह है अुसका नाम। जावा यह नाम जैसे अुस देश के आकारपर से यवद्वीप अैसा रखा गया, तद्वत् 'अंडमान' यह नाम भी अुस की अंडाकृति पर ही से भारतीयों ने रखा होगा, अैसा जबतक अिसका खंडन करनेवाला प्रमाण आगे चलकर मिल न जाये तब तक समझने में कोअी आपत्ति नहीं है। अुससे आगे के द्वीपों पर भारतीयों के प्रत्यक्ष जाने और अुन टापुओं को जीतने का निर्विवाद अैतिहासिक प्रमाण अर्थात् पांड्य राजाओं की शिलालेखीय प्रशस्ति अुपलब्ध है ! अिस अेक प्रशस्ति पर से यह सिद्ध होता है कि, पांड्यों का अेक प्रबल सेनापति अीसवी सन की दसवीं सदी के आसपास अिस समुद्रपर दिग्विजय करने के लिये बड़ी बड़ी रणतरियों का अेक प्रबल

नौसाधन (बेड़ा) लेकर निकला था। परतीरवर्ती आज के पेगू पर अुसके जल सैन्यने चढाअी करके अुस देश को जीत लिया। वापिस आते समय अुस भारतीय हिंदू सैन्य ने अंडमानादिक टापुओं पर स्वामित्व स्थापकर अुन्हें पांड्य साम्राज्य में मिला लिया। अिस स्पष्ट अुल्लेख पर से अिन द्वीप-पुंजों के अितिहास की सिर्फ पहली पंक्ति ही लिखी जा सकती है!

पर वह पंक्ति भी लिखते लिखते अपूर्ण ही रह जाती है। भारतीय सैन्य वहाँ गया था, यह भले ही निश्चित हो जाय, तथापि वह हिंदू सैन्य अथवा अुस हिंदू राजा का कोअी अधिकारी अथवा नागरिक वहाँ रहा या नहीं, अिस का पता अभी तक लगा नहीं है। हम जब अंडमान में थे तब अेक दफा अेक विश्वसनीय अंग्रेज अधिकारी ने हमें बताया था कि अंडमान में खुदाअी करते समय किसी अेक जगह राजप्रासादके अवशेष मिलते हैं। पर आगे चलकर अुसका क्या हुआ, यह आज तक भी हमें कुछ समझ नहीं पड़ा। तादृश अेक आध अुत्खननीय खोज का पता लगे या न लगे तथापि यह बात निश्चित है कि अंदमान में बाहर के लोगों का अुपनिवेश गत तीन हजार बरसों के अैतिहासिक काल में तो टिककर नहीं रहा।

पांड्य राजा की अुपरिनिर्दिष्ट प्राचीन प्रशस्ति को अेक ओर रख दें तो अंडमान का अस्फुटसा अुल्लेख अर्वाचीन काल के मार्कोपोलो, निकोलो, यूरोपियन तथा कुछ अरबी प्रवासियों के प्रवासवृत्तों में मिलता है। पर वह अिस टापूपर आकर वास्तव्य करने का नहीं बल्कि अिस के बारे में सुनी गअी बातों का है, अुसके अस्तित्व का, केवल भौगोलिक!

बाहर के लोगों के संबंधसे अुन बाहर के लोगों के अितिहास में अंडमान का अितिहास जैसे मिलता नहीं, अुसी तरह अुनके खुदके लोगों में भी अितिहास अेक अक्षर से भी नहीं मिलता यह कहना अनावश्यक है। क्यों कि अंडमान में अुन के अपने लोग हैं तथापि अक्षरज्ञान अुन्हें बिलकुल भी नहीं है।

और परंपरागत दंतकथात्मक अितिहास के विषय में पूछेंगे तो, अुस अंदमान के मूलनिवासियों के दांत यद्यपि अत्यंत बलोत्कट और तीक्ष्ण हैं, तथापि अुन्हें कथा किस चिड़ियाका नाम है, पता नहीं। कथा की कल्पना तक अुनलोगों में नहीं है! क्योंकि जहाँ स्मृति रहती है, वहाँ कथा की संभावना होती है। पर अंडमान के मूलनिवासियों की स्मृति शक्ति अद्यापि अितनी

अपक्वावस्थामें है कि अुन्हें २–४ बरस पहले की बातें भी याद नहीं रहतीं। जिसे हम याद कहते हैं, वह अुन्हें रहती ही नहीं। परिचय भी वे बहुत जल्दी भूल जाते हैं। तब जातीय सुसंगत सांघिक स्मृति और परंपरा की प्राचीन कथाअें अुन्हें कहाँ रहेंगीं ? प्राणियों के झुंडोंको किंवा वानरों के समूह को जितनी परंपरा और सामाजिक स्मृति होती है, अुससे कुछ ही अंशों में अधिक अुनकी सामाजिक स्मृति विकसित दिखाअी देती है। तन्मूलतः दंतकथात्मक भी अितिहास अंडमान के निवासियों का नहीं हैं।

मिल कर क्या ? जग के अन्य राष्ट्रों के वाङमय में अेक अुपर्युल्लिखित पांडय राजाओं की प्रशस्ति को छोड़कर अंडमान के विषय में अैतिहासिक अुल्लेख नहीं है। यूरोपियन और अरबी प्रवासियों का मध्यकालीन अुल्लेख केवल भूगोलविषयक, अंडमान संबंधी अितिहास कहनेवाला नहीं हैं। और अंडमानी जाति बिलकुल जंगली, आदिम, अविकसित मानव। अुनकी स्वतःकी लिखी हुअी कथाअें तो रहें, जातीय पूर्व वृत्तों की दंत कथाअें तक नहीं हैं ! जिसको भूगोल है, अितिहास नहीं, अैसा अंडमान अेक अजस्र भूभाग है ! अुसका सारा अितिहास कहें तो अेक पंक्ति !—पांड्य राजा की प्रशस्ति में की !

अंडमान का अितिहास न भी हो तो भी मनुष्यसमाज मात्र है! अितना ही नहीं, अुसका जो मूल का मनुष्यसमाज आज अंडमान में है, वह अैतिहासिक गणना की भाषामें तो सर्वथा अक्षरशः अनादि है। क्यों कि वहाँ आज जो मूल की जंगली, आदिम मनुष्यों की जातियाँ निवास करती हैं, अुनके अस्तित्व का आरंभ ही नहीं मिलता। अत्यंत प्राचीनतम काल से लेकर, क्वचित् मर्कट का मनुष्य होता आया तब से लेकर वे जैसी की तैसी आज भी लगभग जहां थीं वहीं, बहुतांश में जैसी थीं अुसी अवस्थामें निवास करती हैं।

मर्कट से मनुष्य का निर्माण होने लगा तब प्रथम पूंछें झड़ने लग कर सिर्फ मर्कटास्थि ही बची रहने लगी। मर्कटास्थि यह नाम यद्यपि हम लोग भी अपनी अुस जगह की मेरुदंड की अेक अस्थि को देते हैं, तथापि वह अस्थि अब मूल की अपेक्षा सर्वथा सपाट हो गयी है। पर अुधर बिलकुल अंडमान में नहो तोभी अुस द्वीप–पुंज के आजू बाजू के भू-भागों में आज भी अैसे मनुष्य कभी कभी दीख पड़ते है, जिन की मर्कटास्थि,

डेढ दो अिंच अूंची और आगे आयी हुअी रहती है ! हम लोग जब अंडमान में थे, तब अैसा अेक जंगली आदमी वहाँ के डॉक्टरने हमें औषधालय में आया हुआ दिखाया था। अुसकी मर्कटास्थि–पूंछ की वह हड्डी अिसी तरह आगे आयी हुअी, जिसकी वजह से कुर्सी के पृष्ठभाग को टेककर सीधा बैठा न जा सके, अिस तरह लंबायी हुअी थी। अुसके पास ही पूंछ के बालों के गुच्छे का स्नायु अुतना लटकता हुआ नहीं था। वह लुप्त हो चुका था। अुसकी ठोडी और गाल भी मर्कट (बंदर) से बहुतसी बातों में मिलते जुलते थे। अुस की चालीस पचास शब्दों की क्यों न हो, अेक भाषा थी। यह भाषा जातिवंत मर्कट मनुष्यों की 'ओरांग ओटांग' 'गुरिल्ला' की रहती है। अिन ओरांगओटांग, वानर मर्कटों की भी अेक भाषा है; अुसके बहुत से शब्द कुछ प्रवासी प्राणि-शास्त्रज्ञों ने गिनने का यत्न किया है। पर हमने अिस जिस पुच्छास्थियुक्त मनुष्य को देखा था, अुसे मानव भाषाओं मे अंतर्भूत होने वाली भाषा आती मनुष्यवाणी थी। यह मुख्य फरक दिखाअी दिया।

यह अपवादात्मक प्राणी हमने बतलाया है; पर अंदमान में बिलकुल तज्जन्य अनादि काल मे निवास करती हुअी आने वाली अेक 'जावरा'नाम की जात है, जो लांगूलास्थिविहीन है। अुस जाति के आदमी साधारणत चार साडेचार फूट अूंचाअी के; वर्ण कालाकलूटा; बाल खडे और कड़े, छोटे और गुच्छों मे अुलझे हुअ वलयाकृति होते हैं दाढी मूंछें तो पुरुषों की भी नदारद। वे सारे सर्वथा अुल्लिग ! मनुष्यप्राणी 'सुधारते सुधारते' अपने यहाँ, आज के यांत्रिक युग में जिस अवस्थातक पहुँच गया है,वह अपनी सुधारणा और वह अपना यंत्र युग ही अपने लोगों के जिस अेक संप्रदाय को मनुष्यजाति के लिये अेक दुर्धर शाप मालूम पड़ता है, सादे रहने सहन के यंत्रयुगविद्वेषी पंथ के मुँहसे भी लार बहने लग जाय, अितना सादा रहन सहन अिस 'जावरा' जाति में अनादि काल से लेकर आजतक चलता चला आया है। कपड़े पहनने का मोह अुन्हें कभी होता ही नहीं। नंगापन यदि साधुत्व की निशानी है तो, जावरा लोग अपने यहाँ के साधुओं की अपेक्षा भी बढेचढे साधू हैं। अपने यहाँ के साधुओंको कमर में अेक पंचा लपेटने का कमअजकम लंगोटी तो पहनने का मोह होता ही है। पर अिस जावरा जाति में पुरुष तो क्या–स्त्रियाँ तक कमर में अक अंगुश्तभर कपड़े का चीथड़ा नहीं

बांधती। और हम अुल्लिग रहकर कोअी गतकृत्य कर रहे हैं, अैसी भावना भी अुन लोगों में नहीं है। क्यों कि वस्त्रों की कल्पना का स्पर्श तक अुन को नहीं हुआ है। अुनकी 'सादगी' अितनी है कि, बड़ी बड़ी मिलों का 'शाप' तो क्या 'चर्खा' और 'तकली' तक का शाप भी अुन्हे नहीं लगा है। शान शौकत के व्यसन की वजह से मनुष्य अधोगति को प्राप्त हो रहा है, अिस विवंचना के कारण जिन्हें अन्न भी मीठा नहीं लगता है, अुन अपने यहाँ के 'सादगी' के अभिमानियों को यह सुनकर आनंद ही होगा कि, ये 'जावरा' लोग शानशौकत से सर्वथा अलिप्त हैं। अुनकी औरतों में यदि कोअी तरुणी बहुत ही विलासलोलुप निकली तो किसी पेड़ के कुछ पत्ते लेकर अपनी कमर के सामने लटका लेगी। और कोअी पुरुष बहुत ही बनने ठननेवाला निकला तो अुसकी सारी शानशौकत रंगदार लाल-लाल मिट्‌टी के पट्टे शरीरपर खींचने में ही समाअी हुअी और संतुष्टी हुअी रहती है। यंत्रयुग को अधोगति मानने वालों की भाषा में ही बोलें तो ये जावरा लोग बहुत ही प्रगतिशील हैं। यंत्र-युग के प्रलोभन से वे सर्वथा अलिप्त हैं। अुन लोगों को मोटर और रेलगाड़ी की तो बात दूर, बैलगाड़ी और गाड़ी तक का ज्ञान नहीं है। अुन्हें कुर्सी नहीं मालूम, दिया सलाअी नहीं मालूम, जूता नहीं मालूम, बंगला नहीं मालूम, खेती नहीं मालूम, जिलेबी नहीं मालूम, अंगूर नहीं मालूम, मक्खन नहीं मालूम, बाजरा नहीं मालूम, तब 'भिशी वाटर' की तो बातही दूर है! मनुष्यजाति पर मनुष्य के असमाधान का, कलह का, कृत्रिम जीवन का संकट जिस अेक ही कारण से टूट पड़ा है, अैसा 'सादगी' के अपने यहाँ के अध्वर्यु समझते हैं, अुस 'सुधारणा' के नाम ही से नहीं, बल्कि अिच्छा से भी ये जावरा अलिप्त और अकलंकित हैं।

पर अतअेव 'सादगीसे', 'यंत्रयुग के शापसे मुक्त होने से', निसर्ग की ओर वापिस फिरने से, मनष्यो में निरपवाद समाधान विराजन लगगा, अैसा समझकर जो 'Back to Nature' वादी लोग कहते हैं, अुसके अनुसार अिन जावरा लोगों के जीवन में वह समाधान विद्यमान है क्या? बिलकुल नहीं। खेती नहीं, हल नहीं, बेंकों में नोट नहीं, बंगला नहीं, पर जो किसी अेक सघन अरण्यांतर्वर्ती गर्तमें की जगह किंवा मांस का टुकड़ा तात्कालिक अग्राधिकार से अेक जावरा का होगा,

अुसपर दूसरेकी नजर जाते ही, या नजर न पड़े अिसबुद्धि से, अुसको जो चिंता करनी पड़ती है, निपटारा करना पड़ता है और प्रसंग पड़ने पर जूझ देनी पड़ती है, वह अुतनी ही अुत्कट और भयंकर होती है, जितनी कि किसी कैसर की, जार की अथवा लेनिन की! तुम्हें हमें खेतीके जितने कष्ट अेवं चिंता होती है अुससे भी अधिक चिंता, वन्यफल अथवा मृगया संपादन में, और वह मिलेगी या नहीं अिस विवंचना में, प्रत्यह प्रातः काल के समय, जावराकोभी करनी पड़ती है। सूअरों के पीछे तीर लेकर फिरते समय किंवा मछलियाँ पकड़ते समय कष्ट सहन करने पड़ते हैं! डरके मारे जान लेकर भागना पड़ता है, बीमारीमें कराहना पड़ता है, विषैली जंगली मच्छरमक्खियों के डसते ही बिलखना पड़ता है, मत्सर से जलना भुनना पड़ता है, आपस में गाली गलौज मारपीट, टोलियों की लड़ाअी, यह मारा हुआ मच्छ मेरा है या तेरा,–अिस पूंजी वादी प्रश्न पर, यह सोने की खान मेरी है या तेरी, यह राज्य मेरा है या तेरा–अिन बातों के लिये जिस तरह हम लोग मरते दमतक लड़ते हैं, अुसी तरह जावराओं को भी अेक दूसरे के साथ मरते दमतक जूझना पड़ता है। केवल सादगी से, 'यंत्रयुग का शाप' छूट जाने पर ही यदि शांति अेवं समाधान विराज सकता होता तो ये जावरा लोग जीवन्मुक्त ही समझे गये होते! क्योंकि वे लगभग बंदरों जितने ही 'सादगी' के अुपासक हैं, 'निसर्ग' के अनुकूल जीवन बिताते हैं; पर असंतोष, असमाधान, जीवन कलह अित्यादि का स्तर अेवं प्रकार भले ही भिन्न हो; किंतु अुनकी तीव्रता और अपरिहार्यता अुन जावराओं के 'नैसर्गिक' युगमें भी हम लोगों के यंत्रयुग से कुछ भी कम नहीं दिखाअी देती। अुलटे, अुनके जीवन का विकास बंदर के जीवन से जो बहुत ज्यादा हुआ हुआ नहीं है, अुसका कारण यह सादा बंदरों का रहन सहन ही है, यह भी स्पष्ट ही है।

अंडमानमें अुपर्युल्लिखित जावरा जाति यह अेक अुस में भी बिलकुल आदिम, जंगली, सुधरे हुअे आज के हमारे प्रकार के परकीय लोगों से भय से और द्वेष से दूर रहने की अिच्छा करने वाली है, तो भी अंडमानवासी मूल लोगों की अन्य अनेक जातियाँ अुन जावराओं से रीतिनीति, रहनसहन, शरीररचना अित्यादि बारे में भिन्न प्रकार की हैं। और अपनी अपनी जगह कुछ सुधरी हुअीं भी हैं। अुनके पार्थक्य और साम्य का गहन अध्ययन किये

हुअे अेक अंग्रेज समाजशास्त्रज्ञने अुनके विषयमें जो जानकारी दी है, अुसकी साधारण रूपरेखा अपन अिस कथानक के साथ सुसंगत मात्रा में नीचे दे रहे हैं—

अंडमान में जो दस बारह तत्रस्थ मूल लोगों की जातियाँ हैं, अुनके कुछ नाम—'कारि, कोरा, टबो, बी, बलवा, जावरा, जुबअी, कोल' अित्यादि प्रकार के हैं। अंतिम 'कोल' यह नाम ध्यान देने योग्य है! क्यों कि अपने यहाँ के वन्य अथवा पहाडी 'कोळी' लोगों से वह नाम और अुन कोलों का जंगली चरित्र तुलनार्ह प्रतीत होता है। अिस जाति के संघ, कोअी सघन जंगल में, कोअी अूँचे पहाड़ों में तथा कोअी समुद्रतट वर्ती प्रदेश में रहते चले आये हैं, तस्मात् अुनकी चालचलन, भाव-भावना, रंगरूप वगैरह भी अुपरिनिर्दिष्ट परिस्थिति भेद से और क्वचित् वंश भेद से भिन्न-भिन्न हैं। तन्मूलतः अुनके अेक साथ वर्णन में जो कुछ विसंगति नजर आयेगी अुसका स्पष्टीकरण वाचकों को कर लेना संभव हो जायगा।

जावरा प्रभृति जातियाँ अत्यंत क्रूर होती हैं। पहले, तूफानों की वजह से कितने ही परकीय जलयान अिस टापू से टकरा कर टूट फूट जाते या फंस जाते थे। अुनपर के निःसहाय लोगों पर टूट पड़कर अुनको ये जावरा प्रभृति अंडमानी लोग अत्यंत क्रूरता से कत्ल किया करते थे। आज भी अुनके परिचय के तत्रस्थ जाति से बाहर की किसी भी परकीय किंवा अंडमानीय जाति के आदमी नजर आतेही ये जंगली लोग अुनके अूपर तीक्ष्ण बाणों का प्रहार करना शुरू कर देते हैं। किंवा अकेले दुकेले को पकड़ कर जान से मार डालते हैं। कभी कभी किसी को जीवदान मिला तो अुसका भाग्य अद्भुत है, अैसा ही समझना चाहिये। जावराओं द्वारा जान से मारे गये व्यक्तियों के शवों पर पत्थरों के ढेर रक्खे जाते हैं। अुनके द्वारा जंगल में मारे गये प्राणियों की खबर पक्षी अुनके पक्षवालों को जा कर दे आते हैं अैसी अेक धारणा अुन लोगों में प्रचलित है। क्योंकि वे पशुपक्षियों को मनुष्यों से बहुत अधिक भिन्न नहीं समझते हैं।

अिन लोगों में स्त्री-पुरुषों के संबंध में रीति-नीति विभिन्न प्रकारकी रहती है। स्त्री पुरुषों के काम बहुधा बँटे रहते हैं। स्त्रीका स्थान पुरुष की अपेक्षा अधोवर्ती समझा जाता है। बूढी औरतों के साथ सम्मान से व्यवहरते

है । शादी से पहले स्त्रियाँ पुरुषों के साथ बहुत ही अधिक आत्मीयता प्रदर्शित करती हैं । अविवाहित स्त्रियों के लिये लैंगिक निर्बंध बहुत कुछ नहीं रहते । किन्हीं जातियों में वे अपना वर अपने आप चुन लेती हैं । किन्हीं में मांबाप ने शादी पक्की की कि वह पक्की होगअी अैसा मानते हैं । यहाँ बहुपत्नीत्व भी अधिक नहीं है और बहुपतीत्व भी नहीं है । कुछ जातियों में पुरुष अपनी अपेक्षा तरुण दूसरों की विवाहित स्त्रियों के साथ बहुत करके नहीं बोलते । अुसी तरह अपनी पत्नी की बहिन को वे छूते भी नहीं हैं । लड़कों लड़कियों के नाम भी भिन्न प्रकार के हों अैसा रिवाज बहुतसी जातियों में नहीं है । मांही नाम रखती है । गर्भिणी होने के चिन्ह नजर आते ही गर्भका नाम रख दिया जाता है । पर किन्हीं जातियों में लड़कियों के अुम्रमें आनेपर अुने लोगो के लिये निश्चित किये गये फूलों में से जो फूल अुनके अुम्र में आने के समय फूल रहे हों अुन्ही में किसी अेक फूलका नाम रखा जाता है ! यह अिन जंगली लोगों की ललितप्रवृत्ति हमारे नागर लोगों की लड़कियों का नाम दगड़ी, धोंडी, भिमी वगैरे रखने की अरसिक प्रवृत्ति से अधिक सुभग नहीं क्या ? पुरुषों की शादियाँ २५ बरस की अुम्र के बाद तथा लड़कियों की अठारह के बाद बहुधा होती हैं ।

अिन्हें लड़के बहुत पसंद हैं । पर कुछ जातियों में लड़के सात आठ बरस के हुअे कि अपने मां बापके साथ अेकत्र नहीं रहते वे अपना अलग आयु:क्रम बनाते हैं । आयु:क्रम सब का अेकही और मपा हुआ होता है । भक्ष्यके लिये दिनभर शिकार करना और रात को नींद आनेतक नाचना ! नाचने के समारंभ में स्त्री-पुरुष अुल्लिग, अेकत्र !

अिन लोगों में पुरुष कुछ अच्छे मालूम पड़ते हैं । स्त्रियाँ तो अेकदम बथ्थड़! स्त्रियों का कटि पृष्ठनिम्न भाग तो अत्यंत ही बेडौल और शरीर के मानसे बहुत ही स्थूल रहता है । अुनके सौंदर्य में और वृद्धि करने की ही बुद्धि से कदाचित् अुन स्त्रियों के बाल निकाल कर अुनकी खोपडियाँ बिलकुल चिकनी चुपड़ी बनाअी हुअी होती हैं ! अुस अंडमानीय सौंदर्यसृष्टि के लिये तरुण स्त्री अेवंविध केशहीन चिकनी चुपड़ी खोपड़ियों से ही अधिक सुरेख शोभित होती है, अैसा लगता सा प्रतीत होता है । अपने कवियों को सुंदरी के ओंठ बिंब फल के सदृश हैं, अैसी अुपमा जैसे भाती है, वैसे ही अुन लोगों में यदि कोअी

कवि हो तो अुसे वहाँ की सुंदरियों की खोपड़ियाँ छीले हुअे नारियल की तरह लोभनीय प्रतीत होती हैं अैसी अुपमा सहज ही सूझती और रुचती होगी। क्यों कि, छिला हुआ नारियल, नारियल के वृक्षों के सुभिक्षवाले अुस अंडमानीय अरण्य के अुन नैसर्गिक नागरिकों का अत्यंत प्रिय पदार्थ है।

अुन लोगों की अक्ल छुटपन में तेज होती है। पर अुस की वृद्धि शीघ्र ही कुंठित हो जाती है। स्मरणशक्ति तो और भी कम अर्थात् बौद्धिक दूर दृष्टि अुनमें कतअी नहीं, अैसा कहना मौजूं होगा। आगे और पीछे देखकर व्यवहार करनेवाला ही मनुष्य है, अैसी अेक मनुष्यत्व की व्याख्या है। अुसके ये अंदमानी अपवाद हैं। अुन्हें चालू क्षण में काम, क्रोध, लोभ प्रभृति विकारों की अूर्मि आयेगी—अुसके अनुसार ही वे व्यवहार करेंगे। पिछले दस बरसों का शेष या अगले दस बरसों की योजना अित्यादि अिन लोगों में नहीं है। क्षुधा, तृष्णा, राग, द्वेष अित्यादि की अुसी वक्त तृप्ति होगयी, तो वह प्रश्न वहीं का वहीं मिट जाता है। शत्रु का तथा अपराधी का बदला भी वे अुसी अूर्मि में हो सका तो लेंगे। कुछ काल बीत जाने के पश्चात् वह विपक्षीय मनुष्य यदि फिर अुनमें आया तो अुसके बारे का गुस्सा, अुसका अपराध तथा बदले का निश्चय अित्यादि सब बातें वे लोग बहुधा भूल जाते हैं; वह मनुष्य अुनमें फिर मिल जाता है। अर्थात् स्मृति अैसी टटपूंजी होती है, अैसा जो अुन के बारे में कहते हैं वह अपनी स्मृतिशक्ति के और बौद्धिक दूर दृष्टि के प्रदीर्घ कालीन टिकाअूपने से तुलना करके ही कहा जा सकता है। क्यों कि, अुन जातियों को भी कुछ स्मृति और दूरदृष्टि होनी ही चाहिये। जातितः जन्मजात और व्यक्तिशः अर्जित स्मृति और दूरदृष्टि बंदरों के झुंड में भी रहती है। तब ये लोग तो भले ही आदिम हों—मनुष्य ठहरे!

अुनकी भाषा बिलकुल गिनेचुने शब्दों की, जो कि प्रत्यह बिलकुल शारीरिक और प्राथमिक भावनाओं, आवश्यकताओं को व्यक्त करनेवाले होते हैं, होती है। अुनमें भी वे अपूर्णही होते हैं। क्यों कि, अुनकी भाषा में अेक मुख्य शब्द बोल दिया कि अुसका वाक्य बनाने का काम अुनके हावभाव ही पूरा कर देते हैं। हाथ के संकेत, गर्दन, आँखें, अिनके अभिनय से वे शब्दों की अपेक्षा अधिक आपस में बातचीत करते हैं। कोअी अतिथि किसीसे,

मिला, तो वे पहले अेक दूसरे की ओर टक लगाकर देखते रहना–अिसे पहला शिष्टाचार समझते हैं। अर्थात्, अेक दूसरे को पहचानने में जो खतरा होता है, अुनकी हीन स्मृति के कारण और परकीयों के कपट के कारण अुन्हें सहन करना पड़ता है, अुस जातीय अनुभव के कारण ही ठीक ढंग से परख लेने से पहले किसी से भी न बोलने की यह प्रथा पड़ी होगी! और तब खांस कर खखारकर आगत व्यक्ति से बोलना शुरू करना यह दूसरा शिष्टाचार! प्रत्येक जाति की अेक स्वतंत्र अुपभाषा होती है। साधारणतः बीस मीलके पश्चात् यह अुपभाषा बदल जाती है।

कोअी मर जाये तो अुसके संबंधी मुक्त कंठ से रोते हैं। छोटा बच्चा मर जाय तो मा-बाप के झोंपड़े ही में गाड़ देते हैं। अन्य कोअी, विशेषतः बड़ा आदमी मर जाय तो अुसकी गठड़ी बांधकर पहले पेड़की खोखल में व्यवस्थित रूपसे रखदी जाती है, अुस जगह के अतराफ बेंत के पत्तों की माला-अें बांधी जाती हैं। अुस जगह की ओर तीन अेक महीनेतक कोअी नहीं जाना। अिस स्मशान की जगह को अलग रखा जाता है। जबतक यह सूतक चालू रहता है, तब तक वे लोग अपना नाच बंद रखते हैं तथा सिर में भूरी मिट्टी मलते हैं। कुछ महीनों के बाद मृत व्यक्ति की हड्डियाँ धोकर अुनके टुकड़े कर डालते हैं। और अुसके बाद अुनके नाना प्रकार के आभूषण बनाये जाते हैं और अुन्हें मृत व्यक्ति की यादगार के तौर पर पहना जाता है। रोग हो जाय तो अिन हड्डियों के आभूषणों के स्पर्श से वह ठीक हो जाता है, अैसी भी धारणा अिन लोगों में प्रचलित है। पर अिन सब हड्डियों में मृत व्यक्ति की खोपड़ी का मान विशेष रहता है। अुस खोपड़ी की अन्य हड्डियों के साथ गूंथी हुअी माला बनाकर अुसे गर्दन के अूपर से पीठ पर लटकाये रखते हैं। और अुस खोपड़ी के अुपयोग का अधिकार, विधवा, विधुर, किंवा नजदीकी रिश्तेदार ही को रहता है।

मरने के बाद भूत हो जाता है, अैसा कुछ जातियों का विश्वास है, कुछ की समझ है कि अंडमान में अुनके परिचय के जो भी प्राणी फिरते नजर आते हैं, वे सब अुन्हीं के पूर्वज वैसा रूप धारण कर के फिरते हैं। अपने भूत की कल्पना, अपनी छाया की अपेक्षा भी समुद्र में पड़नेवाली अपनी परछांअी के अूपर से ही पहले पहल आअी होगी। क्यों कि परछाअीं को वे लोग भूत

समझते हैं। और वे मरजाने के बाद दूसरी जगह रहने के लिये चले जाते हैं, अैसा वे मानते हैं।

अिन लोगों में धार्मिक दृष्टि का कर्मकांड बिलकुल नहीं है, कहें तो कोअी बुरा न होगा। शादी, मौत, वगैरह के मौकोंपर निर्धारित रीतियां, व्यावहारिक प्रथाअें होती हैं। पर धार्मिक स्वरूप में, किसी देवदेवता की प्रार्थना अथवा पूजा, अथवा मंत्रतंत्र–किंबहुना, धार्मिक पुरोहित तक अिन लोगों में नहीं होता। परंतु अुनमें से कितनों ही में ब्रह्मज्ञान बिलकुल नहीं है, अैसा कह कर कोअी अुन्हें हीन दृष्टिसे न देखे, क्योंकि हमारी बिलकुल अीश्वरदत्त पुस्तकों में बताअी गअी धार्मिक बातों तथा ब्रह्मज्ञान की बातों से हार न माननेवाला थोड़ासा ब्रह्मज्ञान और कुरान-पुराण अुन लोगों में भी है। अुदाहरणार्थ, पुलगा नामक दैवतने अिस जगत् का निर्माण किया, मरने के बाद जिस जग में भूत निवासार्थ जाते हैं, अुस अद्भुत जग को अेक जगद्व्याल नारियल के वृक्षने सँभाल कर रखा हुआ है, जैसे शेषके मस्तक पर पृथ्वी! पुलगा आजकल अुसी अद्भुत और अूँचे जगत्में रहता है। पर पहले वह अंडमान के सब से अूँचे पर्वत 'सैडलपीक' के शिखरपर रहा करता था! कैलासपर यदि हमारे महादेव शंकर रहते हैं, मूसा पैगंबर का महादेव अल्लाह यदि 'सीनाय' पर्वत पर आया करता था, आय्. सी. अेस् के महादेव गवर्नर जनरल यदि शिमला पर जाते हैं, तो अंडमान का महादेव पुलगा भी 'सैडल पीक' पर क्यों न रहे? मृत्युके बाद अंडमानीय जीव अेक वायुरूपी पुलके अूपर से पातालमें जाता है, जैसे क्रिश्चियन-मुस्लिम जीव कब्र में जग के अंतिम न्यायनिर्णय के दिन तक राह देखता रहता है। यह अंडमानी महादेव पुलगा मुसलमानी महादेव की तरह बिलकुल अकेला नहीं है। अुसकी हमारे हिंदु महादेव की तरह अेक पत्नी है और क्रिश्चियन महादेव का जैसे जीजस पुत्र है तथैव अेक पुत्र भी है। अितना ही नहीं, अपने अिधर के किसी भी महादेव के भाग्य में जो सुख नहीं है वह खुद की अनेक कन्याओं के भी कुटुंब में रहने का भाग्य अुसके हिस्से में आया हुआ है।

अिस पुलगा से व्यतिरिक्त अदृश्य शक्तियों में समुद्र का भूत 'जुरुवीन' और अरण्य का भूत 'अेरम चौग' बहुत धूर्त हैं। पुलगा को भी वे नहीं मानते, जैसे शैतान अल्लाह की भी सहसा पर्वाह नहीं करता। पर अुसमें भी अितनी

बात अच्छी है कि, यह जंगल का धूर्त भूत 'अेरम चौग' आग से डरता है! अिस धारणा के कारण ये अंडमानी जंगली जाति के लोग आग को सदा अपने साथ रखते हैं, बुझने नहीं देते, जैसे पारसी और हम हिंदू अखंड अग्निहोत्र का पालन करते हैं!!

अुत्तर ध्रुव के सदृश, बिलकुल हिम--मय अेवं शरीर जमा डालनेवाले ठंडे प्रदेश में मनुष्य जब रहा करता था, तब अुसे अूष्णता के लिये अग्नि का अखंड सान्निध्य अत्यंत आवश्यक और अतअेव प्रिय रहेगा ही। पर अुस काल में दिया सलाअी सदृश आग सुलगाने का आसान साधन मनुष्य को अुपलब्ध न होने के कारण और लकड़ीपर लकड़ी से किंवा पत्थर पर पत्थर से रगड़ पैदा करके अत्यंत प्रयत्न से अग्नि पैदा करनी पड़ती थी अत: अेक बार आग के पैदा होने के बाद अुसे सहसा बुझने न देकर निरंतर जागरित अवस्थामें बनाये रखना अुनके लिये अपरिहार्य था। अुसी वजह से अुत्तर ध्रुवर्ती आर्यों में अग्नि का मूल्य बहुत बढा होगा, अुसी को पहले सदाचारका और पश्चात् धार्मिक कर्तव्य का रूप प्राप्त होकर हमारी अग्निहोत्रसंस्था बनी। हमने अग्निहोत्र संस्था के बारे में जो अुपपत्ति लगाअी है, अुसे अंडमानवर्ती वन्य अनार्य जाति के अिस अुपरिर्निदिष्ट अग्निपूजा से बहुत अधिक पुष्टि प्राप्त होती है। क्यों कि, अुस घनदाट (सघन) जंगल में बड़े बड़े विषैले मच्छरों के और मक्खियों के समूह, सर्प, जोंक वगैरह की बहुसंख्या, यत्र तत्र दलदल, बहुधा अंधकार, अैसे जंगल के ये भूत डरेंगे तो आग ही से डरेंगे! आग अुपजगह अत्यंत अुपयुक्त! पर जंगली लोगों में आजभी आग सुलगाना दियासलाओ के अभाव में अत्यंत प्रयासपूर्ण है, पत्थर रगड़ कर चिनगारी पैदा करनी पड़ती है, अत: अेकबार सुलगी हुअी आग को, आग सुलगाने के लिये, जहाँतक हो सके सुलगी हुअी ही रखना आवश्यक हो जाता है। अत: जंगल के भूत 'अेरम चौगा' को सर्वदा डरा कर दूर रखने के लिये सदोदित प्रदीप्त अग्निहोत्र आवश्यक होगया।

पर तथापि अुनकी दैवीकरण की कल्पनाशक्ति अुस अग्नि के सदृश जाज्वल्य न होने के कारण आग का अग्निदेव नहीं हुआ। अग्निधानिका का अग्निहोत्र नहीं हुआ। हमारी आग देनेवाली लकडियों की भी अरणी देवता बन जाती है और जैसे मंत्रपूर्वक अुस देवता का आह्वान किया जाता है, अुस

तरह अुनके पत्थरों से "चिनगारी दे, प्रसन्न हो" कह कर प्रार्थना नहीं करनी पड़ती। अुनका अग्नि मनौती नहीं मांगता, सिर्फ सुलगता है। गुस्से में नहीं आता, सिर्फ बुझजाता है। वह अग्नि जंगल के भूतों को भगानेवाला होनेपर भी अेक पदार्थ, सिर्फ अेक वस्तु है,– देव बना हुआ नहीं है।

और कुलजमा अुनकी जातियों में से बहुत सी जातियों में किसी भी देव की प्रार्थना, अथवा मंत्रतंत्र अथवा परलोक में अुपयोगी हो अिस बुद्धि से की जानेवाली पूजा का सर्वथा अभाव है। स्वर्ग–नरक की कल्पना अपने कुरानपुराणबाअिबिलीय ठाठ की बिलकुल भी नहीं। पुलगा की भी संकट-निवारक पूजाप्रार्थना नहीं है।

अैसे ये अंडमानीय जंगली नागरिक अिस अेक दो जिलों के बराबर के टापूमें कुल मिलाकर तीन चार हजार भी होंगे या नहीं कहा नहीं जा सकता। वे भी बिखरे हुअे। बाकी सब घनदाट जंगल ही जंगल! अितना घनाऔर औपनिवेशिक मनुष्य के चरण स्पर्श से हीन कि, अुसकी निश्चित देखभाल भी गत तीस अेक बरसपर्यंत नहीं हुअी थी! बड़े बड़े वृक्ष! अुनके अुपर तथा भीतर सघन, कंटकाकीर्ण, अुलझी हुअी लताअें, अूपर से बारहों महीने-कमसे कम नौ महीने तो–निरंतर पड़ने वाली बरसात! कभी मूसलाधार तो कभी रिम झिम! अतः वृक्षों के तले सदा अिकट्ठा हुआ पानी ही पानी, अुसमें वृक्ष लतावल्लरियों के अुस अथाह सघन अरण्य के पत्र-पर्णों का वर्षानुवर्ष निरंतर ढेर का ढेर जमा हुआ हुआ। वर्षानुवर्ष अुसी तरह गलता सड़ता हुआ। यत्र तत्र अुस दलदल में भिनभिनाने वाली लक्षावधी मक्खियाँ, बड़े बड़े दंश, जोंकें, भयंकर सर्प, जहरीले जीवजंतु वगैरह का बाजार गरम! वृक्षों से वृक्ष, बेल से बेल, कांटे से कांटा, झाड़ियों से झाड़ियाँ जमा होकर अुलझकर अैसी अेक जंगली छत मीलों तक फैली हुअी कि, अूपर सूर्य कितना भी प्रचंड प्रकाश फैला क्यों न रहा हो, पर अुसकी किरणों का स्पर्श अुस छत से नीचे तलपर, अुस दल दल को सुखा सके अितना युगानुयुग न हो सके! प्रकाश भी पूरी तरह युगानुयुग पड़ न सके! जंगलों का फैलाव सिर्फ मैदान ही पर नहीं बल्कि, बीच बीचमें जो पहाड़ मौजूद हैं, अुनपर भी वह जंगल अुसी तरह चढकर बैठा हुआ! अुसकी वजह से ये टापू दूर से भले ही हरे भरे और मोहक नजर आवें, किंतु मनुष्यों के निवास के लिये पूर्वकाल ही से सर्वथा प्रतिकूल साबित हुअे। जो

कुछ अंग्रेज साहसी अुपनिवेश स्थापना का प्रयत्न करते रहे अुन्हें भी बिलकुल अठारहवीं सदी के साधनों से भी वहाँ पर अपना पैर जमाये रखना असंभव होगया। दो बार स्थापित किये हुअे अुनके अुपनिवेशों को तत्रस्थ लक्षावधि विषैले जीव जंतुओंने और दलदल के रोगाणुओं ने कत्ल कर डाला ! अेक अेक आदमी रोगों ने खा डाला, अुपनिवेश अुठ गये !

अिस अंडमान बेट (टापू) में जो परकीय लोग, अपघात के कारण जलयानों के तूफानों में फँस जाने की वजह से या अुपनिवेश स्थापित करने की भावनासे आते थे, अुनके अूपर जावरा प्रभृति तत्रवर्ती आरण्यक मनुष्य विषैले तीरों की मार करके, पकड़ कर फाड़ डालते थे, यह तो सत्य ही है; पर तादृश तत्रत्य मानवीय प्रतिकार से अिस टापूका 'स्वातंत्र्य' अनादि काल से ओीसा की सतरहवीं सदी तक जो अबाधित रहा, वह कदापि न रहा होता। अिस टापूका स्वातंत्र्य जो अिस तरह अबाधित रहा, वह तत्रस्थ अुन सर्प, जोंक और अुस दलदल की असंख्य जहरीली मक्खियों, मच्छरों और रोगाणुओं सदृश कट्टर देशभक्तों की, लक्षावधि सूक्ष्म सैनिकोंकी 'स्वातंत्र्य भक्ति' ही से। परकोयों की चढाअियों के अिन्हीं रोगाणुओं ने परखचे अुड़ादिये !

तत्रस्थ अीदृश सघन जंगलों में जावराओं की अपेक्षा जोंकों की सेनाओं का पराक्रमही बढाचढा है ! आज भी जंगलों को काटने के लिये जब कैदियों की टोली वहाँ जाती है, तब अुन्हें ये जोंकें रक्तबंबाळ (खूनसे लथपथ), करके पीछे हटा देती हैं ! वृक्षों पर अुन जोंकों की तहें चिपटी होती हैं नीचे जमा हुअी पत्र-पर्णों की तहों पर तहें, संचित दलदल में अुन जोंकों के लक्षावधि देशभक्त सैनिक छिपकर बैठे होते हैं। मनुष्य अंदर घुसे अुनकी बू आअी कि, वृक्षों पर से वे जोंकें पटापट अुनके शरीर पर सिरपर कूदने लगती हैं, पैर के नीचे से भराभर जाँघोंतक चढ जाती हैं ! हाथों से पकड़ कर अुन्हें निकाल फेंकें तो भी अुनपर वस नहीं चलता ! दंश ही दंश ! अुन्हीं में जहरीले मच्छर, कँटीली झाड़ियाँ, और भयानक सांप-सुरलियाँ ! अेक अेक फूट लंबी ! सौ सौ पैरोंवालीं घनी तहों की तहें ! अुन्हें 'कान खजूरे' कहते हैं, अुधर के कैदी ---! दंश अितना विषैला कि शरीर भयंकर सूजता है आग मनस्वी (बहुत ज्यादह), कभी कभी तो वह अंग लूला ही पड़ जाता है, क्वचित् प्राणघात भी होता है। अुस प्रमाण में सांप वहाँ थोड़े होते हैं--

पर अेक अैसी जाति के सांप वहाँ होते हैं, जिनके डसते ही आदमी खत्म ! बिच्छू पहले नहीं थे अैसा कहते हैं; पर आजकल वे भी नजर आने लगे हैं। अैसे अुन जंगलों में कैदियों में के कंटकों के कंटक और क्रूर से क्रूर कैदी भी, जब टोलियों की टोलियाँ बलपूर्वक धकेलते हुअे, जंगल काटने के लिये ले जाअी जाती हैं, तब चल् चल् कांप अुठते हैं ! मारते हुअे पीटते हुअे ले जाये गये अैसे सौ आदमी दिन भर अुस भयंकर अरण्य में वह सख्त मशक्कत करके शामको जब लौटते हैं, तब किन्हीं किन्हीं के शरीरपर चिपटी हुअी जोंकों के सूक्ष्म दंशों में से बारीक धाराअें बहती रहती हैं, पैरों में कांटे, शरीरपर मच्छरों के दंशों की सूज, दलदली कीचड़ से लथपथ, अुन कैदियों की टोलियाँ बिलकुल रुआँसे को आअी हुअी होती हैं, अिसमें अचरज की कौन बात ? तिसपर अुस जंगल में मधुमक्खियों और भूंडों का राज्य आजतक अबाधित ! अुसमें यदि कोअी मनुष्य अिस तरह अुपद्रव पैदा करे तो वे मधुमक्खियाँ और वे भूंड अुन परकीय शत्रुओं पर टूटकर अपने अिस स्वदेशके और स्वराज्य के संरक्षणार्थ अुन देशभक्त जोंकों, कानखजूरों और रोगाणुओं द्वारा चलाये गये 'स्वातंत्र्ययुद्ध'में भाग लिये बगैर छोड़ते नही ! !

अैसी भी परिस्थितियों से टक्कर देकर, अिन जावराओं, जोंकों और रोगाणुओं के प्रतिकार का मुकाबिला करके, मलेरिया प्रभृति रोगों ने दो मर्तबा अुपनिवेशों के अुपनिवेश खत्म कर डाले तो भी प्रयत्न करके आज अंग्रेजोंने अुस अंदमान बेट में अंततः अेक चिरस्थायी और बढता जानेवाला अुपनिवेश स्थापित करने में यशस्विता प्राप्त की है। अुसी को ' काला पानी ' कहते हैं।

आजन्म कैदियों की वह 'महाराजा' नामकी अगिनबोट अुसी अंदमान पर आकर लगते ही जिसके तिसके हृदय में धडकी बैठने लगती है,

" आया ! काला पानी आया ! "

काला पानी आतेही अगिननौकामें से कैदियों को पैरों में ठांकी हुअी बेड़ियों के साथ जो अुतारते हैं, वह सीधा अुस बेट (टापू) पर समुद्र के अुतार के नजदीक ही बांधे गअे टोलेबाज (बड़े), विस्तीर्ण, और मुख्य कारागृह की तरफ सशस्त्र पुलिस वालों के पहरे में ले जाते हैं।

अिसी कारागृह का कक्ष-कारागार (Cellular Jail) अैसा नाम है। अुस 'सेल्युलरजेल' नामका, कैदियों की बोली में 'सिल्वर जेल!' (रुपहरा कैदखाना) अैसा मोहक रूपांतर हुआ है! अर्धशिक्षित कैदी, जो अिन जन्म कैदियों में रहते हैं, अुन्हें "सिल्वर जेलमें ले जाओ" ये पुलिसवालों के मुंह से निकले हुअे शब्द सुनते ही बड़ा अचरज होता है! रुपहरे कैदखाने में जाना है? कुछ देवालयों के खंभों और कलशों पर रुपहरे-पत्रे जैसे मढे हुअे होते हैं, अुसी तरह चांदी से जिसका कमसे कम दशांश भाग तो मढा हुआ है, अैसे अेकाध विलक्षण अेवं भव्य कारागृह का दृश्य अुनकी आंखों के सामने वह "सिल्वर जेल" नाम सुनते ही अकस्मात् खड़ा हो जात है! काले पानी में सभी कुछ विचित्र! कौन कहे कि जिस तरह पानी काला नहीं अुसी तरह तत्रस्थ कारागृह भी रुपहरा नहीं!!

कम अज कम 'सिल्वर जेल!' यह नाम कैदियों और पुलिसवालों के मुँहसे बार बार सुन कर कंटक को तो आकर्षक प्रतीत हुआ। असल में, भयंकर और अटल पापियों को अुनके भीषण पापों का कठोर दंड देने के लिये जिस बेट में ले जाकर छोड़ते है, अुसका नाम जिस तरह शरीरपर कांटा खड़ा करने योग्य 'कालापानी' अैसा रखाहुआ है, अुसी तरह कारागार का नाम भी 'नरक भूगृह' किंवा 'जुल्म घर' जिसे सुनकर दिल दहल जाय, होना चाहिये था, पर वह नाम तो कम अज कम कितना मोहक! 'सिल्वर जेल!' रुपहरा कैदखाना!!

सिर्फ नाम ही मोहक नहीं—वह देखो, यहीं से वह भव्य बंदीगृह दीख रहा है, वह देखो! वही वह सिल्वर जेल! आं? वह? बिलकुल सिल्वर

(रुपहरा) नहीं तो भी कितना आकर्षक है वह भवन ? रेखाओंद्वारा ठीकठीक अंकित, साफ सुथरा, कोरा, नया ताजा, लंबा, प्रशस्त, समानांतर, सुरेख खिड़कियाँही खिड़कियाँ, अेक मंजिल पर प्रमाणबद्ध तीन मंजिलें, ठीक मध्य में अूँचा, बाँधा हुआ अेक टॉवर ! ! कंटक को क्षणभर को लगा, मेरा मजाक तो ये पुलिसवाले नहीं कर रहे ? मुझे काले पानी पर का मुख्य बंदी भवन कह कर कोअी आरोग्य भवन तो दिखा नहीं रहे हैं न श्रीमान् लोगों के लिये बांधा हुआ ? यह सिल्वर जेल है या सैनिटोरियम ?

अंदर पैर डालने पर भी बंदीगृह कहते ही सादे भारतीय कैदखाने का भी जो अेक अुदास, भयानक, अँधेरा, आतंक प्रतीत हुआ करता है, वह यहाँ प्रतीत नहीं होता ! प्रकाश और वायु भरपूर, रेखाओंदार, और सुंदर, अेक जैसे कमरोंवाली, तीन मंजिलें, पाँच छह पक्ष, मध्यस्थित टॉवर के अतराफ दूरतक व्यवस्थित रूप से फैली हुअी अिमारतें, बड़े बड़े आंगन बीचमें, वर्तुलाकार, चारों ओर सघन नारियल का जंगल ! ! अुस अंदमान के घने जंगलों में कभी कभी मुलायम मुलायम तीस तीस फूट लंबे प्रचंड अजगर जैसे कुंडली मारे सोये हुअे नजर आते हैं, अुसी तरह वह कारागार भी अेक अजगर ही हो मानों ! अजगर ही की तरह कितना मोहक दीखने को !

अुसमें प्रत्येक कैदी के लिये स्वतंत्र तनहाअी, लोहे के सीखचों के दरवाजे बंद हैं जिस में, अैसी रखी रहती है। अिस किस्म की वे सातसौ साढे सात सौ तनहाअियाँ ही हैं। कोठरियाँ अुसमें हैं, अिसी लिये अुसका Cellular Jail कक्ष कारागार यह यथार्थ नाम रक्खा हुआ था।

अुन हर अेक कोठरियों में बाहर से देखनेवाले की आंखों को भरपूर प्रकाश दिखाअी देता था। पर अुस प्रकाश की खासियत यह थी कि, अुस कोठरी में पैर डालने के बाद सीखचों के दरवाजों को अेकबार बाहर से ताला ठोंककर बंद कर दिया कि बस, आँखों को कितना भी चुँधियाने वाला प्रकाश क्यों न नजर आये, पर हृदयमें अेकदम अंधेरा फैल जाता है ! दम घुटने लगता है ! अुस प्रशस्त कोठरी की काल कोठरी बनजाती है !

वैसी अेक अेक कोठरीमें, काले पानी के कैदियों के अुस चलान कोभी अेक अेक कैदी को अलग करके, बंद कर दिया गया। तीन चार दिन अुन अलग अलग कोठरियों में अकेले अकेले कैदी को बंद रखके, अुनकी सजाके

विवरण पत्रों पर से सारी जानकारी का निरीक्षण किया जाकर अपराध अेवं पूर्ववृत्त के अनुरोध से अुनकी अलग अलग श्रेणियाँ बनाअीं गअीं! जो लोग तात्कालिक अुत्क्षोभ में आकर अपराध कर बैठे और पहली ही मर्तबा दंडित हुअे हैं, अुन लोगों की सुधारणीय नाम की अेक श्रेणी बनाअी गअी। जो सधे हुअे अपराधी थे, अुनकी–दुस्सुधारणीयों की 'भयंकर' नाम की दूसरी श्रेणी। अिस तरह अपराध शास्त्र (Criminology) के अनुसार दो श्रेणियाँ बनाअी गअीं! कंटक पहली श्रेणी में गया। अंग्रेजी-हिंदी शिक्षित होने की वजह से महीने दो महीने मेंही लेख्यालयमें बंदी लेखकों की जो श्रेणी होती है, अुसमें थोड़ा बहुत लिखने का काम मिलकर कैदियों में वह 'बाबू' के नाम से प्रसिद्ध होगा यह स्पष्ट होगया। परंतु रफिअुद्दीन की सजाका वृत्तांत 'भयंकर' श्रेणीके अंतर्भूत था। अुसपर पांच बरसोंतक अुस कारागारमें रखने का और सख्त पहरे में, जबतक व्यवहार ठीक नजर न आये तबतक, कड़ी मशक्कत करने का प्रतिबंध डाला गया।

अंदमान में आजकल भयंकर अेवं सधे हुअे (Habitual) कैदी भेजे नहीं जाते हैं। तस्मात् तत्रस्थ कैदियों को बहुत सी सहूलियतें आजकल मिलने लग गअी हैं! पर, तीस पैंतीस बरस पहले, भयंकर और सधे हुअे, अटल दंडितों कोही वहाँ भेजा जाता था, अिस कारण अुनसे मशक्कत करवाने के लिये वैसेही कड़े नियम, और अुनकी दुष्टता को जीर्ण करने के लिये वैसी-ही कड़ी मशक्कत व्यवहार में लायी जाती थी। अुसके बगैर किसी भी ढीली ढाली व्यवस्था से तादृश राक्षसी दंडितों को सीधी राहपर लाना, और समाजके अर्थ हितकारक काम अुनसे कराना, कम अज कम समाज को अुनके स्वैर अस्तित्व से पहुँचनेवाली बाधाका निवारण करना, लगभग असाध्यही ठहरता!

रफिअुद्दीन के सदृश अुलटे कलेजे के दंडित (Convicts) तादृश कड़ी व्यवस्था को भी धूल चटाकर कालेपानी पर से भी भाग जाते थे, देश को वापिस पहुँच जाते थे और समाज के अूपर अघोरी अत्याचार करते थे, अैसा नजर आनेकी वजह से रफिअुद्दीन के भाग जाने के पश्चात् के मध्यवर्ती कालमें यह व्यवस्था और भी कठोर बनाअी गअी थी। अुने दुर्दमनीय कैदियों को भी मात देनेवाले, अुनके साथ अवसर पड़नेपर अुनकी अपेक्षा भी अधिक

कठोरता से व्यवहार करनेवाले, चतुर अधिकारी अुस कक्ष-कारागारमें अिस बीच नियुक्त किये गये थे। रफिअुद्दीन को अबके जब पुनः कालेपानी भेजागया, तब अुसका साबिका अैसेही अेक सवाअी दंडम जेलर के साथ पड़नेवाला था।

अपने पूर्व परिचय की व्यवस्था अेवं अधिकारी बदले हुअे हैं, यह रफिअुद्दीन के ध्यान में तभी आगया। और अिन नये अधिकारियों की आंख में भी धूल झौंकने के लिये जहाँ, जो कुछ अनुकूल बैठे वहां वह सब, अर्थात् चुगलियाँ, मनौवल, पैर पड़ना, वाहियात बकझक, गाली गलौज, गुंडापन अक्खड पना, हास्ययुक्त मुखपूजन, अित्यादि प्रकार के व्यवहारके साधनों का अवलंबन अुसने आरंभ कर दिया।

वह नया जेलर, भयंकर और अधम अधम जितने भी नये कैदी आते, अुनके पूर्व वृत्तांतों के सरकारी विवरणों पर से अुनके साथ किसप्रकार की नीति बरती जावे, यह सब मनमें स्थिर कर लिया करता था। और तब अुनकी प्रस्तुत कालिक मनोवृत्ति को जांचने के लिये अुनलोगों से अेक दो मर्तबा समक्ष मुलाकात लेता रहता था। जहाँ जरूरी हो वहाँ पहले अत्यंत मुक्त भाव से बोलने का अभिनय करता था, सौम्यपना दिखलाता था, और पश्चात् स्क्रू को जितना चाहिये अुतना मजबूत कसता चला जाता था। अुस प्रकार, अुस नये चलान के कैदियोंको भी अुसने जांच कर देखना धीरे धीरे शुरू किया। पाँच-छै दिनतक अुन्हें अकेली कोठरी में सड़ाते हुअे रखने के बाद अेक बंदीगृहके मुख्य जमादार को साथ में लेकर वह जेलर रफिअुद्दीनकी कोठरीमें भी अचानक आ पहुँचा।

जेलर साहब स्वतः जिसकी तनहाअी (Solitary cell)के सामने बगैर बुलाये जाते हैं, अुस कैदी का महत्त्व अितर दुर्लक्षित कैदियों में अेकदम बढ जाता है! अुन नगण्य सामान्यों में वह अेक गण्य व्यक्ति है, अैसी अुस कैदी को भी अहंकार की मात्रा का स्पर्श हो अुठताहै। वही अवस्था अुसकालमें रफिअुद्दीनकी भी हुअी। वह अितने सख्त पहरे में, तनहाअी में निरंतर सड़ता हुआ पड़ा था कि, यदि अेक चिड़िया भी अुस से बात करने के लिये आअी होती तो वह अपना भाग्य समझता—तब, अब तो खुद 'साब' अुसके पास. स्वेच्छा से आया हुआ था और आतेही पूछने लगा था,

" क्यों रफिअुद्दीन ! ठीक है न, तेरा ! कोअी शिकायत बिकायत ?"

" सरकार ! आपही मां-बाप हैं अब हमारे ! " रफिअुद्दीन बिलकुल नम्रता का बुर्का डालकर गिड़गिड़ाने लगा। " मुझे आपकी मर्जी होतो फाँसी पर चढा दीजिये, पर अिस तनहाअी में अिस तरह अकेले को बंद करके मत रखिये। अेक शब्द तक बोलने की चोरी ! मैं अिसी तरह अकेला अिस भयंकर अेकांत में और कुछदिन रहा तो पागल हो जाअूंगा पागल ! "

" अकेला रहने से तू अूबगया है ? " जेलर हंसा, " अितनाही है न, तेरे अिस तिलमिलाने का कारण ? अच्छा, जमादार, अिसे अेक बीबी ला दो साथ रहने के लिये ! हमारे अुस स्त्रियों के कैदखाने में जितनी चाहियें अुतनी बीबियाँ हैं ! "

जेलर मजाकिया है, यह देखतेही रफिअुद्दीन अेकदम पिघल अुठा; अुसमें भी बीबी की बात ! अुसका चेहरा तत्काल रंगीन हो अुठा और वह बोला,

" साब, अुसे स्त्रियों का बंदीखाना क्यों कहते हैं आप ? बहुतेरे कैदी तो अुसे बीबीघर कहते हैं; और हमारे में जो सच्चे रसिक हैं, वे तो अुसे कहते हैं " चिड़िया खाना "! पर साब, अुस चिड़ियाखाने की चिड़ियाको आप हम जैसों के हिस्से में भला कहां से आने देने लगे ? वह सामने बैठा है न, रस्सी कूटता हुआ, वह काला कुरूप कोयला ! वैसे पहाड़ी कौओं को ही आप देंगे वे चिड़ियाँ ! साब, सचमुच यह कैसा है भला, पक्षपात सरकार का ? वह पहाड़ी कौआ—वह कंटक—मेराही चलानी है, वह भी गलेकाटू, दंडित, आजन्म काले पानी का अपराधी ! मैं भी वैसाही हूँ। पर मुझे पांच बरसतक अिस कैदखाने में—अिस अकेली कोठड़ी में सड़ते हुअे पड़े रहने की सजा; और अुसे तत्काल कोठड़ी से बाहर निकाल कर रस्सी कूटनेका हलका काम दे दिया और कह दिया कि तुझे शीघ्रही बंदिलेखक के कामपर नियुक्त करेंगे ! अुसे लिखना-पढ़ना आता है तो मुझे भी तो कुछ आता है न साब ? अिस बाबूको लिखना आता है तो हमें भी लड़ना आता है ! पलटन में था मैं सरकार ! मर्द हूं मैं साब ! —पर हमें 'भयंकर' कहकर अिस काले पानी में तनहाअी में सड़ने के लिये डाल देते हैं, और बाबूओं को, अिन पहाड़ी कौओं को, अिन मेषपात्रों को " सुधारणीय " कहकर चुनकर अुन्हें शादी की

अनुमति दे देते हैं ! और अुस चिड़िया घर की किसी भी चिड़िया को पालने के लिये ले जाकर दे देते हैं ! यह बिलकुल अन्याय का नियम नहीं है क्या ! साब ! हम सिपाही लोग, दरवाजेपर के शिकारी कुत्ते ! प्राण-संकट में भी जो पोसेगा अुसके लिये जान देने में न हिचकनेवाले ! अैसों को कोठड़ी में सड़ा कर मारनेकी अपेक्षा सरकार मुझे किसीभी लड़ाअी पर भेज दे, शत्रुओं की तोपों के मुखपर बांध देवे ! सरकार के काम में मैं अपना सिर देने के लिये कभी हिचकिचाअूँगा नहीं देखलीजिये ! "

"अरे वाह ! बिलकुल ठीक मौके पर बतलाया तूने देख, यह ! सरकार को अेक सिर चाहिये ही था अिस वक्त ! वे जररेंवाले हैं न ? अिस-कालेपानी के घने जंगल में रहनेवाले राक्षस ? आदमियों के सिर के अंदर की खोपड़ी को निकालकर वे अुसे तराशकर, घिसकर, अुसमें रंगीन सीपियों को बिठाकर अैसा अेक सुरेख शरावका प्याला तय्यार करके देते हैं, सुनाहै कि यंव् ! वैसा अेक प्याला लंडन के प्रदर्शन में रखना है सरकार को ! अुन जररें वालों की ओर देता हूं भेज तुझे ! तेरा सिर अच्छा है, अुन लोगों को जैसी चाहिये वैसी खोपड़ी मुहय्या करने के लिये ! " साब जोर से हँसे !

"मेरा सिर ?अेह ! अुस सामने के पहाड़ी कौअे का—अुस कंटक का सिर ही अुस कामके लिये ज्यादह अुपयोगी साबित होगा । सिरके काम में बाबू लोगही अधिक अुपयुक्त होते हैं !—लचकीला सिर होता है वह, तराशने और घिसने के लिये, वैसे जड़ाअू काम के लिये !"

"पर वह अुस कंटक का सिर ब्राह्मण का है—है न जमादार ! ब्राह्मण की खोपड़ी सुनते हैं, भरी हुअी होती है, मगज भरा होता है अुसमें ! हमें खोखली खोपड़ी चाहिये तेरी जैसी ! हमें पुलिसवालों ने बतलाया है कि, अुस कंटक का खानदान बड़ा है ! कुलशीलयुक्त और बुद्धिमान् समझा जाता है और अुसका बाप सुनते हैं बड़ा भारी शास्त्री था ! "

"हां ना, केवल शास्त्री ही नहीं, अिस कंटक का बाप बड़ा दानी और परोपकारी भी था साब ! अुसके बापने अपने पास की अपरंपार सम्पत्ति अंतमें अेक अनाथालय को धर्मार्थ दे डाली थी ! "

"हं ? अैसी कितनी संपत्ति थी अुसके पास ? " आश्चर्य से जमादार बीचमे ही पूछ बैठा ।

"तीन मरे मुर्दे लड़के और अेक लड़की ! ! " रफिअुद्दीन हंसा ! भोले जमादार की फजीहत होगअी बेचारे की। रफीअुद्दीन आगे कहने लगा– " वे मारे लड़के अुसने अनाथालय को दे डाले ! अुन भुक्खड़ लड़कों का बडा भाअी यह कंटक है–यहां बाबू बनना चाहता है ! और वह बहिन कलकत्ते के मछली बाजार की बीबी बनके पान-पट्टी की दुकान चलाती है साब ! मैंने खुद अुसको देखा है, पान भी चबाया है अुसके दुकान का ! किधर का कुल और किधर का शील ! पोलिस को अिमने जो गपोड़ बातें बनाअीं वे अुन्होंने भी लिख मारीं और क्या, अैसे भुक्खड आदमी को आप बाबू बनाते और हमारे सरीखे सरकारके विश्वासू पलटनवाले मर्द शिपाहीओं को कुत्ते के मोतमे मरवाते है अिस कोठडीओ में ! "

" परंतु तुम काले पानी से पीछे भागा हुआ बंदीवान है ! यह भूलो मत ! "

" सरकार ! मेरा अक्षम्य अपराध है वह ! पर पश्चात्ताप से मेरा मन राख होगया है पहले ही ! अुस दुष्कृत्य से मैंने क्या कमाया ? पहले से भी सौ गुनी अधिक यातनाओं में मात्र आ गिरा पुनः अिसी कोठड़ीमें बेड़ियों से जकड़े हुअे हाथों पैरोंवाले बंदियों में आकर ! अब अगर आपने मुझे धकेल भी दिया तो भी कालेपानी पर से वापिस जाअूँगा नहीं मैं ! जो काम देंगे सो करूंगा । जब आप कहेंगे तब यही अपना घर दार बनाअूंगा ! पर शादी मात्र आप मेरी करवादें अं । यहीं अब मेरी मिट्टी पड़ेगी ! तथापि अिस अकेली कोठड़ी से मुझे आप बाहर निकालें यही मेरी आप से विनति है । "

" अच्छा, जमादार, कलसे अिस को तेल के कोल्हू का काम दो ! अगर तू ठीक ढंग से पूरा पूरा काम करता रहा, तो छह महीनों के बाद तुझे हलका काम दूंगा । पर देख, अपनी यह वाहियात बकवास करने की बदतमी– जी अब तुझे छोड़ देनी होगी ! किसी के साथ अवज्ञाका अेक चकार शब्द भी नहीं बोलना । और ध्यान में रख, अगर फिर कैदखाने का नियम तूने तोड़ा, मस्ती की, तो अेक अेक हड्डी तोड़कर निकालूंगा ! भाग कर जाने की कोशिश करनेवाले दंडित को अेकदम गोली से अुडा डालने का नया अधिकार

हमें अब दिया गया है ! पहले की सरकारी ढिलाअी के भरोसे पर पहले के फंदे में पड़ने की कोशिश न करना ! तेरा साबिका अब मुझसे है ! तेरे पहले के भयंकर अपराधों को अब मैं भूलता हूं; पर समाज को आगे से अुपद्रव न पहुँचाते हुअे कष्ट करके पेट भरेगा तो ! जमादार, अिसे अिस अकेली कोठड़ी में से निकाल कर भेजो कोल्हूपर और वहाँ कैदियों में हिलने मिलने देते जाओ दिनभर। रात को बंद करते जाओ यहीं।"

अुस कवच-कारागृह में प्रत्येक चाल (बैरक) के आंगनमें अेक छपरी बांधी हुअी थी। अुसी में वह पैरकोल्हू का काम चला करता था। अेक बड़े लकड़ी के कोल्हू से अेक जूअे जैसा बड़ा लकड़ी का डंडा जोड़कर प्रत्येक जूअे में दो आदमियों को जोता करते थे। कोल्हू में सरसों डालकर अुसमें से हरेक को शामतक ३० पौंड तेल निकालना पड़ता था। बैलों की जगह जोते गये वे आदमी अुस कोल्हू के अतराफ गरगर फिरते थे। अुनमें से अगर किसी ने कमी बेशी की तो अुन्हें बैलों की तरह हाँकने के लिये वॉर्डर नियुक्त किये रहते थे। अुस छपरी में अैसे कोल्हुओं की कतारकी कतार मौजूद थी और अुन सब पर निगरानी रखने के लिये अेक तांडेल–दंडितों में से ही चढाया हुआ अेक दुय्यम जमादार–नियुक्त किया हुआ था। अिस कामके कष्ट अितने अधिक रहते थे, कि पक्के दंडितभी अुस छपरीमें पैर रखतेही रुआँसे को आजाते थे। अुनमें से कुछ अकड़बाज बदमाश बहुत ही टालमटोल करने लगे तो शामको तेल पूरा निकालने तक अुन्हें अुसी तरह जोत कर रखा जाता था और वह भी कभी कभी तो रातके सात आठ बजे तक ! सांझका खाना भी रात को तेल पूरा करनेतक दिया नहीं जाता था ! अैसी सख्ती थी, अिसी लिये वे पक्के डाकू, हत्यारे, गुंडे वगैरे सधे हुअे दंडित थोड़े बहुत नियंत्रणमें रहते थे; अुनके हाथों से कुछ काम करवा लेना संभव हो पाता था। जो लोग दुर्बल अथवा बंदीगृहमें तो जो सद्वर्तनपूर्वक रहने लगते थे अुन्हें अुस कष्टके काम में सहसा जोतते नहीं थे। कमअजकम जोता न जाय अैसा प्रघात (प्रथा) तो था ही।

अिस कोल्हू के काम का रफिअुद्दीन को पहले ही से परिचय था और अिसलिये, वह काम न करके भी किसतरह पूरा किया जा सकता है, ये अंतस्थ खूबियाँ अुसे मालूम थीं। तिसपर वह कोल्हू ही नहीं, बल्कि अिस वक्त

अुसपर देखरेख करने के लिये नियुक्त वह दंडितों में से ही अेक दुय्यम अधिकारी (Convict petty officer), वह तांडेल, वहभी रफिअुद्दीन के पहले के कालेपानी के वास्तव्यकाल का परिचित निकल आया। तस्मात्, जेलर ने जो कड़ी से कड़ी मशक्कत समझकर अुसको दी थी, वही वह कोल्हू अुसको सुगम से सुगम काम लगा। पहलेही दिन तांडेल के हाथमें अेक 'हरिद्रा-खंड' रफिअुद्दीन ने हाथ हिलाते समय चुपचाप पकड़ा दिया। तत्काल अुनकी पुरानी दोस्ती ताजी हो गअी और रफीअुद्दीन दिन भर पालथी मारकर गप शप लड़ाते हुअे पड़ा रहने लगा। अुसकी जगह तांडेल ने अेक थप्पडखाअू दंडितको चोरीसे कामपर लगाया। शाम होने के अंदर अंदर रफिअुद्दीनके हिस्सेका तेल पूरी तरह से मापकर दिया जाने लगा। अिस तरह चार पांच दिन बीत गये।

अिस दंडित तांडेल के हाथ के नीचे जो दंडित वॉर्डर थे, अुनमेंसे जोसेफ अुसके बहुत अधिक भरोसे का हो गया था। क्योंकि तांडेल को वह बड़े बड़े लोटे दही के भर भरकर चुराकर ला दिया करता था। कैदियों को अठवाडे (हफ्ते) में दो दफा दही मिला करता था। वह बँट चुकनेके बाद अिस बैरक के कैदियों के आगे से सारा दही यह जोसेफ वॉर्डर डरा धमका कर निकाल कर लेजाया करता था और वह तांडेल को दे दिया करता था। और वह अुस छपरी की आड़में बैठकर गटक जाया करता था। अिस जोसेफको जेवर और पैसे हज़म करने के अिरादे से अपनी दोनों छोटी छोटी सालियों को भुलावे मेंलाकर खाने के लिये घरपर लाकर अन्न में विष देकर मार डालने के घोर अपराध में आजन्म काले पानी की सजा हुअी थी। दस बरस हो चुके थे। अिस किस्म की अुस तांडेल की और अुस जोसेफ वॉर्डरकी जोड़ी थी। अुस बैरक के कोल्हुओं में जोते हुअे चालीस पचास कैदियों को ठोंखते रहने का काम तथा जिसभी अुपायसे हो सके तेल पूरा पिसवा लेने की जवाबदारी इस जोडी पर थी। जो लोग पैसे चटाते थे या अत्यंत दंडम होकर भी तांडेल के दास थे अुन्हें साफ तौर से बिठाये रक्खा जाता था और अुन लोगों का काम-अुनमें से जो सद्वर्तनी गो-स्वभाव, सहनशील होते थे अुनकी ओर से मरते दम तक मशक्कत करा कर पूरा करवाया जाता था।

तांडेल के सारे छद्मकर्मों में हस्तभार लगाते रहने की वजह से जोसेफ पर अुसका विश्वास बैठ गया था; अतः वह जोसेफ से कुछभी छिपाकर रखता नहीं था और रखना आसानभी तो नहीं था। रफिअुद्दीनने जोसेफ को भी जरूरत के मुताबिक तमाखू और मौका पड़ने पर राअीके बराबर अफीमकी गोली भी देकर आत्मीय सा बना लिया था। परंतु तांडेल को कितना भी प्रसन्न करें, वह अपने को वॉर्डर से अूपर की पदवृद्धि प्रदान कर के अपनातांडेल-पद नहीं दे सकता—वह सिद्ध करने के लिये जेलर की ही कृपा प्राप्त करनी होगी यह जोसेफ भूला नहीं था। अिस लिये जेलर की कृपा प्राप्त करने का यत्न जेसेफ निरंतर कर रहा था। और अुसका साधन कैदखानों में बढती का जो बहुधा अेक ही 'तुरतदान महा कल्याण' देनेवाला साधन हुआ करता है, वह—चुगली! अिसके लिये, अपने छद्मी वर्तन का बहुत कुछ संबंध जिसमें न आये, अपना नुकसान जिसमें बहुत कुछ न हो, अैसी अुसको कोल्हू की छपरी में के अुस तांडेल के अनेक दुष्कृत्यों की चुगलियाँ यह जोसेफ किसी को भी पता न चले अिस सफाअी से मौका साधकर जेलर को चुपचाप कह आया करता था! 'शठं शाठ्यं समाचरेत्' के न्याय से शठों के राज्य में व्यवस्था रखना आवश्यक होने के कारण जेलर साहब भी अैसे गुप्तचरों को हमेशा अपने हाथों में रखा करते थे। अुनके द्वारा लाअी गअीं चुगलियों में से अनेक दुष्कृत्यों को अपरिहार्य समझकर हजम कर जाते थे। जो बिलकुलही अक्षम्य अपराध होते थे, अुन्हीं को वे स्वयं जाकर अचानक पकड़ते थे; पर अिस सफाअी के साथ कि जोसेफसरीखे चतुर गुप्तचरने ही वह चुगली की है, यह कैदियों के ध्यानमें सहसा न आवे, ये लोग गुप्तचर हैं, यह बाहर न फूटे। नहीं तो अुन के समक्ष अुनपर विश्वास करके कोअी भी किसी किस्मका दुष्कृत्य नहीं करेगा।

आठ दिनके बाद दो पहर को बारह बजे, लेख्यालयके सारे लेखक, गणक, घर गये हुअे थे, अुस समय जेलर असमयमें अकेलाही लेख्यालयम आया। 'सिपाही' कहकर पुकारते ही अेक पहरेपर का सिपाही अंदर आया! "जोसेफ वार्डर को बुलाव!" अैसी जेलरकी आज्ञा होतेही सिपाही बंदी-

११

गृहमें गया और ज़ोसेफ को बुला कर जेलर के पास भिजवा दिया तथा स्वयं पहरेपर बाहर आकर खड़ा होगया।

"क्यों जोसेफ?" जेलर पूछने लगा, "कोल्हू का तेरी चाल की छपरी के अंदर कैसा क्या चल रहा है काम? वह नया दंडित रफिअुद्दीन कोल्हूका अपने हिस्सेका तेल पूरापूरा पीस कर दे देता है क्या? अुसका किसीके साथ कुछ सूत-अूत जमता है क्या?"

"साब, अुसका तेल वह पूरा पूरा माप कर देता है—"

"हुं? पहले दिन से पुरा काम करता है वैसा निठल्ला दंडित भी? सच बोल, हिचकिचा मत!"

"साब! तेल पूरा पूरा मापकर देता है वह; पर वह सब वह स्वत: नहीं पीसता। आपकी राञ्ड के वक्तकी जेलमें फेरी लगाने के वक्ततक वह जैसे तैसे कोल्हू खींचता है, पर अुसके बाद वह बैठा रहता है, और अुसका काम कोअी दूसरा दिनभर कोल्हू चला कर पूरा कर देता है। तांडेल ही अुसके बदले आदमी लगाता है।"

"क्या?" जेलर संतप्त हो अुठा, "तूने यह बात मुझे अबतक न बताते हुअे दबाकर रक्खी थी? तब मैंने तुझे यह सब देखने के लिये काहेको रक्खा है?"

"माफ कीजिये साब! पर अिससे पहले, अन्य कुछ दंडितों को अिसी तरह बिठाये रखकर और बदले में आदमी लगाकर तांडेल काम करवा लेता है, अिस बात की सूचना गुपचुप तौरपर मैंने आपको दी थी, अुस समय आपने अुसे नजरअन्दाज कर दिया था; अिसी लिये अिस मर्तबा वही बात बताने के लिये मैं डर गया।"

"किस बात को नजरअंदाज करना है, और किस बात को नहीं वह सवाल मेरा है। वास्तवमें जो दुर्बल या सुधारणीय है, अुन्हें अनुशासन में थोड़ी ढील दे भी दी तो भी कुछ बिगड़ता नहीं। काम पूरा होगया तो बस। पर यह रफिअुद्दीन अनेक अधमाधम अपराधों का अपराधी; तिसपर काले पानी से भागकर गया हुआ, अुसके साथ किसी का भी सूत जमना ठीक नहीं। बता, तांडेल अुसे क्यों बिठाकर रखता है? वह क्या रफीअुद्दीन से दबता है?"

"सरकार, वह बात मुझे अभी पक्की तरह से मालूम नहीं है। नहीं तो वह गुप्त समाचार मैंने आपको पहले ही दे दिया होता। पर हो न हो रफि-अुद्दीन ने तांडेल को पैसा चटाया होगा!"

"पैसा? रफिअुद्दीन के पास? अुसकी तलाशी सांझ-सबेरे कसकर स्वतः जमादार लेता है न? मेरा सख्त हुक्म है वैसा!"

"तलाशी कसकर लेता है जमादार! पर रफिअुद्दीन के पास पैसे हैं अवश्य, कहीं न कहीं छिपाये हुअे। अन्यथा स्वतःके पैसों से तांडेल अुसके लिये तमाखू और अफीम चोरी छिपे काहे को मँगाता!"

"हां, अुसीमें से कुछ तमाखू और अफीम तुझे भी वे लोग चटाते होंगे, तभी तूने अुसकी चुगली मेरे से नहीं की!"

"देव की शपथ साब! मैंने छुआ नहीं तमाखूकी चुटकी को भी अुनकी। पर तांडेल को वह पैसा देता है, अिसका पक्का सबूत मिले बगैरे अगर मैं आपको सूचना देता तो आपही मुझे खोटा ठहराते–अिस लिये मैंने अुस पर सिर्फ अपनी आंख गड़ा रक्खी थी। तांडेल के पेट में घुसकर मैं अुस बात का शीघ्र पूरा पता चलाअूंगा. साब! बहुधा कलही अुनका कुछ लेन देन होने वाला है फिर, अैसी भाषा मैंने छपरी की आड़ में से सुनी है। साब, पर मुझे तांडेल का डर लगता है, मैं सिर्फ वार्डर हूं! यदि मुझे आप, धनी-साहब, तांडेल कर देंगे न––"

"तो तू अुस तांडेल से भी बढकर पैसेखाअू और दुर्जन निकलेगा! अच्छी बात है तू प्रमाणसहित रफिअुद्दीन से पैसे लेते हुअे अुस तांडेल को पकड़वा दे, किंवा रफिअुद्दीन पैसे कहाँ रखता है, अिस बातही का पता चला दे; तब देखूंगा तेरी बढती की बात क्या है सो! जा, लग अपने काममें। पर ठहर, तुझे मैंने अकेले को बुला भेजा है, यह जान कर अिन कैदियों को तेरे बारे में शुबह पैदा हो जायगा, गुप्तचर है अिस बात का! अितनी बातके लिये मैं तुझे यह खुल्लम खुल्ला काम देता हूँ सो लेजा। तांडेल से कह कि, तीन चढाकर रवाना करने के अभी के अभी भरकर रखदे, मद्रास की नावपर चढाकर रवाना करने के हैं अेकदम! यह ले चिठ्ठी! हं, जा! अितनेही के वास्ते बुलाया था अैसा जाकर बोल!"

प्राय: कैदखानों में, दुपहरिया में बारह से दो बजेतक का समय सबसे बढकर ढिलाअी का रहता है। अूपरके सारे अुत्तरदायी अधिकारी अपने अपने घर गये होते हैं। अुस वजह से सिपाही क्या, और जेलके अधिकारी (Convict officer) क्या, अनुशासन की गांठ खोलकर पैर खुले छोड़ पसार कर बैठे रहते हैं। सर्वथा अपरिहार्य स्वरूप की व्यवस्था और कामही चलते रहते हैं।

अिस समय हमेशाकी तरह जेलर अपने अुस कक्ष--कारागार के महाद्वारपर विद्यमान बंगले की खिड़की में खड़ा था। अुतने ही में जोसेफ वार्डर नीचे से अुसकी तरफ आता हुआ अुसे नजर आया। अुसे जेलरने अूपरही से बंगलेपर चले आने की अनुज्ञा दी। जोसेफ को पहरेपर के सिपाहीने बगले में जाने दिया।

जाते ही जोसेफने बंदगी करके कहा---" साब ! अभी के अभी अगर आप चलें तो प्रमाण सहित तांडेल को पकड़ना संभव हो सकेगा। रफिअुद्दीन ने सोनेकी अेक गिनी तांडेल को दी है। वह अपने कुड़ते की नीचे की पट्टी में विद्यमान गुप्त जेबमें डाल कर तांडेल ने सीकर रक्खी है। रफिअुद्दीन के पास और दो गिनियाँ तो अुसके शरीरपर ही हैं। तमाखू और अफीम तांडेल ने अुसे लाकर दी है, वह भी सरसों के थैलेमें अिस वक्त के लिये ठूंसकर रखकर वे दोनों छपरी के पीछे के हिस्से में आड़ लेकर निश्चित रूप से अूंघते हुअे पड़े हैं। मैं कपड़े धोने के बहाने से बैरकमें से बाहर आया हूं ! जब देखा कि कहीं कोअी नहीं है, तो आपकी तरफ चला आया। पर मालिक ! मेरा नाम मात्र मत बताअियेगा। नहीं तो मेरा सिर ही फोड़ डालेंगे अुनमें से कुछ कैदी मुझे पकड़कर कहीं न कहीं ! पर आप मात्र जल्दी जाअिये ! "

" ठीक जा तू। ये सारे पकड़े गये तो तुझे बढती मिलेगी ! तू अपने काम पर अुस छपरी में जाकर बैठ जा चुपचाप ! "

जोसेफ के जाने के बाद जेलर ने जमादार को अपने साथ ले लिया और हमेशा का नीचे का रास्ता छोड़कर अूपर के टॉवर की तीसरे मंजिल के घेरे में आकर और सारी बैरकों के दरवाजे जो अुस टॉवर में गोल रूप में लगे

हुअे थे, अुनमें से रफिअुद्दीन के रहने की बैरक का वह तीसरी मंजिल का दरवाजा अेक के बाद दूसरा खोलता हुआ वह जेलर अचानक अुस छपरिया के आंगन में नीचे जा अुतरा। किसी के देखने न देखने से पहलेही वह अुसके पीछे की आड़में चला आया; जोसेफ के कथनानुसार रफिअुद्दीन और तांडेल दोनों अूंघते पड़े हुअे हैं, और रफिअुद्दीन के कोल्हूमें अेक दूसराही बेचारा कैदी–जिसे तांडेल ने डरा धमकाकर लगाया था वह– पैरका कोल्हू रुआँसे को आया हुआ, पसीना पसीना होकर फिरा रहा है, अैसा दिखाअी दिया!

"तांडेल!" जेलर गरजा!

तड़ से दचक (घबरा) कर तांडेल अुठा, पैर लटपटा गये, मुंह रोना सा हो गया, हाथ जोड़कर खड़ा हुआ।

"तेरे पास कोअी नियम विरुद्ध वस्तु है?–नहीं? अुस कुड़ते में क्या सी रक्खा है?– कुछ नहीं? जमादार, लो अिसकी तलाशी। अुस कुड़ते की वह नीचे की पट्टी फाड़ो!"

जेलर अुस जमादार के साथ यह बोलही रहा था कि अुतने में रफि-अुद्दीन अुलटे पैरों निकल कर अपने कोल्हू की तरफ जाने लगा।

"ठैरो! अे बंदीवान! रफिअुद्दीन! ठैरो! पकड़ो अुसको!"

दो तीन वार्डरों ने, जेलर की आवाज सुनी अन सुनी सी करके अुसी तरह निकल कर छपरी में जाने की कोशिश करनेवाले रफिअुद्दीन को रोका। वह खड़ा रहा; पर डरके मारे भीगी बिल्ली की तरह नहीं, बल्कि अेक आध सरकस में के बिगड़े हुअे बाघ की तरह–अुसकी सारी हिंस्रवृत्ति शरीर में अुफन आअी थी–आँखें दिखाते हुअे, अकड़के साथ अुन रोकनेवाले वॉर्डरों के हाथों को बीच बीच में झटका देता हुआ!

जमादार ने तांडेल का कुड़ता निकाल कर पट्टी फाड़ी; अेकदम खल्से अेक सोने की गिनी नीचे गिरपड़ी!

"अिस रफिअुद्दीन की भी तलाशी लो!" जेलरने हुक्म दिया। जमादार सामने आया। जेलरकी आड़ में थोड़ासा जमादार आतेही, रफि-

अुद्दीनने अपनी पेटगोली में (कमर के पास के कसे हुअे कपड़े की लपेट में) खोंसी हुअी कोअी चीज कमर के पीछे हाथ लेजाकर चालाकी से निकाल ली। यह देखते ही जमादार चिल्लाया,

"साब ! साब ! अिसने पेटगोली के पैसे हाथमें लिये हैं, गिनियाँ हैं साब, अिस्के हाथमें ! अिस, अिस हाथमें ! पकड़िये, यह हाथ, यह !"

जमादार और वॉर्डर हाथ के साथ झगड़ही रहे थे कि, अुसी बीच, रफिअुद्दीन ने अेक गिरकी (चकफेरी) मारकर जेलर की तरफ पीठ होते ही हाथमें की वह चीज मुंहमें डाल ली !

"मुंहमें डाल लीं गिनियाँ अिसने ! हां, हां, मालिक, बिलकुल गिनियाँ ही ! मैंने देखीं ! अब अिसके मुँहमें हैं ! " जमादार और वॉर्डर प्रतिज्ञा-पूर्वक चिल्लाये।

जेलर चिल्लाया, "मुँह खोल ! रफिअुद्दीन, खोल, मुँह खोल !"

अेक दो दफा जमादार के हाथ को झटका मारकर गर्दन नीचे अूपर करने के बाद रफिअुद्दीन स्पष्ट शब्दों में ठसक कर बोला,

"क्या निष्कारण जुल्म यह साहब, हम बेचारों पर ढाये जारहे हैं आप अिन झूठे नीच आदमियों की चुगलियाँ सुनकर ! यह देखिये, मुँह खोलता हूँ ! है क्या कुछ अंदर ? बोलना भी संभव था क्या मेरे लिये यदि मुँहमें सोनेकी खान होती तो ! "

मुँह खोलकर रफिअुद्दीन जमादार को पागल बनाने लगा, जेलर के सामने मुँह खोलकर दिखाने लगा। "जीभ अूपर अुठा, पीछे मोड़, यह जबड़ा ठीकसे खोल, वह खोल ! " जेलरने जैसा कहा, वैसा रफिअुद्दीनने किया। पर मुँहमें कुछ न निकला !

"क्यौं, जमादार, किधर है अिसके मूँहमें गिनिअाँ ? " जेलरने पूछा।

शरमाया हुआसा जमादार थोडा हिचकिचाता हुआ, पर फिर वही कहने लगा,

"कुछ भी कहिये, साब ! अिसके मुंह में कुछ न कुछ था जरूर ! "

"कुछ न कुछ तो मेरे मुँहमें थाही, हैभी—पर वह 'कुछ' था मेरे सोनें की तीलियाँ जडे हुअे दांत ! वे चमकते वक्त तुझ सरीखे भुक्खड को

सोने की तरह मालूम पडे होंगे, और आज नहीं तो कल रे दुष्ट, तेरी नरडी (गलेकी नली) को वेही फोड़े बगैर नहीं रहेंगे ! "

रफिअुद्दीन निष्प्रतिरुद्ध अवस्थामें जमादार को गालियाँ देने लगा ! यह दुर्जन बिगड़ अुठा है, अैसा देखतेही जेलर गरजा,

"बेड़ियाँ ठोको अभी की अभी अिसके हाथों में ! और पकड़ कर रक्खो अुसे यहाँ ! गर्दन की हिसडफिसड कर रहा था; संभव है, निगल लिया हो अुसने लोगों को समझने न देते हुअे कुछ ! "

रफिअुद्दीन के हाथ में बेडियाँ पहनाकर सिपाही अुसे पकड़कर रखही रहे थे, अुतने में जेलर छपरी में गया और अुस कोने के सरसों के थैले को खोलकर देखा, तो अंदर अेक बड़ी पुलिया और अुसीमें अफीम की डिबिया भी मिल गअी !

जोसेफ का दिया हुआ गुप्त समाचार पूरी तौरपर सही था। दूर से जोसेफ यह सब अपरिचित की तरह देख रहा था। पर अितनी गडबड़ी में, मुख्य अपराधी रफिअुद्दीन को कैंची में पकड़ने लायक कुछ भी मिल नहीं पाया था। तो भी हजारों में अेकाध कैदी अितना बेडर और कुकृत्यशील होता है कि पकड़े जाने की अपेक्षा चीज को निगल कर अविद्यमान्वत् करने से बाज नहीं आता, अिसके दो तीन अनुभव जेलर को प्राप्त हो चुके थे। अुनका विचार करके अुसने रफिअुद्दीन का पीछा करने की सोची। तांडेल को तत्कालार्थ पदच्युत करके अुसपर अुसने अभियोग लगाया और डॉक्टर को बुला कर रफिअुद्दीन को अुलटी की दवा पिलाने के लिये कहा।

हथकड़ियाँ डालकर कोठी में लेजा कर, रफिअुद्दीन के सामने अुलटी की दवा रखते ही अुसने वह प्याला दीवार पर पटारकर दे मारा। वह पूरी तरह से बवरा अुठा था। " जबर्दस्ती पिलाओ अुसे " जेलर गरजा। वॉर्डर, जमादार, सिपाही आगे बढे। खींचातानी करते हुअे, लात मुक्के खाते और मारते, रफिअुद्दीन अंत में नीचे पड़ गया। अुसके हाथ पैर कसकर दबाके मुँहमें नलकी घुसेड़ अुसमें से अेकबार अुलटी की दवा अुसके गले के नीचें अुतारही दी गअी। पहरा बिठा दिया गया। सांझतक दो चार अुलटियाँ हुअीं। पर अुनमें से बाहर कुछ भी नहीं पड़ा। जेलर भी थोड़ा सा सकुचाया !—

क्यों कि रफिअुद्दीन को पैसे निगलते हुअे अुसने खुद नहीं देखा था। रफि-अुद्दीन तो 'जमादार ने ही कुभांड किया है, अैसा कहकर धड़ाधड़ बिलकुल गलीज गलीज गालियाँ जमादार के नामपर दे रहा था। पर पहले बार की तलाशी लेनेवाले वॉर्डर भी 'अुसने गिनियाँ निगली हैं निश्चित!' अिस तरह शपथपूर्वक कहने लगे। डॉक्टर की संमति भी 'रेच दिया जाय, कोअी चिंता नहीं, अुलटे पेटमें गिनियाँ अटक गअीं तभी दंडित के प्राणों को खतरा है' अैसी पड़ी। अैसी हालत में फिर रफिअुद्दीन को बलपूर्वक नीचे गिरा कर मुंह खोलकर रेच (दस्त) की दवा पेट में रहने तक पिलादी। और अुसकी कोठड़ी में हमेशा प्रत्येक कैदी की तनहाअी में जितनी रखी जाती है, अुस से बड़ी अेक कुंडी रखकर पहरा बिठा कर, कोठरी को ताला ठोक दिया गया। डॉक्टर, जेलर प्रभृति सारे लोग रातकी पद्धति के अनुसार गिनती लेकर बैरकों को ताले ठोककर अपने अपने घरकी ओर चले गये।

वह रात रफिअुद्दीनने अत्यंत असह्य और अस्वस्थ अवस्था में गुजारी। रेच होते समय पेट के दूखने की वजह से शरीर को जो अस्वस्थता प्रतीत होती है, वह तो थी ही; पर अुसके अूपर अुस दिन जो जुल्म और अन्याय की भरमार की गअी थी अुसकी याद आतेही असके शरीर की संतापसे खीलें खीलें हो रहीं थीं। अुसने जग पर पहले या अब कोअी जुल्म किया था क्या? अथवा किसी दूसरे को कोअी अुपद्रव दिया था क्या? अैसा प्रश्न आजतक अुसके सामने कभी अुपस्थित तक नहीं हुआ था। जुल्म का मतलब सिर्फ अुसे कष्ट पहुँचने लायक लोग जो काम करें वही। जुल्म की सिर्फ अितनी ही कल्पना अुसके मास्तिष्क में थी। अुसकी अिच्छा के खिलाफ दूसरे लोग जो करें वह अन्याय! अिससे अधिक अिन शब्दों का अुसके कोशमें कोअी अर्थ ही नहीं था। अुस जमादार ने यदि अुसे गिनियाँ छिपाते हुअे न देखा होता तो यह सब काहे को हुआ होता? देखकर भी यदि अुस जमादार ने कहा न होता तो सारा निभ जाता! तिसपर भी, जेलरने अुधर तवज्जह न दी होती और अुसे अुसकी मर्जी के अनुसार बर्ताव करने देता, तो भी क्या बिगड़ने वाला था? अर्थात् वैसा न करके, वह जमादार देखे, कहे और जेलर अुसे सतावे, अुसकी तमाखू-अफीम तोड़े, अुसकी गिनियाँ पकड़ने की गुंडगिरी करे, यह कितना दुष्टपना अुसका! कितने अन्यायी और जालिम हैं ये सारे!

'मुझ अकेले को गिरा दिया नीचे, पैरों से कुचला और दवा पिला डाली '— बारबार यही विचार अुसके तप्त और बवराये हुअे मस्तिष्क में निरंतर चक्कर मारने लगे। वह पूरी तरह संतप्त हो अुठा ! अुस जमादार और अुस जेलर का गला घोंटे या खून पिये। पर क्या अुपाय ? तोभी बदला तो कुछ न कुछ लेनाही चाहिये। कोठड़ीमें बंद करके जाते समय जमादार ने अुसके हाथ की हथकडियाँ निकाल डाली थीं। पर केवल हाथ से क्या होगा ? पर हां रे हां, लाहोर के कैदखाने में अुस नूरमहंमद ने पागल का स्वांग भरा था, तब अुसने ठीक अैसाही किया था नहीं ? बस, बस, अुसने पागल का स्वांग रचने के लिये जो कुछ किया था, वही मैं बदला लेने के लिये करूंगा। यंव् रे यंव्, आने दो अब अुस जमादार को मेरा दरवाजा खोलने के लिये सबेरे ! जेलर और वह डॉक्टर भी अुसी वक्त यहाँ आजायँ तो कितना अच्छा हो, रेच देते हो क्यों सा..लोगो मुझे ! हः हः हः ! अैसी अुड़ेगी अेकेक की कि, यंव् रे यंव् ! '

अैसा बदला लेने का अुसने जो निश्चय किया था और योजना बनाअी थी, वह क्रियामें परिणत होतेही अुसके अपमान की पूरी भरपाअी हो जायगी और अुन छलवादी जमादारादिकों की जो दुर्गति होगी, अुसका, जैसे वह अभी होगअी हो, अैसा चित्र अुसे दीखने लगा ! वह पेट पकड़कर खुशी के मारे अपने ही आपमें हँसने लग गया।

कैदखाने में हजारों में से कोअी अेक दंडित जब कभी अैसा कोअी अुलटा अुलटा पदार्थ निगल बैठता है और अुसे रेच की दवा जबर्दस्ती देनेमें आती है, तब सबेरे अुसका कमरा अधिकारी लोग खुद आके खोलते हैं, और भंगी की ओर से अुसकी झूंडी की तलाशी लेने में आती है। वह पदार्थ बाहर पड़ा या नहीं यह निरीक्षने में आता है। अुसके अनुसार भंगी को लेकर जमादार और दो वॉर्डर सबेरेही रफिअुद्दीन के कमरे के सामने आये। सींखचों के दरवाजे का ताला खोलकर जमादार ज्योंही अंदर पैर रखता है, त्योंही—

रफिअुद्दीन ने अपना पानी पीने का टमरेल अुठाकर फड़से जमादार के मुँहपर दे मारा ! अुस टमरेल ही में अुसने रेच किया हुआ था। वह सारा

मैला जमादार के मुँहपर, आँखों में, मूछों में; कपड़ोंपर फवारे की तरह पड़कर, निथरकर, जमादार के शरीर पर मैलाही मैला होगया, दमघुट गया, अुलटी आअी! जमादार अेकदम "शी: शी: शी: !" करके चिल्लाया।

वह अघोरी रफिअुद्दीन "हा:, हा:, हा:" कर के जोर से खिलखिलाने लगा।

"मेरे पेटका सोना चाहिये था न तुझे? रे पाजी, रे भंगी, ले वह सोना! खा, पी! मढ डाला देख, अुस सोने से मैंने तुझे! हरामी ...."

गालियों के कीचड़ की बौछार करते हुअे रफिअुद्दीन अेक कोने का आश्रय लेकर, वह टमरेल हाथमें लेकर, आसन जमाकर बैठ गया!

लज्जा से, गुस्से से, मैला मैला हुआ हुआ, गडबडाया हुआ जमादार चिल्लाया,

"देखते क्या हो! वॉर्डर, घसीटो अुस सूअर को आगे!"

वॉर्डर आगे दौड़े; पर अुसके शरीर पर जाने ही वाले थे कि, ठिठक गये! अितने आदमी होकर भी अुसके शरीर पर कोअी हाथ नहीं लगाता था।

क्यों कि, अुस निर्लज्ज पशुने कोअी छूने का साहस न करे अिस हेतुसे अेक विलक्षण गलीज युक्ति पहलेही ढूंढ निकाली थी!—अुसने अपना भी शरीर अपने ही मैले से लुबड़ा कर रखा था! अुपासनी महाराजका ही मानो गुरु-मंतर लिया हुआ था अुसने! वे वॉर्डर अुस मैले से जुगुप्सायुक्त होकर मैले को न छूने की भावना से रफिअुद्दीन के शरीर के साथ लिपटने से कतराने लगे! संताप के आवेश में अपना ही डंडा रफिअुद्दीन के सिर पर दे मारने की अिच्छा से जमादार दौडा; पर जेलर की आज्ञा के बगैर कैदी का सिरबिर फूट गया तो वह ही संकट में पड़ जाय, अिस ख्याल से अुसने अपने गुस्से को फिर रोक लिया! केवल हाथों से रफिअुद्दीन अुसके अकेले के बस में आजायगा, अैसा अुसे लगता नहीं था, अिस लिये वह फिर ठिठक गया।

जेलर आही रहा था; अितने में अिस चीखने पुकारने को सुनकर वह सिपाहियों के साथ दौड़ता हुआ ही वहाँ आया। वह प्रकार देखते ही क्रोध से लाल हो गया और सीसे की भरी मूंठ वाली अपनी काठी अुसने रफिअुद्दीन के सिर में बिठा दी। रफिअुद्दीन ने भी टमरेल के भीतरका मैला जेलरके अूपर छिड़क दिया। अुसके साथ ही, जमादार, सिपाही वगैरे सभी टूट पड़े! दन-दन

डंडे पर डंडे पड़ने लगे और रफिअुद्दीन नीचे गिर पड़ा; बैल की तरह जोर जोर से डुरकियाँ मारने लगा—

“ मारो मत् ! साब, तुमको बंदीवान् को मारने का हुक्म नहीं ! बंदी गृह का नियम तोड़ते हो तुम ! अन्याय, अन्याय ! गले काटू ! कसाअी ! डरपोक हो तुम सारे ! ”

“ रे डुक्कर (सूअर) ! ” जेलर गरजा, “ बंदीगृह के नियम तुझे अब याद आते हैं क्या ? लोगों की गर्दनें कचाकच कुचलकर कतरनेवाले राक्षस, तेरी गर्दन मरोड़ी जातेही सूझने लगा अब न्याय और अन्याय तुझे अं ? ‘ गले काटू ’ यह गाली है मालूम पड़गया न तुझे ? ठोको और ! मर भी जाय तो चिंता नहीं ! पशु ! मैले के अंदर का कीड़ा ! ”

रफिअुद्दीन अब असलियतमें नरम पड़गया ! वह हांफने लगा ।

भंगीने रफिअुद्दीन की कूंडीमें पड़ा हुआ रेच जेलर के सामने अुँडेल कर देखा । अुस मैलेमें रफिअुद्दीन के पेटमें से कोअी अंदर निगला हुआ पदार्थ बाहर आया है क्या ? अुसमें अुन्हें कुछ मिलेगा, रफिअुद्दीन को अिसका डर ही नहीं था । क्यों कि, अुसने गिनो बिनो कुछ निगलीही नहीं थी असल में! जेलर की फजीहत हुअी देखकर अुलटा वह आनंदित हुआ । वैसी घायल हालत में भी वह लापर्वाह सूअर गँदले विनोद से अुपहँसा —

“ क्या ? सोना ही सोना पड़ा है न पेटमें से मेरे ? लो, लो यह बाँटकर तुम सभी, जितना मर्जी अुतना ! ”

डॉक्टर भी परेशान होगया ।

“ हमने निष्कारण अिसे त्रास दिया । पर्यवेक्षक महाशय (सुपरिंटेंडेंट) गुस्से में तो नहीं न आयेंगे ? अिसने कुछ निगला था अैसा नजर नहीं आता ! ” डॉक्टर बाहर आकर जेलर से अंग्रेजीमें बोले ।

जेलर ने कहा, “ वह दायित्व मुझपर ! तुम्हें मनुष्यों के तबीयत की परख आती है, राक्षसों और सूअरों की नहीं ! जेलखाने का जग कैसा होता है, अिसका तुम्हारे सरीखे अिस विभाग में नवीन ही नौकरी करने के लिये आये हुअे डॉक्टरों को पूरीतरह से अनुभव आया हुआ नहीं है ! अिसे फिर अेकमर्तबा अुलटी की दवा देनीही चाहिये ! ”

"क्या? अुलटी की? अुसका कोअी अुपयोग नहीं! अिसके पेटमें पैसेबैसे नहीं होंगे। होते तो पहली ही मर्तबा बाहर आगये होते!"

"पेटमें नहीं ही हैं! पर--ठहरिये; पुनः निश्चित रूपसे देखकर बताअूंगा।" अैसा कहकर जेलर जमादार से बोला, "हं, अिसको हथकड़ियाँ पहनादो, भंगियों के हाथ से धोकर निकालो"।

यह वाक्य जेलर मुँह से निकालही रहा था कि रफीअुद्दीन चिढ गया--

"क्या? भंगियों के हाथों से धुलायेगा मुझे? मैं क्या पैखाने का फरश हूं? मेरी जात भ्रष्ट करेगा?. भंगी को जान ले लूंगा। तू साहब नहीं है! किसी भंगी के ही पेटका --"

यह अपशब्द सुनतेही फिर सबने अुसे लातों और घूंसों के नीचे ले कुचला और जेलरने स्वतः अुसके गलेकी पसली के पास अितने बल से दबाकर चूंटा कि रफिअुद्दीनने अेकदम अेक जोरकी चीख फोड़ी! डॉक्टर घबरा गया, आगे आकर जेलर का हाथ पकड़ अुसे अेक ओर लेगया और समझाने लगा--

"यह क्या? गुस्से के आवेश में मार ही डाल रहे थे न, आप गला दबाकर अुसे जानसे! अुलटासुलटा मामला हो जायगा समझे, अेक आध वक्त!"

"अुलटा तो नहीं, मगर सुलटा मामला तो जरूर हो गया है!" जेलर हँसा। "डॉक्टर, अिस आदमी के गले में 'खोबडी' (खोखली जगह) है, और वह भरी हुअी है, अिस में शंका नहीं। मैंने अिसी लिये गला दबा कर देखने का मौका पानेकी कोशिश की थी समझे? मैंने ज्योंही अुस खोबड़ी को दबाया, अुसके अंदरकी वस्तु अेकदम अुसे चुभी, अिसी लिये वह चिल्ला कर पुनः पुनः अुस वस्तु को निगलते हुअे दबाकर धरता था मुँह के स्नायुओं से! अुलटी की दवा दो अेक जोरदार--बस खोबड़ी खुली ही समझो अिसकी।

"पर 'खोबड़ी' का मतलब क्या है?" डॉक्टर ने जिज्ञासा की।

"अुसका विवरण थोड़े में अिस प्रकार है--पशु रोमंथ करने के लिये गलेकी जिस खोखल में चर्वण संगृहीत करके रखते हैं, वह खोखल मनुष्य भी अपनी अुसी जगह निर्माण कर सकता है। अत्यंत सधे हुअे अपराधी गुरुपरंपरा से अिस विद्यामें प्रवीण होते हैं। मुँहमें अेक सीसेकी गोली, अुसमें मांसदाहक अेक रासायनिक पदार्थ लगाकर वे लोग रख लेते हैं। वह गलेकी कानकी

बाजू में बैठकर काफी दिनोंतक निरंतर बनी रही कि, भारी होनेसे मांसमें अुतरते अुतरते अुस खोखल में छेद बनाती हुअी अंदर जाती है। बहुतों से यह काम पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता। अुनका छेद कम गहरा रह जाता है। दुअन्नी चवन्नी समाने लायक अितना जिनका छेद बन जाता है, वह बड़ा होता है। जादूगर अेक खेलमें मुँहमें से नाना प्रकार की वस्तुअें निकालकर दिखलाते हैं। वे वस्तुअें अिसी खोखलमें संगृहीत रहती हैं। केवल अुलटी से अुन वस्तुओं को बाहर न आने देकर प्रवीण दंडित अुन्हें रोक सकते हैं। पर स्नायुओं के थकजाने पर थोड़े से दबाव से वे वस्तुअें बाहर आ सकती हैं। मुझे दोतीन अिस किस्म के अनुभव हुअे हैं! अिसका भी पीछा मैं अपनी शंका का पूर्ण निरास होने तक करूंगा। अब अुलटियाँ हुअी तो सूखी ही होंगी, अुसकी दमन शक्ति भी क्षीण हो ही गअी है! दायित्व मुझपर! मेरी आज्ञा समझकर दवा पिलाओ!"

डॉक्टरने अुलटी की दवा हां हां, ना ना, करते करते देना कबूल किया। पर वह लाने के लिये जाते समय मनमें कहताही था कि, 'यह जेलर भी विक्षिप्त! जिदपर पिला हुआ दीखता है! व्यर्थ ही अुस बेचारे दंडित को सता रहा है! क्या है, कहता है कि, गले में गिनियाँ रहती हैं! कल मुझे यह यहभी समझाने लगेगा कि, दंडितों की चिच्ची अुंगली में प्याज के थैले भरे रहते हैं। अंतमें फजीहत ही हाथ आयेगी अिसके!'

अुलटी की दवा के फिर लाये जातेही सब लोगोंने मिलकर वह रफी-अुद्दीन को बलपूर्वक पिला डाली। कुछ ही वक्त में अुस दुर्जनको पुन: बड़ी बड़ी सूखी अुलटियाँ आने लगीं—अंतड़ियाँ बुरी तरह तन अुठीं—और अुसके औसान फाख्ता हो गये। अितने में अुचकियोंपर अुचकियाँ आरही हैं अैसी अुलटी देखकर जेलरने हाथमें कड़ियाँ पहनाकर नीचे गिराये हुअे रफिअुद्दीन के गलेकी पसली की कानके नजदीक की दोनों खोखलों को बुरीतरह भींचकर पकड़े रक्खा और अुंगलियों को अूपर सरकाते हुअे ले आया त्योंही अेक अुचकी के साथही तीन, चार, पांच गिनियाँ खल्खल् खल् करती हुअीं रफि-अुद्दीन के मुँहमें से जमीनपर गिरपड़ीं! और अेक छोटी सी डिबिया—अुसमें अफीम!

"गिनियाँ, गिनियाँ, पड़गअीं अुन्मूलित होकर! गिनियाँ!"
वॉर्डर, सिपाही, डॉक्टर, भंगी सारे लोग अेकदम हल्ला गुल्ला करके अुठे!

सबमें आनंद से बेसुध हुआ वह जमादार! पुत्रजन्म का आनंद हुआ अुसे अुन गिनियों की सुखप्रसूति होतेही! अुसपर झूठ बोलने का जो दुष्ट आरोप आनेवाला था, वह टलगया। अुलटे अपराध को पकड़नेवाला प्रवीण जमादार वही साबित होनेवाला था अब!

आजतक रफिअुद्दीन 'खोबड़ी' में भरकर जो गिनियाँ ले जाता था, अुनके बलपर ही वह जिन जिन कैदखानों में गया वहाँ जिंदा बचा रहा--चैन करता रहा। पर अब वह पहली दफा कैद की जिंदगी में अिस तरह हताश हुआ था! अैसी पांच गिनियों का मतलब कैदखानेमें ५ लाख रुपये की संपत्ति समझी जाती है! क्यों कि तमाखूकी अेक चुटकी का मतलब कैदी जीवनका अेक रुपया! अेक रुपया देकर बाहरकी दुनियाँ में जो काम होता है वह यहाँ तमाखूकी अेक चुटकी से हो जाता है। और सौ रुपये देकर बाहर जो काम कराया जा सकता है, वह यहाँ अफीमकी अेक राअीभर की गोली से कराया जा सकता है! अिस तरह 'अेक चुटकी अेक रुपैया' के भाव से पाँच गिनियाँ अुसके पांच लाख रुपये थे। अुनके बलपर खुद कुछ भी काम न करते हुअे, पचास कैदियों को अपनी सेवा में रखकर पांच बरसतक अुस कक्षकारा-गृहमें अपना सारा श्रीमंती संसार बसानेवाला था! – पर अब वह निष्कांचन, भुक्खड़ होगया! अब अुसे कौन पूछता है कैदियों में! आज वह पूरी तरह हताश हो चुका था!

और अुसीमें, अुसपर चलाये गये अुस दिन के सारे आततायी दुर्वर्तन के बारे के अभियोग का निर्णय देते हुअे पर्यवेक्षक ने रफिअुद्दीनको वंदीगृहीय नियमानुसार सजा दी—तीस कोड़े!!!

कोड़ों का नाम सुनतेही रफिअुद्दीन सिरसे पैरतक कांप अुठा! हिंस्र श्वापदों की भांति हिंस्र स्वभाव मनुष्यभी यदि किसी दंड से वास्तव में डरते हैं तो वह शारीरिक दंडही से--मानसिक से नहीं! मन नामकी वस्तु लगभग अिनके पास रहती ही नहीं! हिंस्र श्वापदों को यदि पालतू बनाना हो तो चाबुक ही से बनाया जा सकता है! हिंस्र स्वभाव मनुष्यों को कोड़ों से! यह अुन सैंकड़ों अघोरी दंडितों को पालतू बनानेमें जीवन खर्च कर डालनेवाले

जेलरका तखमीना रफिअुद्दीन के प्रकरणमें भी सही ठहरता हुआ नजर आया ! जन्म कैदकी सजा को वह हँसते हुअे सुना करता था; कोड़ों की सजा का नाम सुनते ही आज पहली ही दफा वह थरथर कांपा—सचमुच डरा !

कोड़े मारे जाने से अेक दिन पहले की रात को रफिअुद्दीन को नींदही नहीं आयी। कोड़ों की सप् सप् आवाज अुसे सुनाअी देती थी। अुसकी छाती थर्राने लगी। तत्रापि, अेक प्रकार का वैद्यकशास्त्र, जो अुस जैसे अघोरियों के संप्रदाय में प्रचलित है, वह भूला नहीं था; अुसपर से विश्वास भी अभी अुड़ा नहीं था ! कोड़ों से अेक रात पहले यदि मनुष्य अपनाही पेशाब पीजाय, तो अुसका शरीर और मन बधिर हो जाता है, और कोड़ों की दर्द बहुत ज्यादा महसूस नहीं होती !—यह धारणा अीदृश अघोरी आततायी दंडितों में प्रचलित है, और अुसके अनुसार वे लोग अुस 'औकद' या 'दवा' को लेते हैं, यह बात बिलकुल सही है ! रफिअुद्दीन तडकेही अुठ बैठा और पानी पीने के टमरेल में अपना मूत मिलाकर अुसका यथाविधि प्राशन किया ! अुसने कुछ कुरान की आयतें—मंत्र भी पढे और नमाज पढकर देवसे प्रार्थना की, "कोडों की मार को अूपर ही अूपर झेल ! आग मत होने दे खालकी ! मनुष्यों की तरह राक्षसों का भी अेक देव होता है ! अुसने नाखून से जमीन कुरेद कर अुस मंत्रका पाठ करके चुटकी भर मिट्टी भरी और अुसका अंगारा लगाया और अल्लाह के नामका अखंड जाप करता हुआ वह अकेली कोठड़ी में सूर्योदय तक फेरे मारता रहा ! अेक बड़े धर्मयुद्ध के लियेही जानेवाला था न वह देव का नाम लेकर ! ! !

पर आततायी और खुर्राट दंडित अैसे वक्त में अिसी तरह किया करते हैं, यह बिलकुल सही है ! दोतीन अुदाहरण तो हमने खुद अपनी आंखों से देखे हैं। और यह भी सच है कि, यमपुरीही का दर्शन करने के लिये जाना हो तो मखमली गलीचों पर पैर रखकर जाना संभव नहीं वहाँ ! चप्पल सेंड, और सिबल के कांटों के जंगलमें से ही राह बनाते हुअे जाना पडता है। मरघटही में जब अपने को रहने के लिये अुतरना है तो, धगधग करती चिताअें, अस्थियों के कांटे, पैर भूननेवाली भूभल का ढिगार, तड़तड़ करके फूटनेवाली खोपड़ियों के पटाखों की आवाज, भूतों की चीखें, यही साथ रहेंगी ! बीभत्स और भयानक विरसताही रस का काम देगी ! ! मानवी मनका काला पानी कैसा

रहता है, यही यदि जाननेकी अिच्छा हो तो जैसी वस्तुस्थिति है, अुसी रूपमें काला पानी दिखाना चाहिये न, अुसे निरर्थक अपना शिष्टाचार समझ कर गुलाबपानी का रूप देने से क्या हासिल होगा ? यह तो अुसकी वंचना होगी ! गुलाबपानी यही काले पानी की विडंबना है–शोभा नहीं !

"अल्लाह, तू रहीम है ! देव, तू दयालू है ! " अैसा नामघोष करते हुअे अुस अेकांतकक्षमें फेरियाँ लगाने वाले रफिअुद्दीन को अुस मंत्र तंत्र से थोड़ी तसल्ली महसूस हुअी । अिसी वक्त सिपाही वहाँ आये और खडाखड् दरवाजा खोलने में आया ! बंदीगृह के बीचके चौकमें सारी बैरकों के बंदीवानों को दीख सके अैसी जगह अुसे खड़ा किया । तीन मजबूत लक्कड़ों का अेक तिकोना रहता है, अुसे 'टिकटी' कहते हैं, वह 'टिकटी' वहाँ लाअी गअी ! अुस टिकटी की सीढियोंपर चढाकर टिकटी की तरफ मुँहकर के अुसे अुसके साथ बांध दिया गया ! अुसके दोनों पैरों को दोनों बाजुओं में मौजूद लोहे की कड़ियों म पक्की तौर पर अटका दिया गया; अुसके दोनों हाथों को अूपर अुठवा कर दोनों लक्कड़ों के सिरेपर मौजूद दो लोहेकी कड़ियों में जकड़ दिया गया । गर्दन अेक पट्टे में अटका दी गअी ।

अेक थाली में कृमिनाशक औषध और कोड़े खत्म होतेही घावोंपर बांधने के लिये पट्टियाँ हाथमें लेकर औषधालय का मिश्रक (Compounder संचूर्णक किंवा संपिंडकार) और अुसके पीछे पीछे डॉक्टर भी वहाँ आ पहुँचा । सिपाही लाअिन लगाकर खड़े हुअे । शरीरपर अेक लंगोटी छोड़कर रफिअुद्दीन को सिर से पैरतक नंगा कर दिया गया । अुसने कोअी गड़बड़ या बड़बड़ नहीं की । शून्यभाव से वह अपनी दुर्दशा अबतक अिसतरह देख रहा था मानों किसी दूसरे ही आदमी की देख रहा हो ! अब अुसका अक्खड़पना सब जिर गया था । वह सारी व्यवस्था वहीं खड़े होकर करवानेवाले अुस अपने शत्रुभूत जमादार से भी अुसने चकार शब्द नहीं कहा । कहही नहीं सका ।

घनघन घन घंटा बजी । तत्काल टाप टाप बूट अुड़ाता हुआ टॉवर में बैठा हुआ जेलर बाहर आया । और ठीक पीछे पीछे चड्डी (अेक किस्मकी निकर किंवा घुटन्ना) और जाकेट शरीरपर डाले हुअे, बाल बिखेरे हुअे, भुजाओंकी बलोत्कट स्नायुअें फुलाये हुअे कोड़े वाला आया । अुसके हाथमें लंबी और तीन अँगुलियों के बराबर मोटी सीधी बेंत थी ।

रफिअुद्दीन बँधा हुआ था–पीठ अिधर किये हुअे। अुसे वह दीखा नहीं। पर दारुन जैसाही भास हुआ। वह थर्रा अुठा।

"मारो!" जेलर गरजा। यह सुनकर मानों बेंतही अुसके चूतड़ पर आकर बैठी हो, रफिअुद्दीनने करुणा भरी अक हांक फोड़ी–"साब! साब! आहिस्ता, अलगत (=असंस्पृष्टरूपसे) तो मारिये!"

हाथकी बेंतको आगे करके सिरके चारों ओर फिराकर कोड़ेवाले ने निशाना जमाया।

"अेक!" जेलर चिल्लाया! फाड् करके रफिअुद्दीन की चूतड़ पर बेंत जा बैठी।

"मैय्या मैय्या! या!" रफिअुद्दीन ने चिंघाड़ मारी!

"दो" फिर सिरपर से फिरा, ताकत के साथ कोड़ेवाले ने दूसरी बेंत जमाअी! रफिअुद्दीन जानवरकी तरह रँभाने लगा। आजूबाजूके कैदियों के शरीर भी लट्लट् कांपने लगे। कितनोंही को दया आअी! अुन्हीं में कंटक भी था! पर अुसे दया आती ही था कि याद आगया–यही है वह रफिअुद्दीन! कुल्हाड़ी से आदमियों को तोड़नेवाला! जैसे लकड़ियां फोड़ते हैं अुस तरह! अेक बरस में कम अज कम अेक अेक तरुणी की तो विलास समझकर जान लेनेवाला–नृशंस नर राक्षस!

"तीन!" चार!" "पांच!" "छै!"

अेक अेक बेंतके फटके के साथ रफिअुद्दीनकी दोनों चूतड़ों में से खूनके फव्वारे अुड़ने लगे और मांस का भूसा! और वह बीचही में रंभाने लगा। बीचही में, "छोड़ो, बस, पैर पड़ता हूं" अैसी प्रार्थना करने लगा। कभी बीचही में, जमादार और जेलर की मां–बहन का नाम लेकर बीभत्स गालियाँ गिनने लगा।

"सात! आठ! 'नौ! दस!" बेंतों पर बेंतें सटकती चलीं मांस में घुसती चलीं! रफिअुद्दीन आधा बेसुध होकर निश्चेष्ट पड़गया! केवल कुचला हुआ सांप जिस तरह काठी लगाते ही अुतने भरके लिये दल्बल् करता है, अुसी तरह बेंतके फटके के साथ अेक अेक चीख सिर्फ शारीरिक प्रतिक्रिया भर के लिये अुसके मुँहसे बाहर पड़ने लगी!

"अट्ठाअीस ! अुनतीस ! तीस !!"

वह तीसवां फटका मारतेही बेंत फेंककर पसीना-पसीना हुआ हुआ, हाँफते हुअे मट् से नीचे बैठगया वह कोड़े मारनेवाला ! वह भी अितना थक गया था !

डॉक्टर झट् से आगे आया। टिकटी पर से छुड़ाकर नीचे औंधा सुलाये गये रक्तबंबाल (खूनही खून हुअे हुअे) रफिअुद्दीनकी अुसने नाड़ी परख कर देखी, जिंदा है या नहीं वह अितनाही देखने भर के लिये ! घावों पर तात्कालिक मलहमपट्टी करके रफिअुद्दीनको कैदखाने के हस्पतालमें अेक तनहाअी में लेगये। कोठड़ी में ताला ठोंक कर बंद करदिया !

अुस रात को घावों में दर्द पर दर्द अुठकर, आग आग होगअी और रफिअुद्दीन को जोर का बुखार चढ आया। बुखार में दिमाग की गरमी बहुत बढ जाय तो मज्जाकेंद्रभी अुत्क्षुब्ध हो जाते हैं। अुन मज्जाकेंद्रों (Brain Cells) में विचारों के धक्के से जो कुछ आकस्मिक रूपसे हिल्लोलित हो अुठता है, अुसकी चित्रावलि (Film) तत्काल अितने अुत्कट रूपमें प्रकाशित होकर अुठती है कि, वह घटना जीवित अवस्थामें चालू हो अैसा, सुध भूलकर बैठेहुअे जीवों को भासित होता है। अिसी बीच अुस विचार के संबंध में दूसरा मज्जापिंड संचलित हुआ कि, वह अुसका सवाक् चित्र चालू कर देता है। देशकाल के वरम की जानकारी ही स्थिर नहीं हो सकती; अुसके योग से स्मृत घटना भावभावनाओं का विक्षिप्त मिश्रीभाव प्रारंभ हो जाता है तथा अनेक असंभाव्य दृश्य प्रत्यक्षवत् भासने लगते हैं। रफिअुद्दीन की भी वही अवस्था हुअी।

बुखार आनेके बाद जबतक वह साधारण सचेत अवस्था में था, तबतक अुसके गात्रों में वेदनाओं की असहय परंपराके कारण वह बिलख रहा था, अुसे, मैंने अपनी यह दुर्गति अपनेही दुष्कृत्यों के कारण व्यर्थ ही में करवाली, अिसबातका बारंबार तीव्र पश्चात्ताप हो रहा था। पश्चात्ताप नामकी वस्तु का सच्चा अनुभव अुसे अपने समस्त जीवनमें अिसी वक्त पहली दफा हो रहा था ! पाप क्यों किया अिस बारे में पश्चात्ताप हो रहा था सो बात नहीं, अुसे पश्चाताप हो रहा था अिस बात का कि पाप जबतक पच जाता रहा तभी तक करके अुसे तत्काल छोड़ क्यों नहीं दिया ! अजीर्ण होने तक, अपचन

होने तक वही भयंकर आततायी मार्ग क्यों पकड़ा रहा, अिस बात का तो कम अज कम खेद अुसे होने लगा। काले पानी से भाग गया, देश में पहुँच गया, पुनः डाकेजनी करके, अपार धन प्राप्त किया, अनन्वित अिंद्रियभोग भोगे वहाँ तक मैंने जो किया, सो ठीक किया। पर आगे अपना हाथ आकुंचित करके, किसी भी परप्रांतमें जाकर व्यवस्थित जीवन व्यतीत किया होता तो जन्मभर पुनः संकट में आकर पड़ने की नौबत ही न आती। अिस प्रकार से अुसका विवेचन चल रहा था। अुसके अुस विक्षिप्त विवेचन से अुसको अपनी जो गलती महसूस हुअी वह अितनी ही कि, बहुतसा पैसा और रंगढंग के अर्थ समाजपर भयंकर अत्याचार करते करते जब वह अुस बिहार की तरुणी को अुड़ाकर बागलाण में आकर छिप गया, तब अुसे अुन भयंकर अुपद्रवी दुष्कृत्यों को हमेशा के लिये अलविदा कहना चाहिये था। वह तरुण स्त्री और वह पैसा लेकर, सिंधकी तरफ किसी अेक जगह सद्गृहस्थ बनकर, निर्बंधशील अवस्था में जो चैन की जा सकती थी वह करके शांति से जिंदगी बसर करनी चाहिये थी। अपने कृत्यों को दुष्कृत्य का नाम देकर भी अपनी मनोभाषा में वह संबोधन कर गया। जैसे जैसे बुखारकी बेसुधी और डिग्री बढती चली गअी वैसे वैसे यह आखीरका विचार अुसके चित्तमें तांडव मचाने लगा,

"अरेरे, अुस बिहारी को—अुस बिहार की खूबसूरत छोकरी को ही यथा रीति निकाह लगा कर औरत बनाकर मैंने सुख से जिंदगी बसर क्यों नहीं की? अरेरे, मैंने अुसे भरपूर महाप्रवाहमें खप्परकी तरह फेंक दिया न, रे! नीच! – अरेरे! – पानी में दम घुटकर क्या रे अुसके जीव की— सिर ठस् करके खडक पर! –टकराया! —फूटगया! अबबब! मैया री! कैसी ये वेदनाअें!!"

बारबार कनहाते (कराहते), बड़बड़ाते बेहोशी में कुछका कुछ देखते, समझते अुसके दिमाग में गुलाम हुसेन की स्मृति का केंद्र कहीं से हिल्लोलित हुआ!

"हरामी...अे दुष्ट! दे वह मेरी मालती वापिस! धरोहर के रूपमें रक्खा था मैंने अुसे तेरे नजदीक!...मेरी, मेरी है वह....रखी है तेरे बापने! गुलाम! देता है कि नहीं–मारो–पीटो! –पैर खींचो! मैय्या था! मरा! मरा!"

... पुनः थोड़ा जागरित हुआ वह। बुखार का जोश बढ रहा था। बेहोशीमें गुलाम हुसेन के साथ हुअी हुअी मारपीट में पैर पटके थे अुसने त्वेष

में, और अुसके साथ ही साथ अुसके घाव पर धक्का लगने की वजह से बिलखता हुआ अुठा था वह। अुसे वही याद आने लगा।

"मालती को गुलाम हुसेन भगा कर ले गया नहीं? कहां होगी वह? अरेरे! चोरपर मोर होगया न वह! अपने पिंजरेमें ही रक्खी होगी अुसने मेरी छबीली को!"

मथरामें मालती को अुस रात रफिअुद्दीनने गुलाम हुसेन के घर जो छिपाया, अुसके बाद अुसका क्या हुआ, वह अुसे कुछ भी मालूम नहीं पड़ा था। और किशन अुसके साथही हुअे हुअे हत्या, डाकेजनी आदिके खडयंत्रके खटलेमें जो निर्दोष छूट गया था, अुस की भी वही आखीरकी जानकारी थी। वही विचार अुसके क्षीणता स्वैर मनमें अब अेक सरीखा चक्कर मारने लगा! बेहोशी और वात के झटके बैठने लगे—

"मालतीका क्या हुआ होगा? गुलाम हुसेन के जनाने में? हां, जनाने मेंही! पर मालती—ती—आं? लाहोरमें! यहाँ बाजार में तू कैसे?..

वह फिर अकस्मात् बुखारकी अुत्क्षुब्ध बेहोशी में अुमी विचार की अुतरनी पर से नीचे अुतरते हुअे कूअेमें गिरपड़ा हो, अैसे ढंग से वह नीचे नीचे गहरा गड़ता चला गया!

... लाहोर के बाजार में खड़ी हुअी मालती को अचानक देखतेही अुसने मानों अुसे गलबहियामें चिपटा ही लिया, "प्यारी!—मालते!—'ओ! आव प्यारे रफिअुद्दीन, मेरे को छोड़के किदर गये थे पीतम आजतक'!"

... गलेमें गला डाल कर मालती जैसे अुसे अपने बंगले में लेगअी, दरवाजा अंदर से लगा दिया, अुसके सारे कपड़े अुतार डाले, और अितनेही में वहाँ पर मौजूद अेक बड़ी संदूकची में से खाड्से किशन छूरा निकाल कर बाहर आया! —बापरे! घात घात! अिस दुष्ट औरतने घात किया! अिस जल्लाद के, अिस किशन के हाथमें मुझे सौंप दिया क्या? चांडालनी, मालते! राक्षसी!... 'चुप राक्षसके बच्चे! किशन, बांध अुसे अुस टिकटीपर! बांध! मेरे त्वेष की यह देख मैंने अेक बलोरकट घुमावदार बेंत तैयार की है। तू किशन! जिसपर यह अब मेरे साथ बैठना चाहता था अुसी अिस पलंग की टिकटी तैयार कर!...

पलंग की अकस्मात् टिकटी बन गअी; मालती के त्वेषकी भयंकर बेंत बनी; बोलते बोलते स्वत: मालती की अेक, बाल बिखराअी हुअी, माथे भरमें सिंदूर मली हुअी, लाल लाल जीभ सांप की सी निकालनेवाली, कोअी विकराल कृत्या बनगअी !! किशन ने अुद्दीन को टिकटीपर पक्की तौर से पकड़ डाला–और मालती के त्वेषकी अुस बेंत को अुसने (मालतीने) अुठाया और खून का फव्वारा अुड़ानेवाला अेकही भयंकर फटका मारा !

"अबबब, मैय्याय्या !— पैर पड़ता हूं, मालती, छोड़ ! मैय्याय्या– हलके से ! मालती ! क्षमा–क्षमा–क्षमा ! —"

... पर मालती गिनती ही और मारती ही चली वे रक्ताक्तकंटकित फटके !

"तीन ! चार ! पांच ! पचास ! सौ !!! "

बात के झटके में रफिअुद्दीन खुदही चिल्लाकर अुठ बैठा,

"सौ ! "

मिलगअी न, तुम्हारी भैतिणी ! : : : १३

"अुषे ! अे अुषे ! अरी, आज बोलती क्यों नहीं ? घरमें क्या कर रही है अुधर, आ आ ! "

साठ बरससे ज्यादा अुम्र का पर अभी तक संपन्नसत्व स्वर अेवं सुदृढ शरीरयष्टिवाला अेक पुरुष अपने अेक सादे, बैठे और खपरैल के घरके अग्रवर्ती, बुहारे–छिड़के आंगन में खाट पर आकर बैठते बैठते अपनी अेक सात आठ बरसकी छोटीसी पोतीको विनयपूर्वक बुला रहा था। दो पहरको अुस आगन में दो-तीन बजे, छांह आयी कि वह अुस खाटपर आकर आजकल अिसी तरह बैठा करता था। कामकाज खतम करके, दिन ढलने के वक्त, गाय भैंस खेतों से, बच्चे स्कूलसे और अुसकी स्नुषा–अुन पोतों-पोतियोंकी मां–अपने नौकरी

के काम पर से घर पर आती थी तबतक, वह बूढ़ा अुस खाटपर जब अिस तरह बैठता था तब अुसके साथी के तौरपर अेक चंची (पानतमाखूका बटुआ) और अुसकी अेक पोती अुषा तथा अुसका बड़ा भाओी बारह अेक बरसका मोहन ! अुन्हें कुछ सिखाते, कुछ कहानी सुनाते, बीचमें ही समक्षवर्ती पुष्प-क्षुपों को पनियाते अथवा बौर आये हुअे आमों-कटहलोंके दिनों में आंगन से लगकर मौजूद बाड़ीमें के अुन अुन झाडों की रखवाली करते हुअे वह वहांपर बिलकुल तल्लीन हुआ दिखाओी दिया करता था।

अुसके घरके आजूबाजू अेक तीस चालीस तादृश किंवा तदपेक्षयापि अधिक सीधे सादे झोंपडों का मिलकर बना हुआ अेक खेड़ा बसा था। वह खेड़ा यद्यपि बसा था अंडमान में तो भी दिखाओी देता था बिलकुल अेक आध कोंकण के खेड़े-गांव की शुद्ध प्रतिमूर्ति ! क्यों कि सब बातों में अंदमान अपने आपही सर्वथा पूर्व समुद्रतीरवर्ती अेक प्रति--कोंकण है। झाड़ ऋतु, पक्षी, पैदावार, सब बहुत कुछ कोंकण का ही ठाठ है ! यदि पश्चिम समुद्र के कोंकण तटको मोड़कर पूर्व समुद्र पर अुठाकर रखदें क्षणभरके लिये तो अुस पूर्व समुद्रमें कोंकण का जो अस्पष्ट सा प्रतिबिंब पड़ेगा, तादृशही अंडमान है ! कोंकण के जंगल वगैरे तोड़कर मनुष्योंने आजतक जो बहुत सा काया-कल्प कर डाला है, वही थोड़ाबहुत फरक रहेगा।

"अुषे ! 'ओ' तक री, क्यों देती नहीं तू ? मोहन, कहाँ है रे, अुषा ?" बूढेने पुनः पूछा।

"वह यहीं गुड़िया के साथ खेलती बैठी है। वह कहती है कि मैं अप्पा पर रूठी हूं आज।" मोहन ने अंदर से जवाब दिया।

"क्यों बाबा, क्या गुनाह होगया मुझ से ? अच्छा, मोहन तूही आ अं, तो फिर अिधर। पके पके पानों का बीड़ा आज मैं अुषाको देने वाला था। पर रूठ गओी हो तो फिर तू ही ले ले, चल !"

अुस बूढे अप्पा का आमंत्रण स्वीकार करके मोहन तत्काल दौड़ा। मोहन अब बीड़ा हथिया लेगा यह देखते ही गुड़िया को अेक ओर फेंककर अुषा भी धीमे से अुठी, दरवाजे के नजदीक आओी, पर बिलकुल ही शरण जाना प्राणों पर आ बीतने की वजह से दरवाजे में से अपना सुहावना मुखड़ा बाहर

निकाल कर और अपना वकील अपने आपही बनकर रूठी हुअी आवाज में बोली,

" मैं रूठी हूं तुमपर अं अप्पा ! "

" अरी पर क्यों, वह बतायगी कि नहीं ? यह पीला जर्द पान का बीड़ा नहीं चाहिये न तुझे ? "

" चाहिये, पर वहीं से भिजवा दीजिये, मेरे लिये मोहन के हाथ से ! मैं वहां नहीं आअूंगी तुम्हारे पास। तुम फिर मेरा पापा (चुंबन) ले लोगे कलकी तरह। मुझे तुम्हारी मूंछें चुभती हैं यह मालूम ही नहीं तुम्हें ! तुम बलपूर्वक चुभाते हो अुन्हें मेरी गालों पर। तुम्हें अिच्छा हो तो बीडा अिधर ही भिजवा दो ! " अुषाने समझौते की शर्त सुझाअी !

" मेरा काम रुका नहीं है अितना ! जिसको बीड़े की जरूरत होगी वह पापा दे देगा ! अच्छा, मूंछें न चुभाते हुअे लूं तब तो देगी न पापा ? " अप्पाने समझौते की अुलटी शर्त जतलाअी।

अुस अुलटी शर्त को अुसने यद्यपि मुँहसे स्वीकार नहीं किया तथापि अेक अेक पैर जमीनपर घसीटते घसीटते अुषा धीरे धीरे अुस आजोबा (दादा–पितामह) के पास पास आने लगी–मानों वह खुद अपनी मर्जी से न आरही हो पर अुसे आजोबा जबर्दस्ती खींच कर लेजारहे थे अिसी लिये वह आगे बढ रही थी ! अिस ढंगसे आते आते अेक बारगी वह अपने आजोबाके हाथों की पकड़में आकर ठिठक गअी ! त्योंही आजोबाने अुसे पकड़ कर हँसते हँसते अपने पास लेलिया और यथाविधि अेक मीठे पापा का कर वसूल कर के अेक बीड़ा अुषा और अेक मोहन को दिया और अुन अपने लाड़ले नन्हें नन्हें पोतों को दोनों बाजुओं में लेकर अप्पा खुदके हाथपर अपने पान के साथ खाने की तमाखू की बुकनी को मलने लगे।

जैसे जैसे अुषा का बीड़ा मुँहमें घुल घुल कर अुसे मीठा लगता चला, त्यों त्यों अुसकी कली खुलने लगी। वह अपनी मर्जी से आजोबा की गोदमें कब आकर बैठ गअी और हँसते हुअे अुनके साथ मीठी मीठी बातें कब करने लगी वह अुसके ध्यान तक में नहीं आया ! अुषा और मोहन ये दोनों बच्चे बहुतही मोहक, खिलाड़ी, वाचाल, और तर्रार थे !

अितने में सामने के टीलेपर से अेक आदमी को अुतरता हुआ देखकर मोहनने ताली पीटी,

" अप्पा, अप्पा, कंटकबाबू आते हैं, कंटकबाबू ! वे ऽ देखो, वे ! "

अुषाने भी अनुमोदन किया,

" हां रे हां , कंटकबाबूही हैं वे ! "

अप्पाजी अुस समय पासमें पड़े हुअे कलकत्ते के अेक हिंदी समाचार पत्रको पढते थे । अुसे अेकतरफ हटाकर दृष्टि गड़ा गड़ाकर आगेकी ओर देखने लगे, पर अुनकी आंखोंको ठीक से नजर नहीं आया, अुन्हें मालूमपड़ा कि दूसराही आदमी आ रहा है

" कंटक वंटक बाबू नहीं हैं वे, कुछ का कुछ चिल्लाते हो होगया ! "

अुनके नकार को बरदाश्त न करके अुषा बोली,

" कंटकही हैं अप्पाजी । तुम्हें ठीक नजर न आता हो तो मेरी आंखों से देखो । हां,–देखो न ! नहीं जाओ, मेरी आँखोंमें से होकर देखो! "

अुसने अपना नन्हा सा सिर अप्पाजी के मुँहके बिलकुल पास ले जाकर धर दिया, वह अुनकी आंखों के सामने तक पहुँच सके अिस खियाल से अुनकी गोदमें वह चढ गअी, अपने मुलायम बालों से आच्छादित सिरका पिछला पासा अुनके मुंहपर टिकाकर, अुनकी आँखों के ठीक आगे अपनी आंखें आसकें अिस तरीके से वह पिठमूंही बैठ गअी, और वह नन्ही अुषा आग्रह करने लगी,

" अप्पाजी, देखिये न, मेरी आंखों में से ! दीखता है ? अैसे अं, अब दीखता है ? "

अुसके लिये वह अेक खेलही हो गया क्षण भरके लिये !

अुस अल्हड़ बच्चे की खेल के विनोद में विरसता अुत्पन्न न हो अिस खयाल से आजोबाने भी अपनी अुस नन्ही सी पोती के कुंतल–मृदुल मस्तक को अपनी आँखों के सामने अेक आध दूरबीनकी नाअीं, अत्यंत गंभीरता से पकड़ कर अुसकी आंखों में से होकर देखें जैसा किया और क्या क्या दीखता है सो बतलाने लगे,

" अरी सचमुच ! अुषे ! दीखता है री, दीखता है तेरी आँखों में से मुझे अब बिलकुल साफ साफ दीखता है ! देख, कंटकबाबू ही वे अिधर आ रहे हैं ! और वह देख, हमारी नन्ही अुषा अेकआध बड़ी, सुज्ञ और,

समझदार लड़की की तरह अपनी स्लेट, पेन्सिल और पहली किताब लेकर अुनके पास किस तरह सीखने के लिये बैठती है देखो! वह हमारा मोहन भी पाठ पढने लगा अं! देख, सारा कुछ मुझे तेरी आंखों में से कैसे साफ नजर आरहा है! अब यह सब अिसी तरह सही सही साबित होना चाहिये अं! नहीं तो तेरी आँखों में से सब खोटा खोटा नजर आता है, अैसा कहूंगा मैं! तब टालमटोल न करते हुअे बैठेगी सीखने के लिये कंटकबाबू के आतेही ?

"हूं। सीखने के लिये बैठूंगी—पर—" अुषा किंचित् असंतुष्ट मुद्रा करके बोलने लगी, "पर तुम्हारे पासही बैठूंगी, कंटकबाबू के पास नहीं!"

"क्योंरी? वे कितनी अच्छीतरह पढाते हैं तुम दोनों को! गुरुजी पर गुरुजी हैं वे—कैसे अच्छे!"

"हिश! कहां से हैं अच्छे वे! अप्पाजी, सच कहती हूं अुन्हें ठीक से बोलना तक नहीं आता बिलकुल!"

"वह काहे पर से? कंटकबाबू को कुछभी नहीं आता? और वह तुझे कैसे मालूम पड़ा?"

"अजी, अुसमें रखाही क्या है समझने के लिये? स्पष्ट दीखताही है वह मुझे! सच अप्पा! कंटकगुरुजी ही अुलटे हमारे मोहन से और मुझ से सब कुछ पूछ लेते हैं। अुन्हें याद नहीं आया कि मोहन से पूछते हैं कलकत्ता कहां है? बंबअी कहां है? अंग्रेजीमें अम्मा को क्या कहते हैं? बिल्ली को क्या कहते हैं? और मुझसे भी पूछते हैं दो पंचे कितने? तीन दहाम कितने? अिस तरह दिनभर हमीं से पूछते रहते हैं सब कुछ। अुन्हें खुदको आता होता तो हमसे जी, किस लिये पूछते बैठते वे? पहाड़े तक आते नहीं अुन्हें!"

यह सुनते ही "वाहरी वाह, गंवार री गंवार" अिस तरह अुसे खिजाते हुअे मोहन अेक सरीखा हंसने लगा। आजोबा को भी हंसी आअी! अुषा बहन पूरी तौर से चिड़ने की अवस्था में आगअी—

पर अुतनेही में कंटकबाबू आंगन में आये और हमेशा की तरह भेंट की तौर पर अेक मिठाअी का पूड़ा अुनके हाथमें देखतेही चिढ की वजह से हाथा-पाअीपर आनेवाला प्रकरण वहीं मिट गया। अुषाका लक्ष अुस पूड़े की ओर गया और हंसते हंसते कंटक बाबूके सामने वह चली गअी।

"क्या कंटकगुरुजी ! " अप्पा हंसे, "परीक्षा में आपके विद्यार्थियों ने आप ही को नापास (फेल) कर दिया है, समझे ? "

"सो कैसे बाबा ? " कंटकगुरुजीने जिज्ञासा की।

"अजी, हमारी अुषा कहती है कि, आपको पहाड़े तक नहीं आते आपही को कुछ भूलभाल गया तो आप अुससे हमेशा पूछते रहते हैं कि, दो पंचे कितने ? तीन दहाम कितने ? और अुसने बतलाया तब कहीं वह आपकी समझमें आता है ! अुसे जितना आता है, अुतना भी आपको नहीं आता ! "

"अैसा क्या ? " कंटक अुस आक्षेप को सुनकर कौतुक से हंसा "अच्छा तो, मैं अब जो हिसाब डालता हूं वह यदि अुषाबहनजी ने छुड़वाया (हल किया) तो तभी मैं सही समझूंगा ! डालूं अेक हिसाब तेरे लिये ? "

"हूं, डालिये। अभी छुड़ाये देती हूं देखिये। पर मुझे आसके अैसाही हिसाब डालना चाहिये अं ! " अुषाने शर्त पर आह्वान स्वीकार किया।

"अच्छा, बतला तो। अेक औरत आमों की अेक छवड़ी भर कर आअी। अं ? अेक छबड़ी भर कर ले आअी। अुसकी कीमत दो रुपये स्थिर हुअी। अब अुसने वे आम आधे आधे करके दो बराबर बराबर छोटी छबड़ियों में भरदिये। समझमें आया ? आधे आधे आम दो बराबर की छबड़ियों में भरदिये। तो अुन दो छबड़ियों में से प्रत्येक छबड़ी के लिये क्या कीमत देगी तू ? तूभी बता हूं मोहन।"

मोहन ने चट्से अुत्तर दिया,.

"प्रत्येक छवड़ी के लिये अेक अेक रुपया दूंगा मैं ! "

पर थोड़ी देर आकुंचित नेत्र करके विचार करने के बाद अुषा झिड़क कर बोली,

" मैं दमड़ी भी नहीं दूंगी अुन छबड़ियों के वास्ते ! "

"क्योंरी ! " अप्पाने अुषा से पूछा।

" बोले तो, सुरेख सम्पूर्ण आम बाजारमें जितने चाहियें अुतने मिलते हों तो अुस (औरत) के आधे आधे किये हुअे वे गंदे आम कौन लेगा भला ? "

" आम आधे आधे किये हुअे " अिस वाक्य पर अनजाने शब्दक्रीडा करके अुषाने बिलकुल अप्रत्याशित अुत्तर दे दिया !

अुस लड़की की अनजान किंतु स्वतंत्र विचारशक्ति की निदृष्टि देखकर, वह सर्वथा अनपेक्षित अुत्तर सुनतेही आजोबा अुषाकी पीठपर हाथ फेरकर कंटकबाबू से बोले,

" क्या गुरुजी, हमारी अुषा को जितना आता है अुतना भी आपको नहीं आता, यह बात बिलकुल सही सबित हुअी या नहीं ? "

" बिलकुल सही साबित हुअी, सच बाबा ! और हमारी अिस नन्हीं विद्यार्थिनीने गुरुजी को जो पाठ पढाया है, अुसके वास्ते गुरुजीही अिस विद्यार्थिनी को यह फीस भी देंगे ! "

कंटकने मिठाअीका अेक पुडा अुषा को दिया और दूसरा मोहन को दिया ।

और खाटपर कंटकबाबू बैठने लगा । अुसे स्थान देने के लिये अप्पाजी जांघ सिकोडकर अेक ओर सरकने लगे । पर अुतने ही में अुनके घुटने में अेक जबर्दस्त दर्द पैदा हुअी और वे ' अम्मारी " ! कहकर जोरसे कनहाने लगे ।

" अं? अेकदम अितनी जोर की दर्द अुठने लगी ? क्या हुआ पैर में ?" कंटक जल्दी जल्दी में पूछता हुआ अप्पाजी का पैर दवाने लगा ।

" यहाँ, यहाँ घुटने में ! " अप्पाजी घुटना धीरे धीरे आगेपीछे करते हुअे पैर पसारने का यत्न करते हुअे और कनहाते हुअे बोले,

" अिस घुटने में दो दिन से अिसी तरह की असह्य दर्द पैदा हो रही है । थोडा पैर फैलाकर रखने से कुछ देर बाद थम जायगी । अेक बहुत पुराना घाव है जो वहाँ स्थायी होगया है, अब अशक्तपन के दिन आये हैं अतः वह फिर बाधा देने लग गया है । "

" पुराना घाव ? कैसा वह ? " कंटक ने जानना चाहा ।

" वह ? वह अेक अितिहास है ! वह घाव सत्तावन के स्वातंत्र्य युद्ध में मुझे लगी हुअी अंग्रेजकी अेक गोली का है ! हां, अंग्रेजकी गोली का ! क्योंकि मैं विद्रोहियों की तरफसे लड रहा था । मैं अेक विद्रोही था ! " बोलते बोलते दूसरा पैर खाटपर टेककर, दूसरे पैरपर तन कर खडा होकर,

छाती फुलाते जानेवाला वह वृद्ध मानों जितना था अुससे भी अधिक अूंचा दिखाअी देने लगा !

"आप विद्रोहकारी थे ! प्रत्यक्ष लडे थे आप अुस विद्रोहमें अंग्रेजों से ?" कंटक यह प्रश्न खंडित शब्दों में जमाकर, पूछ कर, अुस वृद्ध पुरुष के गर्व से तनी हुअी अपनी गर्दन स्वीकारार्थ में किंचित् हिलाते समय, अुनकी तरफ विस्मयपूर्ण आदर से देखता रह गया ! अुस दृष्टि से देखतेही वह आजतक का अेक सादा बूढा गृहस्थ कंटक को अेक कसा हुआ योद्धा, अेक वंदनीय वीर, अेक पौराणिक महारथी भासित होने लगा ।

क्षणभर अुस वृद्धकी तरफ अुसी तरह विस्मयपूर्ण आदर भावसे देखते रहने के बाद कंटकने पूछा,

"अप्पा, आजतक आपने यहबात कहां बताअी मुझसे ? गत छह महीनों में आपके अिस प्रेमल कुटुंब में मैं घुलमिल गया हूं तथापि मैंनेअपने आप कभी आपसे आपका पूर्ववृत्त क्यों नहीं पूछा, अिसका कारण स्पष्ट है। जिन्हें आजन्म कैदकी सजा होती है, जो अपनी सख्त कैद के दस बारह बरस बिताते हैं, और अुस अवधिमें अपना वर्तन ठीक रखने के कारण जिन्हें अिसी टापूमें स्वतंत्र परिवार का निर्माण करके रहने की आपकी तरह अनुज्ञा मिलजाती है, अुन अिस अंदमान टापूके अंदर के दाखले वाले (pass holder) आजन्म कैदीगृहस्थों को जिन घृणित अपराधों के लिये पहले सजा हुअी होती है, वह बतलाने में बहुधा संकोच प्रतीत होता है। अपना पूर्ववृत्त अिस आपको श्रेणी के वे दाखलेवाले स्त्री पुरुष बहुधा छिपाने की कोशिश करते हैं। अिस कारण अनेक मर्तबा जानने की अिच्छा होते हुअे भी मैंने आपसे आपका पूर्ववृत्त पूछना ठीक नहीं समझा, टालता रहा। पर आप खुदतो सत्तावन के अुस स्वातंत्र्ययुद्धमें लडना राजकीय (अपराध भलेही कोअी गिने पर) नैतिक नीचता नहीं है, अैसाही माननेवाले हैं,यह स्पष्ट है ! तब आपने बजातेखुद अपना अुतना पूर्ववृत्त मुझे भला क्यों नहीं सुनाया ? सत्तावनके विद्रोहकी कहानी सुनने का छुटपनही से मुझे बडा शौक रहा है। मेरे दादा ब्रह्मावर्त में श्रीमंत नानासाहेब पेशवा का ही अेक आश्रित था, अैसा

छुटपन में मेरे पिता मुझसे कहा करते थे। सेनापति तात्या टोपेका नाम तो अुनके मुँहपर सदा चढा रहता था।"

"अुसी वीरवर तात्या टोपे की सेनामें का मैं भी अेक था!"

"क्या कहा, अहाहा! सेनापति तात्या टोपे! जिनका नाम छुटपनमें हमें अेक आध पौराणिक वीरके सदृश अद्‌भुत प्रतीत हुआ करता था! अुस सेनापति को प्रत्यक्ष देखा हुआ और अुन के स्वातंत्र्य सैनिकों में से अेक सैनिक पुरुष प्रत्यक्ष रूपसे मेरे सामने अिसवक्त खडा है—यह कल्पना भी मेरे लिये अत्यंत अद्‌भुत है! यह देखिये, अप्पा, यदि आपको कोअी खतरे की बात न मालूम पडे तो कमसे कम आपने जो बातें अपनी आंखों से देखीं हैं वे तो मुझे सुनाअिये—सुननेकी मेरी अुत्कट अिच्छा है। है क्या कोअी खतरा अुसमें?"

"खतरा? बाबारे, पहले अेकदफा तात्या टोपे को मैं पहचानता हूं यदि अितना भी कह दिया होता तो, जो झाड सामने नजर आता है, अुस पर मुझे टांग दिया गया होता!—मैं तात्या टोपे की ओर से होकर लडा हूं यह कहने की तो बात ही दूर रही! अुन दिनों अुन बातों को कहने के लिये जो अेक डर हमारे मनमें बैठ चुका था, और अुन स्मृतियों को हमने चित्त के जिन गहरे भूमिगृहों मे गाड दिया था, अुन्हें अब अुखाडनेकी कोशिश करने पर भी अुखाडना बन नहीं पडता! यों, अब वह काल बदल चुका है। वह स्वातंत्र्ययुद्ध अब अितिहास बन गया है। प्रस्तुत परिस्थिति से अब अुसका संबंधही बाकी रह नहीं गया! होगा भी तो अितिहास का वर्तमान से जितना संबंध रहता है, अुतनाही! स्वयं अंग्रेज लेखकोंने अुस समय की जानकारी के सैकडों ग्रंथ लिखमारे है। खुद मुझीसे अेक दो अंग्रेज गृहस्थ अत्यंत अुत्सुकता रूप से मेरी आंखों देखी जानकारी पूछने के लिये यहाँ आये थे। पर वह पुरानी दहशत जो हमारे मन पर अेकबार बैठ गअी थी, अुसकी वजह से कुछ भी खुले दिलसे कहते नहीं बनता। अिसी लिये, मैं अपने आप तुम्हें आजतक वह वृत्त कहता नहीं था। अन्यथा आज अुसमें छिपाने की बात ही क्या रहगअी है? फिर अुसके कारण जो सजा भोगनी होती है, अुसे भोगने के लिये ही तो हम यहां अंदमान मे आये हुअे हैं। और अब तो हम अुसजन्म कैद को पूरी करके भी बैठ गये हैं!"

"अर्थात्, सत्तावन के साल के विद्रोह में लडाअी करने की वजह ही से आपको जन्मकैद की सजा हुअी? अंदमानमें तभी से क्या जन्म कैदके सजायाफ्ता लोगों को भेजने में आता रहा है?"

"सत्तावन से पांच पचास बरस पहले अेक दो दफा अंदमान में अुपनिवेश बसाने का यत्न अंग्रेजों ने किया था। पर अुस समय जो थोडे बहुत भारतीय मनुष्य यहां लाये गये थे वे अुन भयंकर जंगलों और दलदलों में अनादि काल से भिनभिनाते आनेवाले रोगजंतुओं और जलवायु के भक्ष्यस्थान में पडगये। विशेषत: ठंडे बुखार से तो वे बेचारे पूरी तरह अुच्छिन्न हो गये, और ये टापू मनुष्य की वसति के लिये सर्वथा अयोग्य समझ कर फेंक दिये गये (अुपेक्षित हुअे)। पर सत्तावन के बंड (= विद्रोह) के अनंतर, क्वचित् अिन टापुओं का अुन्हीं सद्‌गुणों के कारण, अुस बंडमें अंग्रेजों के विरुद्ध लडते हुअे परास्त हुअे हुअे हम जैसे शतावधि बंडवालों को अिन्ही टापुओं में जन्म कैद भोगने के लिये भेजा गया। और अचरजकी बात यह कि हम लोग अिस टापू में भी सारे के सारे आते ही मर नहीं गये अुन सघन अरण्यवनों को, अुन सडे गले दलदलों को, अुन भीषण रोगाणुओं को, अुस मारक वातावरण को, अुस असाध्य ठंडे बुखार को हम पूरे पडकर भी बचगये! और अिस रीति से अिस आजके अुपनिवेश के हमही मूल संस्थापक, आद्यपूर्वज, कुलपुरुष स्थिर हुअे! अिस टापू में अुपनिविष्ट होने के लिये भेजे गये अुन पहले बंडवालोंके जमाव में का ही मैं भी अेक हू! —अभी-तक जीवधारण करके अवशिष्ट अुन बंडवाले चार पांच व्यक्तियों में वृद्धतम! पर अिस दीर्घ जीवन के आनंद की अपेक्षा जब मेरे सेनापति तात्या टोपे फांसी पर चढे—"

"तात्या टोपे को फांसीपर चढाया गया था, अुस वक्त आप वहीं थ?"

"नहीं नहीं! वही तो शल्य मन में चुभ रहा है! काले पानी पर भेजे जाने की अपेक्षा हम लोग अपने सेनापति के साथ फांसी गये होने तो हमें अधिक आनंद हुआ होता, यही तो मैं कहता था! अंग्रेज अुस वक्त हमारा दुश्मन था, पर तो भी अंग्रेज यह जाति से वीर! वीरता की मनसे अुसे खरी परख, यह बात हम जानते थे! देखो, तात्या टोपे मरनेतक सशस्त्र युद्ध में अंग्रेजभी दांतों तले अुंगली दबालें अैसी दृढता और शूरता के साथ लडे।

मृत्यदंड के वक्त सीधे फांसी पर चढते समय अुन्होंने कहा कि, 'मैं महाराष्ट्र के राजा का, श्रीमंत नानासाहेब पेशवा का सेनापति; मैं अंग्रेजों का अंकित प्रजाजन नहीं हूं ! अपने राजा की आज्ञा से स्वातंत्र्य के अर्थ जूझा हूं, अतः मैं बंडवाला अपराधी हो ही नहीं सकता !' अिस अुसके वीरोचित कथन का अंग्रेजों के दिलपर भी अितना अधिक आतंक बैठा, अंग्रेजों के मनमें भी अितनी अधिक आदरबुद्धि जागरित हुअी कि, तात्या टोपे को फाँसीपर मरण आते ही, वह देखने के लिये जमा हुअे सैंकडों गोरे लोगों ने अुस शूर पुरुष के प्रेत के अतराफ गराडा (घेरा) डाला और अुसके स्मृतिचिन्ह समझकर कितनेही अंग्रेज फरेंच स्त्री-पुरुष अुसके सिर के बालों की लटें कतर कर लेगये। फरांस के पत्रों में अुसके दुःखद मृत्युलेख आये ! पर हम अुनके सैनिक होते हुअे भी अुनके साथ ही अुस स्वातंत्र्य युद्धमें मरनेका भाग्यलाभ न कर सके, अुनका अंतिम दर्शन तक न कर सके !" अुस वृद्ध वीरने दीर्घ अुच्छ्वास फेंका !

"आप पहले ही से तात्या टोपे की सेनामें थे क्या ? अुनकी मृत्युसे कितने दिन पहले घायल हुअे ? कैसे पड़े अंग्रेजों के हाथों में ?"

"वह कहानी लंबी है। थोडेमें कहना हो तो, मेरी और पेशवाओं के किसी भी आदमी से प्रत्यक्ष पहचान पहले बिलकुल भी नहीं थी। हम महाराष्ट्रीय ब्राह्मण हैं। मूल बुंदेलों के आश्रित होकर अुत्तर हिंदुस्तानमें रहने के लिये गये। आगे चल कर मेरे पिताकी पीढीमें अरानगर की ओर हमारा कुटुंब स्थायिक होगया। सत्तावनसे अेक दो बरस पहले श्रीमंत नानासाहेब के दूत हमारे गांव में आये और शीघ्रही अेक बडा भारी विद्रोह होनेवाला है अैसा कहकर हमारे तरुणों में महाराष्ट्र की हिंदुपदपादशाही पुनः स्थापित करने की चेतना का संचार करने लगे। मराठों का राजा स्वराज्यार्थ पुनः शस्त्र हाथमें लेनेवाला है, अिस कल्पना के आतेही मेरा तरुण रक्त जागरित हो अुठा ! अुतनेही में खबर आअी कि, कानपुरमें अेक बडा भारी विद्रोह हो गया है, श्रीमंत नानासाहेब ने कानपूर जीत लिया है। तथा अब खुल्लम खुल्ला लडाअी छेड दी हैं ! हररोज खबरें आने लगीं। दिल्ली, लखनअू, जगदेशपूर-जिधर देखो अुधर राष्ट्रिय युद्ध की वनवन्हि प्रज्ज्वलित होकर राजे, महाराज, सरदार, भूमिदार, सैनिक, नागरिक-सारा हिंदुस्थान विद्रोह

फर अुठा है ! यह सुनते ही हमारी नगरी अरामें भी अेक सैनिक पथक (जत्था) बंड कर अुठा और हम सब तरुण अुसमें शरीक होगये ।"

"फिर ? तत्रवर्ती अंग्रेज सेना ने आप लोगों को अेकदम पकडा नहीं ?"

"अंग्रेजी सैन्य था कहाँ, तालुके तालुके में । भारतीय सैनिक थे- वेही अुलटे हुअे ! अंग्रेज अधिकारी अकेलाही था वहां । वह बोले तो, कलेक्टर, मैजिस्ट्रेट आदि के सारे अधिकार चलाने वाला, अे. ओ. ह्यूम साहब ! सारा अरानगर अुलटा हुआ देखकर ह्यूम साहब ने अपनी जान मुठ्ठीमें लेकर भाग-जाने का निश्चय किया । पर भागे तो कहाँ ? तब अुन्हों ने अपने थाने पर घेरा पडने के पहले ही अेक युक्ति की । हाथ, पैर और मुँहपर काला रंग मला; अपनी अेक भारतीय नौकरानी का बुरखा मांग लिया, अुसे तत्रस्थ स्त्रियों की तरह शरीरपर लपेट कर स्त्रियों का भेस बना । रातही रात में ह्यूँम साहब अरा से निकल भागे । अुन दिनों, जहां अंग्रेज दीखे वहां बंडवाले मार डालते और अंग्रेजों को जहाँ कोअी बंडवाला दीखता तो अुसे वे लोग मार डालते । पर तादृश भयंकर स्थिति में भी अुनके साथ अुनके विश्वास से रहे हुअे दो-तीन भारतीय सैनिकों की मदद से अनेक प्रसंगों में अुनकी जान बची और अंतमें वे ह्यूम साहब दूसरे थाने पर मौजूद अंग्रेजों की छावनी में सुर-क्षित रूप से पहुँच गये ।"

"अे. ओ. ह्यूम साहब ? अर्थात् राष्ट्रीयसभा निकालने वाले ह्यूम साहब ?"

"हां । अुन्हींने आगे चल कर वह संस्था निकाली । अितनाही नहीं, अिस विद्रोह में, अुन पर आअी हुअी भयंकर अवस्थाओं के कारण ही भारतीय जनता में पुनः तादृश भयंकर असंतोष न फैलने देनेही में अंग्रेजी राज्य की सुदृढता है यहबात अुनके मस्तिष्क में पक्के तौरपर बिंबित होगअी, यह अुनके परवर्ती कालके कुछ भाषण जो मुझे यहां अंदमान में अेक साहब के पास से पढने को मिले, अुन से मेरी समझमें आया । 'सत्तावन के विद्रोह में अंग्रेजी राज्य पर टूटपडे हुअे भयंकर अरिष्ट में जिन लोगों को दिन निकालने पडे अैसे किसी भी अंग्रेज अधिकारी को यह मान्य होना ही चाहिये कि, हिंदु-स्तान में मचनेवाले असंतोष को अंदर ही अंदर कढने और बढने देना योग्य नहीं । जिस तरीके से असंतोष के वाक्य को स्फोट मिलता रहे, अुसकी माफ

संचित होने से पहले ही निकलती चली जाय अैसी कोअी न कोअी सुविधा ढूंढ निकालनी चाहिये। भाफ को बेखटके निकलने देने के लिये यदि कोअी खतरे से शून्य छिद्र–सेफ्टी वॉल्व–तुम रखोगे नहीं, तो वह अंजिन को फोडकर बाहर निकल आयेगी ! वह खतरे से खाली छिद्रही मैं जो निकालने के लिये कहता हूं वह अेकाध राष्ट्रसभा है ! ' अैसे अुसके सयानेपन के भाषण आगे चलकर जो हुअे, वह सयानापन ह्यूम साहब अुस अरा के अरिष्ट ही में सीख सके ! "

" अुसके बाद अरासे कहाँ गये आप लोग ? "

" जाने दे रे वह सारा ! होगअी सो होगअी ! अब अुससे क्या करना है ? अब तो नयी अींट नया राज्य है ! जो है अुसी को निबाहना चाहिये ।"

" वह तो हअी है ? पर अपने बारे में तो कुछ कहिये ना, कैसे पकड में आगये आप ? "

" अरा से हम सीधा कानपूर गये और सेनापति तात्या टोपे के सैन्य में प्रविष्ट हो गया। बीस हजार अंग्रेजी सैन्य के साथ चढकर आये हुअे जनरल विंद्याम का कानपुर की जिस भीषण लडाअी में सेनापति तात्या टोपे ने पराजय किया था, अुस लडाअी मैं बंडवालों की ओर से मैं स्वतः लडाथा। और अुसी लडाअी में अिस घुटने पर अंग्रेजोंकी गोली लगने से घायल होकर गिरपडा और अुन लोगों के हाथमें जा लगा। परंतु मैं अंग्रेजों ही के भारतीय सिपाहियों में से अेक हूं, अैसा कहकर वह बेर किसी तरह मारले जाने की युक्ति मैंने ढूंढ निकाली। और अुस अंधाधुंदी के लडाअी के मौकेपर अनेक असंभव बातें घटित होती हैं तद्वत् यह भी घटित होकर मेरी युक्ति फलीभूत होगअी ! जनरल विंद्याम तात्या टोपे के हाथ से परास्त होकर जब अव्यस्थित रूपसे पीछे की ओर लौटा, तब अपने सैंकड़ों घायल सैनिक अुसने जल्दबाजी में अेक सुरक्षित अंग्रेजों की छावनी में भेज दिये। अुनमें मैं भी भेज दिया गया ! वहां ठीक हो जानेपर पुनः निकल भागनेही को था कि अेक भारतीय सिपाहीने ही मैं बंडवाला हूं, अैसी चुगली की; पर अितर सैनिकों में से कितनोंही ने वह चुगलखोरही बंडवाला है, अैसा कहकर चुगली की थी।

"अुस वक्त अैसी अुलट सुलट चुगलियाँ बराबर चालू रहती थीं। अैसे गडबडी के अेक अंग्रेजों की जानपर आबीतने वाले विपत्ति के प्रसंग में वैयक्तिक पूछताछ और पताचलाओ नामका पदार्थही नहीं था। अेक साथ सजा—फांसी तो फांसी, जन्म कैद तो जन्मकैद! बंड जल्दी समाप्त हो अिस बुद्धि से अेकसाथ क्षमा! अुस धांदल (गडबडी) में और अुस छुटकारे में, मैं जिनमें था अुन कैदियों की सारीकी सारी टुकडी के नामपर आजन्म कैदका टिकट निकला! और हिंदुस्तान में विद्रोहियों की वंशवृद्धि ही नहीं हो अिस शर्त के कारण से शतावधि विद्रोहियों की जन्मकैदी टोलियाँ नावों में भरभर कर, 'मनुष्य निवास के लिये अयोग्य अेवं मारक' के रूपमें अंग्रेज अधिकारियों द्वारा अुस कालमें निर्धारित किये गये अिस अंदमान बेट में लाकर छोडदी गअीं! अुन्हीं में मैं भी अेक था। बिलकुल पच्चीसी के अंदर! मनुष्यवस्ती के लिये मारक समझकर ही अिस बेट (टापू) में लाकर छोडे गये अुन अस्मादृश शतावधि सत्तावन के बंडवालों ने अपने असह्य कष्टों की, घोर यातनाओं की, जमे हुअे खून की, भग्न आशाओं की, क्षीण हड्डियों की, और प्रेतों की राखकी खाद और पानी देकर अुसी टापूको आज मनुष्य निवासके लिये, योग्य बना डाला हैं। वही यह अंदमान अपने हिंदुओं का दिनोत्तर वृद्धिगम्यमान अेक नवीन अुपनिवेश हो बैठा है। अितनीही है हमारे जन्मकी किंवा जन्म कैद की सार्थकता!"

"पर अब अेकदफा हिंदुस्थान में जाकर आने की अनुज्ञा क्यों नहीं मांगते आप? अब तो आप दाखलेवाले स्वतंत्र वर्ग के हैं, अैसे फरीपास होल्डर्स को अनुज्ञा देते हैं न देस जानेकी? किन्हीं प्रकरणों में हिंदुस्थान अब बहुत सुधर गया है। अुसे आपको अेकवार देखना चाहिये!"

"क्या देखना है अब वहाँ? जैसे यह कालेपानी का अुपनिवेश दिनानुदिन समृद्ध होता जा रहा है, अैसा मैंने कहा, अुसी तरह हिंदुस्तान सुधरता जा रहा है, अैसा तुम कहते हो! पहले हम सत्तावन के दाखलेवालों को ही कोओी भेजता नहीं वापिस; वह नियम हमें लागू नहीं है, और गये भी तो जो हिंदुस्तान हमें देखना था, वह अब है कहां? अब जैसे यह जन्मकैदी अंदमान वैसेही वह हिंदुस्थान!" अपने हृदय के भीतर दीर्घकाल से गडे हुअे शल्य के छेडे जाने की वजह से अुसने अेक दीर्घ निःश्वास छोडा।

मैंने व्यर्थ ही अिसको दुःखित किया अैसा प्रतीत होकर. अब कुछ दो चार सांत्वना के शब्द बोलने चाहियें यह सोच कंटक कहने लगा,

"चाहे कुछ भी हो, देव तो न्याय का पृष्ठरक्षक है। न्याय की ही जीत अंतमें—"

"हत् ! न्याय और अन्याय का जय और पराजयके साथ कोअी संबंध नहीं है, यह हम जितना जल्दी सीखें अुतना अच्छा। न्याय और अन्याय यह प्रकरण निराला है और जय अेवं पराजय निराला ! जयापजयका यदि किसी के साथ संबंध है ही तो वह परावरम से है न्याय से नहीं ! ध्यान में रख, पाठकर वह शब्द पराक्रम ! जय का यह मंत्र ! वह शब्द सीख !"

"अप्पा, अप्पा, अप्पाजी !" अुसके चित्तको अुस उच्च वातावरण में से खस् करके नीचे लाती हुअी वह नन्हीं सी अुषा हंसी, "यह देखो, अप्पा, अप्पा, तुमभी कंटक बाबू को नये शब्द सिखा रहे हो ! मैंने कहा था, अुन्हें कुछभी नहीं आता, आखिर वही सही निकला ! वही सही निकला ! वही सही निकला !!" अुस बच्ची को अुस विषय में से अुतनाही समझा !!

अप्पा भी हँसे। "कम्बख्त कहीं की !" अैसा कहते हुअे कंटकने अुसके गालपर अेक टिचकी मारी !

अुतने ही में आंगन के फाटक तक गया हुआ मोहन खिल खिलाता हुआ आया,

"आगअी ! मां आगअी ! मां आगअी !"

अुषाने भी सामने देखकर अुसी तरह ताली पीटी,

"मां आगअी, मां आगअी !"

और कौन पहले जाकर मां से लिपटता है, अिस बात की स्पर्धा में दोनों बच्चे दौडे। फाटक में मां के आते ही मोहन ने अुसे पहले पकडा। पश्चादेव, अुषा अुसकी जांघों से लिपट गअी। मां भी अुन दोनों के मटामट चुम्मे लेते हुअे, अुनकी लिपटनों के पेंच ही में जितना चला जा सके अुतना चलते हुअे, अुनके मृदुल कुंतलों पर क्रमेण हाथ फेरते हुअे खाट के पास आअी ! अुतने ही में कंटक अुसको नजर आया !

"' बापरे, राहही देखते बैठे थे न यहाँ ? मिलगअी न, अेक बारगी आपकी मैत्रिणी मुझे ! बिलकुल पेट भरकर बातचीत करके आअी हूं, अुससे।"

अितना कंटक से कह कर अत्यंत आत्मीयता के स्वर में अपने ससुर से संबोधन करने लगी, " सचमुच अप्पाजी, लडकी भी लडकी ही है वह ! कितने खुले दिल की किंतु कितनी विनयशील ! करारी होते हुअे भी प्रेमल है वह देखिये ! —और सुरेख भी कितनी है-क्या कहूं? अुसमें यदि कोअी व्यंग है तो वह अेक ही है ! अुसका कंटकी यह नाम किस अरसिक ने रखा है, भगवान् जाने । अैसी फूल सरीखी कोमल लडकी का नाम गुलाब, मालती, अैसा कुछ तो होना चाहिये था ! कंटक बाबू अुसके वास्ते तिलमिला रहे थे सो कोअी यूंही नहीं था ! कंटक बाबू, है सचमुच आपकी मैत्रिणी अैसी ही कि आपको चटका बैठ जाय ! "अुसने विनोदपूर्वक आँखें अुडाते हुअे अपना द्वर्थीभाव सूचित किया !

आज पांच बरस होगये ! वह प्रिय नाम " मालती " अनजाने क्यों न हो अुस स्त्री के मुंहसे पुन.अुसके कान में पडा ! गत पांच वर्ष काले पानी पर अुसने जो बिताये अुनमें, अपने मन में वह निरंतर गुनगुनाता था—पर अेक नाम ही क्या ! आज वह व्यक्ति, वह प्रिय मूर्ति, प्रत्यक्ष रूप से बिलकुल अेक ही हांक पर कहीं न कहीं खडी है, अैसा अुस नाम में जीवन आया ! कंटक का अंत:करण अुस कल्पना के साथ ही अितना भर आया कि, अुसके बारे में अधिक प्रश्न करने के लिये भी अुसके मुँह से शब्द नहीं निकलता था ! अुसके खुद काले पानी पर आने के बाद से गत पांच बरसों में, मालती को सजा मिलने के बाद अुसका क्या हुआ अिसका अुस कंटक को अुस किशन को पता नहीं लगा था! आज वह मालती पुन: अुसके हाथ लग गअी हो अैसा अुसे लगा! अुस स्त्री से अुसका पता चलाने के लिये वह आज कितनेही दिनों से कह रहा था । वह स्त्री काले पानी पर के स्त्रियों के कैदखाने में अेक स्त्री जमादार के तौर पर काम करती थी । आज अुसे अुस काले पानी के बंदी गृहमें कंटक द्वारा बताअी गअी कंटकी नामकी तरुणी मिली थी और अुस स्त्री ने अुसका पता कंटक को अिस प्रकार दिया । " तेरी मैत्रिणी अितनी अच्छी है ! तुझे चटका लगे अैसी है वह तेरी मैत्रिणी ! " अिस तरह, आँखें विनोद से अुडाकर बोलते हुअे कंटक की वह प्राण प्रिय प्रेयसी है यह भाव अुसने मजाकमें सूचित किया, अुसका कंटक को अितना गौरव अनुभव हुआ कि, वह मेरी सचमुचही सखी है, मैं अुसपर लट्टू हुआ हुआ अुसका प्रियकर हूं अैसा बोलकर दिखाने का भी अुसको असंवरणीय मोह हुआ । पर——

" अुस सुरेख लडकी में यदि कोअी व्यंग है तो अुसका वह विसंगत नाम 'कंटकी' यही है--" अैसा वह स्त्री जो बोल गअी थी अुस विषय में तत्कालही अुसका प्रतिवाद करके अुससे कही डालें कि " नहीं, अुस में वह विसंगत नामरूपीव्यंग भी नहीं है ! अुसका असली नाम ' कंटकी न होकर तुझे जो अभीष्ट है वह ' मालती ' ही है ! " अैसा भी अुसको असंवरणीय मोह हुआ । पर--

लिखते समय अितनी दीर्घ प्रतीत होनेवाली अिन भावनाओं को अुसके मनमें आकर जाने के लिये दस पांच क्षण भी लगे नहीं होंगे । अुसीमें अुसने विवेक भी किया कि, वह सब कहना ठीक नहीं । वह , मेरी बहन--नाम्ना कंटकी--ही है, सरकारी लेखनद्वारा सजा के वृत्तांतमें अंकित किये हुअे टिप्पण के अनुसारही हमारे हाथ से अुसको भगा कर ले जानेवाले अेक दुष्ट का वध हुआ, यही हमारा अपराध है ! अुसी के लिअे दोनों को यह आजन्म काले पानी की कैद हुअी है ! यह जो पहले से वह कहता आया था, वही आगेभी कहते रहना ठीक होगा ! अुसकी माता के साथ अपने पूर्व के मथुरा के संबंध का तथा रफिअुद्दीनका कुछ भी संदेह नहीं दिखाना चाहिये, यही अिष्ट, अैसा अुसने अपने मनही मन तय किया ! पर--

यह सारी विचारों की मालिका अुसके चित्तमें जिस समय चलरही थी अुस समय वह सिर्फ अपनी ओर देखता हुआ, अनुच्चारित शब्द ओठों ही ओठों पर गुनगुनाता हुआ गडबडाया सा दीखाता है, अैसा अुस स्त्री ने ध्यान से देखा और पुनः वह अुसी मीठी मजाक के सुरमें बोली,

" शरमा गये अं, किनका अप्पाजी का संकोच प्रतीत हो रहा है, वह विषय निकालने के लिये ? "

" हां, अैसाही दीखता है ! " अप्पाजी हँसे, " अच्छा, तुम अपने अंदर जाओ, और खुले दिल से तुम्हें जो जानकारी हासिल करनी हो तथा अपनी मैत्रिणी को जो संदेश देने लेने का हो, वह हमारी अनसूया से कहदो, जाओ ! तुम्हारी प्रेमभावनाओं से अस्मादृश विरस अेवं रूक्ष वृद्धोंकी अपेक्षा हमारी अिस अनसूया सरीखी मधुर भाषिणी, वत्सल और करुणामयी स्त्रीका हृदयही अधिक समरस हो सकेगा, यह बिलकुल सही है । जा, अनसूया चाय रखनेवाली है न पहले ? "

अुस सहानुभूतिशील वृद्ध ने अपनी स्नुषा को अंदर जाने के लिये अेक अूपरी चाय बनाने का निमित्त भी सुना दिया। अनसूयाने भी वह समयज्ञरुप से पहचान कर अंदर जाते जाते कंटक बाबू को बुलाया।

"आअिये न, कंटकबाबू, अंदरही। मैं चाय तय्यार करती हूं, तबतक बातचीतही करें, आअिये! मीठी मीठी खबरें कितनीही सुनानी हैं आपको आपकी अपहृत मैत्रिणी की। आअिये न।"

बोलते बोलते अुसने झुककर नन्हीं अुषाके माथे की बिंदी कुछ ठीक की; मोहन के कमीज की कॉलरकी तह को थोडासा व्यवस्थित किया। तत्पश्चात् दोनों बच्चों के हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर अंदर चली। अुसने "आअिये न, अंदरही आअिये!" अैसा अेकबार फिर घरके दरवाजे में घुसते समय आमंत्रण दिया—अुसके साथही वापिस आयेहुअे मोहनने अपने नन्हे हाथों से कंटककी चिच्ची अुंगली पकड कर अुसे खींचना शुरू किया। कंटक अुठा, और मानों मोहन की ताकत ही से वह खिंचा चलाजा रहा हो अिस बातकी तसल्ली मोहन को देने के लिये पर वास्तवमें, अूपर अूपर बहाना करने के लिये "अरे, मुन्ना, आया आया! तोड़ डाली न, मेरी चिच्ची अुंगली!" अिस तरह हंसता हुआ मोहन के साथ अंदर गया। अप्पाजी भी वह देखते हुअे मनही मन थोडीसी नटखट हंसी हंसे। बादमें पासही पडे हुअे "साप्ताहिक टाअिम्स नामक अंग्रेजी पत्रका अंक हाथ में लेकर पढते हुअे बैठ गये।

कंटक के अंदर आने के बाद अनसूया बाअीने अुसे जो जो जानकारी अभीष्ट थी सो यथाशक्ति रसाल रूपसे कह सुनाअी। दूर गये हुअे, नहीं, नहीं, लापता हुअे हुअे प्रियजन का अैसे अप्रत्याशित रूपसे पता लगने के बाद प्रेमी हृदय के लिये अुसका समाचार कितना पूछूं और कितना न पूछूं अैसा कस प्रकार हो जाता है और अैसे समय अुसके बीच बीचमें अुकता देनेवाली जिज्ञासा का भी विरस न करते हुअे समाधान करना यह प्रेमी दूतका किस प्रकार आद्य कर्तव्य होता है, यह जान सकने की सहृदयता अनसूया में थी। अुससे कंटकने अेक महीना पहलेही विनयपूर्वक कहा था कि, "जिस स्त्री कारागारपर वह स्त्री जमादारनी का काम करती थी, अुसमें अुसकी अेक बहन आअी हुअी होनी चाहिये। अुसके साथ ही अुसको भी जन्मकैद की सजा

हुअी थी । पर अुसे हिंदुस्तान ही में अेक अलग कैदखाने में भेज दिया गया था; अत: अुसका आगे चलकर क्या हुआ, अुसे भी अुसकी तरह काले पानी भेज दिया गया है, या हिंदुस्तान ही के कैदखाने में रखा गया है, अिस बातकी बहुत खोज करने पर भी कुछ पता नहीं चलपाया था। तब अुसका पता खोज निकालने का प्रयत्न जितना हो सके अुतना अनसूया देवी करें।" कंटकने जबसे अुससे यह बिनति की थी, तब से अनसूया अुस खोजमें थी। पर कंटकद्वारा बताअी गअी 'कंटकी' नामकी अुसकी बहनसरीखी कोअीभी लडकी अुस वक्त काले पानी के स्त्री कारागार में नहीं थी। पहले भी आने का पता नहीं लगता था। परंतु अिस महीने जो 'चलान' आया अुसमें कंटकी नामकी अेक तरुण लडकी, आजन्म कैदकी, कंटकद्वारा निवेदित बीस के नीचे की अुम्रकी, रूपवती, जिसके सजा के विवरण पत्रमें दीगअी जानकारी कंटकद्वारा दी गअी जानकारी से मिलती है, अैसी अेक आअी है, यह बात अनसूया जमादारनी के ध्यानमें आठ-दस दिन पहलेही आअी थी और अुसने वह बात कंटकको सात आठ दिन पहले ही बता दी थी। अुससे प्रत्यक्ष भेटकर अुसकी जानकारी, जितनी हो सके अुतनी अुसी के मुँहसे निकाल लेने का काम अनसूयाने तब अपने अूपर लिया था। और अुसके अनुसार मौका साध कर, 'कंटकी' से मिलकर अुसने अुसके कैदखाने की गडबडी में जितनी संभव थी अुतनी जानकारी आज पता चला ली थी। अुसी की मार्ग-प्रतीक्षा अत्यंत अुत्सुक व्याकुलता से करते हुअे बैठा हुआ कंटक अुस बारे में निश्चय के अनुसार अनुसूया की तरफ से कुछ न कुछ समाचार अवश्य मिलेगा, अिसी अुम्मीद से आज अुनके घरपर बडी हिंमत से अुस भाग के वरिष्ठ अधि-कारियों की आँख बचाकर और नीचे के चौकीदारों की मुट्ठी दबाकर स्वत: आया था।

क्योंकि कंटक भलेही कैदियों का बाबू था, पर था अेक कैदी ही; अत: अुन 'दाखलेवालों के' स्वतंत्र ग्राममें अिस प्रकार समय असमय आने जाने की अनुमति अुसे नहीं थी। और अिसी लिये सांझकी नाकेबंदी चौकी चौकी पर होने से पहले ही अुसे निकलकर वापिस जाने की जल्दबाजी थी।

अुसी जल्दबाजी में अुसने घरमें जातेही अनसूया से अितने सवाल, बीच बीचमें, अितने अक्रमसे, कुछ व्यर्थही बारबार तो कुछ अधूरेही पूछे

थे कि, अुनका सुसंगत मथितार्थ अुसके ध्यानमें आसके और अुसके अनुसार अुसे अुसके अनुरोधसे जो कुछ निश्चित संदेश कहनेका है, अुसकी रूपरेखा स्थिर की जासके अिसके लिये भी मौका अथवा अवधान नहीं रह गया। चोर जानवर, चोरीके खेतमें घुसने के पश्चात् जिस तरह भराभर जो दीखे अुसी घासके, कडबीके हरी घास के ग्रास तोडकर मुंहमें ठूंस लेते हैं, वैसे ही अुस थोडे से समयमें जितना कुछ पूछा और सुना जा सकता था, अुतना पूछ सुन ही रहा था कि, साढे पांचका घंटा बजा! लौटने की वह विलंबित से विलंबित वेला थी। अतअेव अुसने अनुसूया को अितनाही सँदेसा आखीर में दिया कि––

"मेरी बहिन से कहियो कि,–घबराये न। मैं अेक अठवारे के भीतर आगे का निश्चय जतला दूंगा। तबतक धीरज धरे और आरोग्य की चिंता अुस खूनी बंदीगृह की यातनाओं में भी जो अुपाय संभव हो अुनसे करे!"

अितना संदेसा कंटकी से कहने के लिये अनसूया के पास रखकर और अप्पाजी को जल्दबाजी में नमस्करके कंटक लुकता छिपता अुस घर में से बाहर निकला और वह झाडों और झंखाडों मे ढँकी हुअी पहाडियों से घुमावों-फिरावों से वापिस जाने लगा।

मुँहपर फडाफड जड दिये थे! : : : १४

कँटक अप्पाको नमस्करके अुस पहाडी के झाडों झंखाडों में से लुकते छिपते जल्दी जल्दी जो निकला, सो अुन दाखलेवालों की बस्तीवाले टापूकी जो चौकी थी, वहां तक बिलकुल सुरक्षित रूपसे जा पहुँचा। चौकीवाला अुसके हाथ के नीचेका ही था अतः अुसने भी अुसकी ओर दुर्लक्ष करके झटपट आगे निकल जाने का अिशारा किया। वह रक्षित मार्ग सांझके वक्त बंद होनेसे पूर्वही कंटक आगे चला गया और कैदियों के लिये खुले हुअे राजमार्गपर अुसके अेक बारगी लगते ही अुसका जीव थोडासा नीचे पडा। (अुसे निश्चिन्तता का सुख अनुभव हुआ)

अंदमान में काले पानी के कैदियों को लाये जाने के बाद अुस रूक्ष कारागृह में प्रथमत: ठूंस दिया जाता था, जिसकी तिसकी श्रेणी की वारी के मुताबिक प्रथम दंडित और न्यूनापराधियों को, बरताव अच्छा रहा तो, बहुधा छह महीनों के बाद कारागृह से बाहर छोडने में आता था। जो सधे हुअे-खुर्राट, बहुवार दंडित होते, अुन्हें अुन की अपराध भीषणता और वहां के अुस कारागार के अंदर का बरताव लक्ष में रखकर, अेक से पांच बरस के बाद, साधारणत: कारागृह से बाहर भेजा जाता था। कंटक जब काले पानी में गया, अुस वक्त कारागार बाहर छोडे हुअे कैदियों के रहने के वास्ते जो सरकारी बैरकें बांधी गअी थीं, अुन्हींमें रखा जाता था। लकडी का काम, जंगल कटाअी, अींटका काम, घर बांधने का काम, चाय के बागान, रबरके बागान प्रभृति नानाविध कामों के बडे बडे कारखाने अंदमान के भिन्नभिन्न टापुओं में स्थापित रहते थे। अुनमें वे बंदीगृह से बाहर छोडे गये कैदी टोली-टोली से भेजे गये कि अुन्हें अिन बैरकों में रखदिया जाता था। अुनकी ओर से सख्त काम करवा लिया जाता था। पर किन्हीं निश्चित टापुओं में (तालु-कों में) अुन्हें खुले तौर पर छुट्टी का वक्त बिताने की मर्जी के मुताबिक खाने पीने की, कुछ चुनींदा अिष्ट मित्रों से मुलाकात करने की, आज्ञा लेकर दूसरे टापूमें जाने आने की, बोलने की छूट रहती थी। अुन्ही में किन्हीं दंडितों को वंदी जमादार अित्यादि बनाने में आकर मासिक दो-चार रुपये जेब खर्च भी मिलता था। अैसी स्थिति में दस-अेक बरस व्यवहार ठीक रहा तो अुनमें से अच्छों को "दाखला" देकर स्वतंत्र रूपसे घरबार तथा खेतीबाडी बसाने और करने की छूट मिल जाती थी। अिन्हीं को "दाखलेवाले" स्वतंत्र कहा करते थे। अुन दाखलेवालों के छोटे-गांव, कैदियों के टापूसे अलग रक्षित बस्तियों में बसाये जाते थे। अुन 'दाखलेवाले' स्वतत्र गांवों में बिना दाखलेवाले कैदियों को विशेष अनुज्ञा के बगैर जाने नहीं दिया जाता। अुन दाखलेवालों में, दाखलेवाली कैदी स्त्रियों से शादी करने के बाद, जिन लोगों को बच्चे हो जाते अुन लोगोंके बच्चे मात्र जन्मत: सर्वथा स्वतंत्र नागरिक समझे जाते थे। ये परिवार स्वत: खेतीबाडी तथा अन्य कामधंधा करके अपना पेट भरते थे। अुनमेंसे कितनेही लोग अपने कर्तृत्वसे अच्छे धनवत्तर भी बन सकते थे।

काले पानी पर गअी हुअी दंडित स्त्रियों की भी व्यवस्था अैसीही होती थी। पर अुनकी बढती मात्र शीघ्र होती थी। काम पुरुषों के सदृश कठिन नहीं रहता। स्त्री बंदीगृहमें प्रथम पांच अेक बरस अुन्हें बंद रखते थे। फिर अेक विहार-स्थानमें अुन्हें छुट्टीमें घूमने फिरने की छूट मिल जाती थी। वहां, जिन्हें शादी की अनुज्ञा मिल जाती थी, अैसे कैदी पुरुषों को भी भेजा जाता था। कडे पहरे में अुन स्त्री पुरुष कैदियों को अुस छुट्टीमें अेक दूसरों से जानपहचान और प्रेमपरिचय प्राप्त करने का मौका दिया जाता था। यह विहार स्थल क्या था, लंडन का 'हाअिड पार्क', पूने का बंडगार्डन, अुस काले पानी के पापियों का प्रेमोद्यान! वहां होनेवाले प्रत्यक्ष परिचय के अनंतर यदि किसी स्त्री पुरुष का आपस में विवाह करने का निश्चय अुभय संमति से स्थिर हो जाता तो योग्यायोग्य का निरीक्षण करके सरकार जिन्हें अनुमति देती वे आपस में रजिस्टर्ड पद्धति से शादी कर लेते और "दाखला" मिलने पर अुस जोडे को स्वतंत्र गांवमें भेज दिया जाता था। शादी के वास्ते जातपात का बिलकुल बंधन नहीं रहता था। किन्हीं निश्चित कारणों के लिये घटस्फोट (तलाक) भी मिल सकता था।

किसीने फिर अपराध किया तो अुसका "दाखला" रद्द करके अुस शख्स को पुनः कैदमें डाल दिया जाता था। यथारीति जांच पडताल करके फाँसी तककी सजा अुसे मिल सकती थी। हत्याका प्रयत्न भी वधार्ह अपराध अंदमानके कैदियों के प्रकरणमें समझा जाता था। अुद्दंड, अघोरी और अमानुष प्रवृत्ति के शतावधि जन्म कैदियों को अीदृश अत्यंत कठोर अनुशासन में रखे विना, अुस टापूमें जीवनसुरक्षितता, शांतता और सुव्यवस्था को कायम रखना पूर्णतया दुर्घट ही था।

अपराध विज्ञान (Criminology) के ध्येय तीन हैं। प्रतिशोध, प्रायश्चित्त, और प्रगति! अपराधियों से बदला लेना यह मनुष्यकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। 'दांतको दांत और आंख को आंख' यह यहूदियों का धर्म दंडक (=प्रथा) था। जिस अवयवद्वारा अपराध हो अुसका छेद कुछ प्रकरणों में तो मनुस्मृति क्या, जग के प्राचीन ग्रीक अित्यादि निर्बंध (कायदे) पठानों जैसे किंवा सर्वथा जंगली जातियों में 'जिसने हत्या की वह पकडमें न आया तो अुसके वंशमें किसी न किसी को जान से मार डालने

का रूढाचार क्या, सभी प्रतिशोधों के ही अुग्र अेवं सौम्य प्रकार हैं। अुसके आगे का विवेक अैसा है कि, राजसत्ता को तो अपराधी का प्रतिशोध, बदला, *यही अेक अुद्देश्य न रखके, जिससे कृतकर्म के भोगने पडनेवाले दंडसे अुसपर* आतंक बैठ सके अितनाही दंड, प्रतिबंधक प्रायश्चित्त देना चाहिये। चोरका हाथ ही न तोड डालकर, हाथ को अितर अुपयोगी कामों के लिये सुरक्षित रखकर, चोरी करने भर का अुसे भय लगे, सजा के डर से तो वह चोरी न करे अैसा अुसके अुदाहरण को देखकर औरों परभी आतंक बैठ जाय, अैसा दंड देना अुचित है, यह अगली सीढी हुअी। प्रतिशोध यह ध्येय न होकर प्रायश्चित्त यह दूसरा ध्येय अिष्टतर प्रतीत होने लगा। अुससे भी आगे जाकर अपराधियों का मन केवल सजाके डरही से नहीं, बल्कि मूलतः ही स्वेच्छा से अपराधों से परावृत्त किया जावे, जिन परिस्थितियों के कारण सुशील मनमें अपराध की प्रवृत्ति अुत्पन्न होती है अुन परिस्थितियों को पलटा जावे, शिक्षण, सत्संग मनोविकास अित्यादियों के संपोषण से अुनके मनों को ही समाजशील और सुसंस्कृत बनाया जावे, अुनके भीतर *की मानवता को बढानेवाली, अुनके स्वभावों की सुधारणा की जावे,* अुनके भीतरकी मानवता की ही प्रगति होती जावे, यह अपराधियों के साथ व्यवहार करने का तीसरा अुद्दिष्ट रहना चाहिये।

सब मिलाकर देखने से, अंदमान के अपराधियों से बरताव करने की जो नीति तीस चालीस बरस पहले आंकी गअी थी, अुसमें कंटककोटयग्रता न भी हो तो भी बव्हंशमें अिन तीनों शास्त्रीय अुद्दिष्टों का अेक अशास्त्रीयही क्यों न हो पर सहेतुक मिश्रण किया हुआ था, यह अुपरिवर्णित काले पानी के दंडितों के अुस काल के वर्गबंध पर से, बढतियों के क्रमपर से, सुधारणीय और दुःसुधारणीय कसौटियों के अनुसार प्रत्येक के लिये पात्रापात्रता के अनुरूप कठोर अथवा मृदु स्वरूपके विभिन्न बरतावे की नीतिपर से दृष्टिगोचर होगा ही।

जिस कैदी का दस बारह बरस के कठोर अनुशासन से, कडी मशक्कत से और कृतकर्मों के यथेष्ट प्रायश्चित्त के भी अुपभोग से, शील सुधरा हुआसा प्रतीत हो, अुन्हें "दाखला" देकर अंदमान के अंदमान में ही स्वतंत्र रूपसे

रहने की अनुज्ञा मिलनेपर, अुनके गांव अलग से बसाने में और सुधरे हुओं के गांवों में अच्छे व्यवहार के बारह बरस जिनके अभी पूर्ण नहीं हुअे हैं, अैसे कैदियों को मुक्त रूपसे जाने आने न देने में भी अधिकारियों का यही कटाक्ष रहता था कि, अिस प्रकार के पृथक्करण से अुन सुधरे हुओं का अिन न सुधरे हुअे चंड प्रकृति कैदियों के अुपद्रव से संरक्षण होवे और अुस कुसंगति से अुन दाखलेवालों का किंवा वहीं पैदा हुअी हुअी अुस नअी पीढी का अधःपतन न होवे ।

कंटक को भी तब काले पानीपर आकर पांच अेक बरसही हुअे थे, अतः वह अभी कैदियों की श्रेणीमें ही था। अुसे कक्ष—कारागृह में थोडे दिन सख्त हस्तश्रम करना पडा। अुसके बाद लिखनेका काम मिला। वहाँ अुसने बहुतही अच्छा बंदीगृहीय व्यवहार रक्खा अतः छह महीने के बाद अुसे कारागृह में से निकाल कर बाहर टापू में लेखक के काम पर भेजा गया। अुसने अंग्रेजी का भी लेखनवाचन बढाया। काम भी अच्छा किया, अधि-कारीवर्ग अुसको चाहने लगा। अंदमान में के अत्यंत कठिन और कष्टप्रद कामों में गिनेजानेवाले जंगल कटाअी के कामपर अब अुसकी, गिनती और देखरेख करनेवाले "कैदी बाबू" (Convict Clerk) के तौरपर नियुक्ति हुअी थी और अुसके हाथके नीचे सौ सश्रम बंदिवानों की टुकडी सघन अरण्यच्छेदन के कामपर भेजी जाती थी। पर तो भी वह स्वतः चूंकि अभी अुसे काले पानीपर आकर पांचही बरस हुअे थे अिस लिये, नियमानुसार कैदियों के वर्गही में अंतर्भूत होता था। और अिसी लिये अुन दाखलेवालों की बस्तीमें अुसे मुक्त रूपसे आनेजाने की प्रत्यक्ष अनुमति नहीं थी। अप्पाजी के परि-वारके साथ जंगल कटाअी के लिये जाते आते योगायोगसे पहिचान होकर अच्छी घनिष्ठता भी जो हो गअी वह भी अंतस्थ रूपसेही थी और अतअेव आज भी वह अुस बस्तीमें वहाँ के चौकीदारों के साथ अंतस्थ संधान बांधकर ही हमेशा की तरह चोरी चोरी भेंटने के लिये जब गया, तब वह भेंट सांझको चौकीपर आना जाना बंद करने के पहले समाप्त करके और अप्पाजी से विदाअी लेकर अुस टीलेपर से लुकते छिपते अंतमें बंदीवानों के लिये खुले हुअे और अुस जंगल तुडाअी की टुकडी के रोजमर्रा के रास्ते पर आतेही अुसकी जानमें जान सी आगअी !

कंटक के खतरे से शून्य रूपमें राह पर लगने के बाद अुसके मनमें अनसूया के मुँह से मालती के बारे में जो जानकारी बहुत दिनों के बाद मिली, अुसके संबंध में विचार चलने शुरू हुअे । गत पांच बरसों का सारा अपना अितिहास अुसकी आंखों के सामने आकर खडा हो गया । अुन दोनों विषयों में ही, अुसदिन अप्पाजीने सत्तावन के स्वातंत्र्य युद्ध में भाग लेनेकी जो बात अुससे कही थी और अुसके जाननेके साथही अुस कुटुंब के बारे में जो अेक राष्ट्रीय आदर प्रतीत होने लगा था, अुसके विचार भी मनमें आ रहे थे । अुनके अनुषंग से अुस कुटुंब के साथ कंटक का परिचय कैसे होगया, और कैसे बढता गया, यह चरित्रभी अुसके विचारचक्रों में गुंफित होता जा रहाथा । और सबसे महत्त्व की जो चिंता, 'आगे क्या करना चाहिये' यह भावी कालके गर्भ में विद्यमान घटनाचक्र अुन अतीत कालिक घटनाचक्रों की स्मृतियों को पुन: पुन: पीछे धकेलते हुअे, 'मेरा निर्णय पहले करो' अैसा जताते हुअे अुसके सामने बलपूर्वक आकर खडा हो जाता था ।

ये सारे विचार किसी भी विषय पर क्रमेण अुसके चित्त में नहीं आते थे, बल्कि अुलझे–सुलझे रूप में आगे पीछे, बीचके बीचमें आते जाते थे । डेढ दो मीलके अुस रास्ते पर झपटकर चलते समय कंटक अुन विचारों की गुरझट में बिलकुल अुलझ गया था ।अुन विचारों की गुरझट को सुलझा कर यदि विषय-वार क्रम लगाया जाय तो मालती के प्रकरण की जोड तोड साधारणत: अिस तरह की जा सकती है ।

अप्पा के कुटुंब से परिचय कुछ महीनों पहले जब हुआ था तब अुसे मालूम पडा था कि अुसकी स्नुषा अनसूया स्त्री बंदी गृहकी अेक 'दाखलेवाली' जमादारनी है । काले पानी पर आने के बाद से, अंदमानके स्त्री बंदी गृहमें मालती आअी हुअी है या नहीं किंवा अुसे आजन्म कैद हो जाने के पश्चात् हिंदुस्तान के ही किसी कैद खाने में रोक रक्खा है, अिसकी वह खोज जोरशोर से कर रहा था । परंतु स्त्रियों के बंदी गृहपर सख्त पहरा रहने के कारण और अुसमें पुरुष कैदियों का प्रवेश भी न हो अेवंच संबंध तक न आये अैसी पक्की व्यवस्था थी । अत: कंटकको अुस बातका लेश भर भी ज्ञान नहीं हो पाया था ! जो जानकारी अुसे मिल पाअी थी वह यही थी कि कंटकी नामकी कोअी स्त्री कैद

खाने में हिंदुस्तान से नहीं आओी थी। जब अुसने छे सात महीनों पहले अन-सूया बाओी से अिस बारे में जानकारी पहली दफा पूछी थी, तब भी यही पता चला था कि कंटकी अुस कैदखाने में आओी नहीं है। तस्मात्, मालती को सजा हो जाने के बाद अुसका क्या हुआ, अेतद्विषयक चिंता अुसे निरंतर व्याकुल करती थी। अुसकी याद आतेही भोजनमें मिठास नहीं मालूम पडती थी। वह अुसे जब पहले प्रत्यक्ष रूपसे भेंटती थी अुस वक्त भी अुसके स्पर्श के लिये वह जितना रोमांचित नहीं होता था, अुतना अब सिर्फ स्पर्श के स्मरण मात्र से हो अुठता था। अन्न जब मिलता है अुस समय वह जितना लगता है, अुसकी अपेक्षा भी वह जब दुर्लभ हो जाता है तब अुसकी स्मृति ही म वह सौ गुना अधिक मीठा लगता है! पुनः अब अुसके मनमें मालती के अुस स्पर्श की याद आतेही पहले की तरह केवल स्नेहकी भावनाही जागरित न होकर अुपभोग की भावनाभी अुद्दीप्त होने लगती थी। वह साक्षात् जब मेरे पास थी, तब मैं अुसका आलिंगन लेने के लिये क्यों प्रवृत्त नहीं होता था, किस तरह प्रवृत्त नहीं हुआ, किसे मालूम! अिसी बात का अुसे रहरहकर खेद होता था! आखिरी रात, अुसको सतानेवाले अुस मुसलमान गुंडेको मार डालने के बाद जब अुस भयंकर साहस के परिणाम से आत्मरक्षा करने के लिये मालती के साथ अुस देवालय में भरे अंधेरे में जाकर छिपा था, अुस रात को तो नींदमें से डरके मारे थरथर कांपती हुआी वह दचक कर अुठी, अपने आप अुस के गले से लिपटी और 'मुझे अपने संग लेकर सो, आ' अैसे अपने आप अुसे बुलाकर अुससे चिपट कर सोगअी; अस समय की अुन प्रत्येक चेष्टाओं की स्मृतियाँ अब अुसे अेकांत में रहते समय बारबार होती थी। मालती के केशों की लट, वह जब अुसकी छाती से चिपट कर सोओी थी, अुस समय, अुस रात अुसके गालों पर जैसे रुलती थी, बिलकुल अुसी तरह पुनः मानों अुसके मुखपर और गालोंपर रुल रही हो अैसा अुसे भास होता था। अुसका सारा अंतःकरण काम-कंपित होकर थर्राता था, पछतावे से तिल-मिलाता था कि, अुसरात तो कम अज कम, मैं केवल संयम का और भीरु संकोच का शिकार निष्कारण क्यों बना? अमृत का प्याला ओठों के पास रखा, पर पीने की ही बात भुलादी। अुसके संभोगसुख से मैं जन्मभर के लिये वंचित होगया!

प्रेमिक व्यक्ति समक्ष सान्निध्यमें रहे तो सर्वथा आलिंगनमें भी अुसकी अिच्छा अनिच्छा का दबाव अुसपर अनुरक्त रहनेवाले प्रणयी जनकी अुन्मत्त अिच्छापर कुछ न कुछ पडा हुआ रहता ही है। पर जब अुस प्रेमिक व्यक्ति की स्मृति के साथही अुसपर अनुरक्त प्रणयीजन कल्पना के मंदिर में बिहरने लगता है, अुस समय अुसके मनकी अिच्छाअें अनिर्बंध रूप से प्रकट होने लगती हैं। अुसके मनके अनुरूपही सब कुछ हो रहा है, अैसा मनको समझानेकी राहमें किसी किस्मकी बाधा बच नहीं रह जाती। अुसकी अतृप्त और अव्यक्त वासना सारा संकोच छोडकर अपनी अिच्छा पूर्णकर सकती है। अुस प्रेमिक व्यक्ति का, वह समक्ष सन्निध रहते समय जिस हृद्‌गत को कह डालने में मन लजाता है, वह अुसकी स्मृतिमूर्ति से खुल्लमखुल्ला कहने में कोअी संकोच नहीं होता। अपनी लहर के मुताबिक ही अुसकी भी लहर बनाली जा सकती है।

कंटक की भी अवस्था अुस अेकांत तिल्मिलाहट में वैसीही होती थी। मालती अुसके संन्निध समक्ष रूपमें थी तब अुसके विषय में कामुक भावनाअें अुसके असंज्ञ मनके ही भीतर बोअी जारही होंगी तो होंगी, पर वे अुसके संज्ञ मनसे भी खुली तौर पर अपना हृद्‌गत कहने में लजाती थीं। पर अब अुस विरहजन्य अश्रुबिंदुओं के जल से सिक्त होते होते अंकुरित होकर, पल्लवित होकर, अुसके संज्ञ मन की भूमिका में भी बहार पर आकर रहने लगी थीं। पहले प्रथमतः अुसके कल्याण के अर्थ, और अपने कर्तव्य के अर्थ अुसे संकट में से मुक्त करके सुखी बनाने के काममें अपनी जान अुसने खतरे में डाली थी। पर अब अुसके कल्याण के लिये किंवा अपने कर्तव्य के लियेही नहीं, तो अुनके साथही अुसकी प्राप्ति के लिये और अुसके संभोग के स्वर्गीय सुख के लिये भी वह तडफडाने लगा। अुसे संकटमें से छुडाने के काम में अपनी जानको पुनः अेकदफा खतरेमें डालने के लिये हिचकिचाहट नहीं हुअी।

और अुसे आज अनसूयाने जो खबर दी थी अुसे देखते हुअे तो मालती अुस स्त्री बंदीगृह में भी जानपर बीतनेवाले संकट में थी। अुसे यदि छुडाना हो तो कंटक को भी अपनी जानको पिछली दफा की मानिंदही अेक भयंकर खतरे में धकेलना लाजमी था। अिस दफा का संकट कोअी दूसरा अुसपर लानेवाला था यह कहने की अपेक्षा यह कहना ज्यादा मौजूं होगा कि, वह

खुदही अपनी जान का खतरा मोल लेनेवाली थी। अुसने स्वतःही अनसूया के हाथ तादृश अत्यंत करुण-व्याकुलतापूर्ण संदेशा पहुँचाया था।

अनसूयाको अुसने 'कंटकी' का पता चलाने के काम पर पांच-छै महीनों से नियुक्त किया हुआ था। पर अुस स्त्रीबंदीगृहमें कंटकी नामकी कोअी स्त्री तबतक आअीही नहीं थी, अैसा अुसे मालूम पडा था अुस वक्त। तथापि अुसके घरपर अुसके बच्चों को--मोहन अुषा को पढाने के लिये कंटक हमेशा जाता आता था। अनसूयाको बहन मानकर भाअी दूजके मौकेपर तथा अन्य त्यौहारों पर अुसे भेंट के तौरपर कुछ न कुछ दातव्य अवश्य दिया करता था। असके सुशील-विलोभनीय स्वभाव के कारण, अुसकी सुविद्य योग्यता के कारण नानाविषयों के सार्वजनिक हिताहित की चिंता के कारण प्रौढप्रज्ञ अप्पाजी को अुसकी बहुत चाह थी। अुसकी यह घनिष्ठता अिस तरह बढती जा रही थी, अतः अनसूयाने भी अुसका कंटकी के पता चलाने का काम मन से करने का संकल्प कर लिया था।

जिस दिन अुपरिनिर्दिष्ट मुलाकात अुस कुटुंब को कंटक ने दी थी अुसके आठ अेक दिन पहले ही कंटकी नामकी कैदी स्त्री हिंदुस्तान से काले पानी की सजा पाकर अुस अंदमान के कैदखाने में आअी है, यह अनसूया को मालूम पड गया था। अुसकी प्रत्यक्ष मुलाकात का मौका पाकर अनसूया जमादारनीने अुसदिन कैदखाने की अैसी चोरी छिपे मुलाकात में जल्दबाजी में जितना कुछ पूछा जा सकता था सबपूछ लिया। अुसमें कंटकीने भी कंटक के सामने पहले हिंदुस्तान में धरपकड होते समय जो निश्चिय स्थिर किया था, अुसके मुताबिक अपने 'मालती' के संबंध के पूर्ववृत्त को प्रकट न करते हुअे, कंटक की मैं बहन हूं, मुझे अपहरनेवाले अेक दुष्ट का वध करने के साहस के कारण कंटक को और मुझे आजन्म कालेपानी की सजा हुअी है, अैसाही पूर्ववृत्त कह सुनाया। वह सजा हो जाने के बाद कंटक से अलग करके मुझे हिंदुस्तान ही में दूसरे अेक कैदखाने में ठूंस दिया गया और वहीं गुजिश्ता पाँच बरस, सडते, कुढते और रोते हुअे बितादिये। कंटक का क्या हुआ सो कुछ पता नहीं चला; पर वह सजा पाकर अंदमान भिजवा दिया गया है, अिस बात का पता कैदियों के द्वारा आअी खबर से मिला। अुसके बाद, हिंदुस्तानमें सडते रहने की अपेक्षा अपने को अंदमान भिजवा

दिया जाय, अिसबातपर सरकार के यहां धरना दिया। और अंतमें अपने को कालेपानी भेज दिया गया-अैसा अपनी सजाके बाद का पूर्ववृत्त भी कंटकी ने अनसूयाको बतला दिया ।

तब अुस भेटमें कंटकी अनसूया से बोली,

"जमादारीणबाअी, मेरी अुम्रकी अभीतक बीसीतक अुलटी नहीं पर जगकी अत्यंत असह्य यातनाओंकी जो भरमार सौ वरस तक जीवित रहे हुओं के हिस्से में सहसा नहीं आती वह मेरे हिस्सेमें आचुकी है । अितना जुल्म , अितनी विडंबना, अितनी तकलीफ, अितना दुःख मैंने आजतक सहन किया ! और खास बात यह है, श्रीमतीजी, कि, मैं देवके सम्मुख कहती हूं, मेरा खुद का मेरे अेक अपराध को छोड, दूसरा कोअी भी अपराध मेरे हाथसे नहीं हुआ, जिसके लिये मुझे यह सब सहन करना पडे। और मेरा जो अेक अपराध है, वह है, मेरा रूप ! मैं जहां भी जाती हूं, वहीं मेरी राह में अडंगा बन कर खडा हो जाता है । अिसी रूपके खातिर मैं मातृगृह से निकलकर कैद खाने में भी जिसके हाथमें पडी, अुसीने मेरी विडंबना की और जिसके हाथमें नहीं गअी, अुसने केवल अिसी कारण मुझपर जुल्म तोडे ! श्रीमती जी ! अब तो मुझे अिस जीवन की अिच्छाही नहीं रह गअी है ! हिंदुस्तान के कैद-खानेही में मैं अेकदफा जान देने वैठी थी, पर मेरा वह प्रयत्न असफल हुआ, और मुझे अुलटे छह महीनेतक हाथमें कडियाँ और पैरों में बेडियाँ डालकर कोठडी में ठूंस दिया गया ! जुल्म से छुटकारा पाने के लिये किये गये अपराध कें कारण और भी अधिक जुल्म होने लग गया ! अंतमें अेक ही आशातंतु अवशिष्ट रह गया था, अुसी के सहारे लटक कर किसी तरह मृत्युकी खाअी में गिरने से बचगअी ! वह आशातंतु-आजन्म कैद की सजा सुनाते समय जजकी अेक आश्वासन भरी संभावना थी ! अुसने कहा था-'काले पानी पर जाने के बाद कुछ वर्षों के पश्चात् शायद तुझे छोड दिया जायगा, और अुस टापू ही में क्यों न हो, तुझे अपनी पसंद के सहचर के साथ ममता और वात्सल्य भरा कौटुंबिक सौख्य अुपभोगना मिल जायगा !' न्यायाधीश के वे अमृततुषारसदृश शब्द ही मेरे मनकी कोमल स्त्रीय लालसा को पुनः पुनः अंकुरित करते थे ।

"अितने में मुझे मालूम पडाकि, कंटक भी अंदमान ही में है! आत्मघात से पहले अेक मर्तबा तो अुसकी मुलाकात हो, अिस आतुरता से हर प्रयत्न करके, कालेपानी पर चली आअी हूं! पर यहाँ देखती हूं तो अभी अुसी गंदगी में मुझे बरसों सडते रहना पडेगा। हरे, हरे, भगवान, मैं अब अेक दिन भी अुस तरह सडना नहीं चाहती! अिस शरीर से मैं अब अूब गअी हूं! तुम कंटक की चिट्ठी लाअी हो अतः मैं फिर अेकदफा तुमपर विश्वास करती हूं, सैंकडों आत्मीयता का दिखावटी अभिनय करनेवालों ने मुझे अितनी दफा विश्वासघात करके धोखा दिया है कि, आपभी मुझे धोखा देंगी ही नहीं यह निश्चित रूपसे मैं नहीं कह सकती! गुस्से में मत आअियेगा! मैं आपको झूठा नहीं कहती हूं,—अपने दैव को कहती हूं! पर तो भी मैं आपकी गोद में अपना सिर देती हूं। काटना हो काट डालिये! मां समझती हूं आपको, पैर पडती हूं आपके, मुझे आप धोखा न दीजियेगा! नहीं तो कंटक बाबूके नामसे मैं जो अपना हृद्‌गत आपको बतला रही हूं, वह आप अधिकारियों को जाकर कहीं सूचित कर बैठें और मेरे सिरपर अेक नया ही संकट टूट पडे! डरनेकी जरूरत नहीं न मुझे अुस बात से?

"अच्छा, तो कंटकसे कह दीजिये कि, यदि अुन्हें मेरा छुटकारा तीन चार महीने के भीतर करना संभव हो तो मैं जीवित रहूँगी। मैं अितनी कठोर, अितनी साहसी और अितनी कृत्या बन गअी हूं, दुष्टों में भी दुष्ट लोगों की संगत की शराब जबर्दस्ती पिलाये जानेपर अितनी दुष्ट बनगअी हूँ कि, अपने छुटकारे के लिये मैं हर तरह का साहस, कपट, क्रूरता करने से हिचकिचाअूंगी नहीं। पर यदि अिन चार छै महीनों में अिस कैदखाने से ही नहीं बल्कि, अिस गलीज दुर्दशा से मुझे छूटकारा नहीं मिला तो मैं आत्मघात का यत्न आत्मघात सिद्ध होने तक निरंतर करती चली जाअूंगी! और दस पांच बरस तक कारागृह के नियमानुसार मैं यहां बिलकुल जिंदा नहीं रहूँगी, यह निश्चित है! देखिये मांजी, यह मेरा निश्चय कंटक तक पहुँचाने का, तथा किसी अन्य को सूचित न करने का कष्ट आप करेंगी न? मुझपर ये दो अुपकार करने की दया आप दिखलायेंगी न? हां, अेक और अत्यधिक महत्त्वका शब्द!—कंटकबाबू से विनति है कि, यदि वे अिस वक्त सुखमें हों तो मेरे अिस संदेश को सुनकर अैसा कोअी भी कृत्य न करें, जिससे अुनकी

जान फिर खतरे में पडे ! पर सचमुच, 'मेरा छुटकारा करो' यह मेरी पहली विनति अिस दूसरी विनति से सर्वथा विसंगत है, नहीं ? न, न, मांजी, मैं चूक गअी, मेरी पहली विनति अुन्हें बिलकुल न कहिये, अुनसे अितनाही कहिये कि, मैं समाधानपूर्वक हूँ, और तुम आनंद से हो यह सुनकर खुशी हुअी—अितनाही कहिये ! शपथ अं ! मांजी, मैं जो बोल गअी हूँ, वह बोली ही नहीं हूँ, अैसा समझ कर ही चलियेगा अं ! नहीं तो मेरे छुटकारे के लिये कंटक कुछ न कुछ खतरनाक काम कर बैठेगा, और कोअी निष्कारण बुरा प्रसंग अुसपर आगुजरेगा !—क्या ? अब आपके साथ की यह मुलाकात खत्महीं करनी चाहिये ? अच्छा, जाती हूं मैं ! हां, बिलकुल चुपचाप अिस दरवाजे से अिस प्रकार से लुक छिपकर निकल जाती हूं ! पर मांजी, हाथ जोडती हूँ, मुझसे अिसी तरह कभी कभी मिलती रहा करेंगी न ?—कौन ? कोअी आरही है ? गअी हीं मैं, देखिये ! "

अनसूया जमादारनी ने कंटक की मुलाकात की जो बिखरी हुअी बातें कहीं, अुनका अपने मनमें सुसंगत क्रम लगा कर कंटकने मालती के अुस मुलाकात के भाषण को अिस तरह मनही मन जोड लिया ! अुसको मनमें दुहराया तिहराया, अुस तन्मयताकी स्थिति में मालती द्वारा हुअे हाथ के अिशारों का अुसने भी बीचबीचमें अनुकरण किया और अुसी झोंक में वह झपाझप रास्ता तै करने लगा।

अुतनेही में अुसे याद आयी ' मालती बंदीगृहमें किस कामपर है, अुसकी प्रकृति (तंदुरुस्ती) कैसी दिखाअी दी ' अिस तरह अुसने अनसूयासे जब सवाल किया था तब अुसके द्वारा वर्णित अुसकी दुर्दशा ! बंदीगृहकी रसोअी के काम में अुसे डाला था। वहां का अुसका चित्र अुसके मन में खडा होगया ! बिलकुल सूख गअी हुअी, घुटनेतक अेक मोटीधाटी चिंधडी पहनी हुअी, मोटीधाटी बंदीगृह छापकी अेक अँगिया पहनी हुअी, अेक हफ्ते में जो कडछीभर तेल मिलता अुसी को बचा बचा कर अिस्तेमाल करते हुअे सिर्फ औषध की तरह जिन वालोंपर हाथ फेरने भरके लिये अुपयोगी, जिन बालों को अँछने के लिये वक्त नहीं, अैसे अुलझे हुअे, पसीना-पसीना होकर प्रत्यह चिपचिपाते जानेवाले, और अुन गँदली, अमंगल, अुलटे कलेज की चुडैलों जैसी सैंकडों स्त्री कैदियों के नीच सहवास में, जूंओं और

लीखोंसे भरे हुअे अपने बालों का जैसे तैसे अंबाडा बांधी हुअी, जिसके शरीरमें चोर बुखार आता रहता है, अैसी, और वैसी स्थिति में ही बंदीगृह के अेक तपे हुअे टीनों की छत के नीचे, भट्टियों की तरह भडके हुअे, बडे बडे चूल्हों की असह्य अुष्णतामें, बडी बडी देगचियों में, भात और भाजियों के ढेरके ढेर पकाती हुअी, अुबालती हुअी, घुटनेतक आनेवाले आटेके ढेरों को कूटती हुअी, अुनकी दो-दो सौ रोटियाँ सेंकती हुअी, दिनभर शरीर सना रहता है जिसका अैसी मालती अुसके समक्ष खडी होगअी ! अुसी दिन रसोअी के कामपर रहनेवाली स्त्री वॉर्डरने मालतीसे चोरी छिपे ४–५ सेर आटा मांगा। मालती ने अधिकारियों की चिठ्ठीके सिवाय वह देना नामजूंर कर दिया। अिस पर वार्डर ने झूठ मूठ के आलसीपने का आरोप अुसपर लगा कर नीच और जैसी मुँहमें आअीं वैसी गालियाँ देनी शुरु कीं। तिसपर मालती ने भी अुलट कर अेक गाली दे मारी–अब वह भी कितनी ही नअी नअी गालियाँ सीख गअी थी !––यह सुनतेही दो तीन दुष्ट स्त्री वॉर्डरोंने पकडकर अुसके फडफड मुहमें मारा था ! अनसूया जमादारनी ही वहाँ अुस बीच आगअी अतः मालती का पक्ष सही साबित हुआ। नहीं तो बिना कसूर के मार खाकर भी अुसी को अुलटे अुद्दंडपने के अपराध के नामपर अधिकारियों के सामने खींचकर ले गये होते, और सजा दी होती !

कंटक के मानस–चक्षुओं के सामने अुन राक्षसियोंद्वारा मुंह पर फडाफड मारने के कारण धाँय धाँय रोती, संतापसे चिल्लाती, निरुपाय होकर अंदरही अंदर कढती हुअी वह मालती बिलकुल राह रोककर खडी हो–अुस तरह खडी रही ! करुणा से बेचैन हुअे हुअे अुस कंटककी आंखों में से आंसू टपटप करके गलने लगे, अुसकी दृष्टि बाष्पधूसर होगअी !–पर तो भी अुसके पैर सीधे तौरपर वह रास्ता झपाझप तै करते हुअे चलेही जाते थे आगे !

अिस सब करुण वृत्तांत की दुःखद स्मृतियों से भर आये हुअे अुसके चित्त में, पानीयीभूत अुसकी अुस बाष्पाकुल दृष्टि के आगे, अगला कोअी निश्चय सुस्थिर होकर आया ही नहीं ! आगे का विचार बहुत कुछ निश्चित था ही ! कुछ भी क्यों न हो जाय अब मालती का और अपना अिस बंदीवास से छुटकारा करना ही होगा। अुस का आत्मघात हर हालत में टालना ही होगा ! आयुष्य में के दो ही दिन क्यों न हों, वेही दो दिन अुस साहस कार्य

के कारण आयुष्य के आखीर के साबित हुअे तो भी, मरने से पहले दो दिनही क्यों न हों, पर मालती के गाढ आलिंगन में, प्रीति की गाढ तन्मयता के स्वर्ग सुख का अुपभोग करकेही छोडना है ! अुसे सुखी करना है, खुद सुखी होना है !!

अितने में, विचारों के अैसे असंयत कल्लोलमें, अेक आध, दीखने में बिलकुल क्षुद्र दिखाअी देनेवाली अडचन अकस्मात् ध्यान में आते ही बडेबडे मनोरथों की आकांक्षा जैसे अेकदम ठिठका देती है, छोटासा पौर के बराबर का बिच्छू किसी महारथी वीर को भी जैसे झट्से विव्हल बना डालता है, अुसी तरह अेक शंका कंटक के अुस स्वर्ग–सुख की मधुर कल्पना को अेकदम किरकिरा कर गअी। ' गाढ आलिंगन में अुसे सुखी करना है, दो दिन तो अुसकी संगतिका स्वर्गसुख अुपभोगना है ! ' अिस रंगमें अुसका मन रंगा जा ही रहा था कि, त्योंही मन ही मन किसी ने अुसे झटका दिया, ' अरे, पर वह कितनी सुस्वरूप और तू ?––कितना कुरूप ! अुसका संगम तुझे स्वर्ग प्रतीत होगाही–पर अुसे ? '

अुसका अकस्मात् विरस हुआ। क्षणभर किशन सुन्न होगया ! सुस्वरूप ही मालती को शाप महसूस हुआ ; कुरूप ही किशनको शाप महसूस हुआ। अुस चमत्कारिक विचारके आते ही अुसको अपने आप पर हँसी आअी। अुसका मन कुंठित होगया। कुंठा ही में हँसा–पर अुसकी गति मात्र कुंठित नहीं हुअी। स्वयंचल (Automatic) यंत्रकी तरह अुसके पैर झपाझप मार्ग निकालते हुअे आगे बढ रहे थे। अपने को सरकारी नियम के अनुसार ठीक वक्त पर बंदीवानों की बैरक में पहुँचना ही चाहिये, यह यद्यपि अुसका मन भूल चुका था, तो भी ज्ञानतंतुओं की कुछ तंतुअें अुसे भूले नहीं बैठी थीं !

कुंठित हुआ हुआ अुसका मन अनिष्टमें से यथाशक्ति अिष्ट तात्पर्य निकालने लगा कि, ' तो भी चिंता काहे की ! वह मुझ सरीखे कुरूप पर अनुराग से अनुरक्त हुअी नहीं तो भी मेरे स्नेह को वह दूर नहीं करेगी ! रूपकी अपेक्षा शील का आकर्षण अधिक मधुर लगे अितनी वह स्वतः ही सुशील और सुरुचि युक्त है ही ! अुसके संग का सुख न सही तोभी संगति का सुख तो मुझे दुष्प्राप्य नहीं होगा ! अुसे तो वह स्वयंही चाहती है, अिसमें संदेह नहीं ! '

अिन विविध भाव भावनाओं के कल्लोल में अुसका मन अुलझाही था कि अुतनेही में अुसके नेत्रों ने, किसी पहरेदार की तरह हिला कर अुस-

के मनको जगा दिया, 'सावधान, वह देख, बंदिवानों की बेरक दिखाओ देने लगी, देख! क्या करना है, यह ठहराने ही में रास्ता खत्म होगया! कैसे करना है, अुसका अुपाय क्या है?'

यों देखें तो, सारा जन्म काले पानी की गंदगी में सडते हुअे पडना नहीं है, मौका मिलते ही कैद की बेडियों को तोडकर निकल भागना है, यह निश्चय किशन का कोअी आज ही का था, सो नहीं! काले पानी पर आते समय ही अुसने यह निश्चय किया था! रफिअुद्दीन सरीखे अघोरी मनुष्य को अपने अस्थिवैर का परिचय न देते हुअे अुसी अुद्देश्य से अपने नजदीक किया था। अुसके साथ गत पाँच बरसों में कालेपानीपर भी अुस निश्चय के संबध में अुसने गुप्त रूप से अनेक बार खासी चर्चा भी की थी; और अुस चर्चा के अनुरोध से ही अुसने लकडीकटाअी के काममें अपनी नियुक्ति करवाली थी। अितनाही नहीं, अुस लकडीतुडाअी के काम पर आनेवाले बंदियों का जब वह मुख्य बंदीबाबू बना, अुस समय अुसने अपने द्वारा तथा दूसरों के द्वारा कोशिश करके युक्ति से रफिअुद्दीनको भी अुस कामपर आनेवाले अपने हाथ के नीचेके कैदियों में भरती करवा लिया था। परंतु अुसे मालती का कुछ भी पता न चलने के कारण अुस साहसके बारे में अबतक अुसने चुप्पी साध रक्खी थी! आज अुसके मन ने जो अुस संबध में चुप्पी तोडी, अुसका कारण मालती का वह सँदेसा—वह दुर्दशा की तथा आत्मघात के निश्चयकी अत्यंत चिंताजनक खबर ही थी!

काले पानी पर के आजन्म कैद की लौहशृंखलाओं को तोडने का साहस कोअी आसान बात नहीं थी, सिर्फ जीभ हिलानेसे वह सिद्ध होनेवाली नहीं थी। सिरको काटकर जो हाथमें ले सके वही अुस काममें हाथ डाल सकता है! यह किशन को मालूम था। वह डर अुसके मन को खा रहा था, अिसी लिये आजतक वह सिर्फ स्कीमें ही बनाता जाता था और धीरे धीरे अुस दिशामें बढता जाता था। पर पासा सिर्फ हाथमें लेकर बैठनेवाले और फेंकने से डरनेवाले जुआरी की तरह, कानूनकी मर्यादा से बाहर पैर रखने में वह हिचकिचाता था। आज अुसने वह पग अुठाने का धीरज दिखलाने का भी निश्चय किया। वह साहस कितना भी जानपर बीतनेवाला हो तो भी दिवसगति पर धकेलने का वह प्रश्न नहीं रह गया था—आज वह अत्यंत निकट का, अेक

अत्यधिक त्वर्य (urgent) प्रश्न होकर बैठ गया था ! और अुसकी वैसी निकट की चर्चा भी अब रफिअुद्दीन के साथ करने का अुसने निर्धारण किया।

पर मालती के बारे में मिली हुआी जानकारी ? वह अुस दुर्जन को बताअी जाये या नहीं ? अेह ! किशन का साथही साथ निश्चय हुआ ! अुसका अक्षाक्षर भी रफिअुद्दीनको, कम–अज–कम आज तो बताना योग्य नहीं ! " रफिअुद्दीन को यह भी बताना नहीं है कि अपने साथही अपने को छुटकारा कराना है मालती का भी —"

मनमें ही अुच्चारित अुस नामके साथ अुसने खस करके अपनी जीभ चबाअी ! कुछ अर्से से वह मनही मन जब मालती के संबंध में विचार करता आ रहा था तब अुसके लिये 'मालती' अिस प्रेमल नामही की वह योजना करता आ रहा था। कंटकी नामके प्रयोग से अुसके मनमें, मालती नामके साथ संबद्ध मूलकी प्रेमल भावना किसी भी अवस्था में जागती नहीं थी अतः वह जब तक मन की भाषामें बोलता रहा 'मालती' नामही का अिस्तेमाल करता रहा था। पर मन में आकंठ भरा हुआ वह नाम यदि भूलकर ओठोंपर खिंड गया तो ! तो अपना और अुसका आजतक छिपाकर रखा हुआ रहस्य खुल जायगा, रफिअुद्दीन का पुराना अस्थिवैर जाग जायगा; अुसकी (मालती की) मांका अपना पुराने खटले का सारा संबंध सामने आजायगा, अविद्यमान विघ्न बाधायें सामने अेकाअेक आकर खडी हो जायेंगी ! पुनः विस्मरण न हो जाय, अिस बुद्धि से वह स्वतः गुनगुनाता हुआ घोखता चला, " मैं कंटक, कंटक !–और वह मालती नहीं—कंटकी ! कंटकी ! कंटकी ! मेरी सगी बहन कंटकी ! "

—और अुसका पैर बैरक के आवार में ज्योंही पडा त्योंही कैदियों की बैरकों में लौट आने की रातकी घंटा का पहला ठोका घन्नन् करके घन-घना अुठा। ' पहुँच गया बाबा, वापिस ठीक वक्त पर ' अैसा कंटकने अेक दीर्घ श्वास छोडा। और मट् से दरवाजे के सामने ही पडी हुअी अेक काठकी पेटीपर, पैरों पर पैर डालकर बैठ गया।

थोडी देर में बंदीवानों का सारा खानापीना खत्म हो जाने पर कंटक-बाबू बैरक से पर्याप्त आगे अेक खुली जगहपर टहलने लगा। बैरकों

के कैदियों का रातको सोने की घंटा होने से पहले कुछ दूर तक स्वच्छंदतया टहलने बोलने-बैठने का वक्त था वह। अुसपरभी कंटक तो वहाँ का मुख्य बंदी बाबू! कुछ देर अकेला टहलने के बाद वह आजू बाजू से साफ दिखाअी दे अैसी अेक अूंची जगह पर बैठगया और अुसने पुकारा,

"अुद्दीन! रफिअुद्दीन!!" यह सुनतेही---

"जी! जी! कंटकबाबू? आता हूँ! आता हूँ!" अैसा अत्यंत आतुरता से अुत्तर देता हुआ रफिअुद्दीन तत्परता से खडा होगया!

अब रफिअुद्दीन अिसीतरह कंटक बाबूके बिल्कुल आधे वचन में व्यवहार करता था!

क्यों कि रफिअुद्दीन को जिसदिन वह कोडों की भयंकर सजा हुअीथी और बुखार के मारे वह फनफना कर बीमार पड गया था, अुसी वक्त बंदीगृह के रुग्णालयमें डॉक्टर के हाथ के नीचे के शिशिक्षित मिश्रकों (Apprentice compounder) में कंटककी नियुक्त हुअी थी। रफिअुद्दीन अुस रुग्णालय में बुखारसे बहुत दिनों तक बिस्तरेपर पडा रहा अुस वक्त कंटक ने अुसे अुस असहाय स्थितिमें बहुत कुछ मदद की। दवादारू, और कैदियों की अपेक्षा अधिक सहूलियतें, चोरी छिपे जरा अधिक दूध की धार, शक्कर की पुडिया, तमाखूकी चुटकी भी अधिकारियों की आँखें बचाकर पहुँचाअी थी। रफिअुद्दीन को पुन: कोल्हूके ही कामपर भेजने का दिन यथासंभव दूर करने के लिये, 'सख्त काम के लिये अभी अयोग्य' अैसी संमति डाक्टरों की ओर से कंटकने ही अजीजी करके लिखवाअी थी। रफिअुद्दीन की गिनियों की गरमी अविद्यमान--सी हो चूकी थी, कोडों की मार का अच्छा डर बैठ गया था, अत: वह आगे चल कर दीगअी कडी मसक्कतों को चुपचाप करता चला गया। कंटक की जैसी जैसी पदवृद्धि होती चली गअी, रफिअुद्दीन भी वैसा वैसा अुसका आज्ञावाहक, चरणचुंबक बनता चला गया। अुसके साथ अपना कोअी लगाव नहीं है, अैसा कंटक अूपर अूपर अिसलिये दिखाता था ताकि अधिकारियों को संशय न हो। रफिअुद्दीन को भी वैसाही करना चाहिये, यह निश्चय हुआ था। पर अंदर से सब प्रकारकी मदद कंटकही रफिअुद्दीन को करता था। अिसीवास्ते रफिअुद्दीन के दिन अच्छे गये। और अंतमें तीन बरस

के भीतरही अुसको कक्षकारागृहसे बाहर निकालकर खुली बैरकों के कैदियों के काम पर भेज दिया गया। अुस के बाद कंटक की और बढती हुअी। वह ज्योंही लकडीतुडाअी का मुख्य बंदी बाबू बना त्योंही अुसने अंदरकी युक्ति से रफिअुद्दीन की भरती भी अुस कठिन काममें लगनेवाले हट्टेकट्टे श्रमिकों में करवाली। कंटक के आश्रय के बगैर अपनी दुर्दशा को कुत्तों ने भी न खाया होता, यह रफिअुद्दीन पूरी तरह जानता था। तस्मात्, कालेपानी पर आतेही कंटक के साथ अच्छा व्यवहार किये जाने का रफिअुद्दीन के दुष्ट हृदय को जो वैषम्य प्रतीत होता था वह अब नष्ट हो चुका था, और अुलटे अब वह सदा सर्वदा मनसे प्रार्थने लगा था—'दुवा' करने लगा था कि, 'कंटक बाबू की बढतीही बढती होती चली जाय!' अुसकी दुष्टाअी बदल गअी हो अिस कारण से नहीं, पर दुष्टों जालिमों में ही अेक खास बात बहुधा अैसी नजर आती है कि, जिन लोगों के हाथमें अुनका हिताहित अगतिक रूपसे पहुँच जाता है, अुन लोगों के वे अुतने समय तक तो पूरी तरह से मनःपूर्वक पैर चाटने लगते हैं!

रफिअुद्दीन तो पहलेही से साहसी, अुलटे कलेजे का, भयंकर अुपद्व्यापी! अच्छे कामों में यदि विनियोग किया जाता तो, वही गुण धैर्य, पराक्रम कहलाता—अैसा साहसी—अैसा शिकारी कुत्ता! जो पालेगा, जिसके हाथ में अुसका हिताहित, अुसके छू बोलते ही जो सामने आये अुसको फाडकर खानेवाला!

वह अब कंटक बाबू का पालतू कुत्ता था! अिसी लिये कंटक बाबू के 'यू! यू!' करतेही अुसके सामने अुछलते हुअे आकर अिस तरह लार टपकाता हुआ खडा होगया!

कंटकने अुसे 'बैठो' कहा। और यह देखकर कि दूर तक कोअी भी नहीं है, कंटक अुससे धीमेसे बोलने लगा—

"अुद्दीन! तेरी और मेरी कालेपानी की तरफ जब रवानगी हुअी थी, अुसी दिन कालेपानी से भाग निकलने की प्रतिज्ञाअें हमने की थीं? बस तो! अुन्हें अब सही करके दिखायेगा?—चर्चा की जरूरत नहीं, कभी की बात नहीं—! बिलकुल आज से सिर हाथमें लेकर, अुस राहपर लगना है। है तू सिद्ध?"

"अेक पैरपर! आपकी जानके वास्ते जान दे दूंगा, पीछे नहीं हटूंगा। पर योजना मात्र व्यवस्थित होनी चाहिये! बहुत दुर्घट कर्म है वह! असफल हो गया तो—"

"जीवितावस्था में असफल ही न हो, अैसी ही स्कीम होनी चाहिये! वैसी बनायेगा तभी तू खरा रफिअुद्दीन! कालेपानी पर से भाग खडा हुआ प्रवीण पापी!"

वह स्तुतिही थी अुसकी! छाती फुलाकर रफिअुद्दीन बोला,

"कंटक बाबू, वह चर्चा मैंने आपसे अनेक मर्तबा की है। मैंने भी अपनी अेक योजना आंकी है पर भयंकर....."

"पहले सुना तो सही, क्या है वह? तब पीछे से 'भयंकर' की बात देखेंगें!"

रफिअुद्दीन खांसा, खखारा, चारों तरफ कोअी आ तो नहीं रहा है, यह फिर से देखकर, अपना वह सिर्फ कहते सुनते वक्तही शरीर थर्रा जाय अैसा भयंकर निश्चय सुनाने लगा!

हिंदू संस्कृति का नया जानपद : : : १५

आठ दस दिन हो गये, वृद्ध अप्पाजी अपने अुस 'दाखलेवाले' गांवकी झोंपडी में बिस्तरपर बीमार पडे थे। सत्तावन के स्वातंत्र्य युद्धमें सेनापति तात्या टोपे की तरफ से लडते समय गोली लगने से जखमी हुअे हुअे अप्पाजी के अुस पैर में तीव्र वेदना हो रही थी। जन्मभर कालेपानी के बंदिवास कठोर और कडी मसक्कत से जर्जरित अुनकी देहयष्टि अब क्षीण होने और सत्तर से भी अधिक बरस की अुम्रके कारण थक चुकीथी और अब अुनके हृदयमें भी असह्य पीड़ा अुत्पन्न होती थी। अिस बीमारी के कारण आंगन में खुली जगह हमेशा पडी रहनेवाली अुनकी वह खाटपर की बैठक भी अिस

हफ्ते सूनी पडी थी, और अुनका बिस्तरा अंदर झोंपडी ही में चला गया था। अिस बीमारी में न जाने अुनका अंत भी कब बोलते बोलते हो जाय, अिसका अुन्हें भरोसा नहीं था अत: अेकदफा कंटक आकर अुनसे मिल कर जाय, अैसा अुन्होंने कंटक के पास बहुत जरूरी संदेशा भेजा था। आज रविवार है; आज अप्पाजी अुस अपनी झोंपडी में के बिस्तरेपर कराहते हुअे पडे रह कर भी खिडकीमें से बार बार बाहर झांकते थे और अुस टेकडीपर से कंटक अुतरता हुआ कब दीखता है, अिधर अुनकी आंख लगी हुअी थी।

अुनके सामने के आंगनमें पांच-पचास कच्चे नारियल की फाँकें सूखने के लिये डाली हुअी थीं। अंदमानमें अिस तरह कच्चे नारियल काट काट-कर अुनकी फांकें किंवा गोल गोल कटोरियाँ सुखा कर के अुन्हें बेचनेका धंधा दाखलेवाले लोगों की अुपजीविका का अेक साधन रहता है। अुनका तेल भी निकालते हैं। वहाँ सहस्रावधि नारियल के घरेलू और सरकारी पेड बोये हुअे हैं। अप्पाजी का भी वह अेक घरेलू धंधा है। अुस सारे आंगनमें सुखाने के लिये डाले गये नारियल की फांकों पर पक्षियों के झुंडके झुंड आकर बैठते थे। अुडाये जाने पर अुड जाते, आजूबाजूके झाडों पर जाकर किलबिल किलबिल करना शुरू कर देते, फिर मौका मिलते ही, फांकों पर चढाअी कर बैठते, अिस तरह लूटमारी के धंधे में वहां के पक्षियों के झुंड पूरी तरह प्रवीण हुअे हुअे थे।

वहाँ के जंगलों और बागों मे रंग बिरंगी अनेक सुंदर पक्षियों की चहल पहल बनी रहती है। अिनमें तोता, मैना, नीले और सफेद सतेज रंग का, लंबी और बलोरकट चंचुवाला मछलियाँ मारने में प्रवीण राघव पक्षी, मंजुल दयाल पक्षी और विशेषत: बुलबुल अित्यादि कितनीही जाति के पक्षियों को प्रथमत: भारतवर्ष से ही, अुपनिवेश बसाने के समय, सरकार वहां ले गअी थी अैसा कहते हैं। पर अुनकी समृद्धि के लिये वह अरण्य और वह भूमि पहलेही से अत्यधिक अनुकूल होनी चाहिये, यह अुनकी वहांपर आजकी संख्या और चैन देखकर सहजही दिखाअी पडेगा। कौवे चिडियाँ वगैरह का तो बस बाजार गरम है वहाँ। अंदमान के बुलबुल तो बहुत ही खुबसूरत! यह पक्षी चिडियों से थोडासा बडा, सिरपर छोटासा सुंदर तुर्रा, आंखों के पास किनारों पर थोडी सी लाली, नन्ही सी अेक पूंछ, अदासे हमेशा अूपर अुठाअी हुअी, अेक

आध तसबीर की सी रेखांकित आकृति, फुर-फुर फुदकनेवाली और भर्र से अुड जाने की चपलता का तो कुछ न पूछिये ! और शब्द अितना मंजुल ! नन्हा पर चटपटा और मधुर कि मानों कामिनियों के हाथों के कंकणों का कलरव! अैसे अुन अंदमानी बुलबुलों के झुंडके झुंड सुखाने के लिये रक्खे हुवे नारियलों की फांकोंपर चढाअी करते समय अंदमान के आंगनों आंगनों में किलबिल करते हुअे दिखाअी देते हैं।

अप्पाजी के सारे आंगन में सुखाने के लिये डाली हुअीं अुन कच्चे नारियलों की फांकोंपर भी बीचबीचमें अुन बुलबुलों के झुंड चढाअी करते थे और अुन पक्षियों को भगाकर अुन खोपोंपर पहरा करने का कामभी करते थे अप्पाके दो पालतू बुलबुलही ! —अुषा और मोहन !

कौवे, चिडियाँ, मैना प्रभृति अितर पंछियों को भगाने में यद्यपि अुषा और मोहन बिलकुल कमी नहीं करते थे तथापि बुलबुलों का झुंड आंगनमें अुतरा कि, अुन्हें भगाने की अपेक्षा अुनका तमाशा देखने की ओर ही अुन अुत्सुक बच्चों का आकर्षण अधिक दिखाअी देता था। बुलबुलों की अुन हमेशा खडी की हुअी पूंछ के नीचे गुलाबी रंगके मृदु मृदु परों का अेक नन्हासा सुरेख फूल रहता है। वह पक्षियों का झुंड चोंच मारमारकर अुन खोपों की मीठी मीठी फांकों के खाने में जब मस्त हो जाता है, तब अुनकी आनंद से खडी की हुअी अुन पूंछों के नीचेके वे रंगीन परों के वृत्त, अैसे सुहाते थे मानों आंगन भर में गुलाब के नन्हें फूलही फूल बिखर गये हों ! अुससे मोहन और अुषाका बहुत अधिक मनोरंजन होता था।

अप्पा भी अुन बुलबुलों का तमाशा देखते वक्त असावधान स्थिति में अपना दूसरा पैर फट्से सीधा कर बैठे और अुसमें अेकदम दर्द पैदा हो अुठी, 'मैयारी !' कह कर वे किंचित् चिल्लाये और कराहने लगे।

"अुषे ! अरी, अप्पा कराहते हैं !" घबराये घबराये मोहन और अुषा आंगनमें से दौडते हुअे अप्पा के कमरे में गये !

"क्या हुआ अप्पाजी ?" मुंह फीका कर के अुषा ने हिंदी भाषामें पूछा। क्यों कि वे बच्चे मराठीकी ही भांति किंवा मराठी की अपेक्षा हिंदी ही में अधिक बातचीत किया करते थे। अंदमान में निवास करनेवाले मराठी बंगाली, मद्रासी, पंजाबी वगैरे सब मातापिताओं के पेटसे अुत्पन्न हुअे बच्चे

हिंदी ही में बोलने लगते हैं । वही वहां पैदा हुओं की असली मातृभाषा रहती है । अपनी अपनी प्रांतीय भाषा जिन्हें अुनके मातापिता शौक के खातिर सिखा देते हैं, अुतनों ही को वह आती है ?

"कहां दर्द होरही है मेरे अप्पा को ? यहां ? मैं दबाअूं, देखिये तो सही, अब आराम महसूस होगा !" अुषाने आग्रह किया; मोहन ने भी जिद की । अप्पाद्वारा अनुमति मिलतेही मोहन अुनके कंधे दबाने लगा और दूखने वाला पैर अुषा दबाने लगी । अप्पा खिडकी में से बाहर टीले की तरफ देखते रहे । कंटक की राह देखते देखते अुससे क्या कुछ कहना है, सो वे विचार करने लगे ।

तीन मिनिट,—चार मिनिट, पांच मिनिट ! अुषा अपने कोमल और नन्हे हाथों से जितना लगाया जा सकता था अुतना बल लगाकर पैर दबा रही थी । पर अप्पा का ध्यान विचारों में लीन था ! वे 'बस' कहना भूलगये ! अुषा के हाथ दूखने को आगये । 'बस अच्छा बेटा !' अिस तरह प्रशंसा पूर्वक आप्पाजी कहें और कामके पूरे होने की खुशीमें वह दबाना बंद करे— अैसी अुसकी अुत्कट अिच्छा रहती थी । पर अुसके हाथ थकने लगे तो भी अप्पा बस ही न कहें । अपने आप 'थकगअी' कहकर दबाना छोड दे तो मोहन हंसेगा !! वह अुसके लिये कठिन होगया । अधिक दबाना भी कठिन होगया ! थकते थकते वह रूठगअी, रूठते रूठते वह चिढ अुठी और अंतमें अप्पा के पैरों पर वह गुस्सा निकालते हुअे अुसने दो चार चपत मारे और रोना शुरू किया !

"मेरे हाथ टूटगये तो भी तुम बस कहके नहीं देते !"

अुस चपत और रोनेके साथही अप्पा भी होश में आये, हंसे और प्रशंसा पूर्वक अुषाके सिरपर हाथ फेरते हुअे समझाने लगे—

"चुप, चुप ! अरी, तो तू दाबती ही काहे को रही भला, हाथ दूखने तक ? मुझे तेरा दबाना अितना अच्छा मालूम हो रहा था कि बस कहने की अिच्छा ही नहीं हो रही थी । अिन नन्हें हाथों में कोअी जादूका गुण है हमारी अुषा के ! वैद्यों की औषध से आजतक जो ठीक नहीं हुअी वह दर्द बिलकुल नहीं सी होगअी देख, तेरे दबाते ही !"

"वह देखिये, वह देखिये, अप्पा, कंटक बाबू टीलेपर से आते हैं, देखिये ! " मोहन बीचमें ही कहकर अुठगया !

अप्पा सम्हल कर बैठ गये । वे दोनों लडके दुड्दुड् दौडते गये, कंटक बाबूके सामने जाकर कौन अुन्हें पहले छूता है, यही अेक अुनके वास्ते नया खेल होगया था ।

"कंटकबाबू, यह दर्द मेरे हृदयमें बीच बीचमें जबसे अुठने लगी है तब से मैंने यह समझलिया है कि, अब मेरा अंत नजदीक ही है ! " अेकांतमें ले जाकर अप्पाजी कंटक से कहने लगे, " पर अुसमें दुःखकी कोअी बात नहीं ! हम जैसों के मरने का अर्थ है-छुटकारा ! पर तुमसे अेक मर्तबा मुलाकात करने की अिच्छा होने लगी थी । तुम कितनेही महीनों से अपनी सुरक्षितता को खतरे में डालकर भी यहां आते हो, मेरे परिवार की स्वहस्तेन परहस्तेन जितनी हो सके मदद करते हो, प्रेम करते हो; अतः हमें भी तुम्हारे प्रति प्रेम मालूम पडता है । तुम्हारा आभार !

"पर अुसमें आप मेरा आभार मानें अैसा मैंने कुछभी नहीं किया । अुलटे अप्पाजी, मैं ही आपके अुपकारों का ऋण चुका नहीं सकूंगा । अिस भयंकर बंदीवास में पडने के बादसे ममता के मनुष्य की मेरे हृदय को बिलकुल भूखही लग गअी थी । आपके परिवार में मुझे वह ममता अुपलब्ध हुअी । पितृतुल्य आप, स्वसृतुल्य अनसूया भगिनी औरस पुत्रों के तुल्य ये बच्चे-ये अिन सबके प्रेमल सहवास में मेरे जो कुछ क्षण गये हैं, वेही मेरे लिये, जीवित रहना चाहिये अैसी प्रतीति करावें अितने विलोभनीय ! दुष्टता, दुर्गुण और दुराचारोंसे भिनभिनाये हुअे अुस बंदीवास के अुत्तप्त वातावरण में से अिस आपकी कौटुंबिक-ममता की शीतलछाया में और बच्चों के प्रेमल हास्य की चांदनी में क्षणभरके लिये आतेही मुझे नरकवास में नंदनवन का स्वप्न पड रहा हो अैसा प्रतीत होता है ! "

"तो फिर कंटकबाबू, मेरी भी आपसे यही विनति है कि, आप मेरे पीछे मेरे अिन बच्चों को अपना समझें । अिन्हें अपना समझकर अिस घरको भी अपनाही बनालें । आप जैसा सुबुद्ध, सुशिक्षित और सुशील मनुष्य अिस पापाचारी बस्ती में दुर्लभ ! अिसीलिये आज मैं यह अपना परिवार आपके हाथों सौंपता हूं ! आप अिसे अपने हाथमें लें तो मैं सुखसे मरूंगा ! "

" अप्पाजी, आपके संबंधमें किसी हुतात्माके संबंधमें प्रतीत होनेवाली अुत्कट आदर भावना अुत्पन्न होती है मेरे मनमें ! अुसमें भी जो लोग सफल होते हैं, अुन स्वातंत्र्यवीरों की अपेक्षा आप जैसे, जिन स्वातंत्र्य सैनिकों के माथेपर सफलता लिखी न होकर केवल जुलमही जुल्म और यातनाअें ही यातनाअें लिखी होती है, अुनके प्रति ही मुझे अधिक गौरव अनुभूत होता है। आपकी मृत्युको किंचिदपि सुखयुक्त बनानेवाला कृत्य यदि शक्य होता तो मैंने अुसे अवश्य स्वीकार किया होता। पर मैं तो स्वतःही सतीका वानः लेकर खडा हूं ! अिस कालेपानी के भीषण कालपाश को तोडकर निकल भागने का प्राणोंपर बीतनेवाला खेल मैं खेलनेवाला हूं ! अुसमें मैं मरूंगा या जीअूंगा किसे मालूम ? "

" मैं कहताहूं ! कंटक, अुस खेलमें मरण ही निश्चित है। सफलता की संभावना अत्यंत बिरली—अपवाद ! आजतक सैंकडों मारडाले गये अुस साहस में, डूब गये समुद्रमें ! गत पचास बरसों में पचास आदमी भी कालेपानी पर से भाग जाकर देशको पहुँचे हों और सुखसे रहे हों अैसा मुझे तो याद नहीं आता ! "

" पर तो भी अुन पचासों में मैं अिकावनवां बनूंगा। नहीं तो मौतकी राहपकडूंगा ! यह देखिये, अप्पाजी, अिस कालेपानी के दुर्वृत्त, दुराचारी, और असह्य जुल्मों के क्षुद्र जगत में अिसतरह जन्मभर जीते रहनेमें तो कौनसा राम है ! व्यक्ति का विकास नहीं, भावनाओं की अुडान नहीं, मनुष्यता का मान नहीं किसी अुच्च और भव्य ध्येय के लिये किंवा परोपकार के लिये शरीर सुखाने का भी पावक पुण्य भाग्य में बदा नहीं ! न स्वार्थ ! न परार्थ ! "

" ठहरो, अिस तुम्हारे अंतिम आक्षेपके विषयमें ही क्यों न हो, तुम्हें अेक नअी दृष्टि देने की अिच्छा है ! परोपकार की—किसी न किसी राष्ट्रिय अेवं अुदार कर्तव्यको अपने आयुष्य का साध्य बना कर अपने समक्ष रखने की— अुत्कट आकांक्षा तुम्हारे चित्तमें हो तो वह तुम्हारी मनुष्यता का विकास ही है। पर अिस अंदमान में प्रेम की, सुख की, भोग की, किंबहुना, अन्न की बुभुक्षा तक की तृप्ति कितनी भी दुःसाध्य हो, तो भी परोपकार की बुभुक्षा किंवा राष्ट्रिय सेवाकी बुभुक्षा यदि किसी को हो तो अुसके लिये अतृप्ति का

अवसर यहाँ कभी नहीं आयेगा। पतितों के अुद्धार का, सुधार का काम सदैव राष्ट्रिय अथवा धार्मिक सेवा का अेक महत्त्वपूर्ण अुपांग बनकर रहेगा ! और अंदमान तो कह सुनकर अपराधियों और अुद्दंडों का, पापियों का और पतितों का अुपनिवेश ! अर्थात् परोपकार का चुनींदा कार्यक्षेत्र ! "

"वह मैं अच्छी तरह जानता हूं। और यदि कभी मैं अिस आजन्म कैद की लौहग्रंथि से छूटकर और कालेपानी पर से निकल कर स्वदेश लौट सका और दूसरे ही नाम से स्वतंत्रतया राष्ट्रसेवा कर सका तो भारतीय कैदियों को अिस कालेपानीपर भेजने की यह क्रूर प्रथा बंद करवा कर यह भयंकर अुपनिवेश जडमूल से बंद करने का आंदोलन यथाशक्ति शीघ्रता से और बलसे परिचालित किये बिना नहीं रहूंगा। हिंदुस्तान में भी कुछ नेताओं का ध्यान अिस प्रश्न की तरफ आकृष्ट हुआ है और कैदियों का अुप-निवेश मूलतः बंद करने के लिये और अिस पापभूमि के अिन सारे अमानुष अत्याचारों को जडमूल से अुखाड डालने के लिये कोशिश हो रही है।"

"पर वे प्रयत्न अुलटी दिशामें कियेजा रहे हैं। यह देखो कंटक, किसी भी देशमें अत्यंत अुद्दंड, और समाजके लिये सर्वथा अुपद्रवकारी चोर, डाकू, हत्यारों का अेक वर्ग तो रहेगा ही। अैसा समाजशत्रुभूत जो वर्ग हिंदु-स्तान में रहेगा अुनके लिये नीति और कानून की मर्यादाओं का भंग करना असंभव कर डालने के लिये शक्ति से और बल से निग्रह किया जानाही चाहिये। फाँसी, आजन्म कैद और कोडों जैसी अुग्र शारीरिक सजाओं के बगैर अुन अुद्दंड लोगों को किसी बात का दरारा (डर) नहीं प्रतीत होगा। अुन्हें कठोर दंड और अनुशासन के पेंचमें पकड और जकडकर रखनेही से कायदापसंद और समाजशील नागरिकों का अुनके अुपद्रवों से बचाव किया जासकेगा, समाजमें शांति और सुव्यवस्था बनी रह सकेगी। अुस अवस्थामें सह-स्रावधि दंडितों को अैसे कालेपानी सरीखे अुपनिवेशों में बंदकर के रखना ही राष्ट्रके हित का रहता है। नहीं तो अुन्हें रखा कहाँ जायगा ? "

"देश के अंदर जेलखाने नहीं हैं क्या ? अुन्हीं में अन जन्म कैदवालों को बंद कर के डाल दिया जाय ! अिस कालेपानी सरीखी पापभूमि में और अैसे अत्यंत जालिम परिश्रम में अुन्हें जिंदा गाड कर डाल देना, यह निर्दयता तो हुआी है, पर राष्ट्रका हित भी कोअी खास सिद्ध होता हो सो बात भी

नहीं! आपको हमें अिस नरक-भूमि में जो यातनाअें और जो जीवन असह्य प्रतीत होता है, वह हमारे साथ रहने वाले अिन सब जन्म कैदियों को प्रतीत नहीं होता होगा क्या ? जिस दयाकी अिच्छा हम करते हैं ! " अुसी की वे जालिम होनेपर भी करते ही हैं !"

" कंटक-बाबू सिर्फ अुथली दया का ही सवाल लें तो दंडितों को दंड न दे कर खुला छोड़ देना ही सच्ची दया सिद्ध होगी ! तुम्हें और मुझे देशमें के कैदखाने में भी रहना प्रिय लगता है क्या ? आजन्म कैद तो अेक ओर रख दो अेक दिनके लिये भी कोअी अपने आपको कैदखाने में बंद करवाने के लिये राजी होगा ? तब क्या अुथली दया के लियेही अैसे समाजको भयंकर अुपद्रव देने के अूपरही अपनी अुपजीविका और चैन चलाने वाले अुग्रप्रवृत्ति अपराधियों को खुला छोड दिया जाय? पुनः अुन हिंस्र हत्यारे, बलात्कारी और अुपद्रवी मुठ्ठीभर नर श्वापदों पर दया दिखाने के लिये जेलखाने ही खुले कर डालोगे तो जिन लखूखा सच्छील पापभीरु अेवं निरागस मनुष्योंको अुनके अुपद्रवों के जबडों में तुम ढकेल दोगे ? अुनपर दया करने की आवश्यकता नहीं क्या ? कुछ अेक अत्याचारीयों पर दया दिखलाने के लिये निरपराध असंख्य व्यक्तियोंपर अुन अत्याचारों को होने देना यह निर्दयता नहीं ? यह लाख गुना अधिक क्रूरता नहीं ? अेतावता दया की दृष्टि से भी लाखों निरपराधियों की अुपद्रवों से रक्षा करने के लिये अपरिहार्य रूपसे यदि कुछ थोडेसे अुपद्रवी अपराधियों को निर्दयता पूर्वक निग्रहना पड़े तो वह अल्पसी निर्दयता साकल्येन विचार करनपर महनीय दया ही सिद्ध होती है ! अपराधविज्ञान का अथवा दंडविज्ञानका भी मूल भूततत्त्व अेवं समर्थन यही है !"

" अिसमें शंका नहीं । पर देशमें के जेलखानों में--- "

" वही बतलाता हूं । यों देखिये कंटकबाबू, देशमें के कैदखानो में आजन्म कैदियों को जन्मभर के वास्ते बंद कर दें तो वह अधिक निर्दयतापूर्ण व्यवहार नहीं होता क्या ? अुन्हें चहार दीवारी के भीतर जन्मभर सड़ते रहना होगा । अुतने स्त्री पुरुषों की प्रेम, मुक्तवृत्ति, संतति आदि की सारी भूख दबा कर मानसिक अुपोषण ही में तड़फड़ाते हुअे मर जाना होगा । यह

मानसिक अत्याचार नहीं है क्या? पर यदि अुन्हें अिस कालेपानी जैसे किसी स्वतंत्र अुपनिवेशमें अुनकी अुद्दंड प्रवृत्ति को पालतू बना सकने योग्य कठोर कायदे में यंत्रित करके जितनी स्वतंत्रता अुन्हें दी जा सकती हो अुतनी अुन्हें दी जाय तो वे कौटुंबिक और वैयक्तिक सुख अधिक भोग सकेंगे और देशके सच्छील समाज को, अुन दंडितों को भोगने के लिये दी गअी स्वतंत्रता से लेश मात्र भी अुपद्रव नहीं पहूँचता, अुसकी संभावना ही वच नहीं जाती। अिस कालेपानी पर आज वे हजारों अुद्दंड और अुग्र लोग भी देखो किस तरह खुली तौरपर घूम फिर सकते हैं, अपनी अभिरुची के अनुसार खा पी सकते हैं, घरबार खेतीबाडी कर सकते हैं। अुनकी प्रेमभरी वात्सल्य, कामुक भावना ओं को भी जन्मभर पर्यवरोध नहीं होता और वें विवाह सुख भी भोग सकते हैं। पिछले अेक अपराधके लिये अुनके सारे जन्मका और अुनका सत्यानाश नहीं होता अन्यच सुधारका और संयमशील जीवन व्यतीत करने का अवसर बारबार मिलता रहता है।

"हिंदुस्थानहीमें किसी कारागारकी चहार दीवारी में बंद करके सजीव कब्रमें गाडने के सदृश अवस्थामें रखना दया है अथवा कालेपानी सदृश अुपनिवेशमें अुन्हें कठोर नियमोंकी कैंचीहीमें किंतु पालतू बना कर मनुष्यता-पूर्वक जीवन का आनंद कुछ कुछ अुपभोगने देना सच्ची दया है? कालेपानी पर आने के पश्चात् जो सुधर जाते हैं और 'दाखलेवाले' बनकर अपने बच्चोंकच्चों से भरेपूरे घरों में नयाजन्म पाये हुओं की भांति सुखपूर्वक रहते हैं, अैसे सैंकडों जन्मकैदवाले बंदीलोग आज अंदमान में मौजूद हैं। अुन्हें 'हिंदुस्तान के कारागृहहीमें यदि जन्मभर बंद करके रखा होता तो अच्छा हुआ होता क्या?' अैसा पूछिये तब वे अुस भयंकर कल्पनाके आते ही किस-प्रकार डरते हैं और 'हमें कालेपानी पर भेज दिया गया यही अच्छा हुआ' अैसा किस प्रकार कहते हैं यह देखिये!"

"यह सर्वथा सत्य हैं। आजन्म कारावास तथा दस दस बरस की दीर्घ कैदकी जिन्हें सजा हुअी है अैसों को भारतीय कारागृहों में बंद करके रखने की अपेक्षा कालेपानी सदृश अुपनिवेशों में ही अिस प्रकार धीरे धीरे स्वतंत्र रूपमें बसने देना ही अधिक दयापूर्ण है। अुद्दंडों और पतितों के सुधा-

रकी दृष्टिसे भी अच्छा है, और राष्ट्रमें रहनेवाले सत्स्वभाव नागरिकों को अुनके अुपद्रवोंसे बचाने की अेवंच अुन दंडितों को स्वयमपि निर्बंधशील अेवं संयतजीवन व्यतीत करनेकी अेक नवीन संधि देने की दृष्टिसे भी कैदियों के लिये अीदृश स्वतंत्र अुपनिवेश ही अधिक अुपयोग में आयेंगे ! "

"पर अुनमें भी अिस अंदमान के अुपनिवेश की तो राष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे अत्यंत महत्त्व की अेक और विशेषता है। वह यह कि यह जो महत्त्वका टापू रोगयुक्त, सूना और मनुष्य प्रतिकूल होकर पड़ा हुआ था और जिसको वासार्ह बनाने के लिये ही हिंदुस्थान की किसी भी राज्यसंस्था ने हजारों मनुष्य और करोडों रुपये हेतुत: जबर्दस्ती कभी खर्च न किये होते, वह यह अंदमान का महत्त्वपूर्ण टापू कालेपानीपर केवल मरने के लिये भेजे अिन पतितों के कठोर परिश्रमोंसे आज अिस प्रकार पत्र पुष्पोंसे प्रतिमंडित, धान्यादिकों से समृद्ध, अुपयुक्त, अुपजाअू अेवं मनुष्य बस्ती से भरा-पूरा होकर बैठ गया है। अुपनिवेशोंको जीतने के लिये राष्ट्रोंको युद्ध करना पडता है, पराक्रम करने पड़ते हैं। पर अपने राष्ट्रको यह अेक नवीन अुपनिवेश केवल अपने श्रम से संपादित करके अिस पतित अेवं परित्यक्त कैदियोंके वर्ग ने मुफ्त ही में प्राप्त कर दिया है यह अेक अर्थ में सच नहीं क्या? यदि ये सारे दंडित हिंदुस्तान के बंदीगृहों में ही बंद किये रखोगे तो अुनके परिश्रमका, साहस का, बुद्धि का अितना अुपयोग और अितना लाभ अपना राष्ट्र कभी नहीं अुठा सकेगा! यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि अिन दंडित वर्गों में सैंकडों लोग मूलत: अत्यंत साहसी, दक्ष, कर्तृत्ववान् अेवं कष्ट-सहिष्णु हुआ करते हैं!"

"अिसमें क्या संदेह! समाजको अुपद्रव देनेके दुष्ट कार्य में अुनकी अुन प्रवृत्तियोंका दुरुपयोग न हुआ होता तो वही अुनका धैर्यगुण, कष्ट साहिष्णुता अेवं शौर्य अेक वीर का अलंकरण बना होता। अैसे ही अुद्दंड अपराधियों की सेनामें भर्ती करके सैनिक अनुशासन में अुनकी अुस अुद्दंडता को अुपयोग में लाकर कितने ही सेनापतियोंने बड़ी बड़ी जीतें हासिल की हैं; कितने ही राष्ट्रोंने अपने स्वातंत्र्य संग्राम की लड़ाअियाँ लड़ी हैं! अधिक क्यों, पिंडारियों के अमरखान प्रभृति स्पष्ट-रूपसे डाकेज़नी करने वाले नेताओंने ही टोंक सदृश रियासतें स्थापित की ही हैं न?"

"की हैं! कंटकबाबू, तब राष्ट्र में रहते समय अुपद्रवी सिद्ध हुअे अिन दंडितों के अुन सारे गुणों को और अवगुणों को भी कठोर कायदे के, सख्ती के और भय के दबाव के नीचे अुपयोग में लाने के लिये अिस प्रकार के अेकाध कालेपानी को भेजना ही अिष्ट है। जो परिश्रम वे अपनी अिच्छा से राष्ट्र के लिये न करते वे अुनकी ओरसे कठोर सख्ती द्वारा करवा लिये जा सकते हैं और अुनके जीवन का अुपयोग राष्ट्रीय धनसंपत्ति अेवं शक्ति के बढ़ाने के काम में लिया जा सकता है। अिस के लिये यह अन्दमानका बन्दी अुपनिवेश राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत ही अुपयोगी है। अुस में सुधार जो संभव है वे करो; पर अदूरदर्शिता के वशीभूत हो, अपात्र में दयाभाव प्रदर्शित करते हुअे अिस अुपनिवेशको कभी बन्द नहीं करना चाहिये। पुनः यों देखिये कि अिस जैसे कालेपानी के अुपनिवेश को न भेजते हुअे अुन हजारों दंडितों को यदि हिन्दुस्तान के बन्दीगृहों में ही, स्त्री को अलग और पुरुष को अलग कोठरियों के पींजरों में ही जनमभर के लिये बन्द कर के रखने लगेंगे तो अुनके तारुण्य का तीन तेरह करनेवाला वह निर्दय पर्यवरोध अुन्हें कितना असह्य प्रतीत होगा और राष्ट्र के लिये भी घाटे का रहेगा! कारण, तद्द्वारा अुन हजारों स्त्री-पुरुषों की संतति से भी राष्ट्र वंचित रह जायगा! राष्ट्र का संख्याबल घटेगा। अुस की अपेक्षा काले-पानी सदृश स्वतंत्र और नवीन अुपनिवेश में अुन दण्डित स्त्री-पुरुषों को विवाहित जीवन अुपभोगने की संधि दी तो प्रेम की और वात्सल्य की कोमल भावनाओं के साथ साथ अुनकी खुद की मनुष्यता भी विकसेगी और अुनकी संतति अिस अुपनिवेश की समृद्धि करके अपने राष्ट्र को अेक नवीन प्रदेश जीतकर दे सकेगी! आज ही देखिये न, **अेक नवीन प्रदेश ही नहीं, प्रत्युत अिस अन्दमान में अपनी हिन्दू संस्कृति का अेक नवीन जानपद भी समृद्धि प्रबल करता जा रहा है!**"

"पर अप्पाजी, पापी, अपराधी और दुष्ट दंडितों की संतति में भी वे अत्याचारी अथवा दुराचारी दुर्गुण पहुँच जाते हैं अैसा अनुवंश विज्ञान का कथन बतलाया जाता है, अुस बारे में आप का क्या कहना है?"

"वह अेक भ्रमभक्षित क्षुद्र तर्क है, और कुछ नहीं! वैयक्तिक अथवा कौटुंबिक दृष्टि से वह कितना सच्चा है या झूठ है यह मैं नहीं कहत;

पर अुपनिवेशका जो अपना प्रश्न चल रहा है, अुसके विषय में तादृश सिद्धांत का प्रतिपादन करना शुद्ध क्षुद्र तर्क है! अजी, यह आस्ट्रेलिया देखिये; कानडा देखिये; अफरीका के अुपनिवेश देखिये! अिंग्लैंडके अत्यंत नृशंस और दुराचारी दंडितों की तथा आजन्म कारावासियों की नावें भर भर कर जिन दिनों वे देश निर्जन और सुनसान थे अुन दिनों अुन्हें वहाँ पहुँचाया जाता था। अिंग्लैंड का वह अेक कालापानी ही था। पर आज अुन्हीं दंडितों के वंशजोका अेक अेक स्वतंत्र राष्ट्र ही बन गया है। बड़ेबड़े वीर कार्यकर्ता, विधिमंडल के सभासद, निर्बंध पंडितअु नालोगों में निर्माण हुअे। आज वहाँ जो लोग अत्यधिक प्रतिष्ठित समझे जाते हैं अुन में कितनों ही के पर दादा चोर, डाकू, बलात्कारी, पापाचारी दंडित थ! अिस अन्दमान ही को देखिये। यहाँ की तरुण संतति को, स्त्रियों अथवा पुरुषों को, लड़कों लड़कियों को हिन्दुस्थान के किसी नगर में ले जाकर छोड़ दीजिये और सौन्दर्य, सौशिल्य, बुद्धि, दक्षता अित्यादि गुणों की कसौटी पर अुन्हें परखिये! वे किसी से हार नहीं खायेंगे, अैसा ही परिणाम आपको दृष्टिगत होगा!

"अिस मेरे परिवार ही का अुदाहरण लीजिये। मेरी पत्नी अेक राजपूत स्त्री थी। हिन्दुस्तान में बचपन ही में अुसकी शादी हुअी। अुस विवाह के अुसके पति की दो स्त्रियाँ थीं, अुन सौतों सौतों में भयंकर विद्वेष मच अुठने पर पति अिसी को मारापीटा करता था। अिस के अेक दुष्ट पड़ौसीने अिसे पाठ पढ़ाया कि, 'अपनी सौत को मैं जो मंत्रित पुड़िया दे रहा हूँ वह अन्न में डालकर दे, अिससे तू अुसके कष्टों से मुक्ति पा जायगी।' अिसने अुस पड़ौसी को अपने गले का सोने की मणियों वाला हार देकर वह मंत्रित पुड़िया ले ली और सौत के अन्न में डाल कर वह अुसे परोसा। वह पुड़िया ज़हर की थी। सौत तत्काल मर गअी और अिस अठारह अुन्नीस बरस की लड़की को अुस भयंकर अपराध के कारण आजन्म कारावास की सज़ा सुना दी गअी। पर अुस सज़ा के आघात के साथ ही किसी भी तादृश दुष्कृत्य के विषय में अुसके मन में अैसा डर बैठ गया कि अुसका स्वभाव अत्यंत सरल अेवं निर्बंधशील बन गया। बन्दीगृह की मूक कठोर पत्थर की दीवारें ही कुछ लोगों के लिये किसी भी नीतिग्रंथ की अपेक्षा अधिक

प्रभावशाली संयम सिखा सकती हैं! कालेपानी परके आजन्म कारावास में अुस राजपूत तरुणी का व्यवहार अितना निर्बंधशील था कि मुझे जब शादी की अनुमती मिली तब मैंने अुसीके साथ शादी की, दस अेक बरस अुसने गृहिणी का कर्तव्य निरपवाद रूपसे पालन किया, सुख का गृहजीवन व्यतीत किया। आगे चलकर वह मर गअी। अुस के पेटसे मुझे जो अिकलौता लड़का हुआ वह भी अच्छा ही निकला।

"अुसकी पत्नी यह अनसूया, मेरी स्नुषा। यह भी अेक बंगाली कायस्थ की लड़की बाल विधवा हो गअी। अुसके देवर ने ही अुसके साथ अनैतिक संबंध रखा और अंत में अुसके गर्भ रह गया। अत्यंत अुग्र औषध देकर अुसके हाथों भ्रूणहत्या का भयंकर पाप करवाया! पर समाजभय से अुसने जो पाप किया वही अेक दिन अनावृत हुआ और अुसे समाजदंड भोगना पड़ा। अुस के देवर के लापता हो जाने के कारण अुसी को आजन्म कारावास कालेपानी की सजा हो गअी। पर अितने पर से अुसके स्वभाव पर ही किसी नित्यावस्थायी राक्षसी पने की छाप पड़ गअी है क्या? अुसने कालेपानी की स्थिरीकृत सजा खत्म कर के जब मेरे लड़के के साथ शादी की तब से अितनी प्रेमयुक्त सत्स्वभाव अेवं कष्ट सहिष्णु वृत्ति से वह हमारे घर में रहती आअी है कि अैसी स्नुषा देश में भी सौ में से कोअी अेकाध ही निकलेगी। आगे चलकर मेरा लड़कानौकापर मल्लाह हो गया। दुर्दैव से दो-अेक वरस पहले दुर्घटनावश वह समुद्र में डूब गया। पर अुसके पीछे रहे हुअे अिन दोनों लड़कों ही का नहीं प्रत्युत मेरा भी संरक्षण वह किस प्रकार कर रही है, स्वयमेव रसोअी चौका, घर का काम चलाती हुअी दारिद्रय में भी कितने संतोष के साथ वह व्यवहार करती है यह आपही देखिये! अिन मेरे नातियों का, अिन अपने दोनों बच्चों का यह मेरी स्नुषा अनसूया जितना प्रेम से संरक्षण करती है, अुसकी अपेक्षा कौन मां अधिक वत्सल हो सकेगी भला? सर्वथा सभ्य अेवं कुलीन समाज में भी हम सब का यह अनुभव होगा कि, संसार के सभी देशों में कुमारिकाओं की अल्हड़ अुम्र में भ्रूणहत्याका भयंकर दुष्कृत्य समाज के अत्युग्र भय के कारण हुआ करता है, पर अनेकों का वह कृत्य यदि छिप

जाय तो वे अन्य कुमारिकाओंके सदृश ही कुलीन अेवं सुशील समझी जाती हैं, प्रेममयी पत्नी अेवं अत्यंत वत्सल माता बन सकती हैं; जैसे कुंती देवी!

"अुसका कारण यही है कि, दुष्कृत्यों की चाट लगे हुअे नराधम जिस प्रकार रहते हैं, तद्वत् दुष्कृत्यों से अत्यधिक घृणा प्रतीत होते हुअे भी केवल असह्य अत्याचारों के भयसे ही, अिस क्षणिक बेसुधीकी सनक ही में जिन लोगोंके हाथोंसे दुष्कृत्य हो जाता है, अैसे भी अपराधी मनुष्य रहते हैं। दंडित वर्गोमें से अुन पहले राक्षसी प्रवृत्तिके अपराधियोंको कठोर दंडके भयसे सीधे रास्तेपर लाया जा सकता है। अिन दूसरे पापभिरू प्रवृत्ति के अपराधियों को सहानुभूति के अभयदान से सुधारा जा सकता है; अेतावता, **दंडित कहते ही वह मनुष्योंमें से सदैव के लिये अुठ गया, अितनाही नहीं अुसकी संतति भी वंशपरंपरया पाप प्रवणही रहेगी अैसा समझना मूलतअेव अेक भ्रम-भक्षित क्षुद्र तर्क है! और अुसपर आधारित जो यह समझ कि दंडितों के अुपनिवेश की संतति भी जन्मतअेव मनुष्यतासे वंचित रहेगी ही, वह समझ तो जितनी भ्रम-भक्षित अुतनी ही अत्याचार पूर्ण है।**"

"निःसंशय! निःसंशय! और अप्पाजी, अुस क्षुद्र तर्कको जिस प्रकार अंदमानकी तरुण संतति ने असत्य सिद्ध किया है अुसी प्रकार अन्य अेक विशेषतः हम हिंदुओं के दृढ क्षुद्र तर्क को भी असत्य सिद्ध किया है। हिंदू समाज की सारी जातियाँ--कम अज़कम बहुतसी--अेक ही स्तर-पर आअी हुअी हैं तो भी अुनमें स्पर्श प्रतिबंध, भोजन प्रतिबंध, विवाह प्रतिबंध प्रभृति जो खाअियाँ हजारों बरस पूर्व की परिस्थिति में हितकर समझी गअी थीं, अुनको अुसी प्रकार बनाये रखना आज भी हितकर हैं; और यदि वे खाअियाँ पाट दीं और जाति जातियों में भोजन, विवाह व्यवहार प्रचलित किया तो संकर अत्यधिक अनर्थावह हुअे बिना नहीं रहेगा, संस्कृति निकृष्ट अेवं प्रजा अधम हो जायगी, अैसी जो अेक धार्मिक स्वरूपकी भीति अपने देश में हिंदू समाजका ग्रास बना रही है, वह कितनी भ्रांत है, यह भी अंदमानके अिस नवोदित हिंदू जानपद ने प्रत्यक्ष रूप से दिखला दिया है! अंदमान में गत पचास-साठ बरसों से सारी हिंदू जाति और सारे प्रांतिक वर्ग सर्व मिश्र भाव से अेकत्र बढ़ते चले आये हैं। पर्याप्त मात्रामें अस्पृश्यता की बेडी टूट चुकी है; भोजन प्रतिबंध का कमअज़कम

स्पृश्य वर्ग में तो स्मरण भी अवशिष्ट नहीं रह गया। बंगाली, पंजाबी, मद्रासी, मराठी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कौन कौन हैं यह विचार तक नष्ट हो चुका है और कम अज़कम स्पृश्य हिंदू मात्र तो अेकत्र भोजन करता है और बहुधा अस्पृश्य भी ! और मिश्र विवाह खुल्लम खुल्ला प्रच-लित रहने के कारण विवाह प्रतिबंध नष्ट होकर जाति का नाम ही नहीं बच रहा ! अपने परिवार ही को देखिये न। आप महाराष्ट्रीय ब्राह्मण, पत्नी राजपूत क्षत्रिय, लड़के की शादी हुअी बंगाली कायस्थ कन्यासे ! अब आपके अिन नातियों की जात हिंदूभर ही रह गअी। अच्छा, अिन संमिश्र रक्तबीजों के नाती भी कैसे हैं--तो ये मोहन और अुषा ! कितने चतुर, दर्शनीय, सुशील ! पूना, बम्बअी, कलकत्ते की किसी भी पाठशाला में ले जाकर छोड़ दें तो पहले पांचों में ही चमकेंगे ! जातपात तोड़कर संमिश्र विवाह करने से संतति निकृष्ट ही होगी यह भीति मिथ्या है, यह अंदमान के हिंदु जानपद ने सपरीक्षण सिद्‌ध कर दिया है।"

"भाषी की दृष्टिसे भी अंदमानने अन्य अेक अभिनंदनीय अेवं सफल परीक्षण करके दिखाया है। यहांके सब हिंदू जानपद की भाषा अेक—हिंदी! तरुण पीढी की—मातृभाषा ही हिंदी !"

"पर अप्पाजी, सरकारी विचारसरणी में अेक मात्र बडी भारी ग़लती हो रही है। वह यह कि हिंदू लड़कों-लडकियों को भी सारा शिक्षण अुर्दू लिपि में ही जबर्दस्ती दिया जा रहा है। अिस विषय में मात्र आंदोलन करके नागरी को ही अंदमान की कम अज़कम हिंदू जानपदकी तो अेकमात्र लिपि बनानी चाहिये। सरकारी लिखापढ़ी और शालेय शिक्षण अुर्दूही में बनाये रखने की सरकारी विचारसरणी का हठ निर्दय है ! अंदमान में अैसे अनेक सुधारों का करना और नवीन स्वतंत्र पीढीको अपने गुणोंका विकास करने के लिये अनुकूल परिस्थिति प्राप्त करा देना-अिन दो कार्यों को सिद्‌ध करने के लिये कुछ त्यागी पुरुषों का अिसी अुपनिवेश के अुत्कर्ष के प्रश्न को अपने सिरपर ले लेना आवश्यक है।

"हां कंटकबाबू, यही अपनी अिस आजकी चर्चाका सूत्र अपने अिस संभाषणके आरंभके मेरे विधेयके साथ ग्रथित है। यदि तुम्हें यह स्वीकृत हैं कि अिस अंदमानके अुपनिवेशमें निर्माण हुआ जो यह अेक नवीन जानपद

है, वह अपने हिंदुओं के सांस्कृतिक साम्राज्य में अेक नवीन प्रांत जीत-कर जोड़ने योग्य महत्त्व का है, तो नवीन अुपनिवेश का आर्थिक, सामाजिक, राजकीय और सांस्कृतिक अुत्कर्ष करने का ही कार्य अपने जीवन का ध्येय मान लेना क्या यह राष्ट्रसेवा नहीं है ? अेक तुम्हारे हमारे सदृश बंदीवास ग्रस्त जीवन की महत्त्वाकांक्षा बनने के लिये वह ध्येय क्या पर्याप्त महनीय नहीं ? तब आप अुस को अपने जीवन का अितिकर्तव्य क्यों नहीं समझते ? कंटक बाबू, आप पांच-छै बरस बाद 'दाखला' लेकर थोडे से स्वतंत्र हो जायेंगे, यहीं विवाह करके बस जायेंगे । अिस अुपनिवेश में पाठशालाकी, देवालय, संस्कार, संगठन आदि की जो कमी है, अुसे पूरा कर डालिये । हमारे अिन किशन सेठजी का ही अुदाहरण देखिये । वे भी आजन्म कारावास की सजा पाकर यहां आये थे ! पर 'दाखला' लेकर नारियलोंके बडे बडे बाग बनाकर, चाय की पौध को बढ़ाकर लक्षाधीश बन गये और मेरे विचार में अुन्होंने हजारों रुपये अिस अंदमान में पैदा हुअे स्वतंत्र हिंदू तरुणों के अुदर निर्वाह के अर्थ लगाने में, पाठशालाअें बांधने में, अखिल हिंदुओं का अेक देवालय स्थापित करने में, छात्रवृत्तियाँ देने में, धर्मार्थ औषधालय चलाने में दान दिये ! पंडित, पुराणिक, चिकित्सक, नेता, आदिओं की यहाँ बडी भारी कमी है सो अुसे तुम पूरी करो । अिस अुपनिवेश को हिंदुस्थान का, हिंदूसाम्राज्य का अेक बलिष्ठ सामुद्रिक दुर्ग आजन्म कारावासी तुम सब लोग मिलकर बना डालो ! अिस कार्य में हजारों जीवन नष्ट हो गये तो वे व्यर्थ चले गये अैसा नहीं कहा जा सकेगा !! "

" सचमुच अप्पाजी ! सामुद्रिक दुर्ग के विषय में ही कहेंगे तो मैं जब पहले पहल अंदमान में अुतरा था तभी अिस टापू का सामुद्रिक महत्त्व मेरे ध्यान में आया था ! बद्धप्राचीर, शस्त्रास्त्रसंभार से सुसज्ज, फौलादी कवच के सदृश दुर्भेद्य——अैसा यदि अिस अंदमान टापूका ही अेक प्रचंड जल दुर्ग बना डालें तो पूर्व समुद्र में शत्रु के नाविक दल के मार्ग में वह अेक प्राण ग्राही सुरंग भी बन जायगा । ये सशस्त्र और बद्धप्राचीर द्वीप हमारे पूर्वसमुद्र के पुरद्वार पर चढ़ाअी गअी अेक महाकाली तोप है ! "

" और अब हम यूरोप की खबरें सुनते हैं, अुनपर से, मनुष्य को विमानों की विद्या हस्तगत हो ही गअी है, अैसा दिखाअी देता है । आज

भले ही लड़ाकू विमान अल्पमात्रा में हों तोभी पांच पच्चीस बरसों में बडे बडे लड़ाकू और सामान ढोअू विमानों के जत्थे के जत्थे आकाश में बिहरने लग जायेंगे अिस में कुछ भी संदेह नहीं प्रतीत होता। अेतावता आगे चलकर यह अंदमान हिंदुस्तान के पूर्व समुद्रपर पहरा करने वाला अेक लड़ाकू वैमानिक बेड़े का स्थान बने बगैर नहीं रहेगा! तब सांस्कृतिक, सामुद्रिक अेवं वैमानिक दृष्टिसे अेतादृश अनेक विध महत्त्वों का यह अुपनिवेश निर्माण करने, बनाये रखने अेवं बढ़ाने के कार्य में जिन सहस्रावधि दुर्दैवी भारतीय बंदियों की यातनाअें, कष्ट, रक्त, अेवं जीवन आज पचास बरसों से यहाँ व्ययिभूत हुआ, वह राष्ट्र के ही अुपयोग में आया, पापियों का रक्तभी पुण्यकार्य के लिये बहा, अैसा ही कहना चाहिये! अिससे आगे भी जिन को यहीं जीना है, अुन आजन्म कारावासियों को भी अपना जीवन अिसी कार्य में लगाना चाहिये, यही अुनका अपरिहार्य धर्म है!"

"अितना मुझे भी स्वीकार है! अपरिहार्य अवस्थामें, दूसरा माग असंभव हो तो अुस अवस्थामें, आजन्म कारावासियों को अपने जीवन की सार्थकता अिस अुपनिवेश की जनसेवा ही में मानना चाहिये। पर मेरे लिये तो दूसरा मार्ग ही संभव है। मुझे तो अैसा निश्चित रूपसे प्रतीत होता है कि मुझे काले पानी पर से भाग जाने में सफलता प्राप्त होगी। मेरे कारण मैंने आपको पिछली मुलाकात ही में बतला दिये थे। अुसमें भी मेरी बहन कंटकी तो पाँच बरस की बात दूर पाँच महीने भी कारावास में जीवित नहीं रहना चाहती। पागलपने का कहिये, पर अुस पर यह आत्मघाती भूत सवार हुआ है अवश्य। अच्छा, यदि मुझे सफलता मिली, यदि मैं स्वदेश में अिस वर्ष के अंदर अंदर जा पहुँचा और यदि मैं अपना आयुष्य वहाँ यहाँ के अिस ध्येय की अपेक्षा भी अधिक अुत्कृष्ट ध्येय के लिये समर्पित कर सका, मेरे गुणों का, शक्तिका और जीवन का अितना विकास अेवं सद्व्यय हो सका, जितना यहाँ स्वप्नमें भी संभव नहीं है, तब तो मेरा यह साहस गलत साबित नहीं होगा न?"

"नहीं! अधिक क्यों, तुम्हें सफलता प्राप्त हो अैसी मैं प्रभुसे प्रार्थना भी करूंगा। पर तुम्हारा वही 'यदि' महा दुर्घट है! अस्तु। तुमने जो योजना

बनाओी वह अधूरी थी । निश्चित अवसर कब, किस प्रकार साधोगे यह सब ठीक कर लिया है ?"

"नहीं! पर अनसूयाबाओीने कंटकी को मैंने जिस जगह कहा था वहाँ काम पर लगा दिया है । स्त्री बंदीगृह से बाहर विवाहेच्छु स्त्री-पुरुष बंदियों की पारस्परिक परिचय प्राप्ति के लिये अुतने ही में जो अेक खुली जगह है, वहाँ झाड़ने बुहारने के कामपर नियुक्ति के कारण कंटकी निश्चित समय पर बंदी गृहसे बाहर निकल कर अुस स्थानपर आती जाती रहती है। वहाँ मेरी और अुसकी दूरसे मुलाकात भी हुआी है । बहुधा नज़दीकी मुलाकात भी हो जायगी । अुसके पश्चात् जो कुछ स्थिर करना होगा सो करने का ख़याल करता हूं । तथापि जब तक योग्य अवसर नहीं आयेगा तब तक मैं बगैर सोचे समझे ज़ल्दबाजी नहीं करूंगा । अच्छा, आज अनसूयाबाओी पडौसके गांव में गओी हैं अैसा पता चला है मोहनके कहने से, तब अुनकी मुलाक़ात--"

"अब नहीं हो सकेगी यह सत्य है ! कल आयगी वह । तुम्हारे जाने का समय हो आया है न? मुझे तुम्हारे अिस साहसपूर्ण गुप्त अभिसंधि के संबंधमें बहुत कुछ पूछने की इच्छा होती है—पर समय नहीं है । अैसी चर्चा सुरक्षित भी नहीं रहती । तुम्हारा यहाँ आना भी अब तुम्हारे और हमारे लिये खतरनाक ही है !"

"हां अप्पा !" कंटकने अुन्हें संबोधित किया । पर जो विचार वह करना चाहता था, अुसीसे अुसका दिल भर आया । वह लड़खड़ाया, फिर बोला,

"अप्पा, अिस बीमारी के कारण आप और अिस साहसके कारण मैं मृत्युके दंष्ट्रा करालों में कब जा पड़े अिसका अब क्षणभरकाभी भरोसा नहीं ! पर अप्पा, यदि कालेपानी के भूगृह में से मैं बाहर निकल सका, जीवन की निर्मुक्त वायु पुनः श्वासोच्छ्वास कर सका तो मैं—स्वदेशमें निर्भयतया रहना संभव हुआ तो स्वदेशमें, न संभव हुआ तो युरोप अमेरिका सदृश्य किसी अेक विदेश में—जहां कहीं भी रहूंगा वहांसे आपके अिन नातियों की चिंता अपने औरस पुत्रोंकी भांति ही करूंगा। अनसूया बहन मेरे बंदिवास काल की मेरी बहन है । मेरे दुर्दैव, संकट अेवं दारिद्रयपूर्ण स्थितिकी

भ्रातृद्वितीया के समय जिसने मेरी आरती अुतारी अुसे मेरे भाग्य में यदि कभी सगी बहनसे भी अधिक सुदैव की भ्रातृद्वितीया आअी तो, अपने प्रेम और सहायता का अधिक अुपहार दिये बिना नहीं रहूंगा। जाता हूं अब, जाना ही चाहिये अब मुझे!"

कंटक अुठा, अप्पा को अुसने खड़े खड़े नमस्कार किया। अुसी प्रकार वह अुनकी तरफ़ थोडी देर देखता रहा, थोड़ा जानेके लिये मुड़ा भी। पर फिर लौटकर बोला, "अप्पा, ज़रा अिस तकिये के सहारे थोड़ा सा अपने को संभाल कर बैठियेगा? पैर अिस तरह थोडे धीरे धीरे फैलाअिये—नहीं आपको फैलाने ही होंगे!"

रुग्ण शय्या पर जर्जर होकर पडे हुअे अुस वृद्ध वीर को अुस प्रकारसे बिठाकर कंटकने अुनके पैर अपने हाथों से ही ओढनी के बाहर निकाल कर व्यवस्थित रूपमें रखे और अुनपर अपना माथा टेक कर अुनके समक्ष साष्टांग दंडवत् प्रणाम किया!

"अप्पाजी, अिस अंदमानका अुपनिवेश हिंदू राष्ट्रके लिये कितना महत्त्व का है यह आप थोडी देर पहले बता रहे थे न? अिस टापूका सामुद्रिक और वैमानिक बेड़े के स्थान की दृष्टिसे बहुत अधिक महत्त्व है, यहाँ अेक नवीन हिंदू जानपद का निर्माण हो रहा है, बड़े बड़े नारियलके बगीचे, चाय बागान, रबड़ की पौध, प्रचंड वृक्षों के विस्तीर्ण अरण्योंमें की नाना प्रकार की अिमारती लकडी की अगणित पैदावार—यह सारी राष्ट्रीय संपदा महत्त्व की है। तथापि अिस प्रकार की संपदा अितर अुपनिवेशों में भी अपने हिंदू राष्ट्र को लब्ध हो सकेगी। पर जो संपदा अन्य किसी भी अुपनिवेश में नहीं मिल सकेगी अैसी जो अेक संपदा अिस अंदमान ही में संग्रहीत है और अिस भूमि ही में रखी गअी है जिस अमूल्य निधि के कारण अन्य किसी भी अुपनिवेश की अपेक्षा यह अंदमानकी भूमि अपने हिंदूराष्ट्र के लिये अधिक अभिलषणीय प्रतीत होगी, अेक क्षेत्र भासित होगी, वह अिस भूमि की हमारी राष्ट्रीय संपदा, अिस भूमि की वह हमारी अनर्घ्य निधि है भवादृश सन् सत्तावन के सहस्रावधि राष्ट्रवीरों की अिस भूमि में बिखरी हुअी राख! हिंदुस्थान को अंदमान का नाम लेते ही प्रथम अुसीका स्मरण हो आयगा।"

"पर—पर अिस तरह कहने वाला तू ही पहला हिंदू मुझे गत पचास बरसोंमें दिखाअी दिया है।" अुदास निःश्वास छोड़ते हुअे अप्पाजी बोले, "कैसा स्मरण लिये बैठा है। अरे, हिंदूपद पादशाही के संताजी, धनाजी, बाजी, चिमाजी, भाअू, विश्वास, मल्हार, महादजी प्रभृति शतावधि विजयी सेनापतियों का भाग्य यदि न भी हो, तो भी निराशामें और अपजय ही में सच्ची कसौटी पर चढ़नेवाला जो रणचापल्य, निष्ठा, शौर्य, धैर्य, तितिक्षा, कार्यकृति, अेवं राष्ट्रभक्ति आदि गुणों से अंग्रेजोंको नाकों चने चबवाने वाला अुस अपनी हिंदूपद पातशाही का सर्वांतिम रण धुरंधर सेनापति जो तात्या टोपे—वे जिस स्थानपर स्वराज्य के लिये और स्वधर्म के लिये फांसीपर चढे अुस स्थान पर अुनकी यादगार तक की अेक शिलाभी जिस अिस कृतघ्न पीढीने आजतक खड़ी नहीं की, अुसे अंदमान में धिक्कृत होकर राख बने हुअे हम सैनिकों का कैसा स्मरण होगा! कंटक, जिस दिन सत्तावन की असिलता टूटी, अुसी दिन हिंदुस्तान की आशा समाप्त हो गअी!!"

"नहीं अप्पा, नहीं! आज हिंदू जाति अचेतन पड़ी है, मानता हूं; पर वह मूर्च्छा है—मृत्यु नहीं! अितिहास तो शपथ पूर्वक कहता है कि अैसी कितनी ही मूर्च्छाओं में से पुनः जाग खड़ी हो अैसी अुज्जीवक शक्ति अिसी हिंदू जातीमें निवास करती है, यह निश्चित है! दशमुखी रावण गये, शत मुखी गये!! अप्पा ये भी दिन चले नहीं जायेंगे सो काहे परसे? नये नये विक्रमादित्य अवतरेंगे ही नहीं सो काहे परसे? —**किंबहुना यह आपकी राख ही अुनके अुद्‌भव की खाद है—अूरीकारोक्ति है!!"**

"तथास्तु!! जब और यदि वैसा भाग्य का दिवस कभी सचमुच ही प्रकट हुआ, तो अिस अंदमान में बिखरी हुअी यह हमारी राख —"

"संकलित की जायगी और अुसपर यह कृतज्ञ हिंदूराष्ट्र अेक अुत्तुंग स्मृतिस्तूप खड़ा करेगा! और अिस सर्व समुद्र में से होकर जाने आने वाली हिंदुओंकी प्रत्येक रणनौका अुस स्मृतिस्तूप को तोपोंकी रणवंदना दिये बगैर वहां से आगे अेक कदम नहीं रखेगी!!"

कंटक के अिस वचन के सुनते ही अुस वृद्ध वीर के शरीर पर रोमांच खड़े हो गये, अुसकी जर्जर देहयष्टि में तरावट आ गअी, अुसके नेत्रों के

सामने कोअी अुत्तुंग स्मृतिस्तूप खड़ा किया मानो दीखही रहा हो अिस प्रकार सुदूर आकाश में क्षण भर गड़ी हुअी अुसकी अनिमेष दृष्टि पर से भासित हुआ ! दो अेक क्षण पश्चात् अुस अनिमेष दृष्टिको आकाश पर से हटाकर कंटक की तरफ फेरते हुअे वह वृद्ध वीर सकंप स्वर से बोला,

" कंटक, सत्तावन के क्रांति युद्ध के अनंतर, सहानुभूति की और मेरे राष्ट्रके पुनरुत्थान की सुभव्य आशा की याद दिलाने वाले ये अैसे शब्द चालीस वर्ष के पश्चात् मैंने आजही फिर सुने हैं। देख, मेरे हृदय के भीतर अत्यंत गहराअी पर दबाकर रखी हुअी मेरी पूर्वकालिन आकांक्षाओं की अूर्मियाँ अेक आध तूफान की मानिंद मेरे रक्त रक्त में से अुत्स्फूर्त हुअी आ रही हैं ! मुझे कंटक, सहन होता नहीं अिन अनुकूल भावनाओं का भी कल्लोल कंप, यह हृदय की तीव्र गति।"

अुतने ही में चौकी बंद होने की घंटी दूर पर से बजती हुअी सुनाअी दी ! "घंटी ! " वृद्ध वीर चौक अुठा, "जा, कंटक जा, अन्यथा पकड़ा जायगा !" जल्दबाजी से कंटक अुठा और लुकते छिपते अुस टीले पर वेग से चढ़ता चला गया।

और दो तीन दिन के भीतर ही, सन् सत्तावन के क्रांति युद्ध के कारण काले पानी पर गये हुअे अुन सहस्रावधि हिंदू सैनिकों में से अुस आखिर के वीर वृद्ध का भी अंत हो गया !

अुस दिन अुसकी अुस सूनी झोंपडी में अुसकी याद दिलाने वाले दो फूल ही पीछे बच गये थे— मोहन और अुषा !

अंदमान के जंगलों में घर बांधने के काम में अुपयोगी लकड़ी अितनी अच्छी, मज़बूत और सुन्दर मिलती है कि यूरोप के बाजारों में भी अुसके लिये भरपूर मांग बनी रहती है।

आज कंटक जंगल तुड़ाअी के जिस विभाग में काम किया करता था, अुस टुकड़ी के लिये अरण्याधिकारियों की विशेष आज्ञा हुअी थी कि, लकड़ियों की यूरोप से आअी हुअी नअी मांग को पुराने के लिये आजतक अरण्य के जिस भाग में तुड़ाअी का काम किया जाता रहा है, अुस से आगे के नये आरण्य में प्रविष्ट होकर तुड़ाअी काम चालू करना है। अुस आजतक अकृत प्रवेश सघन अरण्य में प्रथम चलने योग्य रास्ता बनाना है, तदनंतर बड़े बड़े वृक्षों के चारों ओर की घनी जालियों तथा झंखाड़ों को साफ करके अिमारती लकड़ी के वृक्षोंपर तारकोल से क्रमांक डालने हैं और तब बड़े बड़े करपत्र अेवं अन्य औजारों से लैस दो-दो सौ कैदियों की टोलियों के ज़रिये अुन प्रचंड वृक्षों को काटकर, तोड़कर, तराशकर अुनके लडों की राशिकी राशि रचने का अत्यंत कठिन श्रम करवा लेना है।

अिस आवश्यक आज्ञा के अनुसार कंटक अपने हाथ के नीचेकी टुकड़ी को तय्यार करने के काम में लग गया था। अरण्य के आजतक न तोड़े गये और सर्वथा सुदूर विभाग में पैर रखना यह अंदमान में अेक साहस का काम समझा जाता था। अंग्रेजों का प्रवेश जैसे जैसे अुस सघन अरण्य के अंतरंग में होता जाता था, वैसे वैसे वहांके मूल के जंगली और मरने मारने के लिये तय्यार रहनेवाली टोलियों का शत्रुत्व बढ़ता जाता था। कारण अुस अुस अंश में पीछे हटना पड़ता था; अुनका वह जंगली राज्य समाप्त हो जाता था। अिस लिये अंग्रेज अिस प्रकार सघन अरण्य में और अेक कदम बढाने लगा कि यदि अुस अरण्य में कोअी जंगली टोली रहती होगी तो वह अंग्रेजोंकी जंगल तुड़ाअीवाली कैदियों की टोलीपर कब टूट पड़ेगी और अुनके मुर्दे गिरा देगी अिसका कोअी नियम नहीं रहता था। अिन जंगली और तीक्ष्ण स्वभाव टोलियों में भले ही अनेक अुपजातियाँ और

अुनके अनेक अुपनाम होते हों तथापि अुनमें जो अत्यंत जंगली और अत्यंत तीक्ष्ण स्वभाव की जाति है, अुसका नाम जावरा होने के कारण कैदियोंकी बोलचाल में अुन सारी जंगली टोलियों को जावरा नाम से ही पुकारा जाता था। अैसे नये घने जंगल में प्रथमतः प्रवेश करते समय वे जावरा लोग सदैव प्रतिरोध करने के लिये आया करते थे अैसी बात नहीं थी। पर कब आजाय अिसकी निश्चिति भी कुछ नहीं थी। अिस लिये कंटक ने भी अपनी टोली में हमेशा के आलतू फालतू कैदियों को न लेते हुअे निर्भीक, कष्ट सहिष्णु और जंगल तुड़ाअी के काम में अभ्यस्त कैदियों को चुना। अुन में रफिअुद्दीन तो था ही। वह यदि करने बैठा तो अैसे श्रमसाध्य काम किया करता था और जंगल तुड़ाअी के काम में तो वह पहले जब कालेपानी पर था तभी से अितना प्रवीण हो गया था कि, अुसके भागा हुआ कैदी होनेपर भी जंगल की लकडी तोड़ने की आमदनी बढ़ाने के काम के लिये, अुसके बंदोबस्त की अुत्तरदायिता अपने अूपर लेकर अुस टोली के मुख्य जमादार ने अुसे बुद्धिपूर्वक मांग लिया था।

वह मुख्य जमादार रफिअुद्दीन को मनुष्य कहता ही नहीं था। रफि-अुद्दीन का नाम अुसन रखा हुआ था 'जंगल तुड़ाअी की मशीन!' आज कल अपना खुदका ही दांव साधने के लिये रफिअुद्दीन भी अपने अूपरके अधिकारी की कृपा संपादन में लगा हुआ था। अुस दिन के अुस साहस के काम में आये जाने के लिये वह भी अेकदम पूरी तरह से तय्यार हो गया था।

गत दो तीन दिनसे कंटक के साथ रफिअुद्दीन की भाग जाने की गूढ अभिसंधि के विषय में खूब चर्चा हुअी थी। पर स्थिरस्वरूप का कोअी भी निश्चय जमा नहीं पाता था। अितने में यह जरूरत वाला सरकारी काम आ पड़ा। अंतका अवसर हाथ में आने तक और अुसके पाने की अिच्छा ही से कंटक और रफिअुद्दीन दोनों सरकारी कामों में खूब श्रम करके अधिकारियों का विश्वास अेवं वाहवाह प्राप्त करने में रत्तीभर भी कसर नहीं रखते थे। अिसी नीति के कारण अुस घने और भयंकर अरण्य के अप्रविष्ट पूर्व भाग में घुसने और जावराओंके यदा कदाचित होनेवाले प्राणग्राही छापे का भी मुकाबिला करने के साहसकार्य में सबसे अगली टोलीमें वे दोनों

आज प्रविष्ट हुअे थे। अुनका सारा ध्यान आज अुस काम ही में केंद्रित हुआ था।

मुर्गे के बांग देने से पूर्व ही बैरक की घंटी हुअी। आधे घंटेके भीतर सौ दो सौ कैदी मैदान में क्रम से खड़े हो गये। प्रत्येक के अेक अेक पैर में शृंखला कमर से लेकर टखने तक जकड़ी हुअी थी और अेक पैर खुला था। "अेक, दो, तीन"— अिस प्रकार गिनती हुअी और दो सौ की टोली को अेक ओर निकाल लिया गया।

वह अुनमें भी चुनी हुनी टोली थी! और आज लकड़ी की मांग पुराने की अत्यधिक आवश्यकता होने के कारण अुस टोली पर जो विशेष जमादार नियुक्त करने में आये थे वे भी अेक जात 'दंडावाले!' मेहनती और काम-चोर, सरल और अक्खड़ अैसे दोनों प्रकार के कैदियों से जो जमादार काम केवल निचोड़कर निकाल सकता है, सब से ही काम अक्षरशः 'ठोककर' लेता है, अुस जाति के जमादारों को कैदी लोग 'दंडावाला,' कहते हैं। 'आगे काम पीछे राम' यह अुस जाति के जमादारोंका घोषवाक्य रहता है। अर्थात् काम 'ठोक पीटकर' लेने में दया माया का धार्मिक प्रश्नही अुनके सामने नहीं रहता। सारा रोकड़ 'ठोक' आर्थिक व्यवहार! अुद्दंड और खूंसट दंडित भी अैसे जमादारों के सामन धोंधे बन जाते हैं। ये 'दंडेवाला' जाति के जमादार खुद पक्के डाकू अथवा अुद्दंडवर्ग के पूर्वाश्रमके कैदी होते हैं और अब क़ैदियों पर बढ़ती मिलने से दोयम दर्जेके अधिकारी बने हुअे होते हैं।

अेक अेक पैर में कमरसे टखनों तक शृंखलाओं से जकडे हुअे वे दो सौ कैदी अुस प्रभात में अुस मैदानमें 'गिनती' करवा कर अुस प्रकार खड़े हो गये। दंडेवाले जमादारों के आते ही 'बैठो' का हुक्म हुआ। सांखल बेडियों की अेक साथ खनखनाहट हुअी और वे कैदी पंक्तिमें झटसे नीचे बैठ गये। अुनके कटोरों में अुसवक्त दलिया परोसा गया। निश्चित समय के होते ही 'अुठो' की गर्जना हुअी। दलिया किसने खाया या कोअी खा रहा है अिसका विचार न करते हुअे सबको अुठना ही आवश्यक! तत्काल वह दो सौ कैदियों की टोली दुहरी कतार बनाकर जंगल के रास्ते हो ली।

हाथ में बेत की छड़ियाँ लिये हुअे वॉर्डर और डंडे लिये हुअे हवालदार, जमादार अुन कतारों की दोनों बाजुओं में दस दस कैदियों के अंतर से चल रहे थे। जंगल के भीतर लकड़ी तुड़ाअी का काम सब कामों में खतरनाक। अेकाध दफा अेकाध साहसी कैदी जंगल में अदृश्य होकर भाग जाने में कमी नहीं करता। अिस लिये अेकाध बंदूकवाला सिपाही अिन टोलियों के साथ सदैव दिया जाता है, ताकि कोअी भागने ही लगा तो निःशंक अुसपर गोली चलाअी जाय! तिसपर आज तो जंगल के सर्वथा निबिड़ और हिंस्र जाव-राओं के भय से पदे पदे आक्रांत भागमें घुसना था। अतः तीन बंदूकवाले सैनिक भी अुन सबके पीछे अुनकी पृष्ठरक्षा करते हुअे अेवं बीच बीचमें अुन सबसे "चलो! जल्दी चलो! और जल्दी!" अिस तरह चिल्ला चिल्लाकर खदेड़ते हुअे आ रहे थे।

बारिश जोरोंपर थी। जंगली हिस्से में बरसके दस महिने तो अंद-मानमें बारिश निरंतर रहती है। कैदी लोगोंके समीप कपडों का अेक अेक ही जोड़ा रहता है। घुटन्ना और कुडता। वह तो कम अज़कम वापिस बैरकमें आनेपर सूखी हालतमें पहननेको मिले अिस खयालसे अुसे भी बैरकोंमें ही रखकर जंगल तुड़ाअीके लिये जाया करते थे। अेक लंगोटी ही रहती थी शरीरपर। शरीर सारा दिनभर बुरी तरह भीगा रहता था।

जंगल आते ही अुस टोलीकी स्थिरीकृत टुकडियाँ बनायी गअीं और तुड़ाअी फुड़ाअी तथा तराशने का काम शुरू हुआ। आध मील लंबाअी के जंगल के टापूमें जिधर तिधर चिल्लाहट तथा काम धूम धड़ाकेसे शुरू हो गया। आरे से चीरते चीरते लायी गयी अजस्र टहनी पर आखिर की चिराअी चालू रहते समय जब वे कड़ कड़ करती हुअी नीचे गिरने लगती थीं अुस समय 'भागो,' 'बचावो' का अेकही शोर रहता। बड़े बड़े लठ्ठे दस पांच आदमियों के सिर पर रख कर टाल की तरफ ले जाये जाने लगे। बीच ही में कोअी पेड परसे नीचे गिर पड़ता था। किसी को विषैले जन्तुके डस लेने पर अेकही बोंब मच अुठती थी। वॉर्डर कैदियों को और जमादार वॉर्डरों, हवालदारों को गालियाँ बके जाते थे। ज़रा कोअी पड़ा, थका, रुका कि बेंतकी छड़ी अुसके शरीरपर सपासप अुड़ती थी। बीच ही में कोअी अक्खड़ अथवा कामचोर दंडित बिगड़ खड़ा हुआ/अथवा हमेशा की आदत

के मुताबिक कामसे अिनकार करके गाली गलौज़पर अुतर आया कि तीन चार वॉर्डरोंको अुसपर डालकर डंडे के नीचे वह दनादन पिटवाया जाता था। कारण आज हमेशा के जमादारों का राज्य न होकर " भय्या, आज तो दंडेवाले जमादार का राज है ! "

दो पहर के बारह बजे तक अुन कैदियों की हड्डियाँ आरे और कुल्हाडी चलाते चलाते पूरी तरह खीलों की तरह खिल गअीं ! बारह बज गये हैं यह तब मालूम पडा जब घंटी बजी । कारण सबेरे की तरह मध्यान्ह में भी अिस जंगलकी घनी झाड़ी में और सदा अभ्राच्छादित अेवं टपकने वाले वातावरण में स्वच्छ प्रकाश तो कभी पडता ही नहीं था। घंटी बजते ही सारी टुकड़ियाँ दौड़ते धूपते टाल के सामने आअीं। फिर ' अेक-दो-तीन-दो सौ ' कैदियों की गिनती कर ली गअी। अुनकी संख्या अुतनी ही थी जितनी सबेरे थी । --परिस्थिति में कितना अंतर आ गया था ! कोअी पैरों में जहरीले काँटे गहरे गड़कर टूट जाने के कारण लंगड़ा रहा था, कोअी लकड़ियों के नीचे आ जाने के कारण अथवा वॉर्डर जमादार द्वारा पिटाअी के कारण खून से तर होने तक घायल हो गये थे, बहुतसोंने दल दल में का कीचड़ अपने सारे शरीर पर थोप रखा था--वह बारिशकी वजहसे धुल गया कि फिर शरीर पर कीचड़ मल लिया--कारण, जंगल में संचित हुअे पत्रों--पर्णों के रेंदे में जो जोंकें भरी रहती थीं वे नीचे से शरीरके अूपर चढ़ती थीं और अूपर से लाखों मच्छर तहअियाँ प्रभृति जहरीले प्राणी शरीर पर केवल आग लगा देते थे । कीचड़ की परतोंपर परतें अुन कैदियोंने अपने शरीरपर मल रखी थीं। तो भी जोंकें जहाँ चिपट गअीं वहाँ से अुन्हें अुपाड़ते अुपाड़ते नाक में दम आ जाता और त्वचा पर किये गये अुन अुन दंशों में से रक्त की बारीक धारायें अुनके कीचड़ से सने हुअे शरीर पर लंबे और लालबाल की तरह जहाँ तहाँ दिखाअी देतीं ! खुजलाहट निरंतर बनी रहती, पर खुजाने के लिये फुरसत नहीं ! सताये हुअे, थके--मांदे, कीचड़ और खूनसे लथपथ वे कैदी अुस वक्त खुदाको कितने दयनीय और अन्याय परिपीड़ित समझते थे ! अुन्हें कठिन कष्टों के कोल्हू में पीसकर निकालने वाली दंड पद्धति को तथा अुन ' दंडेवाले ' जमादारों को कितना दुष्ट समझते थे, कितना शाप

देते थे ! पर अिस दंडके वे शिकार क्यों बने, अपने हाथों से दूसरों पर ढाये गये किन किन जुल्मों का प्रायश्चित्त वे भोग रहे थे, अुसका पश्चात्ताप, यदि आप पूछेंगे, तो सौ में से शायद ही किसी अिक्कल्ले दुकल्ले को हुआ होगा ! अितना ही क्यों, अुनमेंसे बहुतेरे लोग, वह डंडेवाली जमादारी यदि अुन्हें दी जाती तो अुसे अस्वीकार करनेवाले नहीं थे– कितने तो सवाये दंडेवाले भी बने होते ! !

बारह की घंटी होते ही भोजन आता। भूख से अकुलाये हुअे वे सारे दंडित झाड़ों झूरमुटों की आड़ में, अुस स्थिति में जैसे भी बैठना संभव हो सका वैसे बैठ गये। मोटी झोटी रोटियों की राशि आते ही वह मैं अकेला ही खा डालूं अैसी अिच्छा हर अेक के मन में अुत्पन्न हुअी। दो-दो चपातियाँ और सब्जी तरकारी का अेक अेक लगदा अुनके हाथों पर डाला गया। जंगल तुड़ाअी की टोलियों को अैसी धांधली के दिन थाली तक लेने की सुविधा नहीं रहती। अेक हाथकी थाली बनाकर अुसके अूपर चपाती और भाजीका लगदा लें, दूसरे हाथ से खायें। अूपर से बारिश ! खाते खाते चपातियों का नरम आटा बन जाता था और भाजी बह निकलती थी !

जमादार, सैनिक और कंटक बाबू अितनोंने वहाँ बाँधे गये तात्कालिक झोपड़े में भोजन किया। अुनकी जी हुजूरी करनेवाले कैदियों में से कुछ वसीले के टट्टू भी झोपड़े में लार टपकाते हुअे घुस सकते थे, अेकाध अधिक चपाती भी अुनके सामने फेंकी जाती थी। रफिअुद्दीन भी अिन्हीं वसीले के टट्टुओं में रहा करता था यह कहने की आवश्यकता ही नहीं। कारण जमादार, हवालदार, सैनिक तक टोलीके अूपर जो मुख्य 'बाबू' रहता है अुससे ज़रा संभालकर रहते हैं। कंटक तो केवल बाबू ही नहीं था, प्रत्युत अपने अुत्कृष्ट कामसे तथा निःस्पृह वृत्तीसे वह अंग्रेज अधिकारियों के भी पसंद का हो गया था। अुसके सामने वे लोग विशेष ही दबकर रहते थे। अिनकी अनेक गलतियों पर तथा अूटपटांग कामोंपर यदि कोअी पर्दा डालेगा तो वही डालेगा, और अुस कंटकबाबू के पीछे लांगूलचालन करने में रफिअुद्दीन प्रवीण, साहसी और कठिण श्रमों के कामों के कारण जमादार को भी अभीष्ट सा हुआ था। अुस वजहसे

कंटक बाबूके परों में लोट लगाता हुआ वह भी झोंपडे में जा सका। अेक पैर भर कर जकड़ी हुअी शृंखला को शान के साथ बीच बीच में खन-खनाते हुअे बैल घुंगुरुओं की ध्वनी में जिस प्रकार चारा खाता है अुसी प्रकार अपनी अवस्था बनाकर अुसने चार पांच चपातियों का चारा, कंटक वाबू जिस झोपडे में था अुसी के अेक कोने में पालथी मारकर चट कर गया।

अुस दिन रफिअुद्दीन ने श्रम भी वैसे ही किये थे। अन्य कैदी जब अुस जंगल की तुड़ाअी कर रहे थे जिसे रोज तोड़ा जाता था, अुस समय अंग्रेजों द्वारा अप्रविष्ट पूर्व आगे के जंगल में घुसकर रास्ता बनाने के लिये जो पुरस्सरों की (Pioneer) टोली कंटक के हाथके नीचे गअी थी अुसी में रफीअुद्दीन भी था। कुल्हाड़ी, हँसिया, दराँती आदियोंसे टेढी मेढी टह-नियाँ झुरमुट, कँटेरी जालियाँ काटकर, बड़े बड़े पत्थरों को अुठा कर अथवा गढे में भर कर पक्का आधा मील का चलने का रास्ता अुन्होंने अुन दो तीन घंटो में खुला कर दिया था। कौली में न समा सके अैसा अेक भारी अजगर खुद रफीअुद्दीनने कुल्हाड़ीसे सिर काटकर गिरा दिया था। अुस भारी भरकम प्राणी का वह भयप्रद धड़ कंधेपर डाल कर और अपने शरीर में लपेटकर वह जमादार के सामने नाचता था! तीन दिन का काम तीन घंटे में करवा लेने कारण जमादार सहित सारे अधिकारी कंटकपर भी प्रसन्न हुअे। कंटक भलेही बाबू रहा हो था तो मूल का कैदी ही! अिस कारण अुस धोर और सधन जंगलमें सबेरेही जब वह पांच-छे चुनीदा कैदियोंको लेकर गया, तब अुसके साथ और विशेषतः अुसके संगमें रफिअुद्दीन सदृश पहले भागा हुआ कैदी रहनेके कारण अुन सबपर पहरा देनें के लिये अेक बंदूकवाला सैनिक दिया ही था। तिसपर अुस जंगलके अेक नवीन टुकडेमें पहली ही मर्तबा सरकारी प्रवेश हो रहा था अिस कारण जावराओंके अुपद्रव की भी भीति थी ही। परंतु अब आधा मील अंदर प्रवेश हो चुका था और अुस जंगल में चलने योग्य रास्ता भी निर्विरोध बनाया जा चुका था, अतः जावराओं के अुपद्रव की वह भीति खोटी साबित हुअी थी और सबका मन अुस अंश म निश्चिंत हो चुका था।

भोजन की छुट्टी समाप्त होने पर अब पूर्व निर्धारित विचार के

अनुसार कंटक का काम अुस दिनभर के लिये अितनाही बाकी रह गया था कि रास्ता बनाये गये आधे मीलके अुस टापू में रास्ते के आसपास जो भी अुपयोगी वृक्ष हाथ लगे अुसपर यथा साध्य तारकोल से क्रमांक डालना और सांझ को पांच बजने से पहले पहले लौट आना। अुसके लियें रफि-अुद्दीन के साथ चार पांच कैदी संग में लेकर कंटक बाबू फिर अुस जंगल में अुस नवनिर्मित रास्ते से होकर घुसा। अुसके आगे पीछे पहरा देने के लिये और रक्षण के लिये वह बंदुकवाला सशस्त्र सैनिक भी गया। बाकीके सौ डेढ़ सौ कैदी लकड़ियों वे तोड़ने फोड़ने का काम सबेरेवाली जगहपर ही करने लग गये। बचे हुअे बंदुकवाले सैनिक अुन्हीं में विभक्त कर दियें गये थे।

बारिश बराबर पड़ रही थी। अुसमें भी कंटकवाली टोली जिस निबिड़ आरण्य में गअी हुअी थी, वैसे अरण्य में तो अूपरके आसमान की बारिश घन्टे भर के लिये रुक भी जाय तो भी जंगल के भीतर की बारिश नहीं रुकती। कारण, अूंचे और विस्तीर्ण महावृक्ष अुसके नीचे छोटे वृक्ष, अुसके नीचे झाड़, अुन सबको लपेटकर अुलझाकर अेक जंजाल बनी हुअी लता बल्लियाँ, जालियाँ, झुरमुट, वृक्षरूप अुपवृक्ष आदि की अेकपर अेक छपरियाँ! आसमान की बारिश रुक गयी तो भी घंटोंतक अुस जंजाल में फंसा हुआ पानी अैसे जंगलों में अुसी प्रकार बरसता रहता है, सरसराता, टपकता, निथरता रहता है। वही बात प्रकाश की। अूपर धूप रही भी तो भी अुस निबिड़ झाड़ी में तल तक सहसा पहुँचती ही नहीं। जब चार बजने का वक्त हो आया तब अुस जगह अितना अंधेरा छा गया कि सिर्फ पास-वाला आदमी ही नजर आ सके!

अैसा अँधेरा और पानी देखकर पांच बजे तक न ठहर कर चार बजेही लौट चले असा कंटक ने पहरेवाले सैनिक से कहा। वह तो पूरी तरह तय्यार थाही। लगातार कंधेपर बन्दूक रख्खे रख्खे वह अितना परेशान हो गया था कि अुतने परेशान जंगल तुड़ाअी के कष्ट से वे कैदी भी न हुअे होंगे। अिस समय साथके दो तीन कैदियोंको निशानी लगाये हुअे वृक्षोंपर क्रमांक डालनेका काम सौंपकर कंटक और सैनिक अुस नये रास्ते के परली ओर के सिरे तक जंगल में घुस गये थे। रफिअुद्दीन अुन से भी आगे कुछ फासलेपर

विद्यमान खाड़ी की अेक शाखाके समीप पहुँचा हुआ था। समुद्र काफी दूर था। अुसकी खाड़ी भी अुन वृक्षोंकी आड़ में छिपी हुअी थी। परन्तु अुसकी अेक सँकरी किन्तु गहरी शाखा दूरतक जंगल में घुसकर अुस जगह खत्म हो गअी थी। अुस शाखा के कारण वहाँ थोड़ी सी खुली जगह मिल गअी थी। कंटक अुस सैनिक के साथ वापस चलने का विचार कर ही रहा था कि अुस शाखातक आगे पहुँचे हुअे रफिअुद्दीन ने दबी जबान में कंटकको पास बुलाया। कंटक झपटकर आगे आने लगा, त्यों ही अुसका हाथ पकड़ कर अुसके साथ अेक दीवार जैसे वृक्षके वुंधेकी आड़ में खड़ा होकर रफिअुद्दीन संशयी स्वर में बोला,

"बाबूजी, वो देखो! – वे गीध, चील और वे कौअे अिस खाडी की शाखा के किनारे भरे पड़े हैं! यह चिन्ह कुछ ठीक नहीं है!"

"क्यों रे बाबा, अिस से पहले अुस सजीव अेवं अजस्र अजगरको देखकर डरा नहीं और अिन मरे हुअे पँखेरुओंको देखकर फक्क पड़ा जा रहा है!" वहाँ अतने में वह बन्दूकवाला सैनिक भी आ गया था, अुसकी ओर देखकर कंटक हंसा।

"देखो मरे चिड़ियों को रफिअुद्दीन डरते हैं! भूतप्रेत जिवपक्षियों का रूपधारण कर के भटकते हैं अैसा जंगली लोग समझते हैं, वे ही ये पक्षी हैं अैसा कदाचित् अिसे प्रतीत हो रहा है!"

"नहीं बाबूजी, नहीं! यह चेष्टा (मजाक) की बात नहीं? देखो, अिन जंगली लोगों में मैं पहले जब भाग गया था अुसी समय खूब रहा हूं। अिन्हें यदि किसीपर गुप्त छापा मार कर अुनकी हत्या करनी हो तो ये लोग आसपास के चीलों, गीधों और कौओं को मार डालते हैं। कारण अुनकी अैसी धारणा रहती है कि, ये पक्षी अुनको गतिविधियोंका समाचार अुड़ते हुअे जाकर शत्रुओंको बता देते हैं! चूंकी ये अखिल भूत पक्षी यहाँ आज ही मारे गये पड़े दीखते हैं, अत:—"

"धाँय्, धाँय्, धाँय्" करके बन्दूक की आवाज अुसी क्षण कैदियों की मुख्य टोली जहाँ काम करती थी अुस ओर से सुनाअी पड़ी! अुसके बाद ही हो हल्ला और शोर शराबा सुनाअी दिया! त्यौं ही अूंचाअी पर अुस झोंपडे के नजदीक विद्यमान घंटी की 'घनघनाहट' शुरू हो गअी!

" जावरे आ पहुँचे ! हमारी टोली पर जरूर वे टूट पडे होंगे और सैनिकोंने अुनपर बंदूकें चलाअी होंगी ! !" रफिउद्दीनने भर्राअी हुअी आवाज़ में पर निर्भयता पूर्वक अनुमान लगाया !

अुस पर सबमें अधिक यदि कोअी घबराया होगा तो वह अुनकी रक्षा के लिये आया हुआ पहरेदार वह बंदूकवाला सैनिक !

" अरे बापरे ! तब अब हम क्या करें ? बता बाबा अेक बार! बोल बंदूक चलाअूं क्या मैं भी ?"

" नहीं, नहीं !" कंटकने अुसे रोक दिया, "केवल पेड पत्तों पर बंदूक छोड़ने से क्या बनेगा ? अुलटे हम अिस जगह हैं यह अुन जावरोंको मालूम नहीं तो मालूम पड़ जायगा और वे अिस झाड़ी में घुसकर हमें भी घेर लेंगे ! मुझे तो अैसा प्रतीत होता है कि हम अब अपना धीरज न खोते हुअे अिसी प्रकार अिस रास्ते से वापिस जा कर मुख्य टोली से जा मिलें ।"

सैनिक को तो वही अभीष्ट था। अुसने अपने मन में कहा,

" अगर कोअी जावरा हमपर चढ आयगा तो वह दलदल की ओर से ही आयगा। लौटते समय हमारी पीठ अिसी ओरको रहेगी, अैसी अवस्था में अिन कैदियों के आगे आगे मैं चलूं तो अुसमें अपनी जानको खतरा कम रहेगा। जावरों के दलदल की ओर से आनेवाले बाण प्रथमतः अिन्हीं में से किसी की पीठ में घुस जायेंगे। मैं आगे का आगे निकलकर भाग खड़ा होअूंगा !" मनमें तो अिस किस्मका डर पर अूपरी तौरपर अुलटे धैर्य का अभिनय करता हुआ वह सैनिक बोला,

" हां चलो सारे ! अरे डरते क्या हो अिस तरह ! यह देखो तुम्हारे आगे आगे चलता हूँ चार कदम ! जावरे हैं क्या ? अुन्होंने अिन पक्षियों को जिस तरह मार गिराया है, अुसी तरह मेरी यह बंदूक अुन्हें पटापट मारकर नीचे गिरा देगी। चलाव !"

सैनिक आगे आगे रास्तेपर चलने भी लग गया; कंटक और रफिउद्दीन अुसके पीछे पीछे हो लिये। पर सैनिक की अुस 'पुरोगामिता की कमजोरी रफिउद्दीन और कंटक के ध्यानमें आ चुकी थी अतः कंटकने अुस सैनिक की अुस दिखावटी बहादुरी को देख सिर्फ अपनी आँख

मटका करही अपनी अद्भुतानुभूति को रफिअुद्दीन पर व्यक्त किया। पर रफिउद्दीन से अुस खतरे और धांधली के समय भी मजाक किये वगैरे नहीं रहा गया। वह अुस अूबड़खाबड़ और कंटीले रास्ते को झपट्टे के साथ तय करते हुअे ही कुचेष्टापूर्वक बोला,

"हवालदारजी! देखो ये जावरा लोग रहते हैं तो बड़ही शूर! अुनकी रीति अैसी है कि जिनपर छापा मारना होता है अुनपर वे पीठ पीछे से कभी बाण नहीं छोड़ेंगे! रास्ते में जो अुनके मुँहके सामने रहेगा अुसी के सामने आकर रास्ता रोककर के खड़े हो जायंगे और सामना देकर बाण मारेंगे!

रफिअुद्दीन की यह गप्प सुनते ही सैनिक का मुँह अेकदम काला पड़ गया! मैंनें आगे होकर ही अपनी जान खतरेमें डाल ली अैसा मनमें आते ही वह अितना घबराया कि जावरों का बाण सामने से सायँ् सायँ् करते हुअे आ ही रहा हो अैसी अुसकी अवस्था हो गअी अब अपने डर को छिपाकर सहज ही पीछे रहने के लिये कौनसा बहाना ढूंढा जाय? खांसते खांसते अुसे अेक बहाना भी अखिर मिल ही गया। बहाना भी अेक नंबर का था!

अेकाअेक रुककर बंदूक को जमीनपर टेककर हवालदारजीने काड-तूसों की पेटी निकाली। अुसके रुकते ही रफिअुद्दीन और कंटक भी थोडेसे रुक गये। अुन्हें डाँट बताकर हवालदारजीने आज्ञा दी,

"क्या गँवार हो! चलने लगो न झपझप। बंदूक में कारतूस भरकर तथा पट्टा बांध कर आता ही हूं मैं! डरते हो क्या अकेले चलने के लिये अिस तरह!"

वह समय सचमुच अेक पलभर भी ठहरने का नहीं था यह कंटक जानता था। मजाक जानपर आ सकती है अतः केवल अुपहंसने से जितना मनोविनोद किया जा सकता है अुतना ही करके कंटक आगे चल पड़ा। अुसी के साथ रफिअुद्दीन। थोडेसे फासले पर अुन्हें आगे बढ़ा हुआ देखकर काडतुसें भरी अी अपनी बंदूक फिर कंधे पर डाल कर हवालदार जी भी अब अुनके ीछे पीछे चलने लगे। जावरे रास्तेमें आये भी तो सामनेसे आयेंगे, अुनके तीरों के सामने अिन कैदियों की छाती की ढाल

रहेगी और अुसके पीछे हम रहेंगे अुस परिस्थिति में जितना संभव था अुतना आत्मरक्षा का अुपाय हुआ देखकर हवालदार को भी पर्याप्त मात्रा में संतोष प्रतीत हुआ।

दो अढाअि सौ गज अुस दुर्गम पादमार्ग से अुस निबिड़ अंधकारपूर्ण अेवं पानी बरसाने वाले अरण्यमें से होकर वे तीनों अुस मुख्य टोली की तरफ जानेके लिअे वापिस हुअे ही थे कि त्योंही--

दलदल के किनारे की निबिड़ झाड़ी में स्थित अेक अूंचे वृक्षपर से अुस सारी हलचल पर काफी देर से निगाह रखनेवाले दो मैले कुचैले जावरे नीचे अुतरे, झाड़ी में सर्प की भांति सरसरा कर बाहर निकले और अुनकी पीठके पीछे तक चले आये। तीर अचूक मारने योग्य विश्रांति और सुविधा के मिलते ही अुन्होंने अपने अपने धनुष्य तानकर दस पाँच बाण, अुस पीछे रहे हुअे बंदूकवाले हवालदार की पीठपर ही झनझनाते हुअे छोड़ दिये!

"बापरे! मरा! जावरे! मरा!" अिस तरह अकस्मात् चिंघाड़ कर वह सैनिक बंदूक के सहित मुंह के बल गिर पड़ा! पीछेकी ओर मुड़कर देखने तक का अुसे अवसर नहीं मिला। अचानक अुसकी पीठमें दो जहरीले बाण जो घुसे वे रीढ़की ओर से सीधे पेटमें जाकर धँस गये। अुसकी पीठपर घँसकर रहे हुअे अुन बाणों के सिरे पर के पर अुड़ते हुअे पक्षी के सदृश्य थरथरा रहे थे, अितना आवेग और त्वेष अुनमें भरा हुआ था!

अुस चिंघाड़ के सुनते ही कंटक खट्से पीछे मुड़ा और सैनिक की तरफ को दौड़ा। पर रफिअुद्दीनने अूसका हाथ तत्काल पकड़ लिया और अुसे झाड़ी के भीतर खींच लिया!--

"बाबूजी, छुप जाव, छुप जाव पहिले!"

कंटक और रफिअुद्दीन, जानपर आ पड़तेही मनुष्य तत्काल केवल शारीरिक प्रतिक्रिया के कारण जैसा कुछ कर जाता है, वैसे अुस झाड़ी में जा छिपे। न काँटे न जोंक, न सांप, न पत्तों पत्तियोंका गीला गीला कीचड़! अुनके ध्यान में भी ये न्यूनतर अुपद्रव नहीं आये। खड़े खड़े अंदर घुसना सर्वथा असंभव! वे सर्प की भांति अुस गीले कीचड़ में से सरसराते हुअे जहांतक जाना संभव हुआ वहांतक झाड़ी के भीतर सते चले गये। अपने हाथ में की कुल्हाड़ी मात्र

अुन्होंने छोड़ी नहीं। पांच छे मिनिट तक अुनके मन में और हृदय म चिता तथा धुड़धुड़ी के अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तुकी अनुभूति नहीं थी। अुसके बाद कंटक के अेकदम खयाल में आया कि सैनिक जो गिर पड़ा है, अुसके हाथ में भरी हुअी बंदूक और कमर में कारतूसें अुसी तरह हैं! यदि जावरों के हाथमें वह पड़ गअी तो बड़ा भारी अनर्थ टूट पडेगा!

"जावरों को बंदूक की अुतनी हविस नहीं रहती"–रफिअुद्दीन बोला, "और अब झाडीसे बाहर निकलने पर जान का खतरा है!"

"पर बंदूक को अुसीतरह छोड़ देने में तो वह खतरा और भी भयानक स्वरूप का हो जायगा! किसे मालूम वे अुसे लेकर चल ही दें! पुनश्च अिस परिस्थिति में बंदूकके अपने हाथ में रहने ही में अधिक मज़बूती और सुरक्षितता है!" अिस प्रकारके आग्रह के साथ कंटक छिपते छिपाते फिर झाड़ी के मुखाग्र पर आया। चारों तरफ सन्नाटा देखकर झपटकर आगे की ओर बढ़ा। बंदूक, कारतुसें, शिकारी चाकू, और खंजर निकाल लिये। सैनिक के मुँह में से खूनकी अुलटियाँ चालू थीं। अुस खून में अुस का शव बुरी तरह सन गया था।

"मर गया बेचारा!" अिसप्रकार निश्वास छोड़कर कंटक अुन हथियारों सहित फिर झाड़ी में घुस गया।

रफिअुद्दीन बोला,

"अेक दो हवा में बंदूक की आवाजें कीजिये। जावरे बंदूक की आवाजों से बहुत बिचकते हैं। आसपास कहीं होंगे तो आगे घुसेंगे नहीं। नहीं तो अुस सैनिक की पीठमें घुसे हुअे अपने बाण निकाल लेने के लिये वे कदाचित् चले आयें। अुनके समीप बाण अिने गिने ही रहते हैं। शिकार करते समय छोड़े गये बाण ही वे फिर यथा संभव ढूंढकर निकाल ले जाते हैं। अुन्हीं को ठीक करके फिर काम में ले आते हैं"

असके अनुसार कंटक रास्ते के किनारे तक आया और अेक दो बंदूक की आवाजें कीं। और फिर अुसी झाड़ी में वे दुबके पड़े रहे।

टोलीके सैनिक और जमादार कुछ लोगों को साथ लेकर अुन्हें छुड़ाने के लिये किंवा खोजने के लिये हर हालत में अुस रास्तेसे होकर आयेंगे ही अैसा अुन्हें अेक मर्तबा प्रतीत होता था। पर संकट घंटा

(Alarm Bell) जो बज रही थी और जो सुदूर टीले परसे हो हल्ला बीचबीच में से पहले सुनाओी देता रहा था वह अब बिलकुल बंद पड़ गया था। अुस परसे अुन्हें कभी कभी लगता था कि जावरों के प्रहार से डर कर अुन सारे कैदियोंको लेकर जमादार सरकारी बैरकों की ओर वापिस भी चला गया होगा।

कंटकने पूछा,

"जावरों के कितने लोग छापा मारन के लिये आये होंगे?"

रफिअुद्दीन ने अुत्तर दिया,

"कितने सौ पूछते हो! सैंकड़ों में तो वे लोग कभी आते ही नहीं! हैं ही सिर्फ मुठ्ठीभर बेचारे! वे लोग जब आते हैं तब वे सिर्फ पांच पचास धनुर्धर ही रहते हैं! झाड़ियों में दुबक कर पांच पचास जहरीले बाण अकस्मात मारकर, दस वीस मुर्दे गिराकर भाग जाना, यह अुनकी लड़ाओी है! घनी झाड़ी, अंधेरी और मार्ग शून्य! बंदूकवालोंकी सेना भी निकम्मी साबित होती है अुनका पीछा करने के लिये। अुस सुविधा के कारण ही वे अभी तक अिस जंगल के राजा हैं। अंग्रेजों को अुनका पीछाही करना हो तो किया जा सकता है; पर अितनी प्राणहानी परेशानी और खर्च करने योग्य अिस यःकश्चित् अेक अरण्यमय अुपनिवेश में युद्ध करके मिलेगा क्या अंग्रेज को! अतः केवल तभी जब वे अपने रास्ते में रुकावट बनकर खड़े हो और अुतनोंही को जितने लोग सामने आये काटते हुअे अंग्रेज अपना काम चलाता है। हां, अब ये जो विमान तय्यार हो रहे हैं अैसा कहते हैं न, अुस प्रकार का कोओी साधन निर्माण हुआ तो अुस समय आकाशमेंसे दृष्टि डालकर जावरों के निवास स्थानों को अचूक रूपसे पता चलाने में और सौ सवासौ भयंकर स्फोटक गोलक अूपरसे फेंककर जावरोंका सत्यानाश करने में अंग्रेज को अेक सप्ताह भी नहीं लगेगा! पर वह आगे की बात है। आज तो जावरे यदि छापा मारने के लिये आये होंगे तो अेकबार पहले मेरे समक्ष अंग्रेजोंके साथ अिसी प्रकारकी हुअी मुठभेड़ के सदृश्य वे मुश्किल से पचास से लगभग होंगे। टोलीपर बाणों की वृष्टि करके वे निकल भी गये होंगे दूसरे जंगल में!"

"वैसीही यदि संभावना हो, तो फिर यहाँ कहाँ बैठे हुअे हैं हम बिलों में चूहों की तरह! चल बाहर निकलें। अभी पादमार्ग अपने को दीखता है, समीप बन्दूक है, टोलीकी तरफ चलो। टोली के लोग यदि अिधर ही आ रहे होंगे तो अुन से मुलाकात शीघ्र ही हो जायगी। वे भी बेचारे संकट में होंगे, होंगे भी या चले गये होंगे किसे मालूम। गये भी हों तो भी नज़दीक ही कहीं हम अुन्हें पकड़ सकेंगे। अभी छै नहीं बजे हैं। घंटी के समय बैरक में–"

"फिर कैदी बनकर आपने आप ही अुस बैरक में जाकर गिनती करायें? अेह्! कंटकबाबू, अब मेरे मन में अेक भयंकर विचार आ रहा है! जो भाग निकलने का अवसर अपना अपने हाथ नहीं आ रहा था, वही स्वयं दैवने हमारे हाथ में अिस प्रकार लाकर नहीं दी है यह काहे पर से मानें? आज सबेरे बैरक में से निकलते समय ही बिस्तुअिया ने अनुकूल स्वर में चुक् चुक् किया था। बाबूजी, बिस्तुअिया के चुक् चुक् करने से शुभाशुभ की प्रतीति अवश्य होकर रहती है, समझे!"

"तब वह तभी क्यों नहीं पता चला तुझे? आगे चलकर शुभ हुआ कि पीछे के शकुन याद आते हैं! सौ दफा तो वे सैंकड़ों गलत साबित हुअी चुक् चुक् की आवाजे आदमी भूल जाते हैं। वह कुछ क्यों न हो, अपनी ओर टोली के जमादार ने कुछ आदमियों को भेजा है या नहीं पहले यह चलकर पता चलाना ही चाहिये! क्यों ठीक है न? तो फिर चल बाहर निकल।"

वे दोनों हथियारबन्द होकर धीरे से झाड़ी से बाहर निकले। देखते देखते वे लोग रास्ते के प्रारंभिक भाग तक आये। देखते हैं तो क्या, चारों तरफ सुनसान–सन्नाटा!

कारण, चार पांच बजने के बीच में जब अुन टोली के कैदियोंपर घनी झाड़ी में से होकर दस–पंद्रह जावरों ने भिन्न–भिन्न स्थानों से जहरीले बाणों की अकस्मात् वृष्टि की, तब अुन कैदियों में से दस बारह कैदी घायल हो गये। यह देखते ही अुस टोली में भगदड़ मच गअी थी। बन्दूकवाले जो दो आदमी थे अुन्हों नें बन्दूकें चलाअी, पर वे गोलियाँ और छर्रे अुस घनी झाड़ी के पत्तों पत्तियों में न जाने कहां बिला गये! अैसी पचास भी बन्दूकें

चलाओी जातीं तो भी जंगल में छिप कर बैठे हुओं का तथा बाण चलाने वालों का बाल भी बांका न हुआ होता। सांझ का समय था वह, अंधेरे में और बारिश में अुस जंगल में आगे बढ़कर आक्रमण करने की अुन बाजारू भुनगों में से किसकी ताकत थी?— और अुन कैदियों का बनने बिगड़ने वाला ही क्या था जो नाहक अपनी जान खतरे में डालते! मरना हो तो मरें वे अंग्रेज और जावरे! जमादार सहित सारे लोग अिस अुपाय की खोज में लगे कि वहाँ से अपनी जान बचाकर यथाशक्ति जल्दी से जल्दी किस तरह निकल भागा जाय। कंटक के साथ गये हुओ और रास्ते के आधे पूरे भाग मे वृक्षोंपर क्रमांक डालते हुओ जो चार पांच कैदी थे अुन्होंने ज्यों ही टोली मे अिस तरह का हाहाकार पूर्ण शोरगुल सुना तो दौड़े दौड़े अुलटे पावों वे अपने अड्डेपर जा पहुँचे थे। कन्टक वन्टक जो भी रास्तेके परले सिरेपर अटके हुओ थे वे जिन्दा भी हैं या मर गये अिस की पूछताछ करने तक की किसी में सुध बाकी नहीं रह गओी थी। क्या बन्दूकवाले सैनिक और क्या जमादार किसी ने भी पैर आगे नहीं बढ़ाया। बस संकट घंटा बजाओी, जितने कैदी अिकट्ठा हुओ अुन्हें लिया, घायलों को अिसके अुसके कन्धोंपर चढ़ाया और बैरकों की तरफ वापिस हो लिये। जावरों ने अुनकी फेरी हुओी पीठोंपर भी ज्यों ही और चार पांच बाण ताने त्यों ही वह सारी की सारी टोली सिरपर पैर रखकर जो भागी सो भाग ही खड़ी हुओी। अुसने अिधर अुधर का और कुछ नहीं देखा।

बैरकों की तरफ़ आते ही अरण्य विभाग के अंग्रेज अधिकारी को सैनिकों ने और जमादार ने सारी बातें सुओी का सूआ करके सुनाओीं.

"जावरों की अेक सेना की सेना अुस जंगल में युद्ध के लिये आओी हुओी है साब!"

"कितने होंगे वे जावरे साधारणतः?" साहबने पूछा।

"हजार अेक तो होना ही चाहिये, साब!"

अुस टोली के लोगों की अिस तरह दुर्गति कर चुकने के बाद वे बीस पच्चीस जावरे भी अुस जंगल में से भाग कर अपने सुदुर्गम अेवं सुदूरवर्ती ग्रामस्थान की ओर चले गये थे। कन्टक की टुकड़ी पर बाण छोड़ने वाले दोनों के दोनों भी कन्टक के बन्दूक की आवाज़ करते ही दलदलकी

तरफ भाग गये थे और अपने अुन वापिस होनेवाले जावरों से जा मिले थे। अुस दिन अुन्होंने अंग्रेजों के लोगोंपर भले ही धावा बोला हो, कुछ बरस पहले हुअी जूझ में अंग्रेज ने अपने लिये जो सीमा निर्धारित की थी अुसका आज अुल्लंघन कर के अुस से आगे के जावरों के लिये निर्धारित अरण्य में अुसने चोरी छिपे जो प्रवेश किया था, अुस संबंध में अुन्होंने अंग्रेजों के लोगोंमें से पांच–पच्चीस आदमियों को घायल करके बदला भलेही लिया हो, तो भी जावरे भी अिस बात को समझते थे कि, अंग्रेज भी बदलेका बदला लेने के लिये तो दो तीन दिन के भीतर ही सशस्त्र सेना की टुकड़ी लेकर अुस जंगल में घुसे बगैर नहीं रहेगा! क्वचित वह कलही कलमें धावा बोल बैठे! कारण, अंग्रेजों के अेक बंदूक वाले सैनिक को अुन्होंने जानसे मार डाला था। अुसके तथा अुस जैसे खोये हुअे कैदियोंकी तलाश में अंग्रेजों के लोग अगर कलही कल में चलेही आये तो? मोर्चा बनाकर निर्धारित रणांगणपर सामना भला जावरे क्या कर सकेंगे? वह अुनका रण संप्रदाय ही नहीं। भूतों की भांति अुनका संचार, अदृश्यता अुनका अस्त्र और बल। अंग्रेज अुन्हें जहां खोजेगा वहां वे किसी हालतमें नहीं मिलेंगे; जहां खोजेगा नहीं वहीं से वे जान बूझकर छापा मारेंगे! अतअेव अुन्हों ने अुस अरण्य की ओर फिर दोबारा झांककर भी नहीं देखना अैसा निश्चय किया था। तथा अबके दूसरे ही जंगल में से अंग्रेजों के लोगोंपर अर्थात कठोर श्रमजीवी अथवा स्वतंत्र ग्रामवासी कैदियों पर अगला धावा बोलने का निश्चय पक्का भी कर डाला था।

अिस रीतिसे कैदियोंकी टोली में से किंवा जावरों में से कोअी भी अुस रास्तेके अगले तथा पिछले अरण्य में बाकी नहीं रह गया था अेतस्मात् कंटक और रफिअुद्दीन दोनों जब वहाँ पहुँचे तो अुन्हें सर्वत्र निःशब्दता तथा स्तब्धावस्था दिखाअी थी।

तादृश्य स्तब्धावस्था में, अुस प्रकारके प्राणोंपर आ पड़े हुअे संकट प्रसंग में अथवा अुस घोर अरण्य के काले काले होते जाने वाले जबड़ों में अपने को पड़ा हुआ देख अेक विशेष दिङ्मोहक भीति के कारण अन दोनोंके हृदय हिल अुठे! और दोनों ही के मनकी प्रवृत्ति नवनवीन

भीषण संकटों का ग्रास बनने के बजाय सरल मार्गसे सरकारी बैरकों की तरफ जाकर अपने बंदी बंधुओंसे और अधिकारियों से मिलने की ओर होने लगी।

पर दोनोंही के मनमें भाग खड़ा होने की सनक, पेट में अुठनेवाली मरोड़ की तरह, निरंतर सवार होती जा रही थी। अुन्हें चैन नहीं लेने देती थी।

रफिअुद्दीनने अिसके पहले कंटक को जब स्पष्ट रूपसे सूचित किया की ' काले पानी के कैदखाने को तोड़कर भागना हो तो अुसके लिये यही सबसे बढ़िया मौका है ! तब अुससे भी पहले कंटक के मनमें वही साहसपूर्ण कल्पना आओी थी ! पर अुस कल्पना के साथ ही साथ अुसे याद आया कि,

" अरे, भागना तो अवश्य है; पर मुझे अकेले ही को नहीं भागना है ! अपने साथ मालती का भी छूटकारा कराकर अुसके सहित निकल भागना है। यदि अब अिस प्रकार अकेला ही में अरण्य में घुस गया, तो पुनः मालती को कैदियों के अुपनिवेश में छुड़ाकर लाने का पीछे की तरफ का पुल ही अुड़ा दिये जैसा हो जायगा ! अेक दफा अरण्य में घुसा कि फिर अुपनिवेश की ओर आना ही असंभव हो जायगा। अिसप्रकार अतर्कित रूप से आजही मौका आ जायगा अिसका सपना तक नहीं आया था। अन्यथा अुसे अन्य कोशिस से छुड़ा लाने की कोओी न कोओी योजना पहले ही से तय्यार करके तब आजका मौका साधा होता ! "

अिस अेक अड़चन के कारण कंटक तत्काल भाग जाने के रफिअुद्दीन के आग्रह पर ठीकसे ' हां ' भी नहीं कह पाता था और ' ना ' भी नहीं कह पाता था। रफिअुद्दीन को कंटक की अिस असली कठिनाओी की जानकारी ही नहीं थी। अिस कारण अुस मौके के अन्य लाभों को कंटक के हृदयपर बिंबित करने का पुनः पुनः प्रयत्न करके वह अंत में बोला,

" बाबूजी, सबसे बढ़कर बात यह है कि आज सरकार आपका पीछा भी नहीं करेगी ! और चार पाँच दिनों तक तो सरकार को अैसाही प्रतीत होता रहेगा कि, हम भागे नहीं है प्रत्युत जानवरों ने ही हमें अुस सैनिक की भांति अिस जंगल में कहीं घेरकर मार डाला होगा ! सरकारी लोग हमारी

खोज में यहाँ आयेंगे, पर 'भगोड़े' समझ कर नहीं प्रत्युत 'मारे गये' समझ कर! और अिसी जंगल में खोजेंगे पहले पहल। अिससे बढ़कर सहूलियत और कौनसी मिलेगी अपने को! सचमुच, जिन्हें भागना है अुन कैदियों को सरकारने खुद ब खुद सरकारी खर्चसे बंदूक, काडतूस, हथियार पुरा कर पहरे में से छोड़कर अिस घने जंगल तक स्वयं सुरक्षिततावस्था में पहुँचा कर, अूपरसे यह आश्वासन और दे डाला है कि, चार पांच दिन तक हम तुम्हारा पीछा भी नहीं करेंगे समझे, जाओ तुम, तब तक तुम जितनी दूर जा सकते हो अुतनी दूरभाग जाओ! "–अैसे भाग्यवान् भगोड़े (पलायन कारी) कैदी अिस अंदमान के संपूर्ण अितिहास में हम दोनों ही निकले हैं! अब अितने पर न भागकर जो अुलटे अपने पैरों से बैरकों की तरफ जा कर सरकारी कैदखाने में पुनरपि घुसकर बैठ जायगा वह केवल कैदखाने में ही सड़कर मरने की योग्यता का है अैसा कहना चाहिये! तब कहिये, आप को वही अिष्ट हो, तो आप बैरक की ओर वापिस चले जाअिये। मै तो अब जान भी गयी तो भी नहीं लौटूंगा। वह अुतनी बंदूक मुझे दे डालिये, बस मैं घुसा ही समझियेगा जंगल में, जाकर पहुँच गया ही समझिये हिन्दुस्तान में!"

अुसके अिस अंतिम निश्चयात्मक वाक्य को सुनकर कहूं या न कहूं अिस प्रकार चलनेवाला कंटकके मनका अंतरद्वंद्व समाप्त हो गया। थोडी मात्रामें क्यों न हो पर अब कह डालना ही अुचित होगा यह समझकर कंटक बोला,

"दो चार दिन पहले यदि यह मौका आता तो मैं ही अिस भाग खाडे होनेके काम में तुझसे भी चार कदम आगे ही रहता; पर तुझे मालूम नहीं। अिन तीन चार दिनोंके अिस नये अत्यावश्यक सरकारी काम की झंझट में मैं तुझसे कह नहीं पाया जहां मेरी आजन्म कारावास की सजा हुअी हुअी बहन भी यहाँ की स्त्रियोंकी जेलमें गत सप्ताह हीं आयी है! यदि मैं भागूंगा तो अुसे लेकर ही भागूंगा। सरकारी अधिकारियों में सबको मेरी सजाके अितिवृत्त से मालूम है कि वह मेरी स्त्री बहन कंटकी है। हम दोनोंपर अेक साथ मिलकर की गयी हत्या का अिकठ्ठा आरोप आया और दोनों को कालेपानी की सजा हुअी। यदि मैं अकेला भाग गया तो वे क्वचित् मेरा बदला लेनें के खयाल से, कम अज् कम अुसे भी अिसकी जानकारी होगी

अिस संशय पर अुसपर जुलम तोड़ने से बाज नहीं आवेंगे। पुनश्च, जब तक वह कैदखाने की कब्रमें गडी हुअी है, तबतक मैं भले ही अुसमें से बाहर निकलकर जीवित हो जाअूं पर हालत तो मेरी भी मरे हुअे की सी ही रहेगी ! यह मेरी आजही भाग निकलने के रास्ते में सबसे भारी अड़चन है ! अेक दफा अब में अिस तरह भाग खड़ा हुआ तो फिर अुसे छुड़ाने के लिये कोअी गूढ अभिसंधि करूं क्या, अुससे दोबारा मिलने के लिये जाना भी मेरे लिए संभव हो सकेगा क्या ? वह घबरा अुठेगी, मेरे लापता 'भगोड़ा' बन जाने की खबर सुनकर, चिंताओंसे क्षीण होकर वह जान तक दे बैठेगी! —"

"ठहरिये ! यही है न अड़चन ? तो मैं आपसे प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ कि आपकी बहन को कैदखानेसे मुक्त कराना, जिस समय हम स्वयं बंधन में थे, भागे नहीं थे, अुस समय की अपेक्षा अब हमारे भाग जानेपर, स्वतंत्र हो जानेपर ही अधिक सुसाध्य होगा ! आज हम जंगल में भागकर जा पहुँचे हैं। अिसका मतलब यह नहीं कि हम फिर अिस कैदियोंके अुपनिवेश में पैर रखही नहीं सकते ! यह डर गलत है ! मैं पिछली दफा जब भागा था न तब तीन चार महीने रातके वक्त खुले तौर पर रहता था अिन जावरों में और दिनभर गुप्तरूप से घुमा फिरा करता था अिस अुपनिवेशमें ! कंटक बाबू, यह काम मेरा रहा । मैं आपकी बहनको कैदखानेसे निरावद रूप में अुठाकर जंगलमें जिस जगह आप रहेंगे अुस जगह लाकर आपके सामने खडी किये देता हूं ! देखिये तो सही मेरे करिश्मे। थोड़ा खुला छूटने दीजिये, जंगलका चारा और वारा (हवा) अिस बाघने अेक दफा फिर खाया कि आ ही गयी समझिये अिस गंज खाये हुअे नाखूनों में पुनः वह पूर्वकालिक व्याघ्रीय धार ! कंटक बाबू, आपको मेरा पहले का पराक्रम मालूम नहीं है । आपकी मेरी जानपहचान मेरे हाथों में हथकडियॉ पडनेके पश्चात काले पानी की तरफ आते समय 'महाराजा' बोटपर जो हुअी थी वही है ! पर अुसदिन बंधुभाव की जो सौगंध हमने ली थी, अुसका पालन करके आपने अिस कठोर कैदखानेमें मुझपर जो अनेक अुपकार किये हैं अुन्हें जनम जनम तक भूलूंगा नहीं । अुसी बोटपर कालेपानी की ओर आते हुअे मैंने कालेपानीके बंधन लौह को तोड़नेका आपको अभिवचन दिया था आज अुसे आंशिक रूपसे सच्चा साबित किया है; कल परसों

पूर्णरूपसे सच्चा साबित कर दूंगा कंटक बाबू ! बेडियाँ पहने, पींजरे में बंद पड़ा हुआ रफिअुद्दीन ही आपने देख रखा है, अत: कदाचित आपको मेरा कथन आज वल्गना प्रतीत हो । पर यहि कहीं पींजरे में बंद होनेसे पूर्व का मेरे भीतरका व्याघ्र आपने देख रखा होता न, तो मेरे करिश्मों पर आपका मेरे कहे बगैर ही विश्वास बैठ गया होता ! "

रफिउद्दीन के अिन अंतके दस-पांच वाक्योंसे कंटक का अुसके संबंध में विश्वास बढ़ने के स्थान पर अुसके संबंध में भय ही अधिक बढ़ता चला गया था! रफिअुद्दीन बोल रहा था कंटक से, पर रफिअुद्दीन की वे बातें सुन रहा था किशन ! कंटक को पींजरे में बंद रफिअुद्दीन ही की जानकारी थी, यह सचमुच है,---पर किशन भूल के रफिशुद्दीन को भली भाँति पहचानता था । वह थोड़ी देर स्तब्ध रहा । फिर मनही मन बोला,

" तो भी यह मेरा बिगाड़ क्या लेगा ? अिसके भीतर के पहले का व्याघ्र फिर बिगड़ खड़ा हुआ तो भी चिंता काहे की ! यह यदि बाघ हैं तो अंदमान में आकर तो मैं भी अेक प्रवीण दरवेशी बन गया हूं ! यह बिगड़ा ही तो अिसी बंदूक से अुड़ा डालूं अिसे आन की आनमें ! "

" तब कहिये, कंटक बाबू, क्या तय किया ? जाना है न भागकर? आजन्म कारावास की बंधन शृंखला तोड़ कर फेंक देनी है न अिसी क्षण?"

" तोड़कर फेंक देने की बात क्या पूछता है ? तोड़ तो चुके ही हैं न अब ! भाग जानेकी बात क्यों? ये हम भागकर तो आये ही हैं । अब अगला कदम किधर रखना है वह बता ! "

" भले वीर ! अगला कदम --- हिंदुस्तानमें ! स्वदेशमें ! ! " कंटक हंसा ।

" पर अंधकार और संकट का अेक समुह का समुद्र---यह कालेपानी का समुद्र--- रुकावट बनकर फैला पड़ा है अिन कदमों के और स्वदेश के मध्यमें !--वह ? "

" वह अुल्लंघकर ! " तैरने के पैतरों के दो हाथ अुस अँधियारे वातावरणमें आवेश पूर्वक मार कर रफिअुद्दीन ने अुत्तर दिया ! " अुस कालेपानी के संकट समुद्र को अुल्लंघकर स्वदेश जाना है यही निर्धार जाकर ही रहेंगे यही निश्चिति ! ! "

"कंटक बाबू —" अुस घने, जन शून्य और अंधकार पूर्ण अरण्यमें आध अेक घंटा चर्चा हो चुकने पर रफिअुद्दीन की जानेवाली पलायनाभिसंधि की चर्चा का अुपसंहार करने लगा, "अुस दिन रात को बैरक के सामने के मैदान में हम यही चर्चा कर रहे थे। अुस समय जावरोंके गांव में आश्रयार्थ जाने का अर्थ भयंकर मृत्युही के आश्रयमें जाना है अैसा आपने कहा था, नहीं क्या ?"

"हां। तूने अुन जावरों के आश्रय में जाते समय अुपस्थित होने वाले जिन संकटों का अुल्लेख किया था वे थे ही अुस प्रकार के! विजाति का और विशेषतः सुधरे हुअे मनुष्यों को गंध आते ही यदि वे बहुधा अेक समयावच्छेद से चारों दिशाओं से जहरीले तीरोंकी वृष्टि करने लग जाते हैं, तो अुस अवस्था में अुनका आश्रय मांगने के लिये जाना प्रत्यक्ष मृत्युसे भी आश्रय मांगने के लिए जाने जैसा आशा पूर्ण कृत्य नहीं है क्या? पर अब अुसे लेकर क्या करना है ? अिन जावरों के जंगल में और अुनके हाथमें जा पड़ने के पश्चात् अुनकी वस्तीमें से तू पिछली दफा जिस समय भाग आया था अुस समय तूने स्वयं अनुभूत जिन सकटों का वर्णन किया और पुनरपि अुन्हीं के जबड़ों में जा कूदने का निश्चय सुझाया, वह मुझे कितना भी भयंकर क्यों न लगा हो, पर वह अब सच देखा जाय तो मुझे अुतना कुछ भयंकर नहीं लग रहा है। कारण, अब वह अेक ही अुपाय अपने सामने रह गया है। अब अुसकी बाल की खाल अुतारना खत्म कर अिस वक्त के लिए। मुझे अब यदि सचमुच कोअी वस्तु भयंकर भासित हो रही है तो वह तेरा अभिसंधिका निश्चय नहीं, प्रत्युत मेरे पेट में कूदने फांदने वाले ये चूहे !

"मेरे भी पेट में भूख की अेकमात्र ज्वाला भडक रही है, पर अब सबेरे तक तो अुसके बुझाने का कोअी अुपाय बच नहीं रहा है ! हां अेक अुपाय मात्र बाकी है पेटकी आग को बुझाने का !" रफिअुद्दीन अंधेरेही में हास्ययुक्त चेहरा करके बोला।

"कौनसा वह ? बता तो सही !" कंटकने पूछा।

" दूसरा कौनसा हो सकता है ! आप जायकेदार चीजोंका नाम लेते चलिये । चटपटेदार पुलाव, पूरियां, पकौड़ियाँ, गोश्त, भाजीका मसालेदार रस्सा, चाशनीसे भरी हुअी जिलेबियाँ; अुनके नाम श्रवण अेवं ग्रहण समकाल ही आनेवाली सुगंध से मेरे मुँहमें जो पानी भरा आ रहा है अुसके छिडकने से वह पेट के भीतर की भूख की आग अगर बुझ सके तो बुझ सके ! " खाकर न सही हँसकर तो पेट भर लिया अुद्दीनने ।

" ठीक तूने अपने पेट भरने का अुपाय तो खोज निकाला अब मुझे भी अपने पेट भरनेका कोअी अुपाय खोज निकालना चाहिये ! दिन भर बारिश में भीग भीगकर मैं तो भय्या, बुरी तरह से जम गया हूँ ! " अिस तरह से स्वरमें अुद्गारते हुअे कंटक अुठा और बंदूक लेकर अिधर अुधर कुछ चहल कदमी करते हुअे, हाथ मलते हुअे, पैर पटकते हुअे शरीर में गर्मी लाने का यत्न करने लगा । त्यों ही अुसे समीपस्थ आध अेक मील दूरपर के जंगल किनारे के अुस सरकारी नारियल के बगीचे की याद हो आयी । वह एकदम रफिअुद्दीन की तरफ मुड़ा

" अुठ रसोअी तय्यार है सारी । अमृत प्राशनार्थ मधर मिष्टान्न भक्षणार्थ चल ! अुस ओर के नारियल के बगीचे में जाना है !"

" और ? नारियल कोअी हाथ मारते ही जमीन पर झड़कर पड़ने वाली नीमोलियाँ नहीं हैं ! अथच, हाथ से नारियल तोड़ सकूं अितना मैं कुछ लंबा नहीं हूँ । " रफिअुद्दीन हँसा ।

" अंदमान में दोन दफा रहकर नारियलों के पेड़ों से ठिगना रहा आदमी तू ही मुझे पहली मर्तबा नजर आया है ! पर कोअी भी नारियल का पेड़ मुझसे तो अूँचा नहीं है यह मैं दिखाये देता हूं तुझे, चल ! "

वे दोनों अुठे । आगे पीछे सन्नाटा है यह देखकर सरकारी सड़क पर जा लगे थोडी देर बाद बाग की तरफ को मुडे । अुनके रोजके परिचय का था वह बाग । नारियलों की घनी पौध के आते ही छुरियाँ कमरमें बांधकर दोनों के दोनों दो अूँचे नारियलों पर चढ़े । अुन वृक्षों में पैर रखने के लिए पहले ही से खोदे बनाये हुअे रहते हैं । दोनों ही चढने में प्रवीण । सिरों से चिपक कर अुन्होंने नारियल तोड़े । वे नारियल धपाधप नीचे गिर पडे त्योंही, वह आवाज सुनते ही, बाग की परली ओर की बाजूपर बनी

हुआी रखवालदार की झोपड़ी की तरफ से सू सननन करते हुअे गोफन के पत्थरों की वृष्टि होने लगी !

दोनों के पेट में धस्स हो गया। कंटकने नारियल के पेड़पर चढ़ने से पहले बंदूक और कुल्हाड़ी नारियल के झमोलों और पत्तों वत्तों के ढ़ेरमें जमीनपर ही छिपाकर रखी थी अितना अच्छा किया था। पर वे हाथियार कोअी दीया लेकर ढूँढने आये और अुसके हाथ जा लगें तो--! कंटक के अेक दफा मन में आया कि, साहस करके नीचे अुतरे और बंदूक चलायें। पर अुस प्रकार की आवाजसे सारा सोया हुआ जंगल खड़ा हो जायगा ! वह भी मूर्खता ही होगी ! अूपर ही बैठे रहे तो अेकाध पत्थर सनसनाता आ कनपटी पर बठ गया कि सारा ही किस्सा खत्म हो जायगा !

अैसी दुतर्फा भीति के कारण वे जहाँ थे वहीं चुपचाप चिपके बैठे रहे। पर भूख अुन्हें चुप भी बैठने न दे। भीति की अपेक्षा भूख से वे अधिक संत्रस्त हो रहे थे। अंततो गत्वा पेडसे चिपके चिपके ही अुन्होंने कवँले कवँले नारियल काटे, छुरीसे छीलकर अूपरका का मोटा छिलका वहाँके झुबके ही में अटकाकर अुन्होंने नारियलोंका पानी पिया और अंदर का मलाअी सदृश मृदु खोपा निकालकर खाया। वह अिस समय अुन्हें कितना मीठा लगा होगा अिसका वर्णन करना कठिन हैं ! सुनहरी कलशोंवाले राजमहल की अूपर की छतपर बैठकर सोने के प्यालेमें भरकर द्राक्षासव पीनेवाले राजा की भाँति अुन्होंने अुसका आस्वाद लिया। गोफन के पत्थर सनसनाते हुअे बीच बीचमें अुनके आजू बाजू से होकर जाते थे और तो भी वे अेकअेक कच्चा नारियल तोडकर छीलकर अुसका मधुर पानी पीतेही जाते थे मलाअी खाते ही जाते थे।

अुन्हें अब अच्छी तरावट महसूस हुअी। पत्थरभी आने बंद से पड़ चुके थे। नीचे अुतरने के अिरादेसे रफीअुद्दीन थोड़ासा नीचे सरककर आया भी; पर त्योंही अुस परली ओर के झोपडे में किसीने लालटैन जलाअी हो अैसा प्रकाश दिखाअी दिया ! दचककर रफिअुद्दीन आधे वृक्षपरसे अुतरते अुतरते फिर सर्प की भाँति सरसराता हुआ चोटी तक जा पहुँचा। लालटैन झोंपड़ी से बाहर हिलती हुअी दिखाअी दी। कोअी न कोअी अपने को ढूंढ़ने के लिए निश्चित रूप से आ रहा है ! अेक के बजाय दो लालटैनें ! बंदूकें ?-कंधेपर क्या है

अुनके? हां! बंदूक भरे हुअे दो सिपाही, जो अुस रात जावरों से हुअी हुअी सांझ की मूठभेड़ के कारण अुस बागमें विशेष देखरेख रखने के लिअे तैनात किये गये थे, वे आवाज़ किधर से आयी यह देखने के लिअे अिधर अुधर देखते जा रहे हैं। बीचही में गोफन के पत्थर अुनके साथ आये हुअे अेक दो कैदी फेंकते हैं! बिलकुल किसी बाजकी ओर अंत में अिधरही आ रहे हैं वे!

कंटक और रफिअुद्दीन पासपास के जिन दो अूंचे नारियल के पेड़ोंपर चढ़कर बैठे हुअे थे, अुनके बिलकुल जड़ के नज़दीक वे पुलिसवाले चले आये! कंटक और अुद्दीन की छाती में अेक ही घबराहट समा गयी। तोपके मुंहपर बांधे हुअे आदमी का हृदय जैसे तोप के छूटने की प्रतीक्षा में प्रत्येक स्पंदन स्पंदन में धड़कता रहता है, अुसी प्रकार पुलिसवालों का ध्यान न जाने कब अपने ही वृक्षों के अूपर चला जाय और अुनके बंदूक की गोली जाने कब अपने अूपर छूट जाय अिस विचारसे अुनका हृदय प्रतिक्षण थर्रा उठता था। अब हम निश्चेष्ट अवस्था में नीचे लुढ़क तो नहीं पड़ेंगे न अैसी भीति प्रतीत होती थी। पर अुनके सामने अिस स्थिति में अुपाय तो अेकही रह गया था कि वे वृक्षसे और भी अधिक सटकर चिपके बैठे रहें—मृत्युको अपनी ओर आने का बुलावा देने का तथा अुससे अपना पिंड छुड़ाने का यही अेक मार्ग था!

जैसे जैसे अुन पुलिसवालों की लालटैनों की किरणें अूपर अूपर अुनके नज़दीक नज़दीक आने लगीं वैसे वैसे कंटक और अुद्दीन के प्राण अुन्हें छोड़कर दूर दूर जाने लगे!

त्योंही पड़ौस के दस पांच नारियल के शिखरभागों में फड़फड़ाहट हुअी। पुलिसवाले चौंक कर अुस ओर को दौड़े और अेक ने झटसे बंदूक चलाअी। बंदूक छूटते ही घू घू घू करते हुअे कुछ घूबड (अुलूक पक्षी) अूपर अुड़ गये और अेक बेचारा टप्से नीचे को टपक गया। पुलिसवाले खिलखिलाकर हँस पड़े।

अेकने वह अुलूक पक्षी अुठाकर दूसरे को दिखाया।

"यह देखा तुम्हारा चोर! घूवड पर फड़फड़ा रहे थे। तुमने हठ पकड़ा कि चोर नारियल तोड रहे हैं!! लौटो अब, चलो!"

वह मजमा जैसे जैसे आगे जाता गया, वैसे वैसे कंटक और अुद्दीन की जानमें जान आती गयी। अुद्दीन मन ही मन हँसा, "आयी थी बीतने जानपर सो अुल्लूपर ही चली गयी !"

पर फिर से प्राणोंपर संकट को न बुलाना हो तो जबतक वे पुलिस-वाले लालटैनें बुझाकर अपनी अपनी झोंपड़ीमें नहीं चले जाते तवतक अुन वृक्षों के शिखरपर ही लटकते हुअे बैठे रहना आवश्यक था। अुस तरह वे दोनों भी बैठे। पर अुस दिन किये गये श्रमकी पहले की थकावट तथा अिस समय निष्क्रियता अिन दोनों कारणों से अुन दोनों के दोनों को अूंघ आने लगी। शिखर भाग का गाढ परिरंभ करके वे दोनों अूंघने लग गये। आधा अेक घंटा हो गया तोभी पुलिस पहरेदार अपनी लालटैनों के अतराफ बीड़ियाँ फूंकते बैठे ही रहे ! कंटक और अुद्दीन अुनकी तरफ देखते, अूंघते न जाने कब गाढ़ निद्रा में निश्चेष्ट हो गये।

अुसी निश्चेष्टावस्थामें अुद्दीन का वृक्षको दिया हुआ परिरंभ किसी अेक समय शिथिल हो गया, अुसकी बैठक जो चक्रायमान हुअी सो वह सर्र करके नीचे की और फिसल आया ! अुसके साथही, अुसके मनसे पूर्व अुसका देहही जाग गया और अुसने फिर पेड़को सर्पकी भांति मज़बूती से लपेट लिया। निद्रारोगियोंकी अैसीही अवस्था हुआ करती है। वे स्वयं निद्राधीन अुनके पैर जागरित, अूंची अेवं सँकरी दीवारोंपर प्राणरक्षा के योग्य सावधानी बरतते हुअे सीधे चले जाते हैं; अुसी तरह अुद्दीन अुस अूँचे पेड़पर से नींद ही में फिसल आया, पर वृक्षसे लिपटा हुआ ही सर्राटेसे अैसा फिसला कि सीधा जमीनपर पहुँचा। अुसकी छाती, जाँधें, सारी छिल छिला गयीं। पर अूपरसे गिर पड़ता तो कपालमोक्ष ही हो गया होता, अुससे बच गया यह देख अुस रक्ताक्त रूपसे खुरच जाने के बारे में अुसे कुछ अधिक अनुभव नहीं हुआ। नीचे आते ही अुसे सारी परिस्थितिका स्मरण हो आया। झोंपड़ी की ओर देखा तो लालटैन बुझ चुकी थी चारों ओर निःशब्दता छाअी हुअी थी। थोड़ा ठहर कर अुसने कंटक जिस पेड़पर था अुसे हाथसे धीरे से थपथपा। कंटक को अूंघ में भी जागृति का स्मरण था, वह समझ गया। अुसने भी हलकीसी अेक ताली अुत्तर में बजायी। "तू अुतर गया? ठीक। मैं भी धीरे से अुतर आता हूँ, ठहर!" अितना सारा अर्थ अस ताली में गर्भित था।

कंटक के नीचे आते ही दोनों थोडी देर तक दुबक कर चुप बैठे रहे। अुत्तर रात्रि हो चुकी होगी अैसा तर्क करके अुसके पश्चात् अुन्होंने वह बंदूक, कुल्हाड़ी आदि वस्तुअें जहां छिपायी थीं वहां से निकाल लीं। सबेरा होने से पहले लौटकर किसी अेक घोरतर कांतार में अुन्हें विलुप्त हो ही जाना चाहिये था। अिसके अर्थ वे वहां से निकल कर सड़क की तरफ आये। निकलते समय अुद्दीन पत्तों के ढेरमें से कुछ अुठा रहा है यह देख कंटक ने धीरेसे कहा,

"किस बात की खटपट कर रहा है रे निष्कारण?"

"निष्कारण? अुस वक्त तोड़कर गिराये हुअे दो तीन नारियल क्या यहीं फेंककर चले जायँ?"

"कितना भुक्कड़ है तू! कहां डेढ़ दमडीके नारियल हैं वे! छोड़!"

"डेढ दमडी के? अिन्हीं डेढ दमडी के नारियलों के कारण दो पूरे पूरे सिर छँटे जाते थे हमारे!"

रफिअुद्दीनने अेक दो नारियल कांख में दबा लिये। अुस सड़क से जिस तरह आये थे अुसी तरह वापिस वे अरण्य मार्ग के समीप चले आये। पौ फटने के मौके पर वे अुसी रास्ते से अरण्य के बीच घुस गये। रास्ते में वह पुलिस जमादार जहां मरा पड़ा था, अुस जगह जाकर अुसकी पुलिस की वर्दी, दियासलाअी और बीडियों सहित सारी वस्तुअें अुन्होंने निकाल लीं। जावरों का वह बाण अुसी तरह धँसा रहने दिया। अुसके पश्चात् अुन्हों ने अुस मार्ग को वहीं पर नमस्कार किया।

अुसके बाद अुस अरण्य के अुस पार्श्व से दूर अेक सघन भाग में घुसने का अुन्होंने जितना अुनसे बन पड़ा अुतना प्रयत्न किया। रास्ते में अेक चौड़ी और गहरी खाड़ी मिली। अुसका रेतीला किनारा अिस समय अुन्युक्त, सूखा हुआ और श्वेत शुभ्र हुआ हुआ था। अंदमानके सिंधु तट पर कभी कभी पड़नेवाली कडी धूप अिस समय पड़ रही थी और अुस कारण वह रेतीला किनारा अुस जगह पडी हुअी रंगबिरंगी सीपियों अेवं शुभ्रश्वेत स्वच्छ रेताके कारण चमचमा रहा था। वस्तुतः वह स्थान अनभिष्ट मात्रा में, तपा हुआ था। पर गत दो अहोरात्र निरंतर काम के पसीने में, बारिश में सडे हुअे पर्ण संचयों में, कीचड़ में भीग भीग कर प्रस्वेदाक्त होने के

कारण और ठंडके कारण परेशान हुअे हुअे अुन दोनों 'भगोडों' को अर्थात् कालेपानीसे भागे हुअे कैदियों को, वह अनीप्सित मात्रा में प्रतप्त कडी धूप अेवं रेतीला किनारा ही बहुत अधिक अीप्सित प्रतीत हुआ। जहां मनुष्य के संचारण की संभावना हो ही नहीं सकती अैसा वह दुर्गम अेवं दु:साध्य स्थान था। अैसी अवस्था में वहां यदि वे लोग खुली जगह में भी चले आयें तो भी कोअी आपत्ति जनक वस्तु नहीं रह गअी थी। अतअेव अुन दोनोंने अुस खाडी पर अपने संग लाये हुअे सारे कपडे खूब मल मलकर धोये और अुस कडी धूप में सुखा डाले। अुनके शरीर की गत अहोरात्र में जोंकों, मच्छरों, कांटों ने पुरी तरह छलनी ही बना डाली थी। अुसपर अुस अरण्यका औषध जो किचड़ अेवं मिट्टीका लेप सो अुन दोनों ने अपने सर्वांग में लगा लिया, धूप में सुखाया, और तत्पश्चात् डालो पत्थर तथा मिट्टी के साबुन से शरीर के अवयवों को रगड़ रगड़ कर अुस खाडी में अुन्होंने यथेच्छ गोते लगाये।

अुसके बाद अुन्हें जो जोरदार भूख लगी आयी, आह, अुसका क्या कहना? अुसका अनुभव तो अुन जैसे कठोर श्रमजीवी मनुष्यों को, घोर श्रमके अनंतर अुस प्रकार का स्वच्छ स्नान किये हुअे बलवान् प्रकृति के मनुष्यों को ही आ सकता है! पर वहां अन्न कहांसे मिलेगा? वहां तो मृगया पर ही आजीविका चलानी होगी। अुस में भी बंदूक चला कर सारे प्रसुप्त अरण्य को जगा देना अुनके लिअे अब भी खतरेसे खाली नहीं था। पर अुस अरण्य में मिलता क्या था? जंगली सूअर! और अुद्दीन पिछली दफा अुस जंगल में जब भाग गया था तबसे जावरों की भांति ही सब प्रकारके शिकार करने में अुसने प्रवीणता प्राप्त कर ली थी! अध अेक घंटा झाड़ीमेंसे लुकते छिपते जाने के बाद अुसके अेक शिकार हाथ लगा और हाथ की कुल्हाडी के अेक ही प्रहार में अुसने अुसे जमीन पर लिटा दिया। अुसके बाद सूखी हुअी रेतीली जमीन परसे लकड़ियाँ जमा करके जावरों के सूप-शास्त्र के अनुसार वह मांस अुसने विधिपूर्वक भूना और फिर अेक पत्ते पर परोस कर अुन लोगों ने भोजन के लिअे प्रारंभ किया।

और अुस अवस्था में भी, तादृश्य पक्वान्न के समस्त जन्म में पहली

ही बार खानेका अवसर आने के कारण कंटक को मुँह टेढा मेढा बनाकर येनकेन प्रकारेण अुसे निगलना पड़ा । साथ लाये हुअे नारियल के टुकडों का व्यंजन रहने के कारण अुलटी की नौबत तो नहीं आयी । तो भी जीभ के लिये वह जितना कठिन अनुभव हुआ अुतना पेट के लिये अनुभव नहीं हुआ । सारा चट कर चुकने के अनंतर कंटक को पेट भरने के समाधान की अेक डुकार आयी और अैसी कुछ तरावट महसूस हुअी कि, यंव् ! अुसे देखकर अुद्दीन हँसा—

" बाबूजी, दो तीन दिनमें यह जावरी खुराक आपको अितनी अनुकूल लगने लगेगी अैसाही दीखता है कि मेरे हिस्से में कुछ बच भी रहा करेगा या नहीं अिस का मुझीको डर लगने लग जायगा ! "

अुनका भोजन अिस तरह हँसते खिलखिलाते चल ही रहा था कि त्यों ही आकाश अभ्राच्छादित सा हो गया । कंटकने कहा,

"वह देख बादल किस तरह फिर घिरते चले आ रहे हैं ! तब अगला कार्यक्रम निश्चित होने तक अिस अरण्य में पहले आसरे का स्थान कहीं न कहीं खोज निकलना चाहिये । कलकी रात तो पेड़पर ही सोकर बिता दी, पर अुस जैसे शय्या मंदिर के वे विलास प्रति रात्रि सहन करने का मुझे तो कोअी शौक है नहीं । अिस अरण्य का हमारा पथ प्रदर्शक तू ही है । तुझी को ढूंढ निकालना चाहिये अेकाध अुमदासा बंगला साँझ होने से पहले पहले ! चल अुठ ! "

" पर मैं जो आपको अिस भाग में ले आया हूं वह अिसी लिअे तो ले आया हूं ताकि आपको बंगले बंगलेही अेकसंधि, सुरेख, पत्थरके बने हुअे, जितने चाहिये अुतने मिल सकें ! आअिये, अिस टीले की अुतनी झाडी पार कर लें ! "

अुस झाडी को पार करके वे टीले पर चढे । वहां से समुद्र दूर पर दिखाअी देता था। अुस टीले की अुपत्यका में गुफाअें ही गुफाअें थीं और वहां से आगे रेतीले भाग तक प्रचंडाकृति अलग अलग शिलाओंका अेक संघ कां संघ फैला हुआ था। मानों हाथियों के झुंडके झुंड ही सिंधु पुलिन पर अवतीर्ण हुअे हों !

अुन गुफाओं को दिखला कर अुद्दीन बोला,

"देखिये बाबूजी, बंगले से दूसरा बंगला किस तरह लगा हुआ है !। जैसी कि बंबअी की मलबार हिल ! देखियेगा अब किराया विराया किस बंगले का सस्ता पड़ता है ! "

अुन्होंने गुफाओं का निरीक्षण करना शुरू किया। देखते देखते दो विशालकाय शिलाअें अेक दूसरे के सिरोंपर टेका दिये हुअ तंबू की सी आकृति में खडी हुअी, दो मस्त हाथी अेक दूसरे से जूझने का खेल खेलते समय मदोन्मत्त मस्तकसे अपना अपना मस्तक भिड़ा कर अेक दूसरे को पीछे धकेलने के पैतरे में खडे हों अिस प्रकार सुहाती हुअीं अुन्हें दिखाअी दीं। अुन शिलाओं की अुस तंबू जैसी दर्शनीय रचना के भीतर तंबू जैसी ही खूब खुली हुअी जगह थी। अुसमें फिर छोटी छोटी दो तीन गुफाअें कोठरियों की तरह दीवार के दोनों पार्श्वों में बनी हुअी दिखाअी दे रही थीं। वह देखते ही अुद्दीन को वही जगह वननिवासके लिअे सुंदर प्रतीत हुआ। वह तत्काल भीतर गया और मध्य भागमें जाकर आसन जमाकर बैठ गया पर अभी बैठा ही था कि त्योंही अेकदम "घात !" "घात !" अिस तरह भर्राअी हुअी आवाज़ में चिल्लाकर घबराया घबरायासा बाहर निकल आया।

"क्यों रे, क्या हुआ ?" बंदूक संभालते हुअे कंटकने पूछा।

"मनुष्य कहिये, भूत कहिये, पर कंटक अेक अत्यंत जुगुप्सिताकृति प्राणी अुस अूपर की कोनेवाली गुफा में दुबक कर बैठा हुआ है ! अुसकी आँखें अुसके चेहरे की कालिमा में दीपवर्तिका की भांति चमक रही हैं !" अुद्दीनने भीति भी अपनी आदत के मुताबिक हंसकर व्यक्त की।

"तब ? आओ गोली चलाओ जल्दीसे !" कंटक ने बंदूक अूपर अुठायी।

"न, न ! जबतक बिलकुल जानपर ही नहीं आ पड़ती तब तक बंदूक की आवाज ठीक नहीं ! निष्कारण अुपद्रव मच अुठेगा सारे जंगल में अेकाध दफा ! प्रथम अुसे लकडी से चुभोकर देखें ! देखें तो सही है कौनसा प्राणी वह !"

अुद्दीनने अैसा कहते कहते अेक लंबी सामने पडी हुअी लकडी अुठायी और थोड़ासा भीतर घुस कर अुसने अुस दरार में से अुसे अंदर घुसेड़

दिया। अैसा करते ही अेक दयनीय स्वर में चीत्कार सा हुआ और किसी अेक प्रकार के करुणा भरे शब्द सुनाअी दिये!

"अरे! यह तो कोअी जावरा है!" रफिअुद्दीन को जावरों की जो थोड़ी टूटी फूटी भाषा आती थी अुसके आधार पर अुसने पहचान लिया "मारिये मत मुझे, अिस तरह यह अपने ही से दीनवाणी में विनंति कर रहा है बहुधा।"

" तब अुसे किसी तरह बाहर आने के लिअे कह और यह भी कह दे कि, हम जावरों के मित्र हैं शत्रु नहीं?"

रफिअुद्दीनने जावरों की बोली में जैसे तैसे करके वह बात कह दी और पूरी तरह समझाने के ही खयालसे अुसने अुस लकड़ी को बिल में डालकर फिरसे अेक बार खड़खड़ाया।

" आया आया —" अिस प्रकार का आर्तवाणी का अुत्तर अुस बिलमें से आया। शनैः शनैः प्रथमतः सिर बाहर निकालकर अुसके पश्चात कटिनिम्नभागसे घिसटता घिसटता अेक दुःखी कष्टि जावरा अुस बिलसे बाहर निकला। बाहर आते ही अुसने अेक पैर फैलाकर अुसकी पिंडली की ओर अँगुली का अिशारा किया और आखों में पानी भरकर कराहने लगा।

कंटक और अुद्दीनने जब अुस पिंडली की ओर देखा तो अुन्हें मालूम पड़ा कि वहाँ खून बहने वाली किसी प्रकार की अेक चोट आ गयी है। कुछ कुछ अिशारों से और कुछ शब्दोंसे अुद्दीन को यह पक्की तौर पर मालूम पड़ा कि, कल जावरों ने अंग्रेजों की टुकडी पर जो छापा मारा था, अुस समय अुत्तर में अंग्रेजी पुलिस द्वारा किये गये गोलीबारमें अेक गोली अिस जावरे के पैरमें आ कर लगी अुसके साथवाले लोग अपनी जान लेकर जब भागे जा रहे थे अुस समय अिसके लिअे भागना कठिन हो गया, अेतावता अिसे वहीं छोड दिया गया।

रफिअुद्दीन के ध्यान में जब वह वस्तुस्थिति आयी तब अिस तरह आनंदित हुआ मानों अुसके हाथ में कोअी बड़ी भारी अमूल्य निधि ही आ गयी हो! कंटक को अेक ओर को ले जाकर वह बोला,

" ताली लीजिये बाबूजी पहले! जावरों की वस्तीमें अपनेको

आश्रय प्राप्त करना था। पर अिस समय वे अंग्रेजों पर बुरी तरह नाराज हैं! हम ठहरे अंग्रेजी कैदियों में से अन्यतम लोग! शरणके लिअे भी हम गये तो भी दूर से देखतेही संशयग्रस्त होकर जावरे हमपर तीर चला बैठेंगे यह जो बड़ी भारी मुसीबत थी हमारी राहमें वह अिस जावरे की दोस्ती से टल जायगी अैसा प्रतीत होता है। जावरों के राज्य में जाने के लिअे यह जावरा अेक चलता फिरता प्रवेशपत्र ही बनकर मिल गया है अैसा समझना चाहिये! तब आअिये अिसकी शुश्रुषा हम अच्छी तरह करें!

कंटक को भी यह निश्चय पसंद आया। अंदमानके कक्ष कारागार में रहते समय प्रथमोपचारों का और दवाअियोंका काम अुसने खूब कर रखा था। वह वैद्यकीय कामचलाअू ज्ञान अुसके अिस समय अुपयोग में आया।

अुस जावरे को अुन्होंने ढाढ़स दिया।अुसकी पिंडली की छुरी द्वारा जिसभी प्रकार हो सकी अुस प्रकारसे चीरफाड करके वह गोली बाहर निकाली चोट की जगह को धोकर पोंछकर, कुछ अेक वनस्पति लाकर लगाकर पट्टी बांध दी। गोली के निकलतेही असह्य वेदना कम होकर अुस जावरे को थोडासा भला मालूम पडने लगा। अिस अुपकार की कृतज्ञता वह नाना प्रकार के शब्दों और संकेतों से व्यक्त करने लगा।

अुसी स्थानपर वे तीनों भी दो तीन दिन अुसी प्रकार छिपे रहे। जंगल के पशुपक्षियोंका आखेट बंदूक बिंदूक न चलाते हुअे जितना संभव हुआ अुतना किया। अुस जावरे से पूछकर अुसकी बस्ती की जानकारी भी अुन्होंने हासिल की। वे लोग कालेपानीसे किस तरह भाग आये, अंग्रजोंके अब वे किस तरह दुश्मन बन गये हैं और जावरोंकी बस्तीमें किस प्रकार शरण पाने की सोच रहे हैं, अित्यादि बातें भी अुसे बतला दीं। अुस जावरेने भी अंतःकरण से अुन्हें आश्वासन दिया कि अुसे अुन्होंने जो प्राणदान दिया है अिस अुपकार का बदला देने के लिअे जावरे भी अुनकी भरसक सहायता किये बगैर नहीं रहेंगे। कारण, जावरों की जिस जातिका वह घटक था अुस जातिके नायक का वह भगिनी पति था और अेक शूर अेवं विश्वस्त स्तंभ भी।

अुस जावरे के ठीक होने तक वहीं चोरीसे छिपे रहेनेमें अुनके जो

तीन चार दिन व्यतीत हुअे, अुस कालमें रफिअुद्दीन सर्वथा निश्चिंत अेवं आनंदमें था। पर कंटक मन ही मन अत्यंत चिंताक्रांत अवस्थामें था। रफिअुद्दीन की जितनी कल्पना थी अुससे भी कहीं अधिक सुलभता पूर्वक अुसका भाग जानेका निश्चय अिस मंजिल तक पूरा हुआ था। जिनकी कल्पना तक नहीं थी अैसे कितने ही अनुकूल अवसर अुनको प्राप्त होते चले गये। वह स्वयं तो अपने मनमें यही सोचता था कि अब तो हम कालेपानी से भागही गये हैं। पर कंटक के मनको चिंता निरंतर खाये डालती थी ! अुसके सामने अपनी ही मुक्तता का सवाल नहीं था, अपितु मालती की भी मुक्तता अुसे अभी करनी थी !

अुसे किस प्रकार छुटकारा दिलाया जावे ? छुड़ाकर ले भी आये तो अुसे अिस जंगल में, अिस गुफा में, अिस भयानक पेंच में किंवा जावरों की बस्तीमें रखें कैसे ? संभालें कैसे ? रफिअुद्दीन के बगैर तो अेक कदम भी आगे बढ़ना दुर्घट है। वह आजकल भले ही अेकनिष्ठ दिखाअी देता हो। पर है तो वह मूलका अेक जातिवंत हिंस्त्र पशु ! अैसी अवस्थामें अुसपर विश्वास कहां तक किया जावे ? पुनश्च, भलेही अुसे अिस बातकी शंका तक न आये कि यह कंटक किशन है अतः कंटकी के मालतीत्व की स्मृतिका किसी प्रकारका सूत्र अुसके मनमें अुलझा हुआ न रहे, और भलेही कंटक की भी अुम्रसे, रूप से और श्रमसाध्य कष्टोंके कारण आयी हुअी क्षीणतासे, यह मालती ही है अैसा संकेत करने पर भी देखते ही प्रत्यभिज्ञातव्य न रह गयी हो तो भी—किसे मालूम अुसे देखते ही रफिअुद्दीन ने अुसे मालती समझकर पहचान लिया तो ? अेकाध भयंकर विपत्ति अपने अूपर नहीं टूट पडेगी अिसका कोअी भरोसा है ? पुनश्च, वह तो अिसे पहचानेगी ही ! तब अिसकी पूर्वकालिक नीचता अथवा अुसकाही पूर्वकालिक क्रोध भड़क अुठेगा और अुस आगकी लपटों में सभी की राख निश्चय से हो जायगी। अिस प्रकारके अेकांत कांतार में वह, मैं और यह ! अिसकी सहायता लेकर अुसकी मुक्तता करनेका मतलब रावणकी सहायता लेकर राम का सीता की मुक्तता कराना हुआ ! पर—! अिसे छोड़ दूसरा कोअी अुपाय अपने पास है ही कौनसा ?

अुद्दीनके मनमें मात्र अुस समय प्रतारणाके भावका लवलेश तक

नहीं था। अुसके सामने यदि कोअी कठिनाअी थी तो वह अेक ही थी—पैसा !

जावरों की बस्तीमें लोकप्रिय होना हो तो मदद चाहिये और आगे चलकर कालेपानी को अंतिम नमस्कार करना हो तो किश्तियाँ, कपडे, हथियार, खाद्य अित्यादि साधन जुटाने के लिअे पैसा चाहिये। अुसके लिअे दो ही मार्ग थे। अेक यह कि कैदियोंकी बस्तीमें रातबिरात फिर घुसकर डाके डालना अथवा कंटक बाबूकी जो हजार डेढ़ हजारकी रक़म वे देनेवाले थे अुसको प्राप्त करना। पहले का अुनका यह निश्चय हुआ करता था कि कंटक को अपनी सारी रक़म अपने साथमें लेकर ही बैरकसे निकल भागना चाहिये ! पर अिस बीच जावरों के छापे का अप्रत्याशित मौका हाथ लगनेके कारण अुन्हें अचानक रूपसे जंगलमें घुसना पड़ा। अुसके कारण अुनके अन्य सारे संकट टल गये, पर पैसा मात्र साथ नहीं लेने में आया। अुतनी अड़चन वह कंटक के सामने अुपस्थित किया करता था और पूछा करता था कि, "क्या करना चाहिये बतलाअिये ! डाके डाले जायँ या आप अब भी अपनी वह रक़म किसी युक्तिसे वापिस ले सकते हैं ?"

कंटक कहता, " ना, ना डाके की बात ही मत निकालो ! जहां तक बन पडे अपने हाथों अपनी मौतको बुलावा नहीं देना चाहिये ! मैं अपनी रकम किसी न किसी युक्तिसे प्राप्त करनेका प्रयत्न करूंगा। अभी मुझे आशा है। पत्थरके नीचे भिचा हुआ हाथ जहांतक बन पडे सफाअीसे निकाल लेना ही अच्छा रहता है ! अन्यथा गड़बड़ करनेसे हाथ ही टूट जायगा!"

दो तीन दिन जब अिसी तरह बीत गये तब कुछ तो अिसलिअे कि रहा नहीं जाता था और कुछ अिसलिअे कि अन्य कोअी अुपायही नहीं था, अंततः अेक दिन कंटकने अुद्दीनसे अपनी बहन के छुड़ाने की चर्चा छेड़ही दी। अुन दोनोंने मिलकर अनेक अुलटी सुलटी तरकीबों को सोच निकाला। पर जब निश्चित योजना कुछ नहीं बन सकी तब वे हारकर सोने चले गये।

पर चूंकि अुस दिन अुद्दीनके मनमें कंटकी को छुड़ाने के विचार लगातार आते जा रहे थे अतः अुसके संबंधमें अन्य विषयोंकी भी जिज्ञासा स्वभावतः अुसके मनमें अुत्पन्न होने लगी। बिस्तरे पर पडे पडे ही वह सोचने लगा, वह कैसी दीखती होगी ? छुड़ाकर लेही आये तो अुसकी

संगति अपना भी समय बिनोद पूर्वक व्यतीत हुआ करेगा ! कैसा होगा भला, अुसका स्वभाव ? और यदि वह दीखने में सुंदर और स्वभावसे प्रेमला रही, तो–? ' अकस्मात्, अुसकी लालसा जाग अुठी और बोली, 'तो अुसे तू और तुझे वह अभीप्सित प्रतीत नहीं होगी यह कैसे कहा जा सकता है ? पुनश्च, कंटक तो अुसका सगा भाअी ही है ! तब अुसकी कामुक अभिलाषा में तो अुसका प्रतिस्पर्धी होना संभवही नहीं । बहुत हुआ तो अुसको अुसका तथा मेरा प्रेमसंबंध भाअी और अभिभावक के नाते प्रिय नहीं लगेगा, अितनीही भीति । पर, पर, पर–'

अुद्दीन को अकस्मादेव अेक अुपाय सूझा, 'कंटक बाबूके अपने अूपर जो अुपकार हुअे हैं अुनका बदला चुकानेके लिअे स्वयं अुनकी जानपर आपकी जान कुर्बान करके अुन्हें और अुनकी अिस बहिनको कालेपानीपर से छुड़ाकर सुरक्षित रूपसे परतीर तक पहुँचाने में सेवा की और अीमानदारी की अितनी पराकाष्ठा की जाय कि अुसकी बहन स्वेच्छापूर्वक मेरे लिअे मांग पेश करे और कंटक बाबू आनंद से अुसे पूरा करें ! ' अैसी आशाको भला असंभव क्या प्रतीत होगा ?

पर अिससे अितना अवश्य हुआ कि अुद्दीन की कंटक के प्रति विद्यमान निष्ठा अेवं अवलंब पूर्वापेक्षया कहीं अधिक मजबूत हो गया । पुनश्च पैसे और सहकार्य की आवश्यकता के कारण भी कंटक बगैर अुसका काम चलने वाला नहीं था यह भी तो अेक बात थी न !

अैसी मनस्थिति में अुस जावरे के स्वस्थ होने की राह देखते हुअे वे जो अुस जगह छिपकर रह रहे थे अुस कालावधी में अुधर अुनके पीछे सरकारी अधिकारियों की चाल ढाल भी अुनके लिअे अनुकूल ही थी । अुस सांझ को जावरों का धावा बोलते ही जंगल छोड़कर और जान लेकर सरकारी कैदियों की टोली बैरक में जब वापिस चली गयी अुसके अगले दिन एक सशस्त्र सैनिकोंकी टुकड़ी अुस जंगल में भेजी गयी अुन्हें अुस रास्तेपर जावरों के तीरोंसे मरे पड़ें अुस जमादार का शव दिखाअी दिया । तीर भी अुस तरह गड़ा हुआ था, अत: अुसे जावरोंने ही मार डाला है यह स्पष्ट ही था । अुसपर से सरकारी अधिकारियों ने यह अनुमान लगाया कि अुसके साथ जो कंटक और रफिअुद्दीन थे अुन्हें भी

जंगल में कहीं अेकांत में घेरकर जावरों ने खत्म कर दिया होगा। और जब तक अिस तर्क को असत्य सिद्ध करनेवाला कोअी प्रबल प्रमाण न मिले तबतक अुन कैदियों का नाम 'भगोड़े' कहकर घोषित करना अुन्होंने स्थगित कर दिया। अतः अिस दृष्टिसे अुनका पीछा किंवा खोज कितने ही दिनों तक सरकार की तरफ से हुअी ही नहीं। यह कंटक और रफिअुद्दीन के फायदे की ही बात रही। दलदल तक का अुस जंगल का वह नया हिस्सा मात्र अंग्रेजोंने सर्वदा के लिअे अपने अुपनिवेश में समाविष्ट कर लिया, अुस पर कड़ा पहरा बिठा दिया, और जावरों ने भी अपना सामर्थ्य परखकर सदा की भांति अुस हिस्से का आना जाना बंद कर दिया। और अेक पैर अुन्होंने अपना पीछे ले लिया और प्रकरण बगैर बोले जहां का तहां शांत हो गया।

चार पांच दिनके पश्चात् अुस जावरे का पैर थोडासा अच्छा हो गया है यह देख अुसे आगे करके अुसके वसीले से अुसके सजातीय जावरों के समीप आसरा लेने के लिये कंटक और अुद्दीन अुस घोर अरण्य में अुस जावरे के पूर्ण परिचय के चोर रास्तोंसे जावरों की अुस आरण्यक 'राजधानी' की दिशामें वे चल पड़े।

पर जाते समय अुस जावरे की छाती में अिस बात की धड़की भर रही थी कि, जावरे अुनका स्वागत वृक्षों पर से अकस्मात् सनसनाते हुअे आने वाले जहरीले बाणों की वृष्टि से तो करेंगे नहीं न? कारण जावरे कभी कभी भगोड़ों को अपने यहाँ शरण आते ही आसरा देते है यह भले ही सच हो, और अुनकी खुदकी जाति में कितने ही बरसों से आसरा लिया हुआ अेक भगोड़ा भले ही अुस समय रह रहा था, तो भी अुनकी वह लहर अिस प्रकरण में भी अुसी प्रकार काम देगी या नहीं अिसकी अुस जावरे को भी शंका ही थी। कारण, अिस समय वे अंग्रेजोंपर अर्थात अंग्रेजी कैदियोंपर भी अुलटे हुअे थे। कुछ कैदी 'भगोड़े' के बहाने से अुनकी वस्तीका पता लगाने के लिअे गुप्तचर के तौर पर भी अंग्रेज भेजेगा, अिस बातका भी जावरों को डर लगा ही रहता है।

प्रत्येक कदमके साथ, जावरों की वह आरण्यक राजधानी जैसे जैसे समीप आती जा रही थी वैसे वैसे कंटक और रफिअुद्दीन की घबराहट भी

बढ़ती जा रही थी। वे लोग सोचते थे, हम अिस जावरे के साथ जा तो रहे हैं, पर जावरे हमें अिसके साथ आता देख आसरा दे ही देंगे या अिसको भी अंग्रेजी के आदमियों के साथ आता देख जातिद्रोही मानकर हम सभी को विषभक्षित बाणों का अेक साथ भक्ष्य बना डालेंगे! प्रत्येक कदम पर झाडी में कहा भी थोडी सी खुड़क हुअी कि अिनको लगता कि निगरानीके लिअे तैनात किये हुअे किसी जावरे का बाण तो नहीं छूट रहा सनसनाता हुआ अिधर से;—— या अिधर से;—— या अिधर से!!! जब राजधानी दो तीन मील दूर रह गयी, तब तीनों रातका सा समय आया जान हाँ ठिठक गये। वह रात अुन्होंने अुस झाड़ी हीं में व्यतीत की।

'तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्' : : : १८

यह देखिये जावरों की अेक अनादि राजधानी!

अेक राजधानी कहने का कारण यह है कि अंदमान में आदिम मानवों की जो आरण्यक टोलियां हैं वे वहांसे विस्तीर्ण और घने कांतारोंमें बडे बडे टीलोंपर भिन्नभिन्न स्थानोंपर जिस जगह बस गयीं वहीं वे पृथक् रूप बसी हुअी हैं। अुन सबका मिला हुआ कोअी राज्य नहीं है, संघ नहीं। जो टोली जहां रहती है अुनकी अुतनी ही राजधानी, वह अेक जाति ही अलग होकर बैठ गयी। अुस प्रकार की भिन्न भिन्न जातियोंमें से जिस जातिने अंग्रेजोंके अूपर अुस दिन धावा बोला था वह टोली यहां रहती है, यह अुसकी राजधानी है।

घने वृक्षों झुरमुटों से ढँके हुअे अिस टीले के मध्य भागपर पठार के सदृश अेक अुन्मुक्त स्थल था। अुसके पार्श्व में अुस टीले पर की पथरीली जमीन, चित्र गुंफाओं में जैसी होती है वैसी बडी बड़ी चारपांच फूट अूँचाअी की अंदर दूर तक पहुँची हुअी और संलग्नावस्था लंबी चली गयी पांच छै दरारें थीं। यही अुस राजधानीका प्राकार बद्ध पाषाण निर्मित सुदृढ़ ग्रामस्थान था। अुन दरारों में वे सारे नागरिक धर्मशाला के संलग्न सहन में जिस तरह यात्री लोग खाते सोते बैठते अुठते हैं अुसी प्रकार संयुक्त

परिवार की भांति अनेक पीढ़ीयों से रहते चले आये हैं। अिस विस्तीर्ण राजधानी के प्रजाजनों की जनसंख्या यदि औरतों, बच्चों और पुरुषों को मिलाकर डेढ़ सौ से अधिक न भी हो तो भी कम तो थी ही नहीं !

वहां दीवारे नहीं थीं, टट्टियां नहीं थीं, अुपविभाग नहीं थे। सारी राजधानी मिलाकर वह अेक ही घर था, और भी अैसा कि जिसमें कमरा, अूपर का मंजिल, मध्यवर्ती घर, रसोअी घर प्रभृति अेक भी विभाग नहीं था। बस था तो केवल अेक दूरतक गया हुआ बरामदा !

अुसके सामनेके खुले मैदान को अुस मुख्य राजधानी का अेक अुपनगर कहा जा सकता है। अुस अुपनगरमें जिस दिन आसमान साफ रहता अुस दिन धूपमें अथवा रातको चांदनीमें विलास करनेके लिअे कुछ विलास मंदिर भी प्रमुख घरानोंने बाँध रखे थे। जिन्हें घर कहते हैं, वैसे वे नहीं थे; पर जिन्हें हम झोंपड़ियाँ कहते हैं वैसे भी वे नहीं थे। बांस की खपचियाँ लंबाअी और चौडाअी में बांधकर तय्यार की गयी अेक लंबी टट्टी दो तीन वृक्षोंसे बांध डाली कि अुस विलास मंदिर की अिमारत खडी हो गयी समझिये ! अुसके अूपर छप्परका रहना भी जावरोंके शिल्पशास्त्र के अनुसार संगत नहीं था। तब खिड़कियों, दरवाजों आदि अनावश्यक वस्तुओंका तो नाम भी नहीं लेना चाहिये ! अूँचे पथरीले भूभागोंके सिरोंपर नीचे पैर लटका कर जब लोग बैठेंगे तब टेका लेने के लिअे कुछ चाहिये न ? बस अुतने ही भरके लिअे यदि वह बांस की टट्टी बांध ली कि हो गया तय्यार वह विलास मंदिर !

अुस टोलीके राजा नानकोबी ने भी अपनी रानीके लिअे अिस प्रकार का अेक विलासमंदिर अुस राजधानीके समक्षवर्ती अुपनगर में बांध रखा था। वहांके पथरीले भूभाग के लंबे और संलग्न पलंग पर अपनी रानी और बच्चोंके साथ बैठकर, अुस बांसकी टट्टीका टेका लेते हुअे और नीचेकी ओर पैर लटकाये हुअे राजा नानकोबी जिस दिन आसमान साफ रहता अुस दिन धूप खाता हुआ अथवा रातको चांदनीमें अुसी मंचपर, सुखशय्याके विलासोंका अुपभोग करता हुआ दिखाअी देता। पर बारिश तो सदैवकी वस्तु थी, अतः अुसका अधिकांश काल अुस मुख्य राजधानीही में अन्य प्रजाजनोंके साथ हिलमिलकर खाने-बैठने-अुठने-सोने आदि में व्यतीत होता था।

दिनभर वह राष्ट्र जंगल में मृगयाके लिअे जब निकल जाता तब वह सारी राजधानी सुनसानसी रहती थी। रातको सारे के सारे नाचका कार्यक्रम रहा तो अुस मैदान में नाचते अन्यथा अुन्हीं दो तीन खोहोंमें सारे पुरुष स्त्रियाँ बच्चे अेक ही साथ बगैर किसी बिस्तरे बिस्तरेके सर्वथा नग्नावस्था में हँसते खेलते, जब नींद आती तब सो जाते। विवाहित दम्पति और अविवाहित स्त्रीपुरुष सब मिले जुले !

अुनका वही धर्म था, नहीं, सनातन धर्म था। धर्मोंधर्मोंमें बड़पनका मान आजके हमारे किसीभी धर्मको प्राप्त नहीं होगा। सिर्फ जावरोंके ही नहीं प्रत्युत हमारी मनुष्यजातिके भी **'तानि धर्मानी प्रथमा न्यासन्'।**

अुस धर्मके समानही अुनकी दिनचर्या भी लगभग सनातन ही थी। अुस राजधानीही को देखिये। वह वहाँ कब स्थापित हुअी यह बतलाना अितिहास तथा स्मृतिके लिअे भी संभव नहीं था। तोभी अुसकी अुम्रका अेक कालमापक यंत्र वहाँ लगा रखा था। यंत्रका अभिप्राय अुस नैसर्गिक गहरे गड्ढसे है, जो अुस टीले और मैदान की अेक बाजूमें था। अिस बस्तीके जावरोंकी पीढ़ियों पर पीढ़ियाँ समुद्रकी सीपियोंके भीतरके प्राणी पकड़ लाती आअी हैं, जिस तरह हम मूंगफली खाते हैं और दाने अलग करके अुसके छिलके फेंक देते हैं, अुसी तरह वे सीपियोंके अंदरके प्राणीको मुँहमें डालकर वे सीपियाँ अुन गड्ढों में फेंकती चली आयी हैं; अुन सैकड़ों बरसोंसे थरपर थर जमकर शिलास्थि (Fossilized) हुअी हुअी सीपियोंके किमाकार संचयके आधारपर यदि कालगणना की जाये तो अनेक युगोंसे यह बस्ती अिसी अवस्थामें वहां रहती चली आयी होगी, वे जावरे प्रत्यह दोपहर को समुद्र की सीपियोंके प्राणी मूंगफलीके दानोंकी तरह खाते आये होंगे, और सीपियोंको अुसी गड्ढेमें फेंकते चले आये होंगे तथा अपने अुसी रसोअी घरमें अिसी तरह जीभ चाटते हुअे बैठते चले आये होंगे अैसा अनुमान निकलता है !

अुस राजधानीके सारेके सारे नागरिक अपने सदाके समुद्रनृत्यके लिअे आज फिर जानेवाले थे। फिर कहनेका कारण यह कि बीचमें अंग्रेजोंके साथ जो युद्ध 'ठन' गया था अुसके कारण अुनके दस–पंद्रह दिन अुसी गड़बड़ीमें चले गये थे और सर्वदा का नाचवाच कुछ भी नहीं हो पाया था। तिसपर भी आज का नाच अुनके राष्ट्रीय विजयका था। अुनकी अपनी

संमतिमें अंग्रेजोंके साथ हुअे युद्ध में जीत अुन्हीं की हुअी थी। अुस दिनके छप्पे में अपने मुठ्ठीभर आदमियोंके सामने अंग्रेजोंकी वह छसौ–सातसौ की सेना भी अुखड गयी थी और जान लेकर भाग गयी थी। अितनाही नहीं, अंग्रेज सेनाका अेक बड़ा अधिकारी (अर्थात् वह सशस्त्र पुलिस) जावरोंके अेक वीर ने ताककर बाण मार कर ठंडा कर दिया था! वह वनका भाग भलेही अंग्रेजों ने हस्तगत कर लिया हो पर अुसे गिनताही कौन है! जितने चाहिये अुतने जंगली सूअर, सुविस्तीर्ण' सधन कांतार और अेकांतवर्ती सिंधुतट अेवं वालुकामय प्रदेश जब तक निर्बंध रूपसे अपने लिअे खुले हुअे हैं तब तक अंग्रेजोंके हाथमें गया हुआ वह नया वन्यभाग अैसा ही है, जैसी कि लक्षाधीश के जेबसे निकलकर गिरी हुअी अेक कौड़ी! युद्धका हेतु वह अरण्यभाग अुतना नहीं था जितना था जावरोंका अपमान!! अुसी का बदला अुन्होंने लिया था।

और बदला ही जावरोंकी जीत रहती है। अुनका क्रोध जितने वेगसे भड़क अुठता है अुतनेही वेगसे वह शांत भी हो जाता है। अपने वैयक्तिक शत्रुसे भी वहीं का वहीं बदला लिये बगैर वे नहीं रहेंगे। पर यदि वह कुछ वर्ष लापता होगया, तो अुसका अुन्हें अितना विस्मरण हो जाता है कि, वह यदि फिर अुन्हीं में वापिस आ गया तो अुसके संबंधके क्रोध की अुन्हें याद नहीं आती, वह अुनमें मज़ेमें हिलमिलकर रह सकता है! अंग्रेजोंद्वारा किये गये अपराधका भी अुन्होंने जो बदला लिया सो अुसीमें अुनका समाधान हो गया। अुनके अुस विजयके अुत्साहमें शल्यवत् चुभनेवाली बात यही थी कि राजा नानकोबी का श्यालक अकेला पैरमें गोली की चोट खाकर कहीं जंगलहीमें छिपकर बैठा हुआ था। पर वह सुरक्षित रूपसे वापिस अवश्य आ जायगा अिस बारेमें अुन्हें कुछ भी संदेह नहीं था। कारण, वह अंग्रेजोंके हाथ तो लगाही नहीं था, अगर किसीके हाथमें पड़ा हुआ था तो वह था अुस दुष्ट अरण्यभूत के—अुस 'अेरम चौगा' के!

हां! अुन जावरोंमें अेक पंचाक्षरिणी थी, अुसे परसों रातही को राजा नानकोबीने अपने खोये हुअे श्यालक का पता मंत्रतंत्रके बलपर ढूंढ निकालने के लिअे कहा था। तब अुस पंचाक्षरिणी स्त्रीने अग्निके समक्ष आसन जमाया। आगकी ओर टक लगाये अुस ज्वालामें आकृति सी को देखते

हुअे वह बहुत देर तक मग्नसी बैठी रही। अुसके पश्चात् आवेगसे अेकदम अुठकर अुसने अपने गलेमें पहनी हुअी अस्थिखंडकोंकी माला हाथमें ली और आगके चारों ओर चिल्लाती हुअी नाचने लगी। "हां, हां, मालूम पड़ गया। यह देखिये, वह 'अेरम चौग!' बोल! कौनसी दुष्टता तूने की है, बता!" अैसा आव्हान देकर, वह हवामें से कोअी बोल रहा हो अिस प्रकारसे कान लगाकर सुनने लगी! और फिर बोली,

" अच्छा, अैसी बात है! सुना न राजा नानकोबी ?" हम जावरोंका शत्रु यह अेरम चौग, यह अरण्य का दुष्ट भूत है न अुसीने तेरे श्यालक का विश्वासघात किया है देख! वह वीर घनी झाड़ी में छिपकर अंग्रेजों पर बाण चलाता था, पर अंग्रेजों को दीखता नही था, अितनेमें अिस धूर्त अरण्य के भूतने अुन सारी टहनियों को झुका दिया! अुसपर वह वीर अेकदम आंखों के सामने आ गया, अंग्रेजने देखा, निशाना लगाया, जावरा वीर के पैर में गोली लग गयी! अन्यथा अंग्रेज की क्या ताकद कि वह जावरा वीर को देख भी सकता। अरे दुष्ट अेरम चौग! अब जो हुआ सो हुआ, अब अपने ही अरण्य में छिपाये हुअे हमारे अुस वीर को दो तीन दिनके भीतर हमारे समीप सुरक्षित रूपसे पहुँचा दे, अन्यथा, अिस अरण्य में जहां तहां आगही आग लगा दूंगी, और अिस थिगरे की तरह तुझे अुस आग में जला डालूंगी!"

अैसा कहते हुअे अपनी कमर के चारों ओर बांधे हुअे अेक लाल कपड़े के अंगुल भर चौड़े थिगरे को खोलने लगी। पैर से लेकर सिर तक अुसके शरीर पर अन्य स्त्रियों की भांति किसी प्रकार का कोअी कपडा नहीं था। और वह जो लाल थिगरा अुसने कमर से बांध रखा था वह भी मंत्र तंत्र का अेक कटिसूत्र समझकर! कटिसूत्र की भाँति ही वह थिगरा भी बारीक था। अुसके शरीरके किसी भी अवयब को ढंकन रूप दुष्कर्म के घटित होने की कोअी संभावना नहीं थी!

वह अरण्यवर्ती भूत, अेरम चौगा आग से बहुत अधिक डरता है। वह थिगरा आग में डालते ही जिस तरह थोड़ी ही देर में जलकर राख हो गया, अुसी प्रकार मेरी भी गत बनेगी यह जान डरके मारे अुस अरण्य भूतने अुसे वचन दिया कि दो तीन दिन में अुस घायल और जंगल

में छिपाये गये जावरे को नानकोबी के समीप सुरक्षित रूपमें भेज दिया जायगा !

अिस आश्वासन के कारण स्वभावतः जावरों की अुस युद्ध में हुअी जो थोड़ी बहुत हानि हुअी थी वह भी अिस तरह पूरी हो जानेवाली थी। अिससे सभी को बड़ा आनंद हुआ। और अिसी कारण आज के अुस सिंधु पुलिन पर होनेवाले विजय नृत्य को बड़े ठाठ बाट से संपन्न करने के लिअे प्रत्येक जावरा आतुर हो अुठा था।

सबेरे ही वह सारा का सारा राष्ट्र नित्य नियम के अनुसार मृगया के लिअे निकला। औरतें, पुरुष, बच्चे , सारे के सारे ! छोटे बड़े सभी के हाथों में अपना अपना धनुष्य बाण विद्यमान था। राजधानी में घर तो कोअी था ही नहीं । अतः अुनके दरवाजे बंद करने का भी कोअी सवाल नहीं था। जब दरवाजा ही नहीं, तब सांखल और ताले का तो नाम तक लेनेकी आवश्यकता नहीं। अतः जावरों की भाषामें सांखल और ताले के लिअे कोअी शब्द ही नहीं है। पीछे सामान भी कुछ रहनेवाला नहीं था। प्रत्येक की द्रव्य संपत्ति यदि कुछ थी तो वह थी, तीरकमट और गले में पड़ा हुआ कौडियों का हार ! कुछ अुपकरण किंवा हथियारों के अतिरिक्त निरर्थक वस्तु अुनके घरमें कुछ रहती ही नहीं। वस्त्रों का तो नामो निशान नहीं; अन्न धान्य के संबंध में बात करना हो तो अुनके सारे संग्रह, साधन, यथा, पेटारे, बोरियाँ, तहखाने, डिब्बे सब कुछ यदि कोअी था तो या तो वह अरण्य था या फिर वह महाविस्तीर्ण समुद्र ! कल की सांझ का खाना पीना सब कलही को समाप्त हुआ हुआ ! आज अब जो मृगया में मिलेगा वह ! Enough unto the day the evils there of. Let tomorrow take care of its own !" हजारों बरसों पहले से वे जावरे अीसा के अिस धर्म सूत्रको प्रत्यह आचरण में लाते आये हैं।

राजधानी को किसी रास्ते की धर्मशाला की तरह खाली छोड़कर जावरोंका वह सारा राष्ट्र अपने दैनिक कार्यक्रमके अनुसार सबेरे ही जंगल में शिकार की टोह में चला गया। अुसके पश्चात् थोड़ेही समय में अुनकी अलग अलग पार्टियाँ अपनी अपनी अभिरुचि और सुविधा के अनुसार

भिन्न भिन्न शिकारों के पीछे लगती हुअी सारे जंगल में बिखर गयीं। कुछ स्त्रियाँ और बच्चे धनुष्यबाण अथवा पत्थर हाथ में ले पक्षियों को मारते चले गये। कुछ स्त्री पुरुष बड़े बड़े जंगली सूवरों के पीछे लगे। कुछ समुद्र की ओर मुड़कर प्रत्येक पथरीले भागपर बड़ी बड़ी मछलियों हके अुछल आने और अपने बाणसे अुनका निशाना बनाने के लिअे अुत्सुक होते हुअे बगुले की भाँति ताकमें खड़े रहे।

राजा नानकोबी और अुसकी रानी ‘फुली’ यद्यपि राजा रानी की हैसियत में थे, तो भी अन्य सभी प्रजाजनों की भांति मृगया अुन्हीं को करनी पड़ती थी, अन्यथा भूखे रहना पड़ता। जावरों में राजा को कोअी कर नहीं दिया करता। राजा के पास अेक भी पुलिस, नौकर या नौकरानी नहीं रहती। संधि–विग्रह, संकट–विकट अित्यादि अवसरों पर वह अुनका मुखिया बनता है, अुसके विचारों को विशेष महत्त्व प्राप्त होता है, यही अुसका राजापन है। अुसकी तरफ जाति जाति में होनेवाली लड़ाअियों के मामले में न्यायान्यायका काम तक कानून की दृष्टिसे नहीं रहता। कारण जावरों में जो जावरों से लड़ेगा, अुसी को अुससे, जितना अुसमें दम हो अुतना बदला लेना होगा। न हो तो न भी सही। जातीय न्यायालयका वह प्रश्न ही नहीं रहता। व्यक्तिगत शत्रुका विनाश व्यक्ति ही चाहे तो करे, न चाहे तो न करे। वह व्यक्तिगत वस्तु है। जाति से अुसका कोअी संबंध नहीं। न मुकदमा, न जाँच, न सजा, न कारागार, न पुलिस, न पटेल, ! अैसा अुनका राजकीय विधान है, और अैसा है अुनका राजा जो सिरपर मुकुट तो क्या, लंगोटी तक नहीं पहनता अथवा, अैसी है अुनकी रानी जी कमरके नीचे अिंच्भर पेड़का सुंदर ढ़ंगसे कतरा हुआ पत्ता ही लटकाये रहती है और अुसके अतिरिक्त अन्य किसी मूल्यवान् साड़ी का जिसे ज्ञानतक नहीं !

अुस दिन सबके साथ मृगया के लिअे चलते समय रानी फुली अपने अेक बरस के बच्चेको भी अपनी पीठपर खड़ा करके ले गअी थी। अपने अिधर कातकरी अित्यादि जातियों की औरतें अपने बच्चेको पीठपर अेक झोली में ड़ालकर ले जाती हैं, किंवा बच्चा ही पीठकी ओर से अपनी मां के गले को हाथोंद्वारा पकड़कर तथा पेटको पैरोंसे लिपटा कर पीठपर बैठा

रहता है। पर अंदमानी स्त्रियां अेक पट्टी सिरके तालुभाग में अटका कर पीठपर छोड़ती हैं। बच्चेको पीठपर लेने पर वह अुस पट्टीका टेका लेता है किंवा मां के कटिनिम्न पृष्ठभाग पर घड़ौंची की परजिस तरह टेका लिया जाता है, अुस प्रकार पैर टिकाकर पट्टीको पकड़कर खड़ा रहता है। अुस पट्टीके निरंतर दबावके कारण स्त्रियों की तालु प्रदेशका अस्थि भाग सर्वथा स्पष्ट दीखने योग्य दबा हुआ हो जाता है और वहांसे सर्वदा के लिअे अेक गढ़ासा बन जाता है! अुसमें पट्टी पनकी तौरसे बैठ जाती है। और वहांकी प्रौढ स्त्रियों की कटिपृष्ट भागस्थ अस्थि और कटिनिम्न पृष्ठभाग मूलतः अितना अुभरा रहता है कि लड़का बगैर किसी तकलीफसे अुसपर पैर रखकर खड़ा हो सकता है। अतः यदि हम यहांकी स्त्रियोंकी पीठपर बच्चा बैठता है, अैसा कहें तो अुधर की स्त्रियोंकी पीठसे लगकर बच्चा खड़ा रहता है, अैसा कहना पड़ेगा।

राजा नानकोबी के अुस लड़के का नाम, रानी फुली की गर्भावस्था में ही 'कोरी' रखा गया था। क्यों कि जावरों के स्मृति शास्त्रके अनुसार स्त्रियोंके गर्भवती होतेही अुस लड़के का नामकरण संस्कार हो जाना चाहिये। स्वभावतः ही लडके लड़कियों के पहले नामों में भिन्नता नहीं रहती। अुसके कारण अुस बच्चे के 'कोरी' नामसे वह जावरों का युवराज था अथवा राजकन्या अिसका पता चलना कठिन था। अतः अलगसे यह बताना आवश्यक है कि वह लड़का था, युवराज था। लड़की होती तो अुसका गर्भावस्था का यह पहला सामान्य लिंगी नाम अुसके अुम्रमें आ जाने पर बदल जाता और अुसके अुस प्रथम अृतुमें जो फूल खिले होते अुनमेंसे किसी अेक के नामपर अुसका नाम रख दिया जाता। नामकरण की यह पद्धति अुनके सनातन धर्मका द्योतक अेक जातीय संस्कार है। जिस प्रकार प्रत्येक लड़की नाम बदलती है, अुस प्रकार रानीका भी गर्भावस्था में रखा गया अेक सामान्यलिंगी पहलेका नाम था। जब रानी अृतुमती हुअी तब अुसका नाम बदला और चूंकि चारों ओर अुस समय फूल ही फूल खिल रहे थे अतः अुसका यह दूसरा नाम 'फुली' रखा गया।

अुन जावरों में से जो लोग समुद्रपर मछलियाँ मारने के लिअे गये हुअे थे, अुसी ओर राजा नानकोबी और रानी फुली भी अपने बच्चे को पीठपर लिये गयी हुअी थी। अूंचे पथरीले भागों के शूलाकार प्रदेशों पर अपने अपने धनुषोंपर बाण चढ़ाये हुअे जावरे खड़े थे। नीचे समुद्र की लहरें अेक के पीछे अेक आकर अुन पाषाणमय तटोंपर टकराती हुअी फूट जाया करती थी। बीच में कोअी अेक मत्स्य किंवा मत्स्य समूह अुन लहरों की अुछाल के साथ अूपर चला आता था। श्वेतशुभ्र बड़ेबड़े गृध्राकृति पक्षी आकाश में से होकर समुद्रपर नीचे अूपर अेकसा चक्कर मारते रहते थे। अुनकी परछाअी अुन लहरों पर पड़ती थी। तब अैसा लगता था, मानों वे पक्षीही अुन तरंगोंपर तैर रहे हों। पर कभी कभी जब कोअी जलजंतु समुद्रके अूपरी पृष्ठपर समूह बनाकर चला आता तब वे बड़े बड़े पक्षी सचमुच ही झपट्टा मारकर अुन तरंगों पर डोलने लगते। अुन तरंगोंपर जब अुनकी कतार पर कतार और परछाअीं डोलने लगती तब अुस नीले समुद्र की सारी लहर अैसी कुछ शुभ्रश्वेत दिखाअी देती; मानों क्षीरसागर की कोअी अेक लहर भूले से अिधर बहती चली आयी हो!

पानी के अूपर आने वाले मत्स्योंपर जावरों के बाण छूटते त्योंही वे मत्स शीघ्रही समुद्र में अदृश्य हो जाते। अिस तरह अेक घंटे तक बाण मारते रहने के पश्चात् राजा नानकोबीने तथा अुसके पीछे पीछे अन्य जावरोंने अुस के गहरे समुद्र मे गोता मारा। तीनतीन आदमियोंके अितने गहरे पानी में गोता लगाकर वे अेकदम अुसके तलपर पहुँचे। पानी में गोता मारने में जावरे अत्यंत प्रवीण होते हैं। वह अुनका रोजमर्राका खेल भी है और आजीविका भी। जिन मछलियों के अुनके तीखे बाण गड़ जाते हैं वे मछलियाँ निश्चयही समुद्र के तल पर पड़ी हुअी मिल जाती हैं। अुनमें से जितनों को लाना संभव था अुतनी मछलियोंको वे अपनी पीठपर लादकर अूपर ले आये। रेतीले तटपर आतेही अुन्होंने अपनी वह सारी निधि नीचे डाल दी। सारे लोग अुन के चारों तरफ अिकट्ठा होकर हँसते खिलखिलाते तथा किसके बाण से कौन मछली मरी अिसकी चर्चा करते हुअे अपनी अपनी प्रशंसामें मग्न हो गये। अुसके बाद अुन्होंने बड़ी बड़ी आगें जलायी। अुनपर कुछ तो वे मछलियाँ, कुछ अपने बच्चों और औरतों [illegible]

शिकार कर के लाये गये पक्षियों को तथा कुछ अन्यों द्वारा लाये गये जंगली सूअरों को आवश्यकतानुसार कुछ को भूना गया और कुछको सांझके लिअे रख छोड़ा गया। अुस समय तक सबेरे अलग अलग बिखरे हुअे लोग लगभग सारे के सारे लौट चुके थे। अुस के बाद अुस शुभ्र अेवं विस्तीर्ण रेतीले तटपर धूप की अूष्मामें अुन का वनभोजन प्रारंभ हुआ। अुस सघन अरण्य की बरसात में तथा समुद्र के जल में सबेरे से लेकर अब तक बुरी तरह भीगते आने के कारण वे ठिठुरा रहे थे। अतः धूप में जब अुनके शरीर सूख रहे थे तब अुन्हें अुतना ही आनंद हो रहा था जितना कि चांदनी में बैठकर भोजन करते समय हम लोगों को आनंद हुआ करता है। कुछ भुना, कुछ अधकच्चा, कुछ कच्चा मांस——जिस को जैसा भाया अुसने वैसा उदरस्थ कर डाला। कठिन हड्डियों को दोनों हाथोंसे कडाकड तोड़ते हुअे अुन की जोड़ों में से बह आनेवाले रस को किसीने बड़े ही आस्वाद-पूर्वक चखा, तो किसीने मुलायम मुलायम हड्डियाँ वैसी की वैसी ही दाँतोंसे कचाकच चबाकर खा डालीं। जावरे अन्य सब पदार्थों की भांति मांस भी कच्चा खा जाते हैं। सर्वथा पक्वान्न का ही निश्चय हुआ तो भुना हुआ मांस खा लिया! पर भूनने से आगे पकाना, रांधना, मसाला डालना——अितना ही क्यों, रसोअी करना यह शब्द भी अुन की भाषा में नहीं है।

अितने में नानकोबीने हाथ के अिशारे करते हुअे पूछा,

" दोलकाष्ठ ?—— विलायती पानी ? "

जावरों की भाषामें शब्द अिने गिने ही रहते हैं। अुसपर भी अुन्हें यथाशक्ति हाथ के अिशारों से ही बातचीत करना अधिक पसंद है। शब्दोंसे अुन्हें बहुत अधिक अरुची है। अतः सारा वाक्य बोलना हो तो अेक शब्द में बोल जायंगे और अुसका अवशिष्ट अर्थ हाव भाव द्वारा पूरा करेंगे। राजा नानकोबी ने जब केवल ' दोलकाष्ठ' अितना ही शब्द कहा तब अुसने भी अुस वाक्य का अवशिष्ठ भाग हाथ से तथा अक्षिसंकेतोंसे ही पूर्ण किया। वे सारे शब्द तथा हावभाव अेकत्र करके हिंदीमें अुस वाक्य को लिखें तो अुस अेक शब्दका सारा अर्थ यों होगा——

" क्यों भांअी , क्या बात है ? अपना वह दोलकोष्ठ किधर चला गया है। बहुत दिनों से अिधर आता ही नहीं, क्या बात हो गयी ? वह आज

अगर रहता तो वह विलायती पानी — वह शराब पेटभर कर पिलाता! अब कमी है तो बस अुसी की है।

यह सुनकर अेक जावरेने दो शब्द और दस अिशारे तथा दृष्टि-विभ्रम करके जो अुत्तर दिया, अुसका भावार्थ अितना था— "वह 'दोल-काष्ठ' अरण्यके दूसरे भागमें रहनेवाली, 'टटोबी' "नामकी जावरों की अेक दूसरी जाति के लोगों परिचय के कारण चला गया है, और थोड़े ही दिनोंमें वापिस आनेवाला है।"

पर अुसके लिये आजका विजय नृत्य रुक थोडा ही सकता था? मृगया और नाचही तो अिन जावरोंका श्वासोच्छ्वास। अुसमें भी अितने दिनों से अुन अंग्रेज़ों के साथ की लड़ाअी की गड़बड़ी में नाच हुआ भी नहीं था? अुस अिच्छा की पूर्तिके अभावरूप अुपोषण की आज पारणा ही थी। अिस नृत्य के लिये पर्युत्सुक वे जावरे पुरुष, स्त्रियाँ, लडके सारे अुस विस्तीर्ण वालुकामय तटपर भिनभिनाते हुअेसे अेकत्र हो गये। कोअी ज़ोरज़ोरसे अपनी भुजाअें थपथपाने लगे, कोअी योंही अकेले छलांगें और कुलांगें मारने लगे. कोअी गरजने लगा, कोअी न जाने कैसा अेकस्वरी स्वरपर तीनचार शब्दोंका गाना लगातार गाते हुअे फिरने लगा। प्रायः सारे स्त्री-पुरुष अेकदम नंगे। कुछ श्रृंगारप्रिय लोगोंने आभूषणके तौरपर कटिके पुरोभागके नीचे पत्ते लटका रखे थे। दो-तीन-चार लोग ज्योंही अेक दूसरेके हाथमें हाथ डालकर नाचने लगे त्योंही चालीस पचास लोग अेकत्र हुअे, अेक दूसरेके हाथमें हाथ डाले अेकवृत्त बनाकर बीचमें शास्त्रोक्त रीतिसे अेक वर्तुलाकृति वस्तु रखकर अुसके चारों ओर नाचने लगे। अुस अेकस्वर, अधूरे और त्रुटित तालके गानेको अुसी प्रकार गाते हुअे घूमते घामते अुस नृत्यका वेग बढता चला गया। अेक थका कि अुस वृत्ताकृति हस्तश्रृंखला में दूसरा घुस आता। थकना यह व्यक्तिगत दोष था तो श्रृंखलाको टूटने देना तथा नृत्यके वेगको शिथिल बनाना जातीय दोष सिद्ध होनेवाला था, अपने राष्ट्रीय देव भगवान पुलगाके अुपहासका पात्र बनना था, वह जावरोंके सनातनधर्मके विरुद्ध अेक पापाचरण हुआ होता। अंतमें जब नाचकी समाप्तीका समय आया, तब तो अुस वृत्तके

नृत्योन्माद की सीमाही नहीं रह गयी। भरटि तथा घरटिसे फिरनेवाले अुस नृत्यमय वृत्तपर आंखका ठहरना कठिनसा हो गया !

आजकल के यूरोपके किसी भी नग्न संघ के सभासद अुस समय यदि वहां रहते और अुन नग्न मिले जुले स्त्री पुरुषों को अुन नग्न नृत्यावस्था में अपने देहभान को विसराया हुआ देखते तो आश्चर्य से अपने मुँह में अुंगली डालकर कह बैठते — "नंगा नाच अगर हो तो अैसा हो!" मार्क्स से भी सैंकड़ों बरसों पूर्व जावरे जिसप्रकार समाजसत्तावादी थे, अुसी प्रकार आज के यूरोप के नग्न संघ की अत्युच्च महत्त्वाकांक्षा को वे सैंकड़ों बरस पहले क्रिया में परिणत भी कर चुके थे !

वह नाच अभी खत्म होने भी न पाया था कि अुतने ही में अेक जावरे ने जोर से ताली बजायी तथा अूंचे स्वर में चिल्लाया—"दोलकाष्ठ ! दोलकाष्ठ !" देखते हैं तो सचमुच ही 'दोलकाष्ठ' आ रहा है और अुसकी कांख में तथा हाथों में भी 'विलायती पानी' की बोतलें हैं ! जावरों के आनंद का ठिकाना न रहा !

जावरों को तमाखू पहले ही से बहुत प्रिय लगती है और गत चालीस पचास बरसों से अुन में विलायती शराब का भी प्रवेश थोड़ा बहुत हो गया है। वे यदि अभी शराब के व्यसन के चंगुल में पूरी तरह नहीं फँसे हैं, तो अुसका कारण यह नहीं है कि, वह अुन्हें बहुत अधिक अच्छी नहीं लगती, प्रत्युत यह है कि शराब अुन्हें मिल नहीं पाती है। यह जो 'दोलकाष्ठ' नाम का व्यक्ति जो आजकल अुन लोगों में अितना अधिक लोकप्रिय हो गया है वह अपने मिलनसार स्वभाव के कारण जितना लोकप्रिय हुआ है, अुसकी अपेक्षा भी अधिक तो वह शराब हासिल करके देने और तमाखू लाकर देने के कारण ही है।

जिस मनुष्यका नाम जावरोंने 'बोलकाष्ठ' अिस अर्थवाले जावरी शब्दमें रखा था, वह मूलतः अेक 'भगोड़ा' ही था। अंग्रेजोंकी कालापानी की जेलही में आजन्म कारावास की सजा पाकर आया हुआ था और अनेक बरसों पहले वह जेलसे भाग गया था। पर भारतवर्ष वापिस जाने का अुसका अेकबार प्रयत्न निष्फल हो गया था। और अुस साहस कृत्य में कुछ जावरोंसे अुस जंगलमें अिस विलायती पानीके कारण ही घनिष्ठ

परिचय हो गया था; अतः अिन जावरोंकी टोली में अुसे गत तीन चार बरसों से आश्रय मिला हुआ था। वह चोरी छिपे अंदमान के आंग्ल अुप-निवेशमें जाता, जावरोंद्वारा प्रदत्त अनेक सुंदर और बड़े बड़े शंख, दो-दो फुट की तश्तरियों और थालियों सदृश चौड़ी और गुलाबी रंगकी सीपियाँ अुस कैदी अुपनिवेश के व्यापारियोंको चोरी छिपे बेचता, बहुत कुछ पैसे गांठमें बांधता और बाकी पैसों से थोड़ासा विलायती मद्य और बहुतसी तमाखू गुप्तरूपसे जावरों को लाकर दिया करता था। अुन लोगों में वह अिस तरह घुलमिल गया था मानों वह अुन्हीं का कोअी रिश्तेदार हो। वह अुनकी बोली बोलता, खाना खाता, नंगा रहता, रंगीत मिट्टी के पट्टे शरीरपर मलता, अुनके सुखदुःखमें समवेदना दिखाता, अुनके स्त्री पुरुषोंमें हिलमिलकर वह अुसी प्रकार नाचता और सोता जिस तरह वे लोग नाचते और सोते थे।

वे जावरे अुसे स्नेहवश 'दोलकाष्ठ' अिस अर्थके जिस नामसे संबोधन किया करते थे, वह भी अुसे पूरी तरह फबता था। कारण अुसकी कमरतक आनेवाले ठिगने तथा बूट पॉलिश की भांति काले कलूटे जावरों में वह अधगोरा और छै-अेक फूट अूंचाअीका भारतीय भगोड़ा जब खड़ा होता था तब अैसा ही दिखाअी देता था कि, तारकोलसे पुती नौकाओंके टीक मध्य में खड़ा किया हुआ कोअी 'दोलकाष्ठ' ही हो! अिस साम्य के कारण ही जावरे विनोदमें अुसे अिस नामसे संबोधन करने लगे थे।

जिन्होंने अुसे अुसबार शंख और सीपियाँ दी थीं, अुन अुनको अुसने चार चार घूंट पिलाया, अन्यों को यथेच्छ तमाखूकी बुकनी भरकर दी और राजा रानी को तो दो पूरे के पूरे प्याले शराब के आकंठ भरकर अर्पण किये। अुस अुन्मादमें राजा नानकोबीने और रानी फुलीने 'दोलकाष्ठ'का अेकअेक हाथ पकड़कर और अुसे मध्यमें लेकर अुसके सन्मान के लिअे अपने तीनों का अेक स्वतंत्रही नंगानाच चालू किया।

अिधर विजय नृत्य का वह अुत्सव सिंधुतट पर 'विलायती पानी' के प्राशन द्वारा संपन्न हो रहा था और अुधर गत प्रकरण में बताये अनुसार वह घायल जावरा कंटक और रफिअुद्दीन को साथ ले अुस राजधानी के समीप दो तीन मील पर आकर ठहरा हुआ था। अुस घायल जावरे ने

अुन्हें 'दोलकाष्ठ' नामक भगोड़े की बात सुनायी। अुसने कहा कि यदि वे भी अुसी की भांति तमाखू और शराब लाकर जावरों को पुराया करें तो अुन्हें भी जावरे पूरी तरह मदद दिया करेंगे और अुन्हें स्नेह और आदर की दृष्टि से देखा करेंगे। पर पहली कठनाअी यह थी कि वे भारतीय कैदी थे अंग्रेजों के लोग! और जावरे थे अुस समय अंग्रेजों से सख़्त नाराज़! अतः यदि अुन्होंने अुस घायल जावरे को अुन्हीं के साथ आते हुअे देख लिया तो वे जावरे कदाचित् अुस जावरेपर भी संदेह कर बैठें! क्रोध से जहरीले वाण बरसाना शुरू कर दें! अुस आपत्ति को टालने के लिअे अंतमें यह निश्चय हुआ कि, कंटक और रफिअुद्दीन दोनों अुस रातको अुसी अरण्यमें रह जायँ; वह घायल जावरा जाकर अपने टोली वालों से मिल जाय; अैसा करने से निन्यानवे प्रतिशत अुसका स्वागत निरापद रूप से होगा; अुसके पश्चात् वह जावरा अुन लोगों को बताये कि कंटक और रफिअुद्दीन ने किस भांति अुनकी जान बचायी, वे दोनों अंग्रेजोंके आदमी नहीं हैं; बल्कि अिस समय तो वे अुनके कट्टर दुश्मन बने हुअे हैं; 'भगोडे' हैं, और जावरोंको नाना प्रकार के मद्य, तमाखू, काचमणि, रंगीत रेशमी वस्त्रों की पट्टियाँ अित्यादि वस्तुअें सदैव पुराया करेंगे। ये सब बातें बड़ी युक्ति से वह कहे और अुसके पश्चात् घायल जावरे की जान बचानेके अुपकार के बदले अुन नये भगोड़ों को अपने यहां आश्रय देने के लिअे टोली के राजारानीको राजी करे। अितना काम हो जाते ही वह जावरा फिर अिस जंगलमें आये और कंटक तथा अुद्दीन को अपने साथ ले जाय।

अिस निश्चय से पर्याप्त अंशमें निर्भय हुआ हुआ वह जावरा शीघ्र ही राजधानी की ओर चल पड़ा। कंटक और रफिअुद्दीन जंगल ही में ठहरे रहे। अुनके दिलमें घबराहट भर गयी थी कि, जाने आगे क्या हो और जावरे क्या करें! अुसपर भी रफिअुद्दीन की मूल आततायी वृत्ति के संबंध में कंटक मनही मन सदैव आशंकित तथा सावधान रहता था। पुनश्च, मालती की मुक्तता हो जाय, अिस राक्षस का पूर्व वैर जागरित हो अुठे, तब यह अिस अेकांत अरण्य में अपने ही अूपर अुलट पड़े तो— अिस भीति के कारण, कंटक अविस्मरण पूर्वक अुस बंदूक और बारूद

गोले को अपने हाथ में रखने लगगया था। अूपरसे अैसा दिखाता था कि यह सब सहज भावसे ही वह कर रहा है। अुसमें भी अब अुन दोनों के सामने अेक नया ही प्रश्न अुपस्थित हो गया था। —यह 'दोलकाष्ठ' कौन है ? जावरोंपर अितने बरसों से अपनी छाप डालने वाला यह 'भगोड़ा' कोअी कर्तृत्ववान् मनुष्य ही होना चाहिये ! वह अिन जावरोंमें अिसी प्रकार यहीं का यहीं क्यों रह गया ? वह भी समुद्र लांघकर भागने के मौके की खोजमें है क्या ? साधन सामग्री जुटा रहा है क्या ? कोअी न कोअी कर्तृत्वशाली पुरुषही है, अेतावता, हुआ तो वह अेक अुपयोगी मित्र —नहीं तो अुपद्रवी शत्रु ! क्या सिद्ध होगा कौन जाने ?

और सबसे अधिक परेशान करनेवाली चिंता अिस बात की थी कि अिस घायल जावरे को देखते ही वह राजा नानकोबी क्या कहेगा, क्या करेगा ?

" तूही ! तूही वह रफिअुद्दीन है !..." : : १९

जावरोंका जयनृत्य समाप्त हुआ। सूर्य अस्ताचलकी ओर चल पड़ा। जावरे भी अपनी राजधानी की ओर चल पड़े।

राजा नानकोबी अुस खोहवाले अपने राजमहलमें नहीं गया। अुस मैदानवाले विलास मंदिर में ही प्रविष्ट हुआ। अुस विलास मंदिरमें राज-शय्या का काम करती थी अेक शिला। छतका काम करता था आकाश; तीन और की तीन दीवारें थीं, तीनों दिशाअें ! चौथी दिशा की दीवार थी वृक्षों से बांधी हुअी बांस की खपच्चियों वाली टट्टी, और वही अुस राजशय्या का तकिया भी था ! अुसका टेका लेकर शिला शय्यापर नानकोबी बैठा। "फुली ऽ !" प्रेमभरी अेक हांक अुसने मारी। फुली रानी प्रसन्नवदन वहां चली आयी। अुसकी आंखो में कामपूर्ण लंपटता और हृदयमें वह 'विलायती पानी' हिलोरें ले रहा था।

आसमान में बरसात नहीं थी। वह खुला था। सांझ की धूपकी कोमल किरणें हिलने डोलनेवाले जंगल के अूपर कूदफांद मचा रही थीं।

प्रणय के मुग्ध हावभाव प्रदर्शित करती हुअी रानी फुलीने अेक हाथ में धारदार कांच का टुकड़ा आगे बढ़ाकर और दूसरे हाथ से किसी ब्रश जितने तथा ब्रश जैसे बढ़े हुअे बालोंवाले अपने सिर को दिखलाते हुअे आर्जवपूर्वक कहा—" तराश न !"

अुसके अुस अभिनय और शब्दों का मिलाकर अर्थ यों था कि, 'बाल कुछ बढ़ गये हैं, मेरा मस्तक विशोभित हो गया है, अिस कांच के टुकड़े-रूप अुस्तरे से चिकनी चिकनी हजामत कर डाल न ! सिर की बीर बना डाल न, प्रिय तम मेरी, वह भी तेरे अपने ही हाथों से !'

हमारे यहां प्रियपत्नी के केशकलाप की किसी विलासी पति द्वारा वेणी का कसा जाना जैसे प्रणयक्रीडा का अेक अंग है, बैल अपने सींगोंसे गाय को खुजाते हुअे और चाटते हुअे जिस तरह प्रेम में आया होता है, अुसी प्रकार प्रेमातुर हो अुठनेपर अपनी प्रियतमा के सिर के बढ़नेवाले बालों को सर्वथा हलके हाथों से 'तराश कर' अुसकी चिकनी चिकनी हजामत बनाना जावरों के प्रणयी जनों की अेक हविस हुआ करती है। अुन के रतिविलास का ही वह अेक शृंगारभाग है ! विधवा का केशवपन अपने धर्मशास्त्रों के अनुसार जितना अनिद्य—नहीं, जितना अेक प्रकार का अनुल्लंघ्य धर्मसंस्कार, अुसी प्रकार सधवा का केशवपन भी जावरों के धर्मशास्त्र के अनुसार अेक सौभाग्यलक्षण और अेक धर्मसंस्कार समझा जाता है।

अपनी प्रिय पत्नी की अुस हविस की पूर्तिके लिअे नानकोबीने तत्काल अुसे समीप ले लिया। शिलाशय्या पर अुसे सुलाकर, अुसका सिर अपनी जाँघपर लेकर अुस कांच के धारदार टुकड़े से वह लाड़भरे तथा हल्के हाथोंसे अुसका सिर साफ करने लगा। सिर सफा चट हो चुकने के पश्चात् जब वह अुठकर बैठी, तब अपने चिकने चुपड़े सिर से अधिकाधिक शोभायमान वह विकेशा रानी फुली अुसे अितनी मोहक और आकर्षक प्रतीत होने लगी कि, अुसने प्रणयावेश में अुसका चुंबन वहीं का वहीं ले लिया। और जिस तरह अुसने रानी की अिच्छा पूरी की थी अुसी तरह रानी भी अुसकी अिच्छा पूरी करे अिस अर्थ की अेक विनति जावरों की रीति के अनुसार अभिनय की भाषा में करते हुअे, अेक हाथ से अुसने वह

क़ांच का टुकड़ा सामने की ओर किया और दूसरे हाथ से अपना सिर दिखलाते हुअे नानकोबी अपनी प्रियतमा से आर्जवपूर्वक बोला, "तराश !"

तब रानी फुलीने नानकोबी को अुसी पत्थर की सेजपर सुलाया। अुसका सिर अपनी विवस्त्र जंघापर लिया और कांच के दूसरे अेक अेकदम कोरे धारदार अुस्तरे से वह जावरा सुंदरी 'कर्र कर्र' करती हुअी अपने पति की हजामत बनाने लगी। अुतने में नानकोबी की बहन और अेक दो लड़के भी वहां आये। ताजे ताजे दो तीन छबड़ी भर के सजीव सीपियाँ वे लोग फलाहार के लिये ले आये थे। अपनी सीपियों का मुंह खोल कर अंदर के नानाविध प्राणियों को मूंगफली के दानों की तरह मुँह में डालते हुअे तथा अुन सीपियों को अुस पुरातन गढ़े में फेंकते हुअे वे सारे लोग गपशप लड़ाते हुअे बैठ गये।

त्योंही, "आगया ! आगया ! अू ऽ ऽ अू ऽ ऽ" अिस तरह अकस्मात् चिल्ला कर नानकोबी की बहन नाचती हुअी अुठ खड़ी हुअी ! दूरस्थ झाड़ी की ओर संकेत कर के अुसने सब का ध्यान जिधर आकर्षित कर लिया था, अुधर जब नानकोबीने देखा तो अुसे दिखाअी दिया कि, अुस का गुम हुआ वह घायल जावरा, अपनी अुस बहिन का पति, थोड़ा लंगड़ाते हुअे किंतु साकल्येन सर्वथा निर्भय, निश्चिंत वृत्ति से अपनी राजधानी की ओर चला आ रहा है। तत्क्षण आनंद से ताली पीट कर वे सारे खड़े हो गये और नाना प्रकार के अिशारे करते हुअे तथा विचित्र प्रकार से चिल्लाते हुअे "चल, चल, जल्दी आ, तेरा स्वागत हो ! " अैसा भाव व्यक्त करने लगे।

अपने विषय में अपने जातभाअियों के मन में किसी भी प्रकार का किल्मिष नहीं आया यह देख हर्षोत्फुल्ल वह जावरा भी आनंद अेवं औत्सुक्य से दौड़ता हुआ ही आगे आया। पर अपने अुन भाअीबंदों के संमुख आते ही अेकदम ठिठक गया। नानकोबी, फुली और अुस जावरे की स्त्री अित्यादि सारे के सारे न हँसे, न बोले, तन कर खड़े हुअे और अुसकी तरफ देखने लगे। धीमे धीमे अुन्होंने अपनी आंखें अुसपर फाड़ीं। वह भी तन कर खड़ा हुआ और मानों गुस्से से भर आया हो, अिस तरह अुनकी ओर आँखें फाड़ कर घूरने लगा !

अुस के पश्चात् वे दोनों पक्ष अेक के बाद अेक करके खांसनें खखारने लगे। पांच छै मर्तबा यह खांसना हो चुकने के पश्चात् वे फिर निश्चल वृत्ति से अेक दूसरे को घूरते हुअे खड़े रहे।

कारण, जावरों के शिष्टाचारके अनुसार वही नमस्कार चमत्कार की पद्धति है। कोअी भी व्यक्ति, वह अपना खास लड़का ही क्यों न हो कुछ दिन बाहर रह कर घर वापिस आया कि अुससे मिलने जुलने से पूर्व अिसी प्रकार का नमस्कार चमत्कार करना पड़ता है।

अिस रूढि का मूल जावरों की स्मृतिक्षीणता में होगा। अुन्हें याद तो किसी वस्तुकी ठीकसे रहती ही नहीं। अतः मनुष्य कुछ दिन लापता होकर वापिस अपने में आया कि जबतक अुसकी पहचान ठीक ढंगसे न हो जाय, तबतक अुसे ठीकसे निरख परखकर देखना पड़ता है, खांस खखारकर अुसकी शत्रुता किंवा मित्रता का ठीक से पता चलाकर अुसको अपनी टोली में घुसने देना यह भी सावधानता का अेक कर्तव्य हुआ करता है। अुस प्रारंभिक काल की आवश्यकता का ही रूपांतर अिस शिष्टाचार के रूप में हुआ और पहचान हुअी हुअी भी हो तो भी अभ्यागतों के साथ अुस प्रकार का नमस्कार चमत्कार किये बिना न बोलने की पद्धति ही पड गयी होगी।

अुस शिष्टाचार के पूर्ण होते ही, अुन्हीं विस्फारित नेत्रोंसे आनंद का अश्रुजल वेगसे बह निकला और अपने अुस खोये हुअे वीरबंधुके गले में अन्य बांधवों के तथा पतिके गले में पत्नी के प्रेमपूर्ण आलिंगन की भुजाअें जा पड़ीं।

अपने छुटकारेका अद्भुत वृत्तांत सुनाते समय अुस पुनरागत जावरे ने कंटक के तथा रफिअुद्दीन के अपने अूपर हुअे अुपकारोंका अितना अधिक अुल्लेख किया कि, जब अुसने अंत में अुन दोनों भगोड़ोंको जावरे आश्रय देने और अुनके द्वारा अुसे दिये गये प्राणदान के अृण से अुऋण हों अैसी साग्रह विनंति अुस समयतक वहां आये हुअे अुन टोलीके अनेक लोगों को संबोधित करते हुअे की, और अुन भगोडों की ओर से यथेच्छ तमाखू और शराब मिलने का आमिष (लालच) भी दिखाया तब अुसपर जिसने स्वीकृति सूचक सिर न हिलाया हो अैसा अेक भी जावरा नजर नहीं आया। तथापि किंचित् विचार करने वाली, नेताको सुहाने योग्य मुखमुद्रा कर के

नानकोबी थोडी देर चुप बैठा और तत्पश्चात् अिशारों से वाक्यका अधिकांश व्यक्त करते हुअे केवल अितना ही शब्द अुसने अुच्चारा,

" दोलकाष्ठ !"

अुसमें अितना अर्थ भरा हुआ था कि, अैसे भगडोंकी सच्ची परीक्षा दोलकाष्ठ ही को है ! अुसी को हमारी ओरसे अुनके पास भेजो ! यदि कंटक और रफिअुद्दीन को दोलकाष्ठ ने आश्रयार्ह समझा तो आश्रय अवश्य देंगे ।

अुधर संध्याकाल के समय अुसकी मुलाकात हो रही थी, अिधर कंटक और रफिअुद्दीनने सूर्यास्त से पूर्वही किसी पशुका शिकार किया, अुसका मांस अग्निपर भूना और अुससे पेट भर चुकने के पश्चात् अुस भयानक दलदल और कीचड़ वाले जंगलमें अपने बिस्तरेकी खोज करने लगे ! वहांका पलंग, पलंगकी मूलप्रवृति वृक्षके अतिरिक्त और कौनसा हो सकता था ? वृक्षोंको देखते देखते वे अैसे दो अलग अलग वृक्षोंपर चढ़े जिनकी चौड़ी चौड़ी टहनियाँ अूंचाअी पर जाकर अेक दूसरेसे चिपकी हुअी दिखाअी दीं । अुन वृक्षोंकी टहनियों द्वारा तय्यार-किये गये तख्तोंपर वे सो गये । गाढ़ निद्रामें कहो लुढ़ककर नीचे ही न आ पड़ें । अिस भय के अपाकरण के लिये अुन्होंने अपने आपको अरण्यबल्लरियों की रस्सीके सदृश मजबूत छालों से अुन टहनियों के पलंग के साथ बांध लिया । बरसात बहुत देर तक बंद रही । तथापि जंगलमें से पानी तो टपकता ही रहा । बीच बीचमें अेकाध झड़ी भी आ ही जाती थी । पर अिसमें संदेह नहीं कि वे दोनों शीघ्रही गहरी नींदमें सो गये । पर वह गहरी नींदही थी अथवा ग्लानिजन्य बेसुधी थी, यह अुनके अपने ध्यानमें भी नहीं आया ।

तडके ही उद्दीन अुठा । अुसे अुस गहरी नींद के पश्चात् अितनी प्रफुल्लता अनुभव हो रही थी कि वह थोड़ी देरके लिअे यह भी भूल गया कि अुसके सिरपर संकट की भयानक तलवार लटक रही है । समीप ही दुसरे वृक्षपर कंटक सोया हुआ था । अुसकी ओर अुसने देखा तो वह भी अंगड़ाअियाँ लेता हुआ नींदसे जागकर अुठ ही रहा था । थोडा विनोद करने की अिच्छा हो आते ही अुद्दीनने कंटक को पूरी तरह अुठाने के लिये अूंची और सुरीली आवाजमें यह भूपाली छेड़ी—

घनःश्याम सुंदरा, श्रीधरा अरुणोदय झाला।
अुठो कंटक बाबूजी अुदयाचलीं सूर्य आला ।।

कंटक को हँसी आयी। वह भी अुठकर के टहनीपर ही कुछ देर बैठा, बाघ की टोहमें मचान बांधकर मृगग्रु लोग जिस तरह बैठते हैं, अुसी तरह कंटक को बैठा देख अुद्दीनने मजाक की,

" क्यों बाबूजी, कितने बाघ मारे ? "

कंटकने उत्तर दिया,

' भय्या, जो सचमुच बाघ, वो तो अभी आनेवाला है। वे जावरे कल के निश्चयानुसार अभी वापिस आयेंगे। तब या तो वे मानुषायित दिखाअी देंगे या व्याघ्रायित! – बाणों के नखोंसे फाड़ फाड़कर खा जायेंगे तुझे और मुझे ! "

कंटक अभी अितना बोल ही रहा था कि, त्योंही सामने की झाड़ीमें हलचल होने लगी। केवल सौ कदमों की दूरीपर आते ही जावरेने अपनी अरण्यक भाषामें " अू ऽऽ अू ऽऽ ' करके जोरसे चिल्लाना शुरू किया। अुस जावरेको पहचानते ही कंटक झटपट वृक्षसे नीचे अुतरा। रफिअुद्दीन अपने पेड़पर अुसी तरह बना रहा। अिसका कुछ अंशमें तो यह कारण हुआ कि वह अपने चारों ओर बांधी हुअी बेलोंकी छालोंको जल्दीसे खोल नहीं पाया परंतु कुछ अंश में अुसने जो दोरी लगायी वह अपने रक्तमांस में भिनी हुअी शठवृत्ति के कारण भी थी। अुस जावरे के साथ वह अपरिचित ' दोलकाष्ठ ' भी आया हुआ था। अुन दोनोंका निश्चय कंटक और अुद्दीन को आश्रय देनेका था अथवा नहीं यह अभी पूरी तौरसे पता चलाना था। तब अैसी शंकाकुल स्थितिमें स्वयं आगे न बढ़कर कंटकको ही आगे जाने दिया जाय, यदि यह दिखाअी दे कि पासा अनुकूल पड़ रहा है तो खुदभी वहाँ जायँ। प्रतिकूल दीखा कि पीछेसे पीछेही निकलकर भाग खड़े हो सकें अैसा कपट भावभी रफिअुद्दीन के अुस तरह पीछे रहने में था ही नहीं यह कौन कहे ?

कंटक को आगे आया देखते ही अुस जावरेने आनंदका चीत्कार किया और अुसे अपनी भुजाओं में लिपट लिया। 'ये ही हैं कंटकबाबू ! ' अैसा

अुसने अुसका परिचय ' दोलकाष्ठ ' को करवा दिया । तत्काल द्रोलकाष्ठ ने भी आगे बढ़कर कंटकसे कहा,

" कंटक बाबू, मुझे लगा ही था कि आप होंगे ! मैं यद्यपि गत दो तीन बरसोंसे अिन जावरों में अिस प्रकार नंगा होकर अेक जावरा ही बन गया हूं, तथापि वेषांतर करके मैं कालेपानी के अुपनिवेश में निरंतर घूमता रहता हूं । मैंने आपको अनेक बार देखा है । आपकी अधिकारियों में जो प्रतिष्ठा है और आपका भाग जाने का जो निश्चय है वह भी मुझे मालूम है । सत्तावन के स्वातंत्र्यवीर अप्पाका मैं भी अेक विश्वासपात्र मित्र था । आपको सहायता पहुँचाने के लिअे मरते समय अुन्होंने मुझसे कहा था ! वे अेक गुप्तमंत्र मनुष्य थे ! अुन्होंने मेरा परिचय आपको नहीं दिया था । कारण आपके साथ अुनकी जान पहचान नअी थी और मेरी पुरानी । मुझे कालेपानी परसे भाग जाने के लिअे जैसा साथी चाहिये वैसे आपही हैं ! कंटक बाबू, आपकी बहन कंटकी को मैं आनकी आन में छुड़ाकर ले आअूंगा ! चौंकियेगा नहीं ! मुझे सब कुछ मालूम है —कैसे यह सब मौका मिलने पर सुनाअूंगा । आपके लिअे मैंने जावरों की ओरसे आश्रय दिलाया है । पर आपका जो दूसरा साथी जो भगोड़ा है, अुसे देखे बगैर अुसके विषय में मैं अभी कोअी वचन नहीं देना चाहता । कारण, कारण, कारण,— अुसका जो नाम अिस जावरे के टूटे फूटे अुच्चारणसे मैंने पता चलाने की चेष्टा की है, वह रफिअुद्दीन का सा कुछ बनता है ! ... और कंटकबाबू, मुझे अुस नामसे सख्त नफरत है । पर अुस मनुष्य को देख लेने के पश्चात् यदि वह अिस नामके समानही अधमाधम नहीं निकला तो मैं अुसे भी आश्रय दिला सकूंगा । ठीकसे बताअिये अुसका नाम क्या है ! "

कुछ सुकुचाते हुअे कंटक बोला,

" रफिअुद्दीन ही है । पर वह मनुष्य यहांतक हमारे भाग आने में बहुत अधिक सहायक सिद्ध हुआ है; मेरे लिअे तो कम से कम असे आश्रय—"

कंटक को बीच ही में टोककर द्रोलकाष्ठ बोला, "वह अुस मनुष्य को देखने के बादका प्रश्न है । कहां है वह ?"

जब तक अिधर अिनका यह बोलना चालना हो रहा था तब तक रफिअुद्दीन अपने चारों ओर के लताबंधन छुड़वा कर अुस दूरस्थ वृक्षके नीचे आ ही रहा था। कारण, अुस जावरे द्वारा हंसते हुअे दिया गया भुजबंधन, वह आनंद चीत्कार दोलकाष्ठ द्वारा स्मितमुख से कंटक के साथ किया गया हस्तांदोलन अिन सब लक्षणोंपर से अुसे असंदिग्ध रूपसे यह विदित हो गया कि अब जावरों ने अुनके साथ स्नेह संबंध स्थापित कर लिया है; आगे जाने में अब कोअी विघ्न नहीं अैसी अुसकी दृढ धारणा हो चुकी थी। अितने में कंटकने जोरसे पुकारा, "रफिअुद्दीन आगे आव, जावरे अपने मित्र हो गये हैं!"

रफिअुद्दीन मुक्तमनस्क तथा हंसता हुआ आगे आया। दोलकाष्ठ अुस की और निहार कर देख रहा था। पर रफिअुद्दीन जब नजदीक आया तब अुससे भी अधिक लंबे विशाल देह अेवं शक्तिशाली अुस नग्नकाय दोलकाष्ठ का संत्रस्त भावसे भ्रूकुंचन होने लगा। वह बार बार मिटाने का प्रयत्न करता था किंतु अुसके माथेपर की क्रोध की रेखाअें पुनः पुनः प्रज्वलित हो अुठती थीं। अुफनाते हुअे मद्य की बोतल का काग ताड करके अुड़ने की कोशिश करे तादृश त्वेषसे अुसका देह कहीं अुफन कर अुड़ तो नहीं जायगा अैसा प्रतीत होता था। और अुस बोतलके अुड़नेवाले काग को जिस तरह हम मज़बूती से अूपर से दबाकर धरते हैं, अुस तरह वह ज़मीनपर अपने पैर मज़बूती से जमाकर रखने लगा। अितने में अुसके मन में जिस अेक शंकाने विक्षोभ निर्माण किया था, अुसकी आवश्यकता को पूर्ण करने वाली अेक क्लृप्ति अुसे सूझ गयी। अुसने बलपूर्वक अपने मुँहपर मुस्कराहट लाकर रफिअुद्दीन के साथ प्रेमपूर्ण हस्तांदोलन करने की अिच्छा से अपना हाथ आगे बढाया। "आओिये, आओिये" दोलकाष्ठ के अैसा स्वागतात्मक संबोधन करते ही रफिअुद्दीन की कली खिल अुठी। अुसने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाकर दोलकाष्ठ का हाथ पकड़ा और सिर झुका कर दोलकाष्ठ को प्रत्यभिवादन किया।

रफिअुद्दीन के पंजेकी ओर देखते ही दोलकाष्ठ को जिस निशानी की आवश्यकता थी वह मिल गयी। रफिअुद्दीन के दहिने हाथ की कनिष्ठिका की अेक पोर टूटी हुअी थी। यह रफिअुद्दीन तो वही रफिअुद्दीन है! और तत्क्षण दोलकाष्ठ ने दांत पीसकर गर्जना की,

" तूही ! तूही वह रफिअुद्दीन है ! नीच—!!"

अुस भयंकर औसान और आरोप का अर्थ कंटक को तो क्या अभी रफिअुद्दीन को भी पूरी तरह मालूम पड़ने से पहले ही दोलकाष्ठ ने अपने हाथ में आया हुआ अुद्दीन का हाथ झटाक से एक झटका देकर खींचा, और अेक कुश्तीका पेंच मारकर अुसे पीठकी तरफ से अपने पेटमें कर लिया, अुसकी कमर में बाँये हाथ की अेक मजबूत लपेट मारकर दहिना हाथ अुसकी दोनों टाँगों के बीच धँसाकर अुसे अूपर अुठाया और अेक पछाड़में ज़मीनपर दे पटका। तत्काल अुसकी छातीपर सवार होकर अपने दोनों हाथोंसे दोलकाष्ठने अुद्दीन का गला कसकर दबाया। अब अुद्दीन के ध्यानमें आया कि, अरे, यह अेक अपना पुराना दुश्मन छातीपर चढ़ बैठा है। अुद्दीनने अुसे पहचाना पर तब जब वह अुस की मुठ्ठीमें पूरी तरहसे आ चुका था!

" है! हें! छोड़ो! छोडो!" कहता हुआ कंटक घबराया सा ज्योंही बीचमें आने लगा, त्योंही अत्यंत दृढ़ और निष्ठुर स्वर में दोलकाष्ठ चिल्लाया

" बाबूजी आप थोडा चुप रहिये! यह मनुष्य नहीं है, शैतान है। आपके भले के लिये भी अिसका कांटा निकाल फेंकना चाहिये! मेरा तो यह अेकमात्र जानी दुष्मन है! वह सब पीछे बताअूंगा! बोल, रफिअुद्दीन तू ने तो अपनी ओरसे मुझे जान से मारही डाला था न? यह मेरा पुनर्जन्म। — अब मैं अपनी ओर से, नीच कहीं के, तेरा खात्मा किये डालता हूं!

दांत ओंठ पीसते हुअे विकराल क्रोध से दोलकाष्ठ अपनी वज्र मुष्टियों द्वारा प्रहार पर प्रहार अुस छटपटाते हुअे और बकरेकी तरह चिल्लाने वाले अुद्दीन की आँखोंपर, नाक पर, छातीपर करने लगा। अुद्दीन की आँखोंसे, नाकसे और मुँहसे खून की धारा चिर्र करके अूपर निकलने लगी। वह लथड़ पथड़ होकर बेसुद गिर पड़ा।

जो अपने मालिक का दुष्मन वही अपना दुश्मन, अिसप्रकार जैसे अेक पालतू और अीमानदार कुत्ते को अनुभव होता है और अुसका शत्रुत्वभाव जागरित हो अुठता है, अुसी तरह जो दोलकाष्ठ का दुष्मन वही अपना भी दुश्मन अैसा समझने के कारण अुसे जावरे की भी वैरज्वाला जागरित हो अुठी और

अपना धनुष्य हाथमें लिया और रफिअुद्दीन पर ताना। तथा अुसमेंसे सन सनाते हुअे छूटा हुआ बाण रफिअुद्दीन की छातीमें अिस तरह गाड़ दिया मानों कोअी मेखही गाड़ दी हो ! रफिअुद्दीन जहांका तहां ठंडा हो गया !

तत्क्षण दोलकाष्ठ अुस अघोरी संतोषके आवेशमें कंटक की ओर मुड़कर बोला,

"कंटकबाबू, सुनिये, मैंने अिस रफिअुद्दीनको यों बकरेकी तरह मुक्कों से कुचलकर क्यों मारा ! आपको लगता होगा कि मैं ही आततायी हूं ; पर अिस अुद्दीन को जबसे आप जानते है, अुससे भी बहुत पहले से मैं जानता हूं। अिसने अिसी तरह गला घोंटकर कितनों ही की जानें ली हैं। यह पहले अेकबार कालेपानी पर आजन्म कैदी था। अुस समय मैं भी कैदहीमें था। मुझे लकड़ियाँ भरकर भेजनेवाली नौका पर काम मिला था। अुस कारण नौकानयन की कलामें मैं खूब निष्णात हो गया। यह मेरे हाथके नीचे लकड़ी जमादार था। आगे चलकर हमने भाग जाने की गुप्त अभिसंधि की। अुस साहसमें अिससे मुझे सहायता मिली। अिसके पास नहीं थी दमड़ी, और मेरे पास थी हजार दो हजार की रोकड़। मैं जिस नावपर काम करता था, वही नाव अेकदिन मौका पाकर हमने हाथमें ली और रातोंरात समुद्रमें छोड़ दी।

"वायु अनुकूल था। हम भगोड़े समुद्रमें अच्छे रास्ते पर आ लगे। अैसे मौकेपर अिसने मेरे पास की सारी रकम हथियाने की दुष्ट भावना से, हालांकि मैंने अिसका कुछ भी बिगाड़ा नहीं था, तो भी अिसने मेरा घात करने का निश्चय किया। मैं जब अेकबार, अेक तख्तेपर नाव के किनारेपर अिसकी तरफ पीठ किये खड़ा था तब अिसने अुस तख्तेको अकस्मात् अुलटा कर अुसके सहित मुझे भरे समुद्रमें धकेल दिया। मैं ज्योंही अुस नाव को फिर से पकड़ने के विचार से गया, त्योंही अिसने चप्पूका डंडा अुठाकर मेरे सिर पर दे मारा। मैं चक्कर खाकर पानी में गोते खाने लगा, डूब गया। नाव झपट्टे से आगे निकल गयी। मैं डूब गया।

"पर अद्भुत योगायोगसे मैं ज्योंही पानीके अूपर आया त्योंही लकड़ीका तख्ता मेरे हाथ लगा। अुसे पकड़कर मैं अपनी जान बचानेकी भरसक चेष्टा करने लगा। अुसी बीच जावरों की अेक बड़ी 'डुंगी' आगे निकलकर मेरे समीप आयी। अुन जावरोंने अपनी नौकामें मुझे डाल लिया और अिस तरह

मेरी जान बचा ली। पर अिसके विचारसे तो मैं मरही गया था । – आगे अिसका क्या हुआ वह मुझे अिस क्षणतक मालूम नहीं था । अब तो अिसका नाम सुनतेही, और अिसे प्रत्यक्ष अिस जगह देखतेही, यही वह नीच है, यह मैंने पहचान लिया । अिसने मुझपर तथा अन्य लोगों पर जो अत्यंत बीभत्स स्वरूप के अत्याचार किये हैं अुनका मैंने आज अिकठ्ठा ही बदला चुका दिया है। अब आप मेरे काम को ठीक बतायें या न बतायें यह आपकी मर्जी पर है।

" तुमने ठीकही किया है । तुमने अिस नीच को अब जिस तरह मारा है, अिसी तरह और तीन बार मारा होता तब भी मैं यही कहता कि, आपने ठीक ही किया है ।—अितने अिसके जघन्य अपराध हैं ? और मैं अुन्हें अच्छी तरह जानता हूं । पर जो मुझे स्वयं करना था, किंतु परिस्थिति वश कर नहीं पाया ,वही तुमने किया है ! मेरे पैरमें गड़ा हुआ कांटा, जिसे मैं नहीं निकाल सका अुसे तुमनेही निकाल दिया है । अुसके कारण मेरी अग्रिम योजना में जो कठिनाअियाँ न पेश होती वे यदि पेश भी हो जाय तो भी अब मैं अुनकी चिंता नहीं करूंगा ! "

"नहीं, नहीं, यह यदि रहता तो आपकी अग्रिम योजना में कठिनाअियाँ निश्चित ही अुपास्थित होती । बहुत करके, मेरी तरह ही यह आपका भी घात करनेमें कसर न रखता । वह संकट अब अिस अधम सर्प के अिस प्रकार कुचले जाने से नष्टप्राय हो गया है । आपकी अग्रिम योजना अब अधिक निर्विघ्न हो गयी है, यह मैं शीघ्रही आपको दिखा दूंगा। मैं कौन–"

" हो, वही थोड़ासा पता चलाने की मुझे अुत्कंठा अेवं आवश्यकता है।

" पर मेरी संमति यही बात आप मुझ से न पूछें और मैं न बताअूं कारण आप अविश्वासी हैं यह नहीं; स्वर्गवासी अप्पाजीने आपके चारित्र्य के संबंध में जो प्रशस्तिपत्र दिया है वही अिस शंका निर्विवाद निराकरण है। पर अंदमान के जघन्य अपराधी जगत् में अुन्हीं अपराधियों के सहकार्य से कालेपानी से भाग जाने जैसे प्राणांतिक अभिसंधि में जिसे पड़ना हो अुसे दो बातें छोड़ देनी चाहिये । अेक बात यह कि काम के लिअे जितनी अपरिहार्य हो अुससे अधिक खुदकी पूर्वपीठिका दूसरों को बताना तथा दूसरी बात है प्राणोंका मोह ! –अिन दोनों बातों का त्याग आवश्यक है

यह मैंने अनुभव के आधार पर निश्चित कर लिया है। आपकी जितनी आवश्यक है अुतनी पूर्वपीठिका मैंने पता चला ली है। मेरा नाम दोलकाष्ठ है अितनी मेरी पूर्वपीठीका आपको प्रस्तुत कार्य के लिअे पर्याप्त है। जैसा जैसा प्रसंग आता जायगा वैसे वैसे मैं अपने आपही अपनी अन्य जानकारी आपको थोडी थोड़ी करके बताता जाअूंगा। अब पहले आप जावरों की ओर चलिये। राजा नानकोबी मेरी आपके प्रति अनुकूल संमति होने के कारण स्वयं आपकी मुलाकात के लिअे अुत्सुक हैं। हां, पर आपके पास अेक बंदूक, कुछ गोला बारूद और पुलिस के कपड़े भी थे न? यह जावरा कहता था।"

" हैं न, पर मैं अेक वजह से अुन्हें छिपाता रहा हूं। जावरे हमारे हाथों में अुस प्रकार के शस्त्र देख कर कहीं विचलित न हो जायें! और वे वस्तुअें मैं अपने ही हाथों में रखता चला आया हूं।—अिस अधम अुद्दीनपर अपने गूढ अविश्वास के कारण!"

" पर सच पूछिये तो, अुस भाग जाने के काम के लिअे जो वस्तु अत्यावश्यक है, और जिस वस्तुका मेरे समीप अभाव है अैसी वस्तु आपके समीप है, यह सुनकर ही मुझे आपके सहकार्य का अितना अधिक आकर्षण प्रतीत हुआ! जाअिये, पहले वे वस्तुअें लाअिये अिधर!"

पत्तों के ढेरमें छिपाअी हुअी अुन सब वस्तुओं के कंटक द्वारा वहां लाये जाते ही दोलकाष्ठ पहले पहल अुस बंदूक पर अिस प्रकार टूटा, जैसे अेक बुभुक्षित व्यक्ति किसी पक्वान्नपर टूट पड़ता है। और बड़ी शानसे वह बंदूक अुस नग्नकाय वीर ने अपने कंधेपर रखी, आगे हुआ और बिलकुल सैनिक की अदा से कंटक को हुक्म दिया,

" चलो, आव मेरे पीछे पीछे!"

" वाह," कंटक हंसा, "बन्दूक के स्पर्श समकाल ही आपके पैर भी किसी सैनिक की भांति टपटप करते हुअे पड़ने लगे हैं। आपके शरीर में किसी सैनिक का संचार हो गया हो अैसा प्रतीत होता है।"

" किसी सैनिक का काहे को? मैं स्वयं अेक सैनिक ही तो था पहले! मैंने लड़ाअी देख रखी है। बाबूजी, प्रत्यक्ष रणांगण में लड़ा भी हूं मैं.....!

पर मुंहसे अकस्मात् निकली हुअी अपने पूर्व वृत्तांत की अितनी जानकारी भी अधिक हो गयी अिस भावना से ही कदाचित् दोलकाष्ठ अेकाअेक चुप हो गया और कंटक तथा जावरे के अिस छोटेसे सैन्यका अग्रणीत्व स्वीकार करके किसी सेनानी की भांति वह नानकोबी की अुस अरण्यक राजधानी पर अभिमान करने के लिअे चलने लग गया!

—वह कौन ?—पुलिस ? : : : : २०

स्त्रियों के जेलखाने की रसोअी वाली छपरी में अेक बड़ी भारी साग भाजी पकाने की 'डेग' के नीचे आग सरकाती हुअी कंटकी खड़ी थी। कैदी स्त्रियोंके वेष के अनुसार अेक घुटनेतक का मोटा झोटा लुगरा, सिर में हफ्तों हफ्तों तक तेल नहीं, कंधी नहीं, सर्वथा अमंगल और नीच कैदी स्त्रियों का सहवास, अिन सब कारणों से बालों म जुअें भरी हुअीं, धगधग करने वाली—बड़ी बड़ी भट्टियों की आंच में लगातार श्रम करते करते धूम्रवर्णाक्त अेवं स्वेदमलीमस शरीर, पर अुस स्थिति में भी मौलिक सुभगता लिये हुअे वह युवती कंटकी, मालती अुन अग्नियों द्वारा प्रज्वलित बड़ी बड़ी भट्टियों के मध्यभागमें पंचाग्नि साधन में शोभायमान मूर्तिमती तपस्या के सदृश सुहा रही थी।

कम अज़ कम अुसके सामने अुस समय खड़ी हुअी तथा अुसकी ओर सहृदयतापूर्ण कौतुकसे विहारती हुअी अनसूया जमादारनी को तो वह कंटकी अुसी प्रकार शोभायमान अवस्थामें दृष्टिगोचर हुअी!

वहाँ अुस समय अेक और कैदी स्त्री काम कर रही थी। वह जब आटे की थैलियाँ लाने के लिअे बाहर चली गयी तब कंटकी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिअे अनसुयाने चुटकी बजायी। कंटकीने अूपरकी ओर देखा, थोड़ी आगे बढी, अिधर अुधर अच्छी तरहसे देखा, अनसूयाके हाथमेंसे झटपट अेक चिठ्ठी ली और लकडियों के ढेर की आड़ में जा छिपी। अनसूया दरवाजे ही में खड़ी रही, ताकि कोअी अंदर न आ सके। अेक दो मिनिट ही में कंटकीने वह चिठ्ठी पढ़ डाली आगमें फेंक दी; अनसूयाने सिर्फ गर्दन ही के संकेत से पूछा, 'काम हो गया न?'

कंटकी ने भी गर्दन ही के संकेतसे अुत्तर दिया, 'हाँ!' तब शीघ्रही अनसूया वहांसे चली गयी। कंटकी से अपना कोअी स्नेहसंबंध है अिसकी किसी को शंका तक न आये अिस ख्याल से आजकल अनसूयाने कंटकी के साथ बोलना कतअी छोड़ दिया था। अन्य कैदी स्त्रियों से वह जितना बोला करती थी, अुतना भी वह कंटकी से नहीं बोलती थी। कामकाजके मामलों में भी कंटकी का अपने साथ कोअी संबंध नहीं आने देती थी।

कंटकीने वह चिठ्ठी पढ़ी, अुसका हृदय किसी उत्कट आशाके अुद्रेक से तथा साहस कार्य की भीति से धड़कने लगा। अुसका शरीर अुस कैदखाने में था। पर मन वहांसे अुठाकर कहीं अन्यत्र पहुँचा दिया गया है, अैसा अुसे प्रतीत होने लगा। वह चिट्ठी कोअी भयानक किंतु शुभ सूचना अुसे दी गयी थी। अुस सूचना के अनुसार अुसको जो कुछ करना था वह किस तरह पूर्ण किया जाय, अिसी अुधेड़बुनमें वह पड़ गयी। क्या करना है, कैसे करना है, अिसे वह मन ही मन अंकित करती जाती थी। अिस कार्य में अणुमात्र भी गलती न हो अिसके लिअे जो कुछ आवश्य करणीय कृत्य थे अुनका क्रम वह ठीक ठीक बांधती जाती थी। तत्रापि यदि दुर्दैव से अुस क्रम में कोअी त्रुटि आ गयी, तो अुसे वर्तमान संकटकी अपेक्षा भी अनेक गुने अधिक भारी संकट में पड़ जाना होगा, अिस कल्पना के आते ही वह बीच बीचमें थर्रा भी अुठती थी। पर सुदैव से यदि वह कार्यक्रम व्यवस्थित रूपसे पूरा हो गया तो?—केवल चौबीस घंटोंके बीच में ही सुखके स्वर्ग में पैर और किशन के गले में बाहुपाश!

अुसके मनमें यह सारा तुफान चल रहा था। पर अुसका व्यवहार जेलखाने की घड़ियाल की तरह, जेलद्वारा निर्धारित नियमोंके अनुसार व्यवस्थित रूपसे चल रहा था। सारे कैदियोंका जीमना हो गया। दो पहर के समय नित्य नियम के अनुसार रसोअी विभाग की स्त्रियों को मिलने वाली छुटी में कंटकी थोड़ी देर आराम से सुस्ताने लगी। पर अुसका मन बुरी तरह बेचैन था। क्या होगा, कैसे होगा,—ये चिंताअें अुसे खाये डाल रही थीं। वह बार बार देखती कि अनसूया जमादारनी आ रही है या नहीं।

घड़ी ने तीन बजाये, अुसे लगा कि चारही बज गये हैं। अुसने सोचा कि अब बाहर कामपर जानेका अुसका समय हो आया। पर जब मालूम पड़ा कि अभी तीन ही बजे हैं, वह थोड़ी निराश हो गयी और फिर नीचे बैठ गयी। अितने में सचमुच के चार बज गये। अनसूया जमादारनी ने जेलर के हुक्मके मुताबिक 'कंटकी' कहकर अुसे पुकारा। सबके सामने कंटकी को आपने सांझ के कामपर बाहर जानेकी आज्ञा मिली।

कैदियों के लिअे कैदखाने से बाहर अेक प्रेमोद्यान बनाया गया था। वहां जाकर झाड़ने बुहारने का काम कंटकी की ओर था। कंटकीका चाल-चलन अच्छा है यह देखकर वह काम जेलरने अुसीके सुपूर्द किया था। वह हररोज़ अुस प्रेमोद्यान में जाने के लिअे अिसी प्रकार जेलकी फाटकसे बाहर चली जाया करती, सांझके झाड़ने बुहारने का काम खत्म हो चुकने पर जब प्रेमोद्यान बंद हो जाता तब वह फिर अुस फाटक के भीतर आकर कैदखाने में खुदभी बंद हो जाया करती थी। पर आज——?

आज अुसका निश्चय था कि कैदखाने से बाहर निकल आने के बाद अब कभी अंदर वापिस नहीं जाना। चिठ्ठी में जैसा लिखा था अुस प्रकार भाग जाने में सफलता मिल गयी तब तो ठीक है ही, न मिली तो तत्काल पेट में छुरा भोंक कर अपने आपको समाप्त कर लेना है। बंधनमुक्त तो हर हालत में होना है, अिस फाटक से अब सजीवावस्था में तो भीतर नहीं जाना है, यह अुसका पक्का निश्चय हो गया था। अुसने मन ही मन कहा, "आज मेरे आजन्म कारावासकी सज़ा यहीं समाप्त हो गयी न!" आज जब वह प्रेमोद्यान की सफाअीके लिअे झाड़ू लेकर निकली थी, तब अुसके साथ ही रसोअी घरका अेक छुरा भी छिपाकर ले लिया था। अुसे अुसने अेक बार फिर हाथसे टटोलकर देखा। जब वह फाटक से बाहर निकल रही थी तब अुसने अपना चेहरा, अपना व्यवहार अैसा कुछ भोला भाला और निरपराध व्यक्ति का सा बना लिया था कि किसी पहरेदार को अुसकी तलाशी लेने की आवश्यकता तक महसूस न हो। अनसूया अुस समय कंटकी को दूरसे झांककर देखने तक के लिअे वहां नहीं आयी। अपने स्वप्न तक में वह मामला नहीं था, यह आगे चलकर

वह सिद्ध कर सके अिस हेतुसे अनसूया किसी अन्यही काम में तल्लीन है अैसा बहाना बनाने की चतुराअी दिखा कर जेलखाने के बीचोंबीच बने हुअे चौक में कभी की चली गयी थी ।

जब अच्छे चालचलन वाले स्त्री पुरुषोंको विवाह की अनुमति मिल जाती तब वे कालीपानी के कैदी अपनी पसंदकी जोड़ी का चुनाव करने के लिअे अुस बागमें आया करते थे । वे हररोज़ की तरह अुस दिनभी वहां जमा होने लगे, आपस में बात चीत करने, अुठने बैठने में मग्न हो गये । झाड़ना बुहारना हो चुकने के बाद कंटकी भी अुन लोगों के बीचमें फिरने लगी । पर अुसका चित्त तो सारा अुस बागके सामनेसे जानेवाली सड़क की तरफ केंद्रित था । पांच बजे । पर अभीतक जो आदमी अुसे चाहिये था, वह सड़क पर दिखाअी ही न दे । वह बेचैन हो गयी । आँखें फाड़ फाड़ कर देखने लगी । पांच के बाद का अेकअेक मिनिट अुसे अेक अेक घंटेकी तरह अनुभूत होने लगा । सव्वा पांच हो गये !— वह कौन ?–पुलीस ?

हां, हां! पुलिस ही है वह । पर कंटक कहां है ? सड़कपर चिट्ठी में लिखे अनुसार पुलिस तो दीखा, पर कंटक ?

अितने में अुस पुलिसने स्थिरीकृत संकेत के अनुसार हाथ हिलाया । कंटकी झटसे प्रेमोद्यान से बाहर निकल कर सड़क पर आयी । वह पुलिस निःशंक होकर सामने आया और अुसने कंटकी का हाथ पकड़ लिया । अुस स्पर्श से कहिये, अथवा समीप आनेके कारण निरखकर देखने से कहिये, पर कंटकीने तत्काल पहचान लिया कि, यह पुलिस कंटक ही है ! अुसके पीछे ही अेक अध–गोरा, अूंचा पूरा किंतु अुसके लिये सर्वथा अपरिचित अेक और सिपाही खड़ा था !

पहला पुलिस कंटक था, दूसरा ' दोलकाष्ठ ! ' अुन दोनों ने पुलिस का भेस बना, कंधेपर बंदूक, कमरमें सरकारी पुलीस के पट्टे धारण किये, बिलकुल पुलिसवालों की ठसक में सामने आकर कंटकी का हाथ पकड़ कर अुसे अूंची आवाज़ में आज्ञा दी, " तुम्हें चीफ़ कमिशनर साहब ने बंगलेपर बुलाया है ! हम ले जाने के लिअे आये हैं ! " कंटकी के पीछे पीछे अुस बागका पहरेदार भी अुनके पास आ रहा था । अुसे

अुन दोनों पुलिसवालोंने कहा, ' देखो अिस औरत को हम चीफ कमिशनर के बंगलें पर ले जा रहे हैं !––क्या कहा ? जेलर से पूछना होगा ? वह हम पहले ही पूछ चुके हैं। चीफ कमिशनर की अपेक्षा जेलर कोअी बड़ा अफसर नहीं है। तुम्हें जादा बात करनी हो तो हमारे नंबर नोट कर लो ! चल, कंटकी, आगे चल ! '

अुन पुलिस वालों की वह सख्त और भीतिशून्य ठसक देखकर वह पहरेदार ठंडासा पड़ गया। अिनकार करे तो कैसे ? क्योंकि कमिशनर ही तो है अंदमान की मुख्य सरकार ! ये अुसके पुलिसवाले हैं ? अिनसे अगर ' हां ना ' करते हुअे तू तू मैं मैं पर अुतर आयें तो अपने को ही गोता खाना पड़ जायगा। अिस शंका से अभी वह पहरेदार अुधेड़बुन ही में था, त्योंही पुलिसवालोंने कंटकीको आगे करके हुक्म दिया, 'चलो !' अुनके हुक्म की राह न देखते हुअे कंटकी भी पहले ही से रास्ते पर चलने लग गयी थी ! पांच मिनिट के अंदर अंदर वे तीनों अेक मोड़पर आकर अेक दूसरे ही रास्तेसे चले भी गये !

वह पहरेदार अुनके ओझल होने तक अुनकी ओर देखता रहा। फिर आधेपौने घंटेके बाद अुस बागको ठीक समयपर बंद करके वह जेलखाने में चला गया। सांझको जब कैदियोंकी गिनती हुअी तब अेक स्त्री कैदी कम ! और वह भी कौन, तो कंटकी ! जेलरने पहरेदारको बुला भेजा और डांटकर पूछा। अुसने भी तनकर जवाब दिया,

" चीफ कमिशनर साबको पूछिये। मेरी क्या कसूर ! पोलीस हपसरने कंटकी को पकड़कर अुसके साथ चल दिया ! "

चीफ कमिशनरके बंगलेपर कैदियोंके लिअे अनेक बार अचानक से बुलावा आता है। हिंदुस्थानका नया वारंट, किंवा अन्य किसी प्रकारका छुटकारा आदि कामकाजमें अिस प्रकार हमेशा हुआ करता है। पर जेलरसे पूछे बगैर अुधरसे अुधर ही हथियारबंद पुलिस को भेजकर अेक तरुण स्त्री कैदीको पकड़ मंगवाना तो नियमके सर्वथा विरुद्ध ! अत: जेलरने कमिशनर के बंगलेपर तत्काल आदमियों को भेजा। नाव में बैठकर अुस बंगले तक जाना होता था। अुतनी दूर जाकर वे आदमी जब रातको वापिस

आये तब अुन्होंने कमिशनरका यह संदेसा सुनाया कि, "हमारी ओरसे कंटकी नामकी किसी भी स्त्री कैदी के लिअे बुलावा नहीं भेजा गया!"

निश्चयही से किन्हीं दो पुलिसवालोंने अुस तरुण स्त्री कैदी को भगाया होगा! यह बात स्पष्ट होतेही जेलर गड़बड़में पड़ गया! जेलखाने की 'संकट घंटा' अेकदम जोर जोर से बज अुठी। जिधर तिधर सिपाहियोंकी दौड़धूप, खोज और नाकेबंदी का काम शुरू हुआ। विशेषत: पुलिस की बैरकों में वे दोनों पुलिसवाले कौन हैं; अिसकी सख्ती से छानबीन होने लगी। कारण, अुस लड़की को पकड़कर ले जानेवाले दो पुलिस के सिपाही थे अिसी के सबूत चारों ओर से मिलते चले गये। अनेक राहगीरोंने बताया कि रास्तेपर आते जाते हमने दो हथियारबंद सिपाहियों को अेक लड़कीको लेकर जाते हुअे देखा है, पर वे चूंकि पुलिसवाले थे अत: कोअी सरकारी काम होगा अैसा समझकर हमने अुधर बहुत ध्यान नहीं दिया। रातभर खोज होती रही, पर वह पुलिस कौन था अिसका कुछ पता ही न चले! अुस लड़कीको लेकर वे गये किधर यह समझ ही में न आये!

अिस रीतिसे कमिशनर की ओर से विवरण प्राप्त कर के दूत रातको जबतक वापिस न आये और कंटकी को भगाया गया है यह जबतक पक्का नहीं हुआ तबतक कंटक और दोलकाष्ठको अपना काम पूरा करने के लिअे चारपांच घंटे निर्विघ्न रूपसे मिल गये। अुस समय तक किसीने अुनका पीछा तक नहीं किया था। पुलिसवालोंका भेस बनाने में अुन्होंने जो चतुराअी दिखायी अुसका अुन्हें अच्छा अुपयोग हुआ। कारण, सरकारको जो संदेह हुआ वह भिन्न ही दिशा का हुआ। जिस दिशामें खोज नहीं करनी चाहिये थी, अुसी दिशा में खोज होने लगी। अिसका कंटकने पूरा पूरा फायदा अुठाया। जब पिछली दफा जावरोंने अंग्रेजोंपर धावा बोला था, तब जो अंग्रेजी पोलिस का जमादार मार डाला गया था, अुसकी बंदूक, कपड़े पट्टे वगैरे कंटक ने निकाल लिये थे। दोलकाष्ठ भी अिसी तरह कहीं से पुलिस के कपड़े, बंदूक, पट्टा वगैरे झपट लाया था। अिस मौके पर अुस वेषके कारण अुनके साहसी गूढोद्यमका आरंभ तो निर्विघ्न रीतिसे पूर्ण हो गया।

दोलकाष्ठ जब कैदसे भाग गया था, तब असके पकड़ने के संबंधमें हुक्म तो जारी हुआ था ही। किंतु अिस पुलिस के भेसके कारण, छद्म वेष में अुस अंदमान के सरकारी अुपनिवेश में वह घूमता रहा था, और ज्योंही आवश्यकता होती त्योंही वह जाकर जावरों की राजधानीमें अपने को छिपा लेता था। सत्तावन के स्वातंत्र्य युद्ध के वीर वृद्ध आप्पाजी के समीप भी वह अिसी छद्म वेषसे नित्य आया जाया करता था। कंटकको जब जावरोंने आश्रय दिया तब दोलकाष्ठने अुसे भी अिस विद्यामें पूर्ण प्रवीण बना दिया था। कंटककी बहन कंटकी को जेलखाने से छुड़ाने का यह षड्यंत्र दोलकाष्ठने ही रचा था। अुसीने कंटक के साथ अिस छद्म वेषमें अनसूयाके घर जाकर मुलाकात की थी। कंटकने अुसके समीप धरोहरके तौरपर जो हजार डेढ़ हजार की रकम रखी हुअी थी वह वापिस ले ली थी और कंटकी को जेलखाने में जाकर पकड़ाने के लिअे अुस षड्यंत्रसे संबंध रखनेवाली गुप्तचिठ्ठी अनसूयाके हाथों भिजवायी थी। अुस चिठ्ठीमें लिखी विषय-वस्तु के आधारपर ही कंटकी निर्भय होकर बागसे निकलकर सड़क पर चली आयी थी। और छद्म वेषमें आये हुअे अपने अुन साथियोंके साथ आजन्म कारावास की लौहशृंखला को तोड़ फेंकने का यह प्राणांतिक साहस कृत्य किया था।

कंटक और दोलकाष्ठ के साथ कंटकी जो निकल भागी सो अुसे सड़क छोड़कर शीघ्र ही अेक वक्र मार्ग से समुद्र तटपर लाया गया। वहाँ अेक 'डुंगी' तय्यार ही थी। वृक्ष की अेक बड़ी भारी जड़ को काटकर अुसे मध्य भाग में खोद कर नाव की तरह खोखली बनाकर, नाव का ही आकार देकर, अुस अखंड द्रूममूल का जो अेक टोकरासा वहां के लोग बनाते हैं और जिसकी सहायता से वे लोग अत्यंत द्रुतगति से जलप्रवास करने में निष्णात हो जाते हैं, अुस अत्यंत प्राक्कालिक नाव को वहाँ 'डुंगी' कहा जाता है। नौका विद्या में मनुष्य द्वारा किया गया वह प्रथम आविष्कार है। जावरे अिस प्रकार की डुंगियों में बैठ कर समुद्र में सफर करने में खूब प्रविण होते हैं। अुसी प्रकार की अेक डुंगी समुद्र के अेक दुर्लक्षित अेक वक्रमार्गोपगम्य तट प्रदेश पर कंटकने तय्यार रखी थी। कंटकी को लेकर वे पुलिस के भेसवाले दोनों शस्त्रहस्त व्यक्ति डुंगी में बैठ गये और डुंगी

भी द्रुतगति से समुद्र में प्रविष्ट होने लगी। तटपर रहनेवाले जिन कुछ थोड़े से लोगोंने अुस डुंगी को अुस प्रकार अेक तरुणी को लेकर दूर जाते हुअे देखा, अुन्हें भले ही वह दृश्य बहुत आश्चर्यकारक प्रतीत हुआ हो किंतु चूंकि अुस में शस्त्रहस्त पुलिस के आदमी भी बैठे हुअे थे अतः किसी प्रकार का शोर शराबा करने का ख्याल अथवा साहस नहीं हुआ। थोड़ी ही देर म डुंगी कालेपानी के निर्जनाति निर्जन अेवं निबिडतम अरण्य के अुपकंठवर्ती समुद्र–भाग में प्रविष्ट हुअी।

कंटक के शरीर से अपना शरीर सटाये हुअे कंटकी बैठी थी। अुसे कटक की सगी बहन माननेवाले दोलकाष्ठ को अुस में कोअी वैचित्र्य नहीं अनुभव हुआ। परंतु अुसकी वह मनोहर तनु लतिका और वह मिलनसारी का हंसना, बोलना, बर्ताना आदि देख देख कर दोलकाष्ठ को बार बार यह अनुभव हुअे विना नहीं रहा कि यदि यह युवती मेरे शरीर के साथ भी अिसी तरह सटकर बैठे तो कितना मीठा अनुभव होगा।

वह डुंगी निर्जन और विघ्न विरहित समुद्र भाग में प्रविष्ट होते ही जलौघपर जैसी जैसी सलील वृत्ति से डोलने लगी, वैसे वैसे ही कंटकी का हृदय भी आनंदौघपर सलील वृत्ति से डोलने लगा। पींजरे से छूटे हुअे पक्षी को निस्सीम आनंद तो होता ही है, पर अुस कैदखाने से निकल कर आयी हुअी मालती का आनंद अुस से भी अधिक निस्सीम था। कारण, पींजरे से छूटकर आया हुआ पक्षी जो वृक्ष दिखाअी दे अुस पर जा बैठता है; किंतु अुस के सगे संबंधी तथा मित्र कहलाने वाले अन्य पक्षी अुसे खदेड़ने लगते हैं, अुसे अैसा घोंसला ही नहीं मिल पाता जहां वह निर्भय होकर रह सके। पर आजन्म कारावास के बंधनों से मुक्त यह पक्षी जिस डुंगी में हँस और खिलखिला रहा है, अुसे अुस के अेकमात्र मित्रने, संबंधीने तत्काल अपना लिया है; किशन के प्रणय परिपूर्ण प्रेमव्यवहार में अिस पक्षी को स्नेहमय संगति की मनपसंद गर्मी देनेवाला अेक मधुर घोंसला तत्काल ही मिल गया था! वह पक्षी, वह मालती अुस मुक्तता के अुल्लास में और किशन की संगति में अितनी तल्लीन हो गयी कि वह अुस क्षण के लिअे यह भी भूल गयी कि अुसे कभी आजन्म कारावास की सजा हुअी थी तथा अुस कारावास की कृत्या अब भी अपने चारों ओर चक्कर मार रही है। अब मैं

कंटकी हूं, मालती नहीं अिस को भी भूल गयी। खग्रास ग्रहण के समय जिस प्रकार आकाश में शशिकला विलुप्त हो जाती है, अुसी प्रकार अुस के भीतर की 'मालती' जो विलुप्त ही हो गयी थी, वह 'कंटकी' की अनुभूति के अुस ग्रहण के छूटते ही पुनः पहले जैसी ही सुंदर सुभग अेवं सुखद स्वरूप में प्रकट हो गयी। अुस आनंद के आवेग में मालती मालती ही की भांति पुनरपि हंसने, रूठने, डोलने और बोलने लगी। किशन भी अुसे पुनः किशन ही सा अनुभूत होने लगा। वह 'डुंगी' अुस समुद्र के सलील तरंगों-पर अूंची नीची होती हुअी थोड़ी सी जब अेक ओर को झुक जाती तब अपने को संभालना कठिन हो गया है अैसा प्रणय मधुर बहाना कर के मालती किशन के वक्षःस्थल अपना भार डालकर गिर पड़ती, किशन अुसे अपनी भुजाओं से संभालकर धरते समय आलिंगन कर के पकड़ता ! अैसे स्वच्छंदता के सौख्य का आस्वाद करते करते अुस का नशा ही चढता गया। अुस नशे में अपने चारों ओर अद्यापि विद्यमान छद्मता के आवरण को मालती ने दूर हटा दिया और असावधान अवस्था में बोल गयी,

" किशन ! देख, देख, अुस छोटीसी लहर के अूपर सूर्यकी सांध्यकिरन के पड़तेही गुलाबके फूलोंसे बने हार की भांति वह लहर कैसी सुहाने लगी है देख ! समुद्रके रंगबिरंगी गुलाबोंका हार कैसा रहता है, यह दिखाने के लिअे यह छोटीसी पुष्पमंडित लहर अैसी की अैसी अुठाकर अंदमान के अेक आश्चर्य के रूपमें यादगार के लिअे मांको ले जाकर दिखायी जाय अैसा मुझे लगता है ! अे किशन —"

वह आगे कुछ बोलना चाहती थी की अुतनेही में किशनने अुसकी चिच्ची अंगुली अुसे सावधान करने के खयाल से दबायी । वह भी थोड़ीसे सकपका गयी । कारण, दो बार अुसने किशनको ' किशन ' कह कर ही संबोधन किया था। अेतावता दोलकाष्ठ के मन में सहजही जिज्ञासा अुत्पन्न हुअी और वह पूछने लगा

" क्या ? किशन ! अर्थात् कंटक बाबू का घरका असली नाम किशन था मालूम पड़ता है ! और तुम्हारी मां है अभी ? कहां रहती हैं वे ? कंटक बाबू का असली जैसे किशन है, वैसेही तुम्हारा नाम भी कंटकी न होकर कुछ और

ही होगा ! सचमुच तुम्हारे जैसे पुष्प पक्षी के लिअे किसी फूल किंवा पक्षीका ही सुंदर नाम होना चाहिये !"

दोलकाष्ठ अपने मुँहफट स्वभाव के अनुसार जो अच्छा लगा वह अुद्दंड रूपसे बोल गया। किशन मन ही मन सकपकाया! अपने अज्ञातवासके छद्म स्वरूपको अुतार फेकने योग्य अवस्था अभी आ पहुँची हो अितने कुछ वे अभी संकट के चंगुल से मुक्त नहीं हुअे हैं, अिस बात को वह अच्छी तरह जानता था। विनोदके खुभे हुअे कांटेको विनोदहीके कांटेसे बाहर निकालने के लिअे किशन हंसा।

" देखिये, नाम ही की बात करनी हो तो आपका भी यह 'दोलकाष्ठ नाम पलने ही में रखा गया होगा, और जब मैंने आपसे नाम तथा पूर्ववृत्त पूछा था, तब याद कीजिये, आपने मुझे कौनसा सूत्र सिखाया था! 'कालेपानी' पर से जिन्हें सफलतापूर्वक भागना हो अुन्हें अपना पूर्ववृत्त बताना तथा प्राणों की भीति अिन दो वस्तुओं का त्याग कर देना चाहिये!' ठीक है तब ! अुसी अुपदेशके अनुसार हम भाअी बहन अपना सच्चा नाम तबतक नहीं बताअेंगे, जबतक आप अपने अिस कृतक नाम दोलकाष्ठ का परित्याग नहीं कर देते !"

" अर्थात् आप दोनोंके असली नाम तो ये नहीं हैं; अितना तो आपके बोलने से पता चलता ही है, और आपका नाम तो 'किशन' ही —"

अिस सारे झमेलेको यहीं समाप्त कर डालने के हेतुसे मालती बीच ही में बोल अुठी,

" देखिये, मैं हूँ न, मैं आनंदातिरेकसे थोडी विक्षिप्तसी हो अुठी हूं अपने बचपन के अेक संबंधीका नाम मेरी जबानपर चढा हुआ है, वही अिस समय मेरे मुँहसे निकल पड़ा अपने कंटक भय्या को संबोधन करते समय!"

परंतु अिस भूल की अनुभूति के साथ ही अुसके ध्यान में अत्यंत अनिच्छापूर्वक यह भी आया कि, यह जो छुटकारे का अपरंपार आनंद अपने को हुआ है वह भी भूल ही है, यह छुटकारा क्या है, छुटकारे के लिअे किये जानेवाले प्रयत्न का फलोन्मुख आरंभ है, अंतिम सफलता नहीं है। वह किंचित् सी विमनस्क होकर बैठ गयी।

अुस गंभीर समुद्र पर पक्षी की भांति अुड़ती, बैठती, चलनेवाली वह

डुंगी, वह जलवीचि, वे रंगबिरंगी किरणें, और कारागृहसे छूट आनेकी अुन्मादक अनुभूति आदि ही में वह मग्न थी; पर अब वह आनंद की नौका जिसपर तरंगें लेती हुअी चल रही थी वह समुद्र कितना गहरा है अिस ओर भी अुसका ध्यान गया !

" कितना गहरा है रे यह समुद्र, और कितनी छोटी है यह अपनी डुंगी ! " समुद्रकी भीषण गहराअी की ओर ध्यान देती हुअी विमनस्क मालती किशन से बोली ।

" निःसंदेह, पर अैसी छोटी नौकाअें अैसे महागंभीर समुद्रों को भी तैरकर परली ओर जा सकती हैं न ! " किशनने अुसकी मानसिक स्थिति के लिअे योग्य प्रोत्साहनभरा अुत्तर दिया !

" किती गोड बोलतोस रे तूं " लाड़ भरे हाथोंसे किशन की पीठ पर हलकीसी थपकी देते हुअे मालती मराठी में बोल गयी । अुसे लगा कि, दोलकाष्ठ को मराठी नहीं आती होगी । कारण, अबतक वे सारे अुसी हिंदी में बातचीत कर रहे थे, जिसमें सारे अंदमानी बातचीत किया करते हैं ।

" पण माझ्या पाठीवर तुम्हीं तसंच लडिवाळपणं थोप्टून विचारलं नं, तर मी पण तसंच गोड बोलेन कीं ! " दोलकाष्ठ अपने सैनिक बाने के योग्य अुजड्ड विनोद से मराठी भाषा ही में बोला ! अितना ही नहीं तो कपट शून्य धनिष्ठता के कारण मालतीके पीठपर अुसने स्वयंभी अेक हलकी सी थपकी मारी ।

मालती चौंक कर बोली, " अयँ, आपको भी मराठी आती है ? आपका मूलका घर महाराष्ट्र ही में है क्या ? "

" हां, किसीसे अुसका पूर्व वृत्तांत पूछना ठीक नहीं अिस तरह ! जो कोअी अपने आपही जितना कुछ बतला दे अुतना सुन लेना ही ठीक है ! कंटकबाबू का और हमारा यह प्रस्ताव पहले ही स्थिर हो चुका है ! "

दोलकाष्ठ यह बोल ही रहा था कि अितने में पार्श्ववर्ती सिंधु तट की ओरके पहाड़ पर 'अू ऽ ऽ !' अैसी किलकारियाँ और तालियाँ सुनाअी दीं । पहले ही स्थिरीकृत निश्चयके अनुसार ज्वार भाटे की दृष्टिसे जहां सुरक्षित स्थल होगा वहां अुतरवा लेने के लिअे जावरे अुस बाजू में आकर अिस प्रकार का संकेत करनेवाले थे । तदनुसार वे जावरें धनुष-

बाणसे सज्ज होकर अेक ओटवाळे अुतारके समीप आये हुअे थे। वहां अुस डुंगी के आते ही अुन्होंने कंटकी सहित सबको अुतरवा लिया। सघन अरण्य में से होकर अनेक मोड़ पार करते हुअे, अंधेरा होने से पूर्वही सारे लोग राजा नानकोबी की अुस अरण्यक राजधानी में आ पहुंचे।

जावरे लोग अेक बड़ी सी आग जलाकर अुस समय अुसके चारों तरफ बैठे हुअे थे। अुस आगपर अेक अरण्य शूकर का पूरा धड़ का धड़ अुलटा टांग रखा था। अुनका जब संमिलित शिकार होता है, अुस समय अुस प्राणी को अिस प्रकार आग पर टांगे रखते हैं, और जब वह खूब धूआं खा लेता है, भुन जाता है, तब अुसे वहां से निकाल कर अुसके अुस अध कच्चे मांस के टुकड़े सब लोगों में तकसीम कर दिये जाते है। वह जेवनार खत्म हुअी कि अुस आग के चारों तरफ वे सारे स्त्रीपुरुष मिलजुलकर तथा नग्नावस्था में अपना नृत्य आरंभ कर देते हैं। अिस किस्म की आगें कभी कभी तीन तीन, चार चार जगहों पर भी जलायी जाती हैं और अुनके चारों तरफ जेवनार की तथा नाचकी भी भिन्न भिन्न तीन चार पंक्तियाँ लग जाती हैं। अिन तीनों अभ्यागतों के प्राणांतिक साहस कृत्य में अिस प्रकार सफल होकर वापिस आ जाने के कारण अुनके अिस नियमित कार्यक्रम में अेक भिन्न ही रंग भर गया। वे सारे के सारे अुन तीनों के चारों ओर भिनभिनाते हुअे से जमा हो गये।

अिस में भी जिसका देखो, अुसका ध्यान कंटकी पर! राजा नानकोबी को अिस साहसपूर्ण गूढ़ अभिसंधिका परिज्ञान था ही। अुसके विचारसे ही कंटक और दोलकाष्ठ कंटकी को छुड़ा लाने के लिअे गये थे। अंग्रेजों के अुस कड़े पहारे में से कंटकी को अिस तरह अुठा लाने से तो अंग्रेजों ही का अवमान हुआ और वह भी अपने जावरों के साहाय्य से अेवच जावरों के आश्रित व्यक्तियों के हाथों!--अिस प्रकार नानकोबी को अपना ही गौरव अनुभूत हुआ। अुस विजय की मूर्तिमंत पताका ही बनी हुअी थी वह कंटकी। अतः अुसे देख देखकर भी अुसका जी अघाता नहीं था। पर अुन सब में जावरों की स्त्रियों और बच्चोंकी गड़बड़ का तो कुछ न पूछिये! आगकी अुस प्रज्वलित ज्वाला के प्रकाश में वे अुसे अपनेपनसे देखती हुअीं, हंसती हुअीं, अुंगलियोंके अिशारे करती हुअीं,

भीड़ लगाकर खड़ी रहीं। पर अुसकी अपेक्षा भी यदि किसी वस्तुकी ओर विशेष रूपसे देखने की अुनकी अिच्छा होती थी तो वह भी अुसकी साड़ी !

मालती की ओर वे जावरों की विवस्त्र स्त्रियां निरंतर अिशारे करने लगीं, " यह क्या है ? अुस स्त्रीने अपने शरीर के चारों तरफ यह क्या अभद्र लपेट रखा है ? यों देखने में वह कितनी सुंदर दीखती है ! तब शरमा सकुचा कर अपने को कपड़ों में छिपाती काहे को है ? क्या पहना हुआ है जी, अुसने ? " अैसे नाना प्रकारके प्रश्न वे आपस में पूछ रही थीं।

दोलकाष्ठ ने अुनमें से अेक स्त्री को जवाब दिया, " वह साड़ी है साड़ी ! लुगरा कहते हैं अुसे ! "

यह सुनते ही वे सारी औरतें मुँहपर हाथ रखकर अेकदम खिलखिला पड़ी और नाक सिकोड़ कर बोली, " छी:, औरतें भी कभी क्या लुगरा पहना करती हैं ? कुछ मर्यादा ! "

विवस्त्र रहनेवाली अुन स्त्रियों को स्त्री का वस्त्र पहनना जिस प्रकार स्त्रीत्व के लिअे अशोभा अुत्पन्न करनेवाली अेक अमर्यादा प्रतीत हुअी, अुसकी अपेक्षा भी सौगुना अधिक अुन जावरा स्त्रियों को अपाद मस्तक नंगी तथा निःसंकोच भावसे पुरुषों में अुसी तरह अुठती बैठती देखकर मालती को भी हरदर्जे की शरम महसूस हुअी। अुसने अेक दो बार तो अपनी आंखें ही बंद कर लीं ! तत्पश्चात् नीचे की ओर देखती हुअी खड़ी रही।

राजा नानकोबी के सामने भी अेक सवाल सा खड़ा हो गया। अुसकी रानी फुली ने आग्रह किया कि, " कंटकी जबतक अपने यहां है, तब तक अुसे साड़ी नहीं पहननी चाहिये। अुसके अिस अुदाहरण को देखकर अपनी लड़कियोंको भी यह अश्लील आदत पड़ जायगी ! "

कंटकी पर अुन्हें तरस आता था। अुसकी यातनाओं को सुनकर और अुसकी ओर देखकर सब स्त्रियों को अपना भी अनुभव होता था। पर वस्त्र धारण करने की अिस अश्लीलता से मात्र अुन्हें नफरत महसूस होती थी। अंतमें रानी फुलीने कंटकी की साड़ीके आँचल को थोड़ासा झटका देकर ममतापूर्वक संकेतित किया, " छोड़ दे यह साड़ी और स्त्री को सुहानेवाली विवस्त्रतापूर्वक रहने का शिष्टजनोचित आचरण का पालन कर ! " पर

झटके से अुतरे हुअे आँचल को फिरसे यथा स्थान रखकर मालती ने अुसे और भी मज़बूती से पकड़ लिया !

अब मामला कहीं हदसे बाहर न चला जाय, अिस डर से धोलकाष्ठ बीचमें पड़ा और सब बातों को हंसीपर अुड़ाकर अिस बात का आश्वासन दिया कि, " कंटकी की कपड़े पहनने की जनम की बुरी आदत हैं ! अेकदम अुसमें सुधार कैसे होगा ? दो चार दिनमें सभ्य स्त्रियोंकी तरह विवस्त्र रहने की आदत अुसे भी हर हालत में पड़ जायगी । तब तक शिष्टाचार के विषय में अुसपर सख़्ती न की जाय । केवल पहनने के प्रकरण ही में नहीं अपितु खाने, गाने, नाचने आदिके प्रकरण में भी ! "
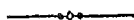
सबकी आँखें भर आयीं : : : २१

" छोड़, छोड़, छोड़ बाण ! निकल भागा देख वह वराह अुस झाड़ी में से ! "

किशनके अिन शब्दों के साथ ही वृक्षपर चढ़कर बैठी हुअी मालतीके धनुषसे सनसनाते हुअे बाणपर बाण छूटने लगे । वह अरण्य वराह जिस झाड़ी में दुबका बैठा था, अुसके पीछेसे जाकर किशन अेक लंबा भाला लिये अुसे ढूंढकर खदेड़नेकी कोशिश कर रहा था । अुस तकलीफसे परेशान होकर अंतमें वह वराह जिस झाडीमें था, अुससे बाहर निकला और वेगसे दौड़ता हुआ आगे जा घुसा। अुसकी अुसी स्थानपर प्रतीक्षा करती हुअी मालती अेक वृक्षपर धनुष्य बाण तय्यार करके बैठी हुअी थी । जावरोंके जंगलमें रहते हुअे जावरा स्त्रियाँ जिस तरह अपने पुरुषोंके साथ शिकारके लिअे जाती हैं, अुस तरह वह भी प्रतिदिन किशनके साथ शिकारके लिअे जाने लग गयी थी । और तीन चार महीने के अुस वन--निवास काल में धनुष्य बाणके प्रयोग और शिकारके साहस भरे काममें जावरा स्त्रियोंकी भांति ही वह भी, अब प्रवीण हो चली थी । आज वराहकी मृगया भी अपने आपही करनेका आग्रह अुसने किया था जिसका पहला पाठ किशन अुसे दे रहा था । वराहको खोजता खदेड़ता बाणोंकी प्रहार-भूमि में, पेड़पर चढ़कर

मालती जहां अुसकी टोहमें बैठी हुअी थी अुस दिशामें, अुसे लाकर छोड़नेका काम किशनकी तरफ था। अुसने अुसे बहुत अच्छी तरह पूरा किया। और वह वराह ज्योंही बाहर निकला त्योंही मालतीने अुसपर शरवृष्टि करनी शुरू कर दी।

अुसके पहले दो बाण अुस बलिष्ठ वराह को तृण--शरों (कुशल्य) की भांति ही चुभे; अुनकी पर्वाह न करता हुआ वह पशु अुसी प्रकार दौड़ता रहा। अितनेमें मालतीने अपने भीतर की सारी शक्ति लगाकर अेक आखिरी बाण छोड़ा जो सीधा जाकर अुसकी कोखही में जा धसा। थोडा सा लड़खड़ाता हुआ वह वराह ज्योंही कुछ और आगे बढ़ा त्यों ही धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।

यह देखतेही मालती पेड़ परसे नीचे अुतरी, दौड़ते हुअे आनेवाले किशनको अुसने बीचही में ठहरा दिया और अपने शौर्य की प्रशंसा अुसके द्वारा अधिकारपूर्वक प्राप्त करनेकी अिच्छा से बोली,

"क्यों आज की है या नहीं मृगया मैंने प्राणोंपर आ बीतनेवाली ?"

"वृक्षपर बैठकर तो की है !" किशन हंसा ! "जिसने पैदल पीछा करके हिंस्र प्राणीको लाकर तेरे सामने खड़ा कर दिया, प्राणोंपर आ बीतनेवाला काम तो अुसने किया है ! केवल सुरक्षित रूपसे वृक्षपर बैठने का काम ही तूने किया है।"

"प्रत्येक रानी मृगया करते समय अपने साथ खदेड़ने वाला आदमी तो रखती ही है। तू अेक अच्छा खदेड़ने वाला आदमी है, अितना कह ले तेरी मर्जी हो तो ! पर जिसका बाण, शिकार तो अुसीका है ! अिस वराह की कोखमें घुसा हुआ बाण मेरा है, अतः शिकार भी मेरा ही हुआ।"

"कोअी पर्वाह नहीं, वह पूरा का पूरा जंगली सूअर तू अकेली ही खा डाल, हो गया न ! और मै तो अब शाकाहारी ही होनेवाला हूं। जिसे जंगली सूअरके गुण अभीष्ट हों वह सूअर खाय ? मैं केले आलू--"

"ठीक. बिलकुल ठीक ! जिसे अपनी खोपड़ी में आलू ही आलू भरने हो वह खाय आलू !" मालतीने अुसे बीच ही में टोका।

अितने में 'अू ऽऽ अू ऽऽ' करके जावरोंकी हांक मारने की किलकारी

सुनाअी दी। मुड़कर देखा तो अेक जावरा, जो किशनके हाथ के नीचे काम करता था, दौड़ा दौड़ा आता हुआ दिखाअी दिया। आते ही अुसने रोनेकी सी आवाज़ निकालकर, आँखें पोंछकर अेक दो शब्द बोलकर, जो संदेश पहुँचाया अुसका संपूर्ण वाक्य यों बनता--

"बाबूजी! चलिये चलिये, आपको राजा नानकोबी रोने के वास्ते बुला रहा है!"

अुसके अुस भावार्थको समझ कर किशनने मालतीको शब्दोंमें बतलाया, "सुना? नानकोबी, मुझे रोने के वास्ते बुला रहा है!"

"छी:, अिसका क्या मतलब? तुझे रोने के लिअे बुला रहा है अिसके क्या मानी है? अुसे रोना हो तो वह रोये जी भरकर!"

"अरी, मगर अुसके अकेले के रोनेसे काम कैसे बनेगा? अुसके संबंधियों में से जो अेक जावरा कल तक मृगीसे बीमार पड़ा था न, वह मर गया है। अुसके पीछे बचे हुअे लोग जितनी अधिक संख्यामें अिकठ्ठे होकर जोर जोरसे रोयेंगे अुतना ही अुस मृत व्यक्तिका आत्मा,-अुसका भूत-संतुष्ट होगा; अन्यथा वह जीवित सगे संबंधियों को कष्ट देता रहेगा, अैसी अिन लोगोंकी धारणा हुआ करती है। अत: कोअी मर गया तो वे सबको 'रोने के लिअे चलिये' कहकर आमंत्रण देते हैं। हंसती क्या हो, अपनों में भी तो पहले अैसी ही धारणा थी। आज भी हमारी अनेक जातियों में दाम देकर लोगोंको रोने लगाया जाता ही है न?

मोल देके रोदनार्थ लोगोंको लगाया है।
अश्रु हैं न, पीर है न, मोह है न माया है॥

क्रिश्चियन-मुसलमानोंमें भी मुर्दों को गाड़कर, वे फिर अुठेंगे अिस ख़याल से अुन्हें जतन करके रखना चाहिये अैसी जो धार्मिक धारणा है, वह भी जावरोंकी अिस परलोक विद्याका ही सबक लेती रही है; नहीं क्या? जावरे तो मृतव्यक्ति सिर्फ रोना ही पर्याप्त समझते हैं; पर पहले मिश्रसे लेकर जापान तक के अनेक राष्ट्र अैसा मानते थे न कि, अेक आदमी मर गया तो अुसका साथ देने के लिअे अुसके जीवित सगे संबंधी भी अपने आपको गाड़ लें और पर लोक पहुँचें! मरे हुओं की जीवित स्त्रियाँ, नौकर, दासदासी वगैरह को भी अुन्हीं की कब्रमें गाड़ दिया करते

थे ! अच्छा–" अुस जावरे की तरफ मुड़कर किशन बोला, "जा, और नानकोबीसे जाकर कह कि हम रोनेके लिअे अभी आते हैं। पर ठहर; यह देख, अिस वराह को भी पीठपर डालकर ले जा और राजा नानकोबीसे यह कहना कि, यह हमारी तरफ से अुसे अेक नजराना है!"

जावरे ने अपने अेक खास तरीके से अुस वराह को बांधा, और अुस ढेरको पीठपर डाल कर वहां से चला गया।

"कितनी थक गयी हो तुम!" किशनने मालती की ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखा और अुसका अेक हाथ अपने हाथ में लेते हुअे कहा, "मालती शिकार की धुन में सबेरे दौडधूप करती हुअी तुम कितनी पसीना पसीना हो गयी हो, और थकी हुअी दिखाअी देती हो। ये देखो पसीने के स्वच्छ और शुभ्र बिंदु मोती की भांति तुम्हारे माथे को और यह लाली तुम्हारे गालों को किस तरह सुंदर बना रही है! आओ, बैठो कुछ देर मेरे पास, थोडीसी सुस्ता लो और तब हम चलें जावरों की ओर!" अुसके बालों तथा गालोंपर से हाथ फेरता हुआ किशन अेक कुर्सीनुमा चट्टानपर नीचे पैर लटका कर बैठ गया और अपने हाथमें पकड़े हुअे अुसके बायें हाथ को अेक प्रणयपूर्ण झटका देकर मालती को और अधिक अपनी ओर खींच लिया।

मालती को यही बहाना अभीष्ट था। वही मिल गया। अुसकी मुखमुद्रा खिल अुठी। वह चुपके से किशन की गोदमें जा बैठी। अपना दहिना हाथ अुसके गले में डाल, अुसके पैरोंपर अपने भी पैर लटकाये मालतीने मुखमंडल किशन के विशाल वक्षःस्थल पर रख दिया। आंखें मूंद लीं मंदमंद श्वासोच्छ्वास लेती हुअी वह विश्राम करने लगी।

मालती के भाललंबी चूर्ण कुंतल हवा से भुराभुरा रहे थे। अुन्हें हाथ से संवारते हुअे बीच बीचमें अुसके गालों को थपथपाते हुअे अेक क्षणमें अुसकी ओर प्रेम भरी निगाहसे देखता हुआ, दूसरे क्षण अपने आनत मस्तकको अुसके मस्तक पर टेकता हुआ अपनी आंखें मूंदता हुआ किशन भी अपनी प्रियतमा के गाढ़ आलिंगन के सुखास्वाद में निमग्न हो गया।

तादृश तल्लीनता में जब अुनके कुछ क्षण व्यतीत हुअे तब मालती

नें अपने लोचन अुन्मीलित किये और किशन के वक्ष:स्थलपर पड़े पड़े ही अुसने अपना मुखमंडल किशन के मुखके समीप पहुँचा दिया।

अुसकी मूक विनंति ही किशन की अभ्यर्थना थी! अुसने मालतीके अूपर अुठाये हुअे मुखका चुंबन ले लिया। मालती ने फिर अपना सिर किशनके वक्ष:स्थलपर टेक कर आँखें बंद कर लीं।

अुसकी वह मधुर तंद्रा जब थोडीसी पूरी हुअी तब वह किशन की गोदहीमें अुठकर सीधी बैठ गयी। अुस तंद्रा में जिस विषयका तांता अुसके मन में बंध रहा था। वह मानों किशन को भी सुनाअी देख रहा हो अिस खयालसे, अुसी प्रकार अुसी विषय को चालू रखते मालती ने लाडभरे कंठसे पुछा,

"सच है, तुझे भी अिस प्रकार प्रतीत होता है न?"

"अिस प्रकार? मधुर न, प्रतीत होता है न! तेरे अीदृश प्रेमपूर्व आलिंगन में मालती यदि अविक्षत रूपसे मृत्यु भी आ जाय तो वह भी मधुर ही प्रतीत होगी! तब जीवन के बारे में क्या पूछती है!"

"तब बताअूं मैं, तुझसे क्या पूछ रही थी? सारे आयुष्य भर, अपने अपने हाथों किसी भी प्रकारका आततायित्व का अपराध न होनेपर भी निरंतर अेक के बाद दूसरी दुर्गति को सहन करते करते मुझे जो यह तेरी संगतिका अमूल्य प्रणय--प्रेमल सुख मिल गया है अुसे अिससे भी अधिक सुख कि लालसा से खतरे में डालने का साहस अब मुझ से नहीं होता। सचमुच किशन मैं कहती हूं अब यहां से भागकर पुन: अपने देशकी ओर जाने की अिच्छा से जान खतरे में क्यों डाली जाय? भरे समुद्र को अेक छोटीसी नावसे पार करना, प्रबल शत्रुओंके सरकारी पहरे समुद्रपर और भूमिपर हमेशा में ताकमें बैठे हुअे, अुनकी आँख बचा कर देशमें जानेकी आशा रखना यह सब अब पागलपनसा नहीं प्रतीत होता? यदि मनुष्यता पूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिअे कोअी अन्य अुपाय ही न होता तो अुस समय साहस करना आवश्यक होता। पर अब यहाँ तेरी संगती में स्वच्छंदता या जब हम अिस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत कर ही सकते हैं तो फिर यहीं अिन जावरों के आश्रय में अिस अरण्य में अिसी प्रकार आनंद से क्यों न रहे जन्मभर?

" जिस गुहामें हम दोनों आज कल रहते हैं न, वह गुहा मुझे तो सुखका साक्षात् गोकुल प्रतीत होता है ! कोअी भी रानी, अपने हीरे मानिकोंसे तथा गदैलोंसे सजे हुअे अपने स्मृतिमंदिर में मुझ से अधिक सुखी नहीं होगी ! किशन, राजमहालों में भी राजा रानी आत्महत्त्या किया ही करते हैं न ? मेरी माँ हमेशा मुझसे कहा करती थी कि जरूरत से ज्यादा सामान का रहना और न रहना समान ही है। सुख केवल सामानमें नहीं रहता मानसिक संतोष में रहता है । वह कहा करती कि यदि पचास भी अपने घर रहे थी तो सोना तो अुतनेही स्थल पर पड़ेगा जितनी अपने शरीरकी लंबाअी चौडाअी है ! हड्डियाँ बहुत होनेपर भी अपनी शरीर को बढ़ाया नहीं जा सकता। अुसी प्रकार जलेबीके सामने ढेर के ढ़ेर क्यों न पडे हों। आदमी तो अुतना ही खा पायेगा जितना अुसके अंगुश्त भर पेट में समा सकेगा । अतः कहती हूं कि अब अधिक सुख देश में जाकर भी कौनसा मिलनेवाला है जिसके लिअे अक्षरशः संकटके समुद्र में फिरसे हम अिस प्रकार छलांग मारें ? मुझे तो यहां कुछ भी कम नहीं प्रतीत होता। किशन मैं जो तुझसे अिस तरह आलिंगन किये हूं, कहीं भी रहूं, आलिंगन का सुख तो अितना ही रहेगा! अिस वनमें प्यास लगने पर स्वच्छ पानी पियें तो वह जितना मधुर लगेगा बिलकुल अुतना ही मधुर वह सिंधु नदीके तीरपर जाकर प्यास बुझानेपर लगेगा । सुख तो वैसाही और अुतना ही रहेगा !

" सबेरे अिस प्रकार शिकार खेलते हुअे समुद्र के किनारे अथवा अरण्य-वन में स्वेच्छा पूर्वक संचार करें, थकावट आयी कि तेरे वक्षःस्थल पर अिस प्रकार आकर अपनी थकावट दूर करें, अिस तरह अपने शरीर पर हाथ फिरवा लें, फिर गुहा की ओर जा, जोर की भूख का मांस, मत्स्य, फल, कंद आदि द्वारा यथेच्छ परिहार करें, दो पहरको समुद्र के किनारे, रेतीले मैदान में जावरा स्त्रियों के खेल खेलते हुअे, गाने गाते हुअे, नाना रंगरूप के शंख–सीपी आदियों को ढूंढते हुअे वनश्री के और जलश्री के चमत्कार देखें, और दिनभर अितस्ततः स्वच्छंद अुड अुडकर थके हुअे पक्षियों के जोड़े अपने अपने घोंसलों की ओर लौटने लगे कि, अुसी प्रकार तेरे हाथ में अपना हाथ डाले अपनी अुस गुहारूप गोकुल की ओर वापस जायें

और अेक दूसरे से चिपट कर सोयें!! मन के मपैने ही से जिसे मापा जा सकता है वह प्रियसंगति का सुख अिस गुहागत अपनी रतिशय्यापर जितना समाधान पहुँचाता है, गोकुल में चले जायँ तो भी वह अुतना ही पहुँचायेगा! तब यहां से भाग कर आगे जाने के प्रयत्न में प्राणग्राही नवीन नवीन संकटों को क्यों तू जबर्दस्ती मोल लेना चाहता है? चल हम यहीं जन्मभर बने रहें । मेरे सुखसमाधान के पलंग के लिअे वह गुहा पूर्णतया पर्याप्त है!"

" पर वह गुहा पलंग के लिअे पर्याप्त रही थी तो भी पालने के लिअे पूरी पड़ेगी क्या? कल पालना बांधने का समय आ पहुँचा तो?" किशनने अुसे गुदगुदी की।

"चुप, बाष्कल कहीं का!" मालतीने अेक हलकी सी चपत किशन के गालोंपर जड़ा दी और खिलखिला कर हँस पड़ी । "मैं जो कुछ कहती हूं, अुसे मज़ाक मत समझ।"

"नहीं, प्रिये, मैं मज़ाक नहीं समझ रहा हूँ। पर तू यह प्रश्न करते हुअे कि, फिरसे समुद्रपार भाग जाने का प्राणसंकट काहे को मोल लें, अिस बात को भुला बैठी कि, पुराने संकट अभी अपने चारों ओर पूर्ववत् चक्कर मार रहे हैं। मैं भाग ही गया हूँ, यह निश्चित् रूप से भले ही सरकारी अधिकारियों को मालूम न पड़ा हो, वे कदाचित् अभी तक यह भी सोचते होंगे कि जावरों की मुठभेड़ में मैं मारा जा चुका हूँ, तथापि तुझे तो दिन दहाड़े भगा कर ले जाया गया है, अिस में कोअी शंका ही नहीं है अुन्हें! तुझे तथा तुझे भगाकर ले जानेवालों को जो पकड़वा देगा, अुस के लिअे हजार हजार रुपयों के पुरस्कार दिये जावेंगे अिस आशय के विज्ञापन सर्वत्र लगे हुअे हैं! जोर शोर से खोज की जा रही है। अुन के गुप्तचरों को और नौकाओं को यदि हमारे यहां के निवास का पता मालूम पड़ गया तो? किंवा अिन सैंकड़ों जावरों में से ही अेकाध आदमी को अंग्रेजोंने अपनी ओर मिला लिया तो? अैसे अुदाहरण क्वचित् मिलते भी हैं! अैसी यदि स्थिति अुत्पन्न हो गयी, तो अपने ही हाथों अपनी जान ले लेना, अुस कैद की भयंकर यातनाओं में फिर से जा पड़ने की अपेक्षा अच्छा नहीं लगेगा क्या?

अुस संकट की अपेक्षा, समुद्रपार होने का साहस कार्य हर हालत में कम खतरे का है। पुनःश्च, यहां पशु पक्षियों के जोड़ों की तरह जीवित रहे भी तो पशुपक्षी बनकर रह पायेंगे, मनुष्य बनकर नहीं। स्वदेश की स्व-राष्ट्र की तथा मनुष्य समाज की कुछ भी सेवा, कुछ भी देशकार्य यदि अपने हाथों न होता हो तो अुसे मनुष्य जीवन में मनुष्यता रही कहां? और प्रिये तेरी कुक्षि को यथाकाल धन्य करनेवाले अुस नन्हे से देवदूत को अिन जावरों और अिन अरण्य शूकरों की संस्कृति की दीक्षा देनी होगी क्या? अतः हमें अपने देश तो जाना ही चाहिये। समुद्र को लांघना ही चाहिये। दूसरी बात यह भी है कि, जब से हम कालेपानी के कैदखानेसे भागकर आये हैं तब से तो गत तीन चार महीनों तक दैव भी हमारे लिअे अनुकूल ही बना रहा है। अुस नराधम रफिअुद्दीन का बदला अिस दोलकाष्ठ के पराक्रम से अनायासही चुका लिया गया, जिस से अिस स्थानपर भी तेरे रास्ते में आकर खड़ी होनेवाली रुकावट दूर हो गअी।

अुस प्रच्छन्न शत्रुसे जिस किस्म की मदद लेने के विचारसे हमने अुसे अपने नज़दीक रखा था, अुस समुद्रतरण के कार्य में सहायता करने वाला अेक प्राणोपम मित्र भी अुस दोलकाष्ठ के रूप में हमें मिल गया। नाविक विद्या में वह प्रवीण और, साहसी है। गत तीन चार महीनों के अुस के व्यवहार से अुस के स्नेह की परख भी अच्छी तरह हो ही गअी है! अुसने अेक सुंदर नाव भी कितने परिश्रम से सर्व सामग्री युक्त बनाकर तय्यार रखी है! अब अनुकूल हवा की ही अुतनी प्रतीक्षा है। वे हवाअें बहने लगीं कि हम तीनों समुद्र में अुस नाव को छोड़कर अपने देश की ओर चल ही पड़ेंगे।

"पर अुस दोलकाष्ठ के मनमें, मेरे संबंध में जो अेक दुराशा अुत्पन्न हो गअी है, मैं उसकी पत्नी बन जाअूं वही जो अेक अभिलाषा अुसके मनमें संचारित हुअी है, अुसका दुष्परिणाम आज नहीं तो कल शत्रुत्व में परिणत नहीं होगा क्या?"

"सहसा वैसा नहीं होगा। कारण अुसे तेरी अभिलाषा है भी तो वह अुस नराधम रफिउद्दीन की अभिलाषा की तरह राक्षसी स्वरूप की

नहीं है। आजतक तो अुसका स्वरूप सात्विक ही है। हमने जो अपना भाअी बहनका नाता आजतक जोड़ रखा है, अुसीको वह सच्चा मान रहा है और केवल अिसी लिए वह तुझ जैसी कुमारिका को अपनी पत्नी बनाने की अिच्छा प्रदर्शित कर रहा है। वह तुझे अभीतक कुमारिका समझता है। अुसे जब अपना सच्चा वृत्तांत और सच्चा नाता बतलाने का समय आयेगा-"

"तब फिर बता क्यों नहीं देता सारी बातें ? सचमुच किशन, मुझे भी अब तुझे अुपरी तौरसे क्यों न हो, 'भय्या' कहने में शरम महसूस होती है !"

"सो क्यों ?" किशनने अुसके चुंटीसी काटी और हँसा।

"छीः, क्यों की क्या पूछता है? अपने प्रियतम को भी कोअी भाअी कहा करता है ? जावरों में भी भाअी बहन की शादी को कोई मनुष्यता की रीति नहीं समझता !"

जावरों में नहीं समझते होंगे, पर मनुष्य समाज में बहिन की भाअी की शादियां कभी हुअी ही नहीं, अैसा मत समझ ! मनुष्य समाजने सब तरह के विवाहों को ही नहीं, अपितु स्वच्छंद संभोगों को भी जिन जिन परिस्थतियों में वे अिष्ट अथवा अपरिहार्य प्रतीत होंगे, अुन अुन परिस्थितियों में धर्म्य माना हुआ है। प्रत्यक्ष गौतम बुद्ध का जन्म जिस कुल में हुआ अुसी कुलकी कथा ग्रंथांतर में यों लिखी हुअी है कि सूर्य कुलके अेक राजकुमारको और अुसकी बहिन को संकटावस्था के कारण अेक निर्जन अरण्य में जन्म व्यतीत करना पड़ा। तब अुन भाअी बहनों ने आपसही में विवाह किया और अुनकी संतति के अुदर से ही आगे चलकर अनेक पीढियों के पश्चात् बुद्ध सदृश महात्मा अुत्पन्न हुआ !

"राजकुलका रक्तबीज दैवी ! अुसका मनुष्यों से संबंध नहीं होना चाहिये अैसी अनुवंशिकता की अतिरेक युक्त शुद्धता की रक्षा के लिअे ब्रह्मदेशके, मेक्सिको के, और अनेक स्थानों के प्रख्यात "दैवी" राजवंशों में राजपुत्रका विवाह अुसकी सगी बहन ही से होना चाहिये अैसी 'धर्माज्ञा' थी, शिष्टजन संमत प्रथा ही थी ! जिन समाजों को अुस धर्मसे दुष्परिणाम होते हैं अैसा अनुभव हुआ, अुन्हों ने अुसी को अधर्म साबित किया। आज भी हिंदू-मुसलमान क्रिश्चनादिक समाजों में कहीं ममेरी बहन

तो कहीं मौसेरी बहन, प्रत्यक्ष सगी चचेरी बहन से भी विवाह करना अधर्म नहीं माना जाता ! तब हम तो केवल प्राणोंपर आये हुअे संकटों के परिहारार्थ ही अिस भाअी बहन के नाते का बहाना बनाये हुअे हैं "

" सच सच बता, कल वह क्या कह रहा था तुझसे । मेरी ओर अितना अधिक हँसते हँसते अुंगली का अिशारा करते हुअे ? "

" अरी, वह दोलकाष्ठ सचमुच अेक सैनिक की तबीयत का खुले दिलका मनुष्य है ! छलके पंजे अुसे मालूम ही नहीं हैं । ज्यों ही वह नाव कल तय्यार हो गअी त्यों ही बड़े आनंदसे अुसने मुझे वह दिखाअी और पूछा,

" अिस नावसे तुझे और तेरी अुस गोरी बहन को यदि मैंने सुरक्षित रूपसे स्वदेश में पहुँचा दिया तो, अिस मल्लाह को तू अिस नावका किराया क्या देगा ? "

" मैंने कहा, ' क्या चाहिये तुझे ?"

तब अुसने तेरी तरफ अुंगली करके कहा, " सिर्फ वह सोने की प्रतिमा मुझे चाहिये !"

" मैं हँसा, मैंने कहा, मुझे कोअी आपत्ति नहीं । यदि अुसके मनको तू वश कर सका तो परतीरपर पहुँचाते ही मैं तुम दोनों का विवाह कर डालूंगा ।"

"तब अेकदम छातीपर हाथ मारकर वह दोलकाष्ठ हँसा, ' वह काम मेरा । मेरे सीटी देते ही यदि वह पंछी मेरे हाथपर आकर नहीं बैठा तो मैं अपना नामही बदल डालूंगा ! "

तत्काल अुसने मुझसे वचन भी ले लिया कि यदि कंटकी अनुकूल हो गअी मैं अुसे दोलकाष्ठको आनंदसे अर्पित कर डालूंगा । "

" वाहरे तू, और वाहरे तेरा वचन ! किशन ! " अुसकी ओर रुष्ट दृष्टिसे देखती हुअी मालती बोली, " किशन, सारा बुरापन और अुत्तरदायित्व मुझपर डालकर तू अपना अलग थलग हो गया ! पर क्यों रे, यदि वह अबसे सचमुच ही मेरे साथ लाडप्यार करने लग गया और मैं अुसकी हो गअी तो–? "

" तो क्या ? तेरी अिच्छा पूर्ण करके तुझे आनंदयुक्त देखने के

लिअे मैं अपने आपको अुसके पश्चात् सचमुच का तेरा सगा भाअी समझने लगूंगा और अुसके साथ तेरा विवाह अपने हाथोंसे कर दूंगा !"

क्रोधके अेक झटके के साथ अुसकी गोद में से अुठने की अिच्छावाली मालती को हाथ पकड़कर अुसी तरह से बैठाते हुअे किशन समझाने बुझाने लगा।

"अिस तरह गुस्सा क्यों करती है ? जब तूने सवाल किया था, तब तुझे किस तरह अच्छा लगा था ? तो जैसे दो वैसे लो ! पर मालती, मैं बिलकुल हृदयसे कहता हूँ तुझसे, कि तुज जैसी सुंदर और गोरीपान तरुणी के लिअे मेरे जैसा काला कलूटा कुरूप और किसी भी प्रकार की विशेषता से हीन प्रियतम अनुरूप नहीं है यह मैं अपने मन में पहले ही से जानता हूं। मुझे यदि तेरा स्नेह ही मिल गया, तेरी संगति में सेवक के रूपसे भी यदि मैं रह सका, तो भी मेरी योग्यताके अनुसार मुझे जो मिलना चाहिये वह मिल जायगा अैसा मैं मानता चला आया हूं। मेरी अपेक्षा भी जो तेरे लिअे अधिक अनुरूप है, अुस प्रियतम के चुनने में तूं सर्वथा स्वतंत्र है।"

"ठीक है न ? मैं स्वतंत्र हूं तभी तो मैंने चुनाव किया है। चुनाव तेरी आंखों अथवा मपैने से न करके मैंने अपनी आँखों और मपैने से अिसी प्रियतम का किया है ! मेरे किशन ! मेरे प्रियतम !"

मालती ने गद्गद् होकर किशन को अपने बाहुओंमें कस लिया और अुसके वक्षःस्थलपर अपना माथा टेककर क्षणभर निःस्तब्ध होकर प्रेमाश्रु बहाती रही। परंतु फिर अपनी गर्दन अूपर अूठाकर चुभती हुअी दृष्टिसे किशन को निहारते हुअे हँस पड़ी,

"किशन, तुम पुरुषों को रूपरंगकी ही जानकारी अधिक रहती है। कारण, तुम्हारी प्रीति तुम्हारी आँखों में रहती है। पर हम ललनाओं की प्रीति हमारे हृदयों में रहती है। ललनाओं की प्रीति हमारे हृदयरूपी नेत्रोंसे देखा करती है। अतः अुसे रूप और रंग दिखाअी तो पड़ते हैं; पर शील स्वभाव और सद्गुण अुसे अधिक मुग्ध करते हैं। पराक्रम और पौरुषका सौंदर्य रूप और रंगसेभी कितना अधिक आकर्षित होता है, यह घनश्यामल रामको वरनेवाली, सुवर्ण गौर सीतासे पूछ, सांवले श्रीकृष्ण को वरनेवाली अथवा शिशुपालादिक गोरे, कम्बख्त तथा लंपट व्यक्तियों का तिरस्कार

करने वाली स्वरूपशालिनी रुक्मिणी से पूछ ! अतअेव ललनाओं का स्ने, रूपरंग के दो दिन में सूख जानेवाले घास की भांति अस्थिर नहीं होता, अपितु शील के आम्र तरुके सदृश सरस, सुस्थिर और फलवान् होता है ! "

" कम अज कम होना तो चाहिये ही था ! " किशन ने अुसे चुटते हुअे कहा, " पर स्त्रियों के आधे हृदय में प्रीतिका निवास है यह तेरा कहना यदि रुक्मिणी के अुदाहरण से सत्य माना जाय, तो स्त्रियों के बचे हुअे आधे हृदय में कपट का निवास है यह मेरा कहना भी अुसी अुदाहरण द्वारा तुझे मानना ही चाहिये ! कारण, रुक्मिणी के चोरी चोरी किये गये पत्र-व्यवहार भी प्रसिद्ध ही हैं ! तब तू कम आज कम मेरे लिअे तो दोलकाष्ठ को अेकदम निराश मत कर। देश में जाने के पश्चात् तेरी प्रेमयाचना को स्वीकार करूंगी अैसी आशा अुसके सामने सतत बनाये रख ! वह सज्जन हैं अिसमें संदेह नहीं, पर अेक निष्कपट अुजड्ड आदमी है वह थोड़ासा। अिस लिए वह जो भी लाल लपेट की बात करे, अुसका अेकदम तिरस्कार न कर। कारण देश में जाने के पश्चात् तेरी की आशा छूट गअी तो अिस समय समुद्रलंघन के कार्य में जो साहसपूर्ण और मनोयोगपूर्ण सहायता कर रहा है, अुसमें वह ढिलाअी करने लग जाय, किसे मालूम ? अच्छा और यदि तेरा और मेरा असली नाता अेवं पूर्ववृत्त बतला दूं तो अपने प्रेम के विषय में से अुसके मनमें मात्सर्य अुत्पन्न नहीं होगा, यह कैसे कहा जा !

और हमने जिस हत्या के कारण यह सजा पाअी है, अुस के बारे हुअे अभियोग के समय जिस संकट से परित्राण पाने के लिअे हमने कृतक नाम और कृतक नाता प्रसिद्ध किया था, वे संकट अिन नामों के पुनः जाहीर होते ही अपने अूपर पुनरपि टूट पड़ें अैसी अभी भी संभावना है। अतः स्वदेश में पहुंचने तक अपने को यह नाटकीय भूमिका अिसी प्रकार बनाये रखना लाजगी है। देश में जाने पर दोलकाष्ठ के प्रेम की तू सुखेनैव अुपेक्षा कर। वह सज्जन है। तेरी अिच्छाके विरुद्ध बलपूर्वक अपना प्रेम लादनेवाला दुर्जन नहीं है । पर कहीं वह बिगड़ भी खड़ा हुआ और दुश्मनी करने लगा तो वहां अुसका मुकाबला करना अथवा अुसे चकमा दे देना हमारे लिअे यहां की अपेक्षा सौगुना अधिक आसान रहेगा । आज हम पूरी तरह परवश हैं। अुसकी सहायता के बिना समुद्र का अुल्लंघन

अत्यंत कठीण ! जिन अुद्दंड और अुच्छृंखल मनुष्यों में अनवस्था ही समाज व्यवस्था होकर बैठती है, अुन की संगति में जिसे जीवन व्यतीत करना हो आपद्धर्म ही को सद्धर्म मानकर चलना होगा ! "

अितने में पुन: 'अू ऽऽऽ ! कंटक बाबू ऽऽ' अैसी किलकारियाँ सुनाअी दीं।

" अुठ अुठ ! वे जावरे फिर अपने को बुलाने चले आये हैं, अब जाना ही चाहिये अुनके साथ समारंभपूर्वक रोने के लिए ! "

कंटक और कंटकी जब जावरों की खोहपर पहुँचे तब अुन जावरों का मृतक संस्कार अपने पूरे जोरपर था। वह मृत जावरा राजा नानकोबी का अेक विशेष स्नेही और जावरों का अेक 'दादा' था, अत: अुसके मृतक संस्कार के लिए वे सारे जावरे आये हुअे थे। अुस शव को बीच में रखकर सब लोग अुसके चारों ओर अेक वृत्त में बैठे हुअे थे। अुस मृत व्यक्तिकी पत्नी और बच्चों को स्वभावत: ही दु:खने पहले ही से विव्हल कर रखा था। परंतु मृत संस्कार के लिअे वह सारी जातिकी जाति जब अिस प्रकार सार्वजनिक शोकके लिअे अेकत्र हुअी, अुस समय अुस दृष्य को देखते ही वह मृत व्यक्तिकी पत्नी शोक का आवेग बढ़ गया हो अिसी खयाल से नहीं प्रत्युत अुस मृतक संस्कार संबंधी कर्तव्य की जानकारी के कारण भी बिलखते बिलखते बीच ही में अूँचे स्वर से चिहुँक अुठी। अुसके साथही अेक खास स्वर और तालपर वे सारे जावरे भी रोने लग गये। पहले पहल अेक कर्तव्य समझकर भलेही अुन्होंने रोना शुरु किया हो तो भी आगे चलकर वे सचमुच ही रोने लग गये। क्यों कि जनपद विध्वंसक संक्रामक रोग ही की भांति समाजानुभूति भी अेक संक्रामक रोग ही हुआ करता है। अस्तु सब की आँखें पानी से डबडबा आअीं।

वह सार्वजनिक संगीत मिश्र आक्रंद असंवरणीय सा हो गया। अिस बीच, अुनमें से कुछ वृद्धोंने अुस शव की अेक गठरी बांधी और अुसे लेकर वे सब अेक वृक्ष की ओर चले। अेक निश्चित ताल में अपनी छाती पीटते हुअे तथा अेक निश्चित स्वरमें गले फाड़कर रोते हुअे वे वहां गये। अुस वृक्षकी अूँचाअी पर अेक खोखल थी। अुसमें अुस शवकी गठरी अिस ढंगसे बिठाअी गअी कि, मानों वह मनुष्य पालथी मारकर मुँह

अुठाकर सजीव मनुष्य की तरह सबकी ओर देख रहा हो। जावरों की ठिगनी जाति के लिअे वह वृक्ष अुतना अूँचा प्रतीत हुआ, कि अुनमें से कोअी भी अितनी अूँचाअी तक अुस शव को अुठाकर नहीं रख सकता था। अतः यह काम दोलकाष्ठके सुपुर्द किया गया। अुसने स्वयं अुस मुर्दे को अुस खोखलमें ले जाकर बिठा दिया। जावरों के मृतक संस्कार की जब यह विधि पूरी की जा रही थी, अुस समय सबने तालबद्ध आक्रोशकी परमावधि कर डाली।

अुसके बाद सब जावरों ने अपने शरीर पर के सारे रंगबिरंगी श्रृंगारिक मिटटीके पट्टे पोंछ डाले। हजामत किये हुअे सब सुहागिन स्त्रियों और पुरुषों ने सूतक के चिन्ह के तौरपर केवल भूरे रंगकी मिट्टी लेकर अपने शरीरोंपर अथच ' तराशे गये ' विकेश सिरोंपर मल ली। अुसके पश्चात् मृतक के अंतिम दर्शनों के लिअे वे सारे जावरे खड़े हो गये। अुनमें धार्मिक कृत्य करवानेवाला पुरोहित तो कोअी रहता ही नहीं। अुस अुस कालमें जो भी अगुआपन पाया हुआ बूढ़ा होगा, वही प्रथाके अनुसार सारे संस्कार कराता है।

अैसा अेक बूढ़ा अगुआ अुस वक्त आगे आया और टूटे फूटे चार पांच शब्दों में अनेक हावभावों की भर्ती डालकर अुसने जो भाव व्यक्त किया, अुसे यदि शब्दों ही में कहना हो तो यों कहा जा सकेगा:—

" अब अिस अपने मृत संबंधी की ओर तीन महिनों तक कोअी भूलकर भी न देखे। अुसका यदि अेकांतवास भंग हो गया तो अुसका भूत गुस्सा करेगा। हम अुसे भूल तो नहीं जाते, अुसके प्रीति के प्रति कृतघ्न तो नहीं हो जाते यह सब अुसका भूत अिस अूँची खोखल में बैठा बैठा देखता रहेगा। अिस लिए अिन तीन महिनों में कोअी भी शृंगार-सज्जा अथवा आमोद-प्रमोद न करे। नाचरंग तीन महिने तक बंद! रंगीन मिट्टीके नखरे बंद!— भूरी मिट्टी ही सिर्फ शरीर पर मलनी चाहिये कारण जहरीले मच्छर वगैरे जो जंगलमें नंगे जावरों को काट खाते हैं, अुनसे देह संरक्षण के लिअे किसी न किसी मिट्टी का लेप आवश्यक होता है।

अेक विशिष्ट आवाजमें सब जावरों ने अिस आदेश को स्वीकार किया और सब अपनी खोह की ओर वापिस चले गये।

किशन और मालती भी अपनी स्वतंत्र गुफा की ओर चल पड़े। जाते समय बड़ी अजीजीसे अुन्होंने दौलकाष्ठ को भी अपने साथ चलने के लिअे कहा।

दौलकाष्ठ के सिरपर अुस वक्त दार्शनिकता का भूत सवार हो रहा था। अपने पांडित्य का प्रभाव मालतीपर डालने के अिरादेसे वह किशनके साथ जावरों के मृतक संस्कारके विषयमें रास्तेभर बातचीत करता चला,

" देख मृतक के संबंध में प्रीति और भीति अिन दो भावनाओं परही सारे मृतक संस्कार किस प्रकार खड़े हैं! हमारे वैदिक मृतक संस्कार और्ध्वदेहिक और सूतकश्राद्ध आदि अिन धर्मशून्य अेवं वन्य जावरोंके आरण्यक मृतक संस्कारही के तो संस्करण हैं। हिंदू, क्रिश्चियन, मुस्लिम सभी मृतक संस्कार मृत व्यक्ति विषयक प्रीति और भीति की भावनापरही आधारित हैं। कैसे सो देखिये। अिन जावरों के मृतक संस्कारोंपरही बीचबीचमें हंस रही थी न कंटकी? पर अुनके जंगली और पागलपने के प्रतीत होनेवाले मृतक संबंधी प्रत्येक प्रथा ही की प्रतिध्वनि अपने सुधारणायुक्त वैदिक-क्रिश्चियन -मुस्लिम प्रभृति अीश्वरोक्त धर्म कह ढोल पीटनेवाले मृतक संस्कारोंमें आकर्णित होती है अैसा यदि मैंने सिद्ध कर दिया तो तू मुझे क्या देगी? आदिम मानव मुर्देपर अिस लिअे पत्थरोंका ढेर चुनता है कि कहीं वह भूत बनकर अुठ न खडा हो--अुसीके पेटसे अिन अीसाअियों और मुसलमानोंके कब्रिस्तान, भव्य मकबरे और पिरामिड पैदा हुअे! मृत व्यक्तियोंकी नौका वैतरणी को तर जानेमें समर्थ हो सके अिसीलिअे-"

" बस हुआ बाबा, तेरा तत्त्वज्ञान!" किशन ने यह देखकर कि अब यह तत्त्वज्ञान की धारा में बेतहाशा बहता चला जायगा, दौलकाष्ठको बीचहीमें टोक दिया! " मृतोंको वैतरणी पार ले जानेवाली नौकाओंके संबंधमें जानकारी देनेकी अपेक्षा पहले यदि तू जीवितोंको पार ले जानेवाली नौकाके बारेमें जानकारी देगा तो अधिक अुपकार होंगे! वैतरणीका मृत समुद्रपार करने के लिअे अेकाध नौका मरनेके पश्चात् हमारे मुर्दोंको कहीं से भी मिल जायेगी। न भी मिली तो भी तबकी तब देख लेंगे। पर आज अिस वक्त कालेपानी का समुद्र जीवितावस्थामें पार करनेके लिअे अुपयोगी हो सके अैसी जो नौका तू तय्यार कर रहा था, अुसका क्या हुआ सो बता पहले!

जो नाव तूने अुस दिन मुझे दिखाअी थी अब अुसे किस दिन समुद्रमें ढकेलना है ? परसों तूने कहा था कि अब सारी तय्यारी पूरी हो चुकी है; पर अभी तू कल-परसों, कल-परसों किये ही चला जा रहा है ! अब प्राणोकी अिस नैया को संकट समुद्र में कब ढकेलनेवाला है बता ? बिलकुल पक्की तारीख चाहिये! फिर चाहे दैव हमें पार ले जाय या बीचहीमें डुबा दे ! पर अब अेक दिन भी केवल डरके ख़यालसे यहां ठहरना ठीक नहीं । बता, दिन बता । "

" बिलकुल निश्चित दिन बतलाता हूँ । तीन महीने और तीन दिन समाप्त होते ही जो दिन अुदित होगा, अुसी दिन नाव को समुद्रमें ढकेलना है! "

" बापरे, क्यों ? अब अेकदम अितनी देर क्यों ? परसों तो तूने बतलाया था कि सारी तय्यारी हो चुकी है ? और अब बिलकुल ज्योतिषीके ठाठमें तीन महिने तीन दिनकी बात कर रहा है ? मुहूर्त बिहूर्त की खप़्त तो सवार नहीं हो गयी कहीं ?

" यह जिस दिन तय्यारी पूरी हुअी, अुसी दिन दोलकाष्ठ का मुहूर्त हुआ करता है । पर मुहूर्तकी खप़्त को अेक और रख भी दें तो भी अपने को दो और खप़्तों का खयाल रखना ही चाहिये ! अेक खप़्त है समुद्रकी और दूसरी है नानकोबी की! राजा नानकोबी ने मुझे अभी जताकर कहा है कि, जब तक अिस जावरे का सूतक समाप्त न हो तब तक नौका समुद्रमें नहीं छोड़नी । सो यह जावरोंका सूतक तीन महीने बाद जाकर खत्म होगा । अुसके पश्चात् वे हमारे लिअे दो तीन दिन बाद अपनी डुंगियां सहायतार्थ देकर अिस समुद्रके तटके समीपस्थ वक्रमार्गों में से रास्ता निकालते निकालते भरे समुद्र में हमारी नाव को अपने पहरे के अंदर पहुँचा देनेवाले हैं । और समुद्रकी हवाअें भी अुस कालमें हमारे लिअे अनुकूल होनेवाली हैं । अिसी लिअे तो मुझे ठहरना पड रहा है । अरे, देश जाने की जल्दबाजी जितनी तुझे है, अुससे कम मुझे है अैसा तुझे लगता तो किस आधारपर है ? तुझे होगी सादी जल्दबाजी, पर मुझे तो भय्या, शादीकी जल्दबाजी है न ! क्यों कंटकी, ठीक है या नहीं ? कंटकने पर तीर पर पहुँचाने के बदले में जो दाम देना मंजूर किया है अुसकी हुंडी मकारी जानेवाली है तेरे ही प्रेम के साहूकारे पर समझी ! " ढिठाअी के

साथ दोलकाष्ठ ने हंसते हंसते कंटकी के गालपर अेक लाड़भरी चुटकी मारी ।

" पर, काम होने के बाद दाम का सवाल ! कंटक द्वारा दी गयी हुंडी सकारी जायगी तो अुसी दिन सकारी जायगी यह बात मल्लाह को भी भुलानी नहीं चाहिये ! "मछली को आमिषमात्र दिखाअी दे सके अिस चतुरता से मालतीने अपना जाल फेंका ।

"... चली मातृगेह को" : : : २२

" किशन! अे किशन !" अपनी गुहाके द्वारपर खड़ी मालतीने मन ही मन दो तीन बार पुकारा । वह कुछ हताश सा मुह किये खड़ी थी । फिर मन ही मन गुनगुनाया, " बोलते बोलते जाने किधर चला गया ! सबेरे का गया अितनी देर होनेपर भी अभीतक नहीं लौटा । अुन जावरों ही की धुन में अुधरका अुधर ही अटक गया मालूम पड़ता है ! — पर यह कौन आ रहा है, अुन बांस की झाड़ियों में से बांस जैसा ही अूंचा ? दोलकाष्ठ ! और कौन ? मेरा मन बस में करने के लिअे कितना प्रयत्न करता रहता है बेचारा ! अितना प्रेमयुक्त और साफ हृदयका मनुष्य है यह कि सचमुच ही अुसके अूपर मुझे तरस आती है। पर क्या करें ? अुसके प्रेम को मैं स्वीकार भी नहीं सकती और अिनकार भी नहीं सकती । आज महीनों से सबेरा हुआ कि अिस अरण्य के ताजे ताजे फूल और ताजा ताजा शहद लेकर मुझे अुपहार देने में अेकदिन का भी अिसने नागा नहीं किया । मैं अिसे पति मान लूं अैसा जो अेक असंवरणीय मोह अिसके मन में अुत्पन्न हुआ है, अुसे त्यागकर यह यदि मुझसे कहे कि तू मुझे भाअी मान ले तो मैं अभी अिसी क्षण अपने अंत:करणसे अुसे अपना भाअी बना लूंगी कारण अब मुझे सचमुच ही वह पसंद आने लगा है ।"

मालती मन में अितना बोल ही रही थी कि दोलकाष्ठ अुस गुहा के समीप आ पहुँचा । अुसके अेक हाथ में अेक सुंदर शंख था । वह गुलाबी रंग का था । अुसे तराशकर और घिसकर अूपर बेलबूटियाँ काढकर

सजाया हुआ था। अिधरके सिंधु पुलिन अिन शंखों के लिअे बहुत अधिक विख्यात हैं। अुसके दूसरे हाथ में अेक अत्यंत हरे पत्तोंका द्रोण था। अुस में ताजे फूल थे। वहांके बनों में शहद के छत्ते विपुल! जावरे लोग अुन को तोडकर बातकी बात में जितना चाहिये अुतना ताजा शहद लाकर देने में प्रवीण थे। अुस प्रकारका ताजा बहुत सा शहद अुस शंखके कुप्पेमें भरा हुआ था। दोलकाष्ठ ने वह कंटकी को दिया। कंटकीने अुसे अपनी गुहा में रख लिया। अुसके पश्चात् अुसने वे फूल अुसे दिये तथा कुछ अुसके बालों में स्वयं खोंसने के अिरादे से हाथ आगे बढाया। हां हां ना ना करते हुअे कंटकी ने अुसे वे फूल खोंसने दिये। बचे हुअे फूलोंका द्रोण दोनों हाथोंसे अूपर अुठाकर अुन्हें सूंघती हुअी और रंगोंको देखती हुअी प्रसन्नायिता कंटकी बोली,

"कितने सुंदर फूल हैं ये। मैं आपकी आभारी हूं!"

"पर कंटकी अिन सब फूलों से बढ़कर सुंदर अेक और फूल है अिस अरण्य में; पर वही अभी कुछ मेरे हाथ में नहीं आया है!"

"काहे का है जी, वह अितना सुंदर फूल?"

"तेरे सौंदर्यका! कंटकी—" दोलकाष्ठ ने अुद्दंडतापूर्वक अपना मांसल हाथ अुसकी कोमल ठोढीपर लगाने के लिअे आगे बढाया।

"छी:" ठोढी बचाकर पीछेकी ओर हटकर पर क्रोध न जताती हुअी कंटकी प्रत्युतर में बोली "अं हूं। वह फूल समुद्रके अिस अंदमानी तट के जंगल का भले ही रहे पर हाथ में यदि आता हुआ तो आयेगा समुद्र के अुस परली ओरके भारतीय तट के जंगल ही में!"

"अुसी आशा पर तो मैं जीवित हूं। और मेरी नाव भी यदि तैरेगी तो अुसी आशापर तैरेगी। बस? अब सिर्फ तीन दिन बाकी हैं। आज ही जावरों के तीन महीनों का सूतक समाप्त होनेवाला है। अपने को अब अुधर ही चलना है। वह खत्म हुआ कि चौथको हमने अपने साहस की नाव समुद्र में ढकेल ही दी समझो! देशकी तरफ ले जानेवाली हवाअें भी अब अनुकूल बह रही हैं। अब अितने पर जो कुछ परमेश्वर करेगा वही सत्य है?"

"जो भलाअी की बात हो बिलकुल वही करेगा परमेश्वर! आज मुझे

अैसा शुभशकुन दीखा है कि मुझे अब किसी प्रकार का संदेह ही नहीं रह गया। मैंने कंटक भय्या से सब किस्सा सबेरे ही कह दिया था।"

"वह कौन किस्सा है, क्या मैं जान सकता हूं? शकुन बिलकुल सत्य हुआ करते हैं, समझी!"

"अच्छा तो सुनाती हूं। कल रात मेरी लाडली मां सपने में दिखाअी दी। समुद्रके अिस तटपर मैं खडी हूं, बीचमें यह कालेपानी का समुद्र है, अुस ओर के तटपर मेरी मां खडी है! अपने दोनों हाथ फैलाकर वह मुझसे कह रही है, 'अरी, चल न, देखती क्या है, आ, मेरी भुजाओं में घुसकर आलिंगन पूर्वक भेंट मुझसे! मार छलाँग, डर मत, मैं तुझे सहार दूँगी!' मांके ये शब्द सुनते ही मैंने, अेक जोरकी छलांग मारी, पानी की छोटीसी धाराको जिस तरह लांघते हैं, अुसी तरह समुद्रको लांघ कर मैं झट्से अपनी माँकी भुजाओं में समा गयी। अितने में मानों दृश्य परिवर्तन हो गया। मैं अपने घर में हूं; झूलेपर मैं और मेरी मां बैठी हैं मुझे जो गाने पसंद हैं; वह मेरी मां मुझे गा गाकर सुनाती है। सचमुच दोलकाष्ठ, अुस स्वप्न के बाद से मैं अधीर हो गयी हूं; मेरी मांके वे गाने मेरे कानों में लगाकर गूंज रहे हैं; मेरी मां? हाय, अब वह मुझे कब मिलेगी!" कंटकी रोने लगी।

"चुप हो, चुप हो। रो मत, तुझे अपनी मांकी स्मृति जिस प्रकार विव्हल कर देती है, ठीक अुसी तरह मुझे भी अपनी मां की स्मृति विव्हल करती है। मेरी मां— मेरी एक छोटीसी दस बारह बरस कि लाडली बहन! मेरे अतिरिक्त अुनके लिअे अन्य कोअी आधार नहीं था! वे लोग भी मेरी अिसी प्रकार राह देखा करते होंगे! मेरा और अुनका अिसी प्रकार बिछोह हो गया है! अुनसे मैं कब जाकर मिलूंगा, यही मैं भी सोचता रहता हूं।" अितना बोलते बोलते दोलकाष्ठ का भी गला भर आया और आँखोंसे अश्रुओं की धारा बहने लगी।

विशालकाय रूक्ष, और मुस्टंडा दिखाअी देनेवाले अुस दोलकाष्ठको अिस तरह भावाविष्ट देखकर कंटकी को कौतुक सा प्रतीत हुआ। अेक बड़े भारी रूखी चट्टानोंवाले पर्वत शिखरको यकायक झरते हुअे देखकर कौतुक

तो प्रतीत होगा ही न ? अुसकी और क्षणभर दत्तैक दृष्टि निहारते रहने के पश्चात् अुसने पूछा—

"तुम्हारी वह छोटी बहन अब बड़ी हो गयी होगी !"

"काहे की बड़ी हो गयी होगी ! होगी कोअी बीस अेक बरसकी। अुसे परेशान करना हो तो बस अुसे यों दोनों हाथोंपर अुठाया और जबतक वह चिल्लाने न लग जाय तब तक अुसे जोरसे फिराते रहे। अब भी जब मैं अुससे मिलूंगा न, तब पहलेही सपट्टे में अुसे अितना फिराअूंगा, अितना फिराअूंगा, कि अुसे बुरी तरह चक्कर आ जाय और मेरी माँ गुस्से में आकार डांटने लगे। वह बीस बरसकी हुअी तो क्या हुआ, मेरी हथेली ही में समा जायगी ! तेरे भाअीने कभी सारे जनम में इतना लाड़ किया है ?"

"सच कहूं क्या—" मालती भावनाके आवेशमें अेकदम बोल बैठी, "मेरा अेक अिकलौता अैसाही प्रेमी भाअी था—"

"क्या मतलब ?" दोलकाष्ठने बीचहीमें टोक कर कहा, "था के क्या मानी ? तब यह कंटक कौन लगता है तेरा ?"

मालती यह प्रश्न सुनते ही अितनी चकरा गयी कि चेहरा अेकदम फक्क पड़ गया। पर अितने में कंटक ही अुधर आता दिखाअी दिया। वह विषय स्वभावतः ही बंद पड़ गया।

"वह देख कंटक ! नाम लेतेही चला आया ! सौ बरसकी अुम्र है तेरी !" हंसते हंसते दौड़कर वह कंटकसे लिपट गयी।

"शाबास, दोलकाष्ठ, शाबास ! भले मानस, मैंने तुझे अिधर भेजा कंटकीको बुला लाने के लिअे, सो तू यहां आकर गप्पे ही छाँटने लगा ! सूतक समाप्ति के संस्कार के लिअे वे सारे जावरे चल पड़े न अुधर ! राजा नानकोबी हमारी ही राह देख रहा है। चलो, चलो, झटपट !"

"कंटकबाबू, मैं जो ताजा शहद लाया हूं, अुसे खाये वगैर यहांसे आगे अेक कदम नहीं रखना। कंटकी, वह शहद ले आ !"

दोलकाष्ठके आग्रहको सिर माथे करके मालती शहद ले आयी, हरे हरे पत्तोंपर अुस शंख के सुंदर गंगासागर से वह शहद परोसा गया और अुस मधुर आरण्यक प्रातराशके समाप्त होतेही वे तीनों जावरोंकी अुस खोहकी ओर चले गये।

जावरोंकी पद्धतिके अनुसार तीन मास का सूतक आज समाप्त होनेवाला था। अपने अुस मृतक व्यक्तिके औध्र्वदेहिक के अंतिम संस्कारके लिअे वे सारे जावरे शरीर तथा सिरपर भूरी मिट्टी मलकर जोरजोरसे अेकही स्वरपर और तालपर रोते हुअे, अुस वृक्षकी ओर अेकत्र होकर चले जिसपर अुस मृतकके शव को अुन्होंने बैठा के रखा था। अुस प्रचंड वृक्षके आते ही वे रुक गये। तत्पश्चात् दोलकाष्ठने अुस अूंची खोखलमें से अुस मुर्दे की गठरी को नीचे अुतारा। बरसात, हवा, धूप, और गीध–अिन सबके अेकत्रित कार्रवाअीसे अुस मुर्देकी शरीर का मांसभाग अुन तीन महीनों में नास्तिप्राय तो हो ही गया था। हड्डियोंका ढांचा ही बच रहा था। अुसे मध्यमें रखकर जावरोंके अेक मुखियाने अुसकी गर्दन मरोड़कर तोड़ डाली। खोपडी समेत वह सिरका ढांचा अुसने हाथमें अुठा लिया। अुस मृतक की विधवा आगे आअी। अुसके फैलाये हुअे हाथों में मुंडीको फेंकते हुअे अुस मुखियाने कहा,

"यह हिस्सा तेरा!"

अुस विधवाने अुस मुंडी को धोकर, पोंछकर, घिसकर, अुसमें छेद करके, धागा पिरोकर सबके सामने अुसे गलेमें बांध लिया और पीठपर लटका लिया। अपने यहां विधवाके चिन्ह हैं, केशवपन, काषायवस्त्र अंग्रेजों में विधवा का चिन्ह है, अेक काला प्रावरण जो सिर परसे आंचलकी भांति लेकर पीठपर छोड़ा जाता है। अुसी प्रकार जावरोंकी विधवाअें जबतक विधवा रहती हैं, तबतक अपने मृत पतिकी मुंडी गलेमें बांधकर पीठपर लटकाये रहती हैं। पुनर्विवाह किया तो अपर पति ही अुसे अुसके गले से निकाल सकता है।

अुस विधवाको सिरका ढांचा दे चुकने के पश्चात् अुस मृतक के अेक अेक जोड़ोंको तोड़फोड़कर हड्डी हड्डी अलग कर डाली गअी अुनमें से कुछ हड्डियाँ मृतकोंके बच्चोंमें तकसीम की गयीं। किन्हीं खास संबंधियोंमें तकसीम की गअीं। बची हुअी सारी हड्डियोंको चेटकीने अपने सामने रखकर, चुनाव करके अंतमें अुसके तीन भाग कर डाले। अेक अरण्यभूत के प्रत्यौषध के रूपमें, अेक अग्नि के और अेक समुद्रके। जिसको जिस भूत का प्रत्यौषध चाहिये, अुसने अुस ढेरकी हड्डी अुठाअी। मृतकोंकी अिन हड्डियोंके नाना-

विध भूषण, हार, ताअीत वगैरे बनाकर जावरे स्त्री–पुरुष गले में अथवा शरीरपर पहनाते हैं। अुसके योगसे तत्तत् रोगों तथा भूतोंसे अुनका बचाव होता है, अैसी अुनकी श्रद्धा होती है।

अुसमें भी मृत जावरा यदि कोअी प्रतिष्ठित और बड़ा आदमी रहा तो अुसकी अेकाध हड्डी को अुपयोगमें लाने का अधिकार मिल जाय तो अुसे अेक सम्मान की वस्तु समझा जाता है। अैसे मृतों की हड्डियाँ स्नेहियों तथा अभ्यागतों को अुपहार के रूपमें भी दी जाती हैं।

दोलकाष्ठ राजा नानकोबीका बड़ा ही प्रिय मित्र तथा सहाय्यक था। अुसके लिअे सम्मान की वस्तु के तौरपर समुद्रीय भूतके प्रत्यौषध रूप हड्डियोंमेंसे अेक अच्छासा छोटासा अस्थिखंड अुठाकर राजा नानकोबीने दोलकाष्ठको दिया। तथा संकेतों अेवं शब्दोंद्वारा कहा कि "अब तुम्हें समुद्रकी भीति नहीं! तुम्हें अपने देश में वह सुरक्षित रूपमें तरा ले जायगा!"

दोलकाष्ठके मन पर भी अुस भयानक मुर्दे के मस्तक, धड, हड्डियाँ जोड़ आदि के कडकडाहट के साथ तोड़ने फोड़ने की अुस सारी क्रिया का अेक विशेष प्रकार का गंभीर प्रभाव सा पड़ ही रहा था। अुसमें भी अुस चेटकीने जावरों की भाषा के त्रुटित शब्दों में अुसे संकेत किया,

"अिधर! जुरुविन! अस्थिखंड! मंत्र!" अर्थात् जुरुविन नामक समुद्रीय भूत के लिअे यह मंत्र मैं तुझे बताती हूं। अुसे बोलकर ही अुस अस्थिखंड को गले में बांधना चाहिये।

वे जावरा स्त्रियाँ ठिगनी थीं। दोलकाष्ठ के कमर तक ही पहुँच पाती थीं। अेतावता, चेटकी के मुँह तक अपना कान ले जाने के लिअे अुसे नीचे बैठना पड़ा। तत्पश्चात् अुस चेटकीने अेक विचित्र मुखमुद्रा बनायी, अिस तरह अिशारे किये मानों अुस के शरीर में कोअी भूत संचरित हो गया हो तथा अुस के कान में फूंक मारी। अेक निरर्थक से अक्षर का अुस के कान में अनेक बार अुच्चारण किया, जिस तरह हमारे यहां मांत्रिक लोग 'ह्रोम्' 'ह्रुम, ह्रोम् आदि अर्थशून्य अेकाक्षर का अुच्चारण किया करते हैं। जावरों के वातावरण में रहते रहते जावरी बनते चले आनेवाले दोलकाष्ठ के

भोले मन का अुन मंत्रोंपर तथा अस्थिखंड के प्रत्यौषध पर पूर्ण विश्वास रहा करता था।

सूतक के समाप्त होते ही जावरोंने अपनी अपनी अभिरुचि के अनुसार मंगल शृंगार करने शुरु कर दिये। अुन्होंने शरीरपर भरी हुअी भूरी मिट्टी धो डाली। पुरुषोंने लाल, पीले, भगवे, सफेद मिट्टी के पट्टे अपने शरीर पर टेढे मेढ़े खींचे। सुवासिनी स्त्रियोंने अपने सिरों के बालोंके खूंटे साफ करवा कर खोपड़ियों को चिकनी चुपड़ी बनाने की अिच्छा से अपने अपने प्रेमियों अथवा सखियों के हाथों, धारदार कांच के टुकड़ों द्वारा अपनी हजामत करवा ली। अेक दूसरे की चोटी गूंथती हुअीं जिस तरह अपने अिधर की सुहागिन स्त्रियाँ उत्सव आदि के समय कायव्यग्र सी रहती हैं, अुसी प्रकार वे जावरों की विवस्त्र सुहागिनें और कुमारिकाअें बड़े प्रेम से दूसरे की खोपड़ियोंकी चिकनी चिकनी हजामत करती हुअीं अपना शृंगार संपन्न करते हँसती खिलखिलातीं बैठी रहीं। अुस के पश्चात् मूंगोंकी, अथवा रंगीन सीपियोंकी अथवा मृतकोंकी हड्डियोंकी मालाअें अुन्होंने अपने गले में पहनीं। अिस प्रकार शृंगार क्रिया के संपन्न हो चुकने पर, सूतक के कारण गत तीन महिनों अुन की जो नृत्यलिप्सा संचित होती चली आअी थी, अुसकी पूर्ति करने के ख्याल से सूतक समाप्ति का जो सार्वजनिक नृत्य आज सिंधु तटपर होनेवाला था अुधर सारे नग्नकाय आबालवृद्ध स्त्रीपुरुष मिल जुलकर जाने लगे। और इधर, 'अच्छा, अभी थोडी देर में हम भी आते हैं नाच में शरीक होने के लिअे।' अिस प्रकार राजा नानकोबी से कह कर कंटक कंटकी दोलकाष्ठ सहित अपनी गुहा की ओर चले!

गुहा के समीप जाकर वहां के शिलातक्त पर वे तीनों बैठे। कंटकी कुछ फल, कच्चे नारियल, शहद और भुना हुआ मांस ले आयी। भूख तो लग ही रही थी। सबने अुस वन्य भोजन को अत्यंत रसास्वादन पूर्वक खाया।

"बस! अब अिन वन्य मिष्ठान्नोंके खाने के और दो दिन ही बाकी रह गये। परसों से वनभोजन समझ कर के समुद्र भोजन का आरंभ करना होगा।" दोलकाष्ठ कंटक की पीठपर थपकी देकर आश्वासन देने लगा।

"और परमेश्वर की अनुकंपा रही तो अगले महीने की अिसी तारीख को हमारा अपने घर में, अपने देश में प्रिय जनों के मध्य हँसते खेलते प्रिय भोजन चल रहा होगा!" कंटकने कंटकी की पीठ पर स्नेहभरी थपकी मारी।

"परमेश्वर की अनुकंपा रही तो, अैसा क्यों कहता है अब?" दोलकाष्ठने अत्यंत अुल्लसित वृत्ति से कंटक को बीचही में टोक दिया, "परमेश्वर की अनुकंपा भी हो ही गयी है न आज! कंटकबाबू, मैं नाव अच्छी तय्यार की है, पुलिस के कपड़े, बंदूक, गोला बारूद भी हमने तय्यार रख लिया है। जावरोंके प्रवीण नाविकों की डुंगियाँ दूरतक साथ आनेवाली हैं। नाव में मांस, मधु, फल, मद्य, भरपूर अन्न जल संगृहीत कर के रखा है। मछलियां पकड़ने के लिअे जाले ले लिये हैं। देश पहुँचते ही जो धन संग्रह चाहिये सो वह भी हमने अेकत्र कर ही लिया है। लाडली कंटकी, जो जो पुरुष प्रयत्न साध्य वस्तु थी वह वह हमने जुटा ली। पर यह नटखट समुद्र है, जिसे योंही कालापानी नहीं कहा जाता। अुस कालके मुँह में सीधी सादी हवा से चलनेवाली नाव ढकेल कर जाना है, अुस में सफलता तो दैव ही के अधीन रहेगी, परमेश्वर की कृपा अपेक्षित है, अिस कल्पना से मेरी छाती सदा धड़कती रहती थी। पर आज समुद्र के अुस 'जुरुविन' नामक भूत पर प्रतिबंधक का काम करने वाला वह मंत्र और यह प्रत्यौबंध जब मुझे अुस चेटकीने दिया, तब मुझे सचमुच बहुत संतोष हुआ! दैवी कृपा की यह देख वह लिखित बचन चिठ्ठी!" अैसा कहते हुअे दोलकाष्ठने अुस मृत जावरे का चेटकी द्वारा प्रदत्त अुंगली की पोर जितना मंत्रित अस्थिखंड निकाल कर गंभीरता पूर्वक कंटक के सामने रख दिया।

"शी:! दोलकाष्ठ! कितना आरण्यक हो गया है तेरा मन भी! बुद्धू है क्या तू भी!" कंटकने अुपहास किया।

"क्या कहा? बुद्धू? जंगली? कंटक, अिन जंगली जावरो में ही नही अपितु अपने आर्यों में भी मृतों की अस्थियों में दैवीय गुणों की सत्ता को स्वीकार करनेवाले ढेर के ढेर भरे पडे हैं! किन्हीं ब्राह्मणादिक जातियों में मृतों की

खोपड़ी का चूर्ण खीर में मिश्रित कर के श्राद्ध के दिन पितरस्थानीय पुरुषों को तथा यजमानको खाना चाहिये अैसा शास्त्रीय विधान नहीं था क्या ? बुद्धादिक व्यक्तियों के दंत, अस्थि, प्रभृति अवशेषों का कितना स्तोम क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादिक पंथियों में रचाया जाता है, मालूम नहीं ? क्रिश्चियन, मुसलमानादिकों की तो बात ही मत कर। मृतकों की अस्थियों पर ही अुनकी कब्रें बनाओी जाती हैं और कब्रों के भीतर की हड्डियों ही की सुरक्षा के लिअे जीवित व्यक्तियों की हड्डियाँ कब्र में गाड़ने की बारी आने तक दंगे लड़ाई झगडे करने में कोअी कम नहीं करते ! मृतों की अस्थिका का महत्त्ववाद अेवं अुसमें निवसनेवाले मांत्रिक गुणों पर विश्वास की भावना जावरों ही में केवल नहीं — सारे जगभर में है। तब बेचारे ज़ावरों ही को जंगली क्यों कहता है ? कहना हो तो सारे जगको जंगली कह। खैर, मेरा अिस मंत्रित अस्थिपर पूर्ण विश्वास बैठ गया है। जिस के गले में यह चेटकी प्रदत्त समंत्र ताअीत बांधा जायगा अुसे अुस 'जुरविन' का— सामुद्रिक भूत का — भय नहीं रहेगा; वह समुद्रमें कभी भी नहीं डूबेगा। समुद्रप्रवाह में वह सुरक्षित रूपसे पर तीर को जाकर पहुंचेगा ही यह अुस चेटकी का आश्वासन असत्य ह यह कहने का अधिकार, अुसका परीक्षा करके देखे बगैर, तुझे भी तो नहीं है? अनुभव होने से पूर्वही किसी वस्तुको आग्रहपूर्वक असत्य बतलाना भी तो अेक प्रकार पागलपन ही है न ? और वह भी अुतनाही परित्यक्यव्य है जितना कि अुसे आग्रहपूर्वक सत्य बतलाना !"

"अच्छा भाअी, वैसाही सही! बांध ले वह हड्डियों का ताअीत तू समंत्रक अपने गले में ! न सही नावसे, अुस ताअीत ही से सही, किसी प्रकार सुरक्षित रूपसे समुद्रपार के अपने देश पहुँच जाय तो बस !"

" मुझे अपने जीवन के लिअे अपने गले में नहीं बांधना है। मेरी जो लाडली है न कंटकी, तेरी बहन और मेरी प्रियतमा। —वह यदि सुरक्षित और सुखी रही तो बस हम भी सुरक्षित और सुखी रहेंगे। अतअेव यह ताअीत मुझे अुसीके गले में बांधना है और मुझे दीक्षा देते समय चेटकी ने जिस मंत्रका अुपदेश दिया था अुसी का मैं भी अुसके कान में अुपदेश देनेवाला हूं। यह ताअीत जब तक तेरे गले में बना रहेगा न तब तक मेरी लाडली, तेरे प्राणों के लिअे समुद्र में कोअी खतरा नहीं। हमारी नाव रास्ते में यदि टूट फूट

भी गयी तो भी केवल लहरों पर बहाकर, स्वतः समुद्रदेव ही तुझे पर तीर तक पहुँचा देगा। चल आ अिधर अुस आंचल को थोडासा नीचेकी ओर सरका ले!"

दोलकाष्ठ संकोच शून्य प्रेमभावसे कंटकी के कंधेपर हाथ रखकर अुसके अधूरे किंतु शान के साथ कसकर बांधे हुअे आँचल को ढीला कर के नीचे की ओर सरकाने लगा।

अुसकी अिस छेड़छाड़ में अुपद्रवकारी लंपट वृत्ति नहीं थी। कुछ पागलपन, थोडा मर्यादाशून्य अुज्जडपन ही था। जिस बातचीत में कपट नहीं रहता है अैसे अुसके प्रेमको देखकर कंटकी को दोलकाष्ठ पर गुस्सा नहीं आता था प्रत्युत् सहानुभूति और करुणा ही प्रतीत होने लगी थी। किंतु वह अिस बात को समझती थी कि यदि वह अिसके आतुर प्रणय को अनिर्बंध रूपसे बढ़ने दे तो देश में पहुँचने पर अुसके प्रणय अेवंच विवाह विषयक आग्रहका अनादर करने के लिअे कोअी मार्ग नहीं रह जायगा पुनश्च अुसे संशय में न रखकर यदि वह वाणी से तथा अपने व्यवहार से यह पक्का जतला दे कि वह अुसका पति रूपमें वरण करेगी तो देश पहुँचने के बाद अुससे विवाह करने से अिनकार करने पर दोलकाष्टके मन में विश्वासघातकी जानकारी के कारण भयंकर वैरबुद्धि के जाग अुठने की भी संभावना है, इस बात का डरही कंटकी को आजकल लगने लग गया था।

अुसने अुसको पीठ थपथपाकर कंधेपर जो हाथ रखा था अुसमें कामवासना नहीं थी प्रत्युत अेक प्रकार की वत्सलवृत्ति ही अधिक थी, यह कंटकी जान भी गअी थी। अुसकी तादृश छेडछाड किसी स्नेही बड़े, भाअी की छेडछाड की भांति अुसे आनंददायक भी प्रतीत हो रही थी। तत्रापि अूपरिनिर्दिष्ट भीती के कारण ही अुसने दोलकाष्ठ के हाथ को थोडा सा परे करते हुअे और आँचलको अपने कमर में फिर खोंसते हुअे कृतककोप पूर्णस्वर में कहा,

" ताअीत ही बांधना है न, तो वह मेरा कंटक भअिया बांध देगा, तुम्हारी कोअी आवश्यकता नहीं है बेकार की छेडछाड करने के लिअे!"

कंटकी की अुस भर्त्सनासे दोलकाष्ठ के प्रणयी मन को अैसी गहरी

चोट पहुँची कि अुसकी आँखोंसे आंसू ही टपक पड़े—साथ ही शब्दों में से क्रोध भी! वह कंटकी के पास से दूर हटकर खड़ा हो गया। अुस अपमानको मजाक रूपमें न लेकर अुसने कंटकीसे अत्यंत विव्हल से स्वर में कहा,

"कंटकी, अभीतक तू मुझे पराया ही समझती है न! तेरे स्वयंवर का अेक पण समझकर ही अिस टटपूंजी नाव को समुद्र में डालकर तुम्हें अिस कालेपानी से अुस पार पहुँचाने के लिअे अपनी जान की बाजी में लड़ा रहा हूं यह तुझे मालूम नहीं ? किंतु तेरे मन में मेरे सबंध में अबभी अितना परभाव हो तो जबर्दस्ती तेरे सामने नाचते हुअे, तुझे तकलीफ पहुँचाते हुअे अपनी पगडी अुछलवानेवाला आदमी कम अज कम यह दोलकाष्ठ तो नहीं है। तू अगर आजतक मुझ से आगे चलकर विवाह करने की बातें बनाकर मुझे अुल्लू ही बनाती आअी हो तो वह तेरे लिअे कोअी शोभाजनक बात नहीं है। अुसका परिणाम——"

कंटकने दोलकाष्ठ को आज तक अितने गंभीर अेवं विषादपूर्ण स्वर में बोलते हुअे नहीं देखा था। अतः दोलकाष्ठ का अैसा बिगड़ा हुआ राग-रंग देखते ही कंटक सहमसा गया। स्वदेश पहुँचने के अनंतर कंटकी के अनुपलाभ से अुत्पन्न होनेवाले वैरभाव का सूत्रपात यहीं तो नहीं हो जायगा, जिन बंदूकों और गोलाबारूद को हमने अपने संरक्षण के लिअे जुटाया था अुनको अब अेक दूसरे पर आक्रमण करने के लिअे अुपयोग में लाने का प्रसंग तो नहीं आ जायगा। आज या कल अिसी मालतीके कारण दोलकाष्ठ अेक नये रफिअुद्दीन का रूप धारण कर के अपनी तथा मालती की जान लेने पर तो अुतारू नहीं हो जायगा, अैसी भयप्रद शंकाओं के आते ही कंटक का सिर चक्कर खा गया। पर अिस समय अुसके सामने यही अेक मार्ग बच रहा था कि जहाँ तक हो सके अिस अनिष्ट प्रसंग को कलपर टालता चला जाय, और जहाँतक निभ सके दोलकाष्ठ से निभाता चला जाय। वह यह अब भी अच्छी तरह समझता था कि, दोलकाष्ठ सौजन्य से अेकदम हाथ धोकर बैठ जानेवाला व्यक्ति नहीं है। अतः दोलकाष्ठ के आगे के कोप परिपूर्ण उद्गारों के व्यक्त होने से पूर्व ही अुसे ठंड़ा करने के विचार से अत्यंत नरमाअीसे बोलने लगा।

"कैसा परिणाम, मेरे मित्र? अैसे स्त्री-सुलभ संकोच को देखकर

गुस्सा आना चाहिये ? या आनंद प्रतीत होना चाहिये? प्रेयसीकी अनुरंजना कैसे करना चाहिये, यह अुन जंगली जावरों को जितना मालूम है अुतना भी तुझे मालूम नहीं अैसा प्रतीत होता है, बांध वह ताअीत तू ही कंटकी के गले में! मैं अुसका बडा भाअी हूं। मेरा कोअी अधिकार नहीं है क्या अुस-पर? अिस लिअे यह चतुर लडकी जब तक भाअीके नाते मैं अुसे आज्ञा न दूं तव तक अूपरी तौरपर अस्वीकार जतलाती रही ? हूं ब्रहन बांधने दे दोलकाष्ठ को अपने गले में ताअीत !"

"गुस्से में आगये अुतने ही में! बिलकुल पगले हो तुम!" कंटकी ने समय सूचकता प्रदर्शित करते हुअे अेक आकर्षक मुस्कराहट के साथ दोलकाष्ठ की अुंगली पकडकर खींच ली। अुस अुंगली पकडकर खींचते ही परवश हाथीकी भांति वह दोलकाष्ठ झट से अुस के समीप खिंचा चला आया और पुनः प्रसन्न वृत्तिसे अुससे कहने लगा,

" तू ही हटा ले वह आंचल नीचे की ओर, हां, बस है अुतना। गले में ताअीत तो बांधने को आना चाहिये न ! पर अुसके पहले तेरे कान में मुझे मंत्र पढ़ना पड़ेगा। पढ़ूं न ? तेरे कान के समीप अपना मुँह ला सकता हूं ? हां, नहीं तो फिर मर्यादा का भंग हो जायगा और तू फिर फुफकार अुठेगी ! " दोलकाष्ठ अब पूरी तरह प्रणयरस में मग्न हुआ हुआ था। ठीक कान के समीप अपना मुँह ले जाकर अेक हाथ अुसके गले के चारों ओर कंधे पर रखकर अुसने अुसको अपने नजदीक कर लिया और चेटकीका वह अर्थहीन अक्षरोंवाला मंत्र तीन बार अुसके कान में पढ़ा।

कंटकी से सटकर अुस तरह खड़ा रहना दोलकाष्ठ को अितना प्रिय प्रतीत हो रहा था कि यदि सौ बार भी अुस मंत्रका पाठ करते हुअे अुसे वहां खड़ा रहना पड़ता तो भी अुसे कोअी कष्ट न होता। पर कंटकी कहीं फिर अुखड़ खड़ी न हो अिस भयसे अुसने जितना आँचल अुतर चुका था अुतना ही अुतारकर, बेहूदगी न नजर आये अिस विचारसे तीन बार मंत्र की दीक्षा देनी आवश्यक थी, अुतनी जब दी जा चुकी तब अिस विधि को समाप्त करके दोलकाष्ठ हाथ में पड़े ताअीत को ठीक करता हुआ दूर हट गया।

" जल्दी ही खत्म कर दिया " कंटकी धूर्तता पूर्वक हंस पड़ी। पर अिन शरारती गुलाबी कांटों को खरोंच का ज्ञान हो अितनी होश अुस आनंद प्रवाह में बहनेवाले दोलकाष्ठ को कहां से रह सकती थी ? अुसने सरल भावसे अुत्तर दिया,

" वाह्, खत्म कहां हुआ ! अब यह ताअीत बांधना है न तेरे गले में ! अैसे ! हां, सामने हो अिस तरहसे ! गले को ठीक से अूपर अुठा। गिरने दे अुस आंचल को ! बार बार अुसको ठीक करने के लिअे हाथ क्यों लाती है बीचमें ! — हां, यों ! तनकर खड़ी रह, समझी ! "

अुसके सामने बिलकुल समीप खड़े होकर अुसने वह ताअीत अुस की वक्षस्थल पर ठीकसे लटकता रहे अिस अंदाजसे बांधना शुरू किया।

अितने में अुसके वक्षःस्थल पर और गले के मध्यभाग में कुछ लाल लाल से चिन्ह अुसे दिखाअी दिये।

" यह क्या ? ये लाल लाल खरोंचें कैसी हैं तेरे गले के नीचे ? शिकार के समय कहीं कांटों वाटों में तो नहीं गिर पड़ी थी न ? " अिस प्रकार वह अुससे पूछ ही रहा था कि, अुतने ही में अुसे मालूम पड़ा कि, ये खरोंचें नहीं हैं बल्कि लाल रंगसे बेलबूटे, तथा कुछ अक्षर गोंदे गये हैं, अैसा अुसे दिखाअी दिया। क्षणार्ध में अुसने वे अक्षर पढ़ डाले:— " मालाती "

" क्या ? मा–ला–ती–? मालती ? "

ज्यों ही अुसने ये शब्द जोरसे पढ़े, त्योंही दोलकाष्ठ की आकृति की सारी रेखाअें ही बदल गयीं ! अुसके शरीरपर रोमांच खड़े हो गये !

घनीभूत अचेतावस्था में से धीरे धीरे चेतना में आनेवाले मनुष्य की भांति वह कंटकी को निर्निमेष दृष्टि से निहारने लगा। क्षणार्ध ही में अुसने अत्यंत स्निग्ध किंतु अत्यंत विस्मयपूर्ण स्वरमें कंटकी से पूछा,

" सच बता, सौगंध है तेरी लाड़ली मां की ! यही तेरा सच्चा नाम है न ? तू मालती ही है न ? किसने गोदा था यह नाम तेरे वक्षःस्थल पर ? "

कंटकी को जब मालूम पड़ा कि, अुसका असली नाम अिस प्रकार अचानक दोलकाष्ठ को मालूम पड़ गया है तब वह थोड़ीसी सहम गयी

तो भी किसी प्रकारकी हानिकी कोअी संभावना दृष्टिगत न होने के कारण और अिस कारण भी कि दोलकाष्ठने अत्यंत स्नेहाकुल स्वर में अुसकी अपनी ही मां की सौगंध खिलाअी थी, अतः अुस अपनी मां की स्मृति के ताजा होते ही थोड़ी सी भावमूर्च्छित सी हो कर अपने आपको संभालते हुअे बोलने का प्रयत्न करने पर भी बोल वही गयी जो सत्य वस्तु थी।

"वह जो नाम है न, वह मेरा बचपन का प्यार का नाम है। मेरे बड़े भय्याने प्रेम में आकर अिस प्रकार लाल रंगसे मेरे शरीरपर गोदा था अेक दफा! पर मेरा मूल का नाम तो कंटकी ही है।"

"नहीं! मालती, तू मालती ही है। यह देख, अुस नाम के चारों ओर कढे हुअे वेलबूटे, वह देख अुस नाम को गोदते गोदते मेरे हाथसे भूलसे 'ल' को लगी हुअी 'आ' की काना! वह गलत रूप 'मालाती!' —सब गलत! सब असंभव! पर वह सब क्यों!" गद्‌गद् स्वर से मालतीको नखशिखांत तक निहारता हुआ दोलकाष्ठ बोला, "यह देख, यह तेरी प्रत्यक्ष मूर्ति! ये बाल, यह माथे से लेकर पैरों तक की गात्र-रचना। मेरी बेसुधी के धुम्रवलय में छिपी हुअी तेरी आकृति, मेरे होश मे आते ही अुस धुम्रवलय के तिरोहित होते ही किस प्रकार नखशिखांत तक मेरी मालती के रूपमें प्रकट हो गयी है! कंटक बाबू, आप कोअी भी क्यों न हो, पर यह आपकी धर्म की बहन कंटकी मेरी सगी बहन मालती है!! सत्य कहिये, यह सारा किस्सा क्या है! मैं अब आपका ही हूं, मुझसे डरिये नहीं!"

कंटक के अिस अत्यंत अप्रत्याशित वाक्य के सुनते ही कंटक को बिजली का शॉक ही बैठा! बहुत बरसों पहले मालती का बड़ा भाअी सजा पाकर कालेपानी गया था, यह अुसे तत्काल स्मृत हो आया। परंतु यदि दोलकाष्ठ मालती का सच्चा भाअी ही है तब तो अुसके मार्ग की अेक और बड़ी बाधा अपने आपही अपसारित हो गयी। दोलकाष्ठ के मनमें अब मालती के विषय में न तो कोअी विषयलालसा निर्माण होगी और नही तजन्य वैर भावना के हो अुत्पन्न होने का कोअी भय रह जायगा। यह सब प्रत्युत्पन्न रीत्या अुसके ध्यानमें आ गया और वहँ दोलकाष्ठ से बोला,

"मित्र, जो सत्यवार्ता है, वही मैं तुझे सुनाअूंगा, पर! पर!—थोड़ा

ठहर, अिस मेरी मालती का नाम गोदनेवाला जो अिसका बड़ा भाअी था, वह आगे चलकर अेक लड़ाअी पर गया और वहां अुसके सिरपर अेक चोट आ गयी। अुस चोट की अेक निशानी अुस के माथे पर बनी हुअी है, अैसा हमें अच्छी तरह पता चला था। वैसी कोअी निशानी तेरे सिर पर-"

कंटक अपना वाक्य अभी पूराभी नहीं कर पाया था कि, दोलकाष्ठने अपने माथे पर आये हुअे बालों के गुच्छे को दोनों हाथों से हटाकर अपने माथे को कंटक के सामने कर दिया। दो अंगुल चौड़े घाव की निशानी स्पष्ट रूप से अुसके माथेपर दिखाअी देती थी। निशानी मिल गयी!

कंटकने अपनी अब तक की सारी कथा कह सुनाअी। अुस का नाम जब किशन था तथा अुस लड़की का नाम मालती था अुस समय वे किस प्रकार के संकट में जा पड़े और किस तरह अुन्हें कंटक और कंटकी ये बनावटी नाम रख लेने पड़े यह तथा अन्य सारा वृत्तांत कह दिया!

कंटक बोला, "तुम्हारे लड़के के सिरपर लड़ाअी में अेक चोट आयी होगी अैसा मुझे अंतर्ज्ञान द्वारा दीख रहा है," कह कर अुस अधम कितवने, अुस रफिअुद्दीनने साधु के भेस में जब कहा, तभी मालती की माता की अुस पर श्रद्धा बैठी। अिस संकट के चक्र में पड़ने के लिअे अेक दृष्टि से जो मूल कारण बनी, वही यह तेरी चोट की निशानी आज तुम भाअीबहनों के पुनर्मिलन का भी कारण बनी! मालती को संकट से मुक्त करने का साधन बनी! अुसी प्रकार अुस अधम कितवको तेरे ही हाथों प्राणदंड भोगना पड़ा और अिस प्रकार अविज्ञात रूप से मालती के भाअीने मालती के अवमान का बदला चुकाया, यह योगायोग जितना ही आल्हाददायक है, अुतना ही आश्चर्यकारक भी है!"

"अरे, क्या कहता है!" वह गुस्सेबाज दोलकाष्ठ तनकर खड़ा हो गया और अपना जबर्दस्त बाहू हवा में फेंक कर, दांतओंठ चबाता हुआ मुठ्ठी तानता हुआ बोला, "अुस अुद्दीन को तो मैंने अपना बदला समझ कर मारा है। मेरी बहन का बदला लेने के लिअे अुस का गला अेक बार और अिस तरह घोंट कर अेक बार फिर अुसे अिस तरह जान से मारना चाहिये!" क्रोध के आवेश में हवा का ही गला दोलकाष्ठने कसकर दबाया।

"रहने दे भय्या, अब अुस गुस्से को!" अपने भाअी की तथा बचपन से लेकर अबतक के सारे सुखदुःखों की स्मृति से अुस के नेत्र भर आये थे। अुसने अपने भाअी का हाथ पकड़ कर धीमेसे नीचे की ओर खींचा और अपने हाथ से अुसे दबाती हुअी लाड़भरे कंठसे अुसके क्रोध को शांत करने लगी।

"मालू, बहन!——मेरे हाथों तेरा कुछ भी तो कल्याण नहीं हुआ। तेरे लिअे मुझ भाअी का रहना और न रहना समान ही रहा न! तेरे मन के अनुकूल——"

"भय्या, अब तू मुझसे मिल गया है न? अिसी में मेरा सब कुछ मनोऽनुकूल हो गया है! अब अगर कुछ और होना बाकी रहा है तो वह अपनी मां की मुलाकात! भय्या, मुझे अेक बार अपने पेट में छिपा ले न?"

"मालू! बहन!" अपने गले से लिपटी हुअी अुस अपनी बहन को सहलाता हुआ, अुस के बालों के अूपर से हाथ फेरता हुआ मिलन की अुस मधुर अचेतावस्था में वह बीचबीचमें यों ही पुकार अुठता, "मालू!" "मेरी बहन!" और वह भी लाडभरे कंठ से अुत्तर देती—"अूं!" "हां!" "भय्या!"

क्षणभर बाद मालती की भुजाओं को छुड़ाकर अुस का वह भाअी किशन की ओर मुड़ा,

"किशन, मेरी बहन को अनेक संकटों में से तूने बचाया है। तेरे मुझपर अनंत अुपकार हैं! पर देख, मेरे भी तुझपर कुछ कम अुपकार नहीं हैं, समझे! तूने मेरी बहन मुझे वापस दी; मैं भी यह ले, तेरी प्रेयसी तुझे वापिस देता हूं! अपने आशिर्वाद के दहेज के साथ अिस अपनी भगिनी का मैं यथाशास्त्र कन्यादान कर रहा हूं!"

"विवाह के पश्चात् न?" किशन हंसा।

तत्पश्चात् अुस निश्चित किये हुअे दिन अुन बेचारे आतिथ्यशील जावरोंने बड़े साजबाज से अुन तीनों को विदा दी। जिस समय किशन, मालती और अुस का भय्या (दोलकाष्ठ को अब सब लोग 'बड़ भय्या' कहने लगे थे।) अुस नावमें बैठे, चांदनी रात के समय चुपचाप तट का परित्याग किया, अुस समय समुद्र के भूत को 'जुरुविन' को प्रसन्न करने

के लिअे जावरोंने नानाविध चेटक कृत्य किये ! और दो तीन डुंगियों को साथ ले जावरों में से कुछ प्रवीण नाविक किशन की अुस नाव को खाडियों खाडियों में से, ऋजु–वक्र मार्गों से होते हुअे, अंग्रेजों के पहरे के स्थानों से बचाकर कालेपानी के भरे समुद्र में अुन्हें पहुँचा आये ।

कालेपानी के भरे समुद्र में !—वह केवल वाताश्रित तरी ! रात के अंधकार में तो चारों दिशाओं में साक्षात काल ही अपनी जंभा खोले खडा रहता ! अितने भयानक ! अितने घातक ! अितने सुनसान, अितना असहाय साहस कृत्य वह ! मध्यरात्र कालेकुट्ट करोखे में वह अशाख विस्तीर्णय समुद्र जब गरजता तब अैसा प्रतीत होता मानों मृत्यु ही खर्राटे भर रही हो! पर आजन्म कारावास के बंधनों में सडते रहने की अपेक्षा यह साहस–यह मृत्युका आलिंगन — ये महाकाल के भुजपाश — सचमुच अिसमें कितना अधिक सुख है ।

कालेपानी के समुद्र में वह नाव भी अनाटंक गति से चली जा रही थी । हवा अनकूल थी । पाल का पेट भी भरभर कर खूब फूल गया था । बारी बारी से वे तीनों निरंतर चप्पू चलाते जाते थे । मालती भी चप्पू चलाने की अपनी बारी में अपनी शक्तिभर चप्पू मारती थी ।

आसमान में कभी बादल छा जाते, अंधेराही अंधेरा हो जाता, कभी धूप चिलचिला अुठती, दिशाअें हंसने लग जातीं । समुद्रभी कभी अुफनाता हुआ क्रोधी दिखाअी पड़ता कभी टलमल टलमल लघु लघु तरंगे अुठाता हुआ सरोवर ही की भांति प्रसन्न दीखने लगता । थोडा सा कहीं खटका हुआ कि तीनों के मुखोंपर मन में छिपाये हुअे भयकी कृष्णच्छाया अेकदम फैल जाती ? फिरसे अुसे दबाकर छिपाकर वे अेक दूसरेको धैर्य देते, हंसते, चप्पू चलाते हुअे गाया भी करते ।

अनुकूल हवा अुनके पालमें भरी हुअी थी । पर अुसीके आधारपर कुछ वह तरी निष्कंटक रूपसे नहीं जा रही थी । आजन्म कारावास के पद–बंधनोंको तोड़कर हम कालेपानीसे भागे जा रहे हैं; अिस कल्पना के आनंद का पवन जो अुनके हृदयके पालमें भरा हुआ था, मुख्यतः अुसीके आधारपर वह तरी अिस तरह बेलगाम चली जा रही थी ।

मनुष्यकी आशा–निराशा, पाप–पुण्य, न्याय–अन्याय, साध्य–असाध्य

आदि की कसौटीपर जगकी गतिविधियोंको कुछ पारख कर देखते नहीं बनता। अुस विचारकी कोअी खास गिनती भी नहीं की जाती। अपने को जो वस्तु संभव प्रतीत होती है वह अकस्मात् असंभव हो जाती है। और जो असंभव प्रतीत होती है वही कभी कभी अकस्मात् संभव हो जाती है। अिसी को हम योगायोग कहते हैं। निश्चियसे अुन गतिविधियों का हमारी अिच्छा और हमारे तर्कके अनुरोधसे कुछ भी खुलासा नहीं हो पाता अैसा हम माना करते हैं।

सर्वथा राजमहलोंमें सैंकड़ों दासदासियों द्वारा लालित पालित होते समय अथवा प्रत्यक्ष राजारानी द्वारा गोदी में लेकर खिलाये जाते समय मनौती के आयास से प्राप्त हुआ हुआ राजकीय पिंडवाला बच्चा अूँचे प्रासाद परसे, रानीकी अथवा राजाकी गोदमेंसे फिसल कर नीचे फरश पर गिर पड़ता है और चकनाचूर हो जाता है! श्रीमंत रघुनाथराव पेशवे का अेक अपत्य कहते हैं, जब वे अुसे हाथ में खिला रहे थे, अुस समय नीचे गिरकर चिथ गया था! अिसके विपरीत क्वेटा किंवा बिहार में हुअे भीषण भूकंप के धक्के के समकाल जब नगरके नगर ढहकर जमीन में विला गये, अुस समय चार चार मंजिल के बड़े बड़े भवन धड़ाम से विदीर्ण भूमिके अुदरमें राशि रूप होकर गिर पड़े। मनुष्य, गांबाप, बच्चे दबकर लुगदी बनकर पत्थरों की राशिमें चूने और गारेकी तर चिन डाले गये। और अुसीमें खुदाअी करने पर किसी मांका दूधपीता बच्चा दो पत्थरोंके तंबूके नीचे सुरक्षित रूम में मिल गया! यही है योगायोग! दैव! जिसके कार्यकारण की अुलझन को हम सुलझा नहीं पाते अथवा जो हमारी अिच्छाके अनुरूप सुलझ नहीं पाती, अुसी को हम दैव कहते हैं। दैव, योगायोगका दूसरे शब्दोंमें कहें तो अर्थ ही है हमारा अज्ञान, हमारी निराशा!

कालेपानी के भरे सागरमें हवाके आधारपर चलने वाली इस छोटी सी नाव में बैठे हुअे प्रतिक्षण मृत्युकी चट्टानपर टक्कर खाने की संभावनावाले अिन तीन जीवोंके दैव में अुस अुलटे सुलटे योगायोगों में से कौनसा योगायोग आनेवाला है?

अिनका क्या होगा? कैसे होगा?—

आज आठवाँ दिन जैसे तैसे करके अुग आया। संकटोंका मुकाबला

करते करते अुनका भय भी कुछ न्यून हो चुका था। केवल यही अेक अप्रिय बात थी कि अन्न तथा पानीका संग्रह खत्म होने के करीब आ गया था। पर यात्रा भी तो आधे से अधिक समाप्त हो चुकी थी। वे लोग बीच बीचमें मछलियाँ पकड़ते थे और खाते थे, अुससे अुनका कुछ निभाव हो जाता था। पर अशक्ति बढ़ गयी। अुसमें भी मालती तो बहुत ही श्रांत हो चुकी थी! तथापि अुसका बड़ा भय्या अुसे बताता था कि, अब आधे से अधिक यात्रा खत्म हो चुकी है, और कहता,

"आततायी, पापी–अुस रफिअुद्दीन सरीखे कितव यदि अिस कालेपानी के समुद्रको पार करके अपने देश पहुँच सकते हैं, तो तेरे जैसे निरपराध, निष्पाप और सुशील अबला को सहाय्यता दिये बिना वह देव किस प्रकार रह सकेगा? तेरे पुण्यसे हम सभी पार पहुँच जायेंगे! स्वदेश पहुँच जायेंगे! फिर वह ताअीत, वे चेटक, वे शुभ शकुन---वे सब योंही जायँगे?"

अिस प्रकार धीरज बंधाने से अुसकी शरीरकी थकावट न भी सही तो भी मानसिक थकावट तो दूर हो ही जाती थी। रात आतेही किशनकी जांघपर जब वह सिर रखकर सो जाती और वह अुसे थपकियाँ देता, तब चिंता का लेश भी अुसे स्पर्श नहीं करता था। अितनी शीघ्रता से अितनी गाढ निद्रामें वह सो जाती कि, सबेरे ही अुसका जागना होता, और वह तब पूर्ण प्रफुल्ल होकर अुठती।

आठवां दिन भी निर्विघ्न रूपसे व्यतीत हुआ। अुस संध्याकाल के सूर्यास्त की शोभा और अुस शांत समुद्रके आश्वासन पूर्ण व्यवहार के कारण अुन तीनों को विपुल अुल्लास प्रतीत होने लगा। हवाभी कुछ मात्रामें मंद पड गअी थी। अिस लिअे अुन्होंने अपने चप्पू अधिक वेगसे चलाने शुरू किये। प्रत्येक चप्पूके प्रहारके साथ स्वदेश का तट द्रुतगति से समीप आता जा रहा है, इस अनुभूति के कारण अुस श्रम का अधिक त्रास अुन्हें अनुभव नहीं होता था। अुलटे, अुल्लास आवेग में किशन ने अेक नाविकों का गाना गाना आरंभ किया, तथा मध्य मध्य मालती की ओर देखते हुअे विनोदभरी हँसी हँसने लगा। अुसके बड़े भैया ने भी अुसके सुर में अपना सुर मिलाया

और तालकी गतिपर चप्पू चलाने लगा, तथा स्वयमपि जोर जोरसे गाने लगा—

वायु रे, पवन रे,
बढ़ाये जा तरी को अिस,
नाविक रे,
चलाये जा सवेग चप्पुओं को तू।
करती स्मरण आज स्वजनों के स्नेह को,
सांवली सलौनी बाला चली मातृगेह को;
सांवली सलौनी बाला चली मातृ-गेहको।

अेक चरण यह बोलता तो दूसरा चरण दूसरा। इस प्रकार गाते गाते और सपासप चप्पू चलाते हुअे वे लोग चले। नाव भी वेगसे समुद्रमें आगे बढ़ती चली, और स्वदेश वेगसे समीप आता चला। जब तक अंधेरा नहीं हुआ और जिधर तिधर चाँदनी चमचमाने नहीं लगी तब तक वे लोग गाते ही रहे और चप्पू चलाते ही रहे।

अुस गाने को सुनते सुनते और अुस नाव के झूलते हुअे पलंगपर किशन की गोद को सिरहाना बनाये मालती कब सो गयी, यह अुसका अुसे भी नहीं मालूम हो सका।

हवा फिर अनुकूल दिशामें बह अुठी। पाल भर गअी, चप्पूका चलाना मंद पड़ गया। मध्यरात्र का समय, आकाश में चंद्रमा—अितने ही में नाव से कुछ दूरके अंतर पर खलभलाट की बड़ी भारी आवाज़ हुअी और अेक अूंचासा पानीका भारी भरकम खंभा अूपर को अुठ आया!—

बडे भैय्याने ठीकसे निहारकर देखा, तो अेक प्रचंड मत्स्य आधे से अधिक अूपर अुठ आया हो अैसा चमकने लगा। समुद्र में अनेक वार अनुभव प्राप्त किये हुअे दोलकाष्ठने तत्काल पहचान लिया कि यह मत्स्य अेक महाभयानक जातिका मत्स्य है। तत्काल अुसने बंदूक अुठायी। त्योंही पुनः पानीके बीच खलभलाहट की आवाज़ हुअी और वह मत्स्य पानीमें डुबकी मारकर विलुप्त हो गया। अेक बड़ी विपत्ति टल गयी अैसा सोच दोलकाष्ठ तथा किशनने निश्चितता की सांस ली।

अुस भीषण मत्स्य के अूपरसे अुसी प्रकार की मछलियों की बातों का प्रसंग छिड़ा। दोलकाष्ठ सुनाने लगा, " समुद्रयात्री लोग बताते हैं कि कभी कभी अैसे मच्छों से पाला पड़ता है जिनकी पूंछ में बिजली भरी रहती है, और अुसके प्रहारसे वे बोटकी बोटको अुलटा डालते हैं। छोटी मोटी पवनवाह नौकाअोंका तो अनेक मत्स्य वक्रमार्गों से होकर पीछा करते हैं, जिनमें कितने ही मत्स्य नरभक्षक जातिके भी होते हैं।"

किशन के शरीर पर रोंगटे खड़े हो गये ! " नरभक्षक ! तू सच कहता है ? "

पर किशन के अिस प्रश्न का अुत्तर देने की दोलकाष्ठको आवश्यकता ही नहीं हुअी, समय ही नहीं मिला ! —

कारण, किशन वह पूछ ही रहा था कि, अुतने ही में, कोअी राक्षस किसी दुबले पतले व्यक्तिके गालपर जड़ दे, अुस तरह अुस छोटीसी अेवंच समुद्रकी लहर पर आरूढ़ नाव के अेक पार्श्व को अेक करारी चपत लगी और जिस तरह कोअी कटोरी अुलट जाय अुस तरह वह नाव चुपके से सुलटी से अुलटी हो गयी ! !

अेक प्रचंड़ लहर अुठी। अेक भयंकर मत्स्य का धड़ अुस नाव के चारों ओर गरगर फिरा, पिछली बार जो मत्स्य गोता मारकर निकल भागा था वही अिस समय अिस प्रकार गुप्तरूपसे धावा बोलकर आया और अपनी अेक ही फटकार में नाव को अुलटा दिया। अुस नाव में से कोअी आदमी बाहर फेंका गया है या नहीं, यह देखने ही के लिअे वह तथा अुसके अेक जोड़ीदार मत्स्य नावके चारों ओर चक्कर मारते हुअे अूपर अुठ आये थे।

नावके अुलटते समय अुस चपेट के साथ जो व्यक्ति दूर फेंक दिया गया वह किशन ही था ! अुस राक्षसी मत्स्यने अुसपर झपट्टा मारा और अुसे समुद्र के अंदर खींच ले गया ! ,

अिधर दोलकाष्ठने अपने पर अुलटी हुअी अुस नाव से बाहर निकलने का प्रयत्न किया। पर वह अुसके प्राणांत ही का प्रयत्न ! ! अभी हो भी न पाया था कि, अुतने ही में समाप्त भी हो गया ! नाकपर

मुँहपर लहरों के थप्पड़ पड़ने लगे, दम घुट गया, देखते देखते दोलकाष्ठ समुद्र के अुदर में समा गया ! !——

और मालती ? वह डूब गयी है, यह तक अुसे विदित नहीं हो पाया ! वह गाढ़ निद्रा में थी। अुसे अुस आंदोल्यमान तरी के कारण सुख-स्वप्न आ रहे थे, कि वह अपने बचपन के अुसी झूलेपर बैठी हुअी हैं, अुस की मां अुस के लिअे स्नेहभरे गाने गा रही है, झूलेके अूँचे अूँचे जाकर नीचे की ओर आने की अनुभूति अुसे अत्यधिक मधुर प्रतीत हो रही है !

अुस मधुस्वप्न में, वह जिस तरह सोयी हुअी थी, वैसी की वैसी ही, नाव के अुलटनेपर, समुद्र की अूर्मियोंके झूले पर सुला दी गयी ! जाग अुसके पश्चात् अुसे कभी आयी ही नहीं ! !

वह सुखस्वप्न ही अुसकी आखीरकी जाग थी। अुसकी आखीर की अनुभूति थी, अर्थात् अुसके अपने विचार से तो वह सुरक्षित तौरपर घरपर जाकर अपनी मां से मिली ही ! अुसके भर के लिअे अुसकी अनुभूति की वह अंतीम रेखा सुखांत ही रही ! !